Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2.2

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास-क्षिण

[विभिन्न विश्वविद्यालयों को ० एड० परीक्षा के नवीन पाठ्यक्रमसार]

लेखः

डॉ० गुरसरनदास त्यागी, एमए., एम. एड., पी-एच. डी.

रीडर, शिक्ष-संकाय

दयालबाग् श्वविद्यालय,

दयालबाग आगरा

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकाशक

विनोद पुस्तक मन्दिर

कार्यालय : रांगेय राघव मार्ग, आगरा-2

बिक्री-केन्द्र : हॉस्पिटल रोड, आगरा-3

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

सत्तरहवाँ संस्करण : 1987

मूल्य: 18·00

कम्पोजिंग : मंजू कम्पो० हाउस, आगरा

मुद्रक : रवि मुद्रणालय, आगरा-2

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रद्धेय गुरुवर

श्री बी. पी. जौहरी

भूतपूर्व कुलपति, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

को

सादर समर्पित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूमिका

सत्तरहवाँ संस्करण

'इतिहास-शिक्षण' का सत्तरहवाँ संस्करण प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस नवीन संस्करण में छात्राध्यापकों की पाठ्यक्रम तथा परीक्षा सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दृष्टि से पाठ्यवस्तु को आयोजित तथा अभिवृद्धित करने का यथाशक्ति प्रयास किया गया है। पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी एवं आधुनिकतम बनाने के लिए, इस संस्करण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के नवीन पाठ्यक्रमानुसार "शिक्षण में नवाचार" नामक अध्याय जोड़ा गया है। यह संस्करण समस्त हिन्दी भाषी राज्यों के समस्त विश्वविद्यालयों के छात्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ है।

हमें आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास भी है कि पुस्तक सदैव की भाँति शिक्षकों और छात्राध्यापकों की माँगों के अनुकूल होगी। पर फिर भी यदि उनको इसमें कहीं कोई अभाव खटके, तो हम उनके सभी सुझावों को सधन्यवाद स्वीकार करेंगे।

6/67-68 स्वामीनगर
दयालबाग, आगरा–5

—गुरसरनदास त्यागी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विषय-सूची

अध्याय | पृष्ठ

1. इतिहास का अर्थ एवं उसका स्वरूप — 1–12
Meaning of History and Its Nature
विषय-प्रवेश, इतिहास का जन्म, प्रबोधक इतिहास का जन्म, वैज्ञानिक इतिहास का उद्गम, इतिहास के सम्बन्ध में परस्पर विरोधी धारणाएँ—इतिहास का अर्थ एवं परिभाषा, इतिहास की आधुनिक धारणा, इतिहास का स्वरूप—क्या इतिहास एक विज्ञान है, इतिहास एक विज्ञान है; इतिहास : एक कला, इतिहास : विज्ञान एवं कला दोनों हैं, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

2. विद्यालय-पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्त्व — 13-19
Importance of History in the School-Curriculum
विषय-प्रवेश, शिक्षालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्त्व, राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास का महत्त्व, जीवन में इतिहास की उपादेयता, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

3. इतिहास शिक्षण के उद्देश्य, प्राप्य उद्देश्य तथा मूल्य — 20–36
Aims, Objectives and Values of Teaching History
विषय-प्रवेश, उद्देश्यों के निर्धारक, इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य, (अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य—(1) इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना, (2) वर्तमान को स्पष्ट करना, (3) मानसिक शक्तियों का विकास, (4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, (5) राष्ट्रीय भावना का विकास, (6) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास, (ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य, वर्तमान परिस्थितियों में भारत में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य, शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य—प्राइमरी स्तर पर उद्देश्य, जूनियर स्तर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय पृष्ठ

पर उद्देश्य, हायर सेकेण्डरी स्तर पर उद्देश्य, इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य, इतिहास-शिक्षण के मूल्य—नैतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक, अनुशासनात्मक, सूचनात्मक, राष्ट्रीय एवं नागरिक मूल्य, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

4. इतिहास-शिक्षण और राष्ट्रीय एकता 37–42
History Teaching and National Integration
विषय-प्रवेश, राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता, राष्ट्रीय एकता का अर्थ, राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यभाग, राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यक्रम—प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, विश्वविद्यालय स्तर, प्रकरण—भारतीय इतिहास पर भूगोल का प्रभाव, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

5. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का कार्यभाग 43–48
Role of History in the Development of International Understanding
विषय-प्रवेश, अन्तर्राष्ट्रीयता का अर्थ, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के साधन, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का कार्यभाग, इतिहास का पाठ्यक्रम—प्रारम्भिक स्तर, माध्यमिक स्तर, विश्वविद्यालय स्तर, निष्कर्ष, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

6. इतिहास का पाठ्यक्रम 49–70
History Curriculum
विषय-प्रवेश, पाठ्यक्रम का अर्थ, पाठ्यक्रम-निर्माण के सिद्धान्त—(1) एकता का सिद्धान्त, (2) रुचि का सिद्धान्त, (3) समन्वय तथा केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त, (4) शैक्षिक मूल्य का सिद्धान्त, (5) समय का सिद्धान्त, (6) आन्तरिक परिस्थितियाँ, (7) वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त, (8) सामाजिक अनुरूपता का सिद्धान्त, पाठ्यक्रम निर्धारण के लाभ, तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञानिक आधार—(1) सांस्कृतिक-युग सिद्धान्त, (2) जीवन-गाथा सिद्धान्त, तथ्यों का संगठन---(1) एक-समान-केन्द्र-विधि, (2) कालक्रम-विधि, (3) प्रकरण विधि के गुण, (4) परावर्तन विधि, इतिहास के पाठ्यक्रम के विषय, विभिन्न कक्षाओं के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम की रूपरेखा, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

7. इतिहास का वर्गीकरण 71–81
Classification of History
विषय-प्रवेश, इतिहास का वर्गीकरण—निवास-स्थान के अनुसार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय पृष्ठ

इतिहास का वर्गीकरण—(अ) विश्व-इतिहास, (ब) राष्ट्रीय इतिहास, (स) प्रान्तीय इतिहास, (द) राष्ट्रीय इतिहास, राजनीतिक इतिहास, आर्थिक, इतिहास, सामाजिक इतिहास, विभिन्न विभागों में समन्वय की आवश्यकता, निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तरात्मक प्रश्न।

8. स्थानीय इतिहास का महत्त्व 82–85
Importance of Local History
विषय-प्रवेश, स्थानीय इतिहास का महत्त्व, स्थानीय इतिहास के लाभ, इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थानीय इतिहास की विषय सामग्री, स्थानीय इतिहास के अध्ययन की विधियाँ, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

9. इतिहास में कक्षा-शिक्षण के सिद्धान्त 86–100
Principles of Class-Teaching in History
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त, विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इतिहास-प्रतिपादन—(1) प्राइमरी स्तर, श्यामपट का प्रयोग, पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग, चित्र, प्रतिरूप, मानचित्र का प्रयोग, समय-ज्ञान का विकास, इतिहास-शिक्षण में क्रियाशीलता की आवश्यकता, (2) माध्यमिक स्तर—(अ) प्रारम्भिक खण्ड, (ब) माध्यमिक खण्ड, (स) अन्तिम खण्ड, पाठ्य-पुस्तक एवं अतिरिक्त वाचन, श्यामपट का प्रयोग, कक्षा वाद-विवादों का उपयोग, सूत्र-पद्धति का उपयोग, लिखित कार्य, ऐतिहासिक समुदाय, प्रतिपादन की विषय-सामग्री, छात्रों द्वारा वैयक्तिक तथा सामूहिक कार्य, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

10. इतिहास शिक्षण की विधियाँ 101–130
Methods of Teaching History
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण-विधियाँ—1. कथात्मक विधि, 2. खण्ड-विधि, 3. स्रोत या आधार विधि, 4. पाठ्य-पुस्तक विधि, 5. प्रयोगशाला विधि, 6. समस्या विधि, 7. योजना विधि, 8. व्याख्यान विधि, 9. वाद-विवाद विधि, 10. समाजीकृत-अभिव्यक्ति विधि, तद्सम्बन्धित गुण-दोष, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

11. इतिहास-शिक्षण की प्रविधियाँ 131–140
Techniques of Teaching History
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षण की प्रविधियाँ, 1. प्रश्न प्रविधि, प्रश्नों का वर्गीकरण, इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रश्नों के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय पृष्ठ

प्रकार एवं लक्षण, प्रश्न-प्रविधि में ध्यान देने योग्य बातें 2. कथन प्रविधि, 3. अभ्यास प्रविधि, 4. परीक्षा प्रविधि, 5. उदाहरण प्रविधि, 6. नाटकीय प्रविधि, 7. कार्य-निर्धारण प्रविधि—उत्तम कार्य-निर्धारण की विशेषताएं, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

12. विवादास्पद मामलों का शिक्षण 141–144
Teaching of Controversial Issues
विषय-प्रवेश, विवादास्पद प्रश्न क्यों ?, विवादास्पद प्रश्नों के रूप, विवादास्पद प्रश्नों की शिक्षण-पद्धति, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

13. इतिहास शिक्षण के उपकरण 145–167
Aids of Teaching History
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षण के उपकरण—(अ) स्रोत, (ब) श्रव्य-दृश्य सामग्री, श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण–(1) जार्विस, (2) एडगर डेल (3) आहलूवालिया द्वारा किया गया वर्गीकरण, इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले उपकरण—श्यामपट, फैल्ट या फ्लैनेल बोर्ड, विज्ञप्ति पट, लपेट फलक, मॉडल्स, रेखाकृति, कठपुतलियाँ, चित्र, मानचित्र, ग्राफ, चार्ट, युद्ध-योजनाएँ, ग्रामोफोन, रेडियो-प्रसारण, टेप-रिकार्डर, मैजिक लैन्टर्न, पारचित्रदर्शी, फिल्म, टेलीविजन, क्रियात्मक उपकरण, पाठ्य-पुस्तकें, अतीत को वास्तविक बनाना, निबन्धात्मक प्रश्न, वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तरात्मक प्रश्न ।

14. इतिहास-शिक्षण में पर्यटन की उपादेयता 168–172
Importance of Excursion in History Teaching
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षण में पर्यटन का महत्त्व, ऐतिहासिक पर्यटन की योजना बनाने में ध्यान रखने योग्य बातें, निबन्धात्मक, वस्तुनिष्ठ एवं लघु उत्तरात्मक प्रश्न ।

15. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक 173–184
History Text-Book
विषय-प्रवेश, पाठ्य-पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, इतिहास-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक का स्थान, इतिहास की पाठ्य-पुस्तक के प्रकार, पाठ्य-पुस्तकों के गुण या विशेषताएँ, पाठ्य-पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मापदण्ड, इतिहास की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन, पाठ्य-पुस्तकों के सुधार हेतु शिक्षा-आयोग के विचार, इतिहास की पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय — पृष्ठ

16. इतिहास में अभिनय — 185–192
Dramatization in History
विषय-प्रवेश, अभिनय-कला का महत्त्व, अभिनय-कला के लाभ, अभिनय-कला की सीमाएँ, अभिनय के प्रकार, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

17. इतिहास-कक्ष एवं पुस्तकालय — 193–200
History-Room and Library
विषय-प्रवेश, इतिहास-कक्ष की आवश्यकता, इतिहास-कक्ष की सामग्री तथा उसकी व्यवस्था, इतिहास-पुस्तकालय, महत्त्व, वस्तु-संग्रहालय, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

18. इतिहास में समय-ज्ञान — 201–207
Time-Sense in History
विषय-प्रवेश, समय-ज्ञान का अर्थ, समय-ज्ञान के तत्त्व—स्थिति, समय की दूरी, समय की अवधि, समम का सम्बन्ध, समय-ज्ञान विकसित करने के लिए साधन—समय-चार्ट, समय-रेखा, समय-ग्राफ, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

19. इतिहास-शिक्षण में समन्वय — 208–218
Correlation in History Teaching
विषय-प्रवेश, समन्वय का अर्थ, समन्वय के प्रकार, इतिहास का दूसरे विषयों से समन्वय—इतिहास तथा साहित्य, इतिहास तथा नागरिक-शास्त्र, इतिहास तथा भूगोल, इतिहास तथा हस्तकार्य, इतिहास तथा अर्थशास्त्र, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

20. इतिहास-शिक्षक — 219–225
History-Teacher
विषय-प्रवेश, इतिहास-शिक्षक के गुण—विषय एवं व्यवसाय में निष्ठा, विषय का ज्ञान, विश्व-इतिहास का ज्ञान, निष्पक्षता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रान्तीय इतिहास का ज्ञान, कथा-वाचक, इतिहास-शिक्षण का ज्ञान, नागरिक-शास्त्र का ज्ञान, सामयिक घटनाओं के सुपरिचित, शिक्षक का व्यक्तित्व, पर्यटन योग्यता, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न।

21. इतिहास में सामयिक घटनाएँ — 226–221
Current Events in History
विषय-प्रवेश, इतिहास में सामयिक घटनाओं का महत्त्व, सामयिक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय पृष्ठ

घटनाओं के उद्देश्य, सामयिक घटनाओं के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें, सामयिक घटनाओं का शिक्षण, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

22. इतिहास में मूल्यांकन — 232–255
Evaluation in History

विषय-प्रवेश, मूल्यांकन का अर्थ, मूल्यांकन और मापन, मूल्यांकन के प्रयोजन, मूल्यांकन की प्रविधियाँ—(क) निबन्धात्मक परीक्षा, (ख) नई प्रणाली या वस्तुनिष्ठ परीक्षण, नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रकार, नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रश्न, नवीन प्रणाली के गुण, नवीन प्रणाली के दोष, इतिहास-शिक्षक तथा मूल्यांकन कार्यक्रम, माध्यमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य, माध्यमिक स्तर पर इतिहास शिक्षण के उद्देश्य, जूनियर कक्षाओं के स्तर के प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त, माध्यमिक स्तर के प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त, उच्च-स्तरीय प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त, निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।

23. उद्देश्यमुखी मूल्यांकन तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की रचना — 256–280
Objective Based Evaluation and Construction of Objective Type Tests

विषय-प्रवेश, उद्देश्यमुखी मूल्यांकन, उद्देश्यमुखी परीक्षण तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण में अन्तर, वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की निर्माण-प्रक्रिया, निबन्धात्मक वस्तुनिष्ठ, एवं लघु उत्तरात्मक प्रश्न ।

24. शिक्षण में नवाचार — 281–298
Innovation in Teaching

विषय-प्रवेश, सूक्ष्म-शिक्षण—सूक्ष्म शिक्षण क्या है ? सूक्ष्म शिक्षण तथा अभ्यास शिक्षण में अन्तर, सूक्ष्म शिक्षण के सोपान, शिक्षण के कौशल, सूक्ष्म शिक्षण की प्रयोगशाला, सूक्ष्म शिक्षण के लाभ, सूक्ष्म शिक्षण की सीमाएँ, अभिक्रमित अनुदेशन या शिक्षण, अभिक्रमित, अधिगम तथा परम्परागत शिक्षण में अन्तर, अभिक्रमित शिक्षण के भेद, समूह शिक्षण, दूरदर्शन द्वारा शिक्षा, प्रश्न ।

परिशिष्ट — 299–344

1. इतिहास में हरबार्ट की पंचपद प्रणाली के आधार पर पाठ-योजना बनाने के लिए कुछ संकेत तथा पाठ-योजनाएँ — 301

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अध्याय		पृष्ठ
2.	इकाई-योजना तथा उस पर आधारित दैनिक पाठ-योजना	311
3.	मूल्यांकन-प्रक्रिया तथा पाठ-योजना	317
4.	समय-रेखाएँ एवं समय-ग्राफ	333
5.	पानीपत की युद्ध-योजना	336
6.	विभिन्न स्तरों के लिए प्रश्न-पत्र	338
	विशेष अध्ययन योग्य पुस्तकें	343

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

I

इतिहास का अर्थ एवं उसका स्वरूप

MEANING OF HISTORY AND ITS NATURE

"History has always been what human beings thought about the past, is still what each of us thinks about the past, and in this sense, has always been of creation of the past."

—Henery Johnson.

विषय-प्रवेश

आज प्रायः पौधों का इतिहास (History of Plants), प्राणियों का इतिहास (History of Animals), गणित का इतिहास (History of Mathematics) आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु जब सामान्य रूप में 'हिस्ट्री' (History) शब्द का प्रयोग किया जाता है तो इसका अर्थ है—'मानव का इतिहास' (History of Man)। इसके अन्तर्गत उन शेष चिह्नों (Traces) का अध्ययन किया जाता है जिन्हें मानव ने विश्व में अपने अस्तित्व द्वारा अपने विचारों, भावनाओं तथा कार्यों के रूप में छोड़ा है।

इतिहास अपने व्यापक अर्थ में प्रत्येक वस्तु या घटना है जो कभी घटित हुई। यह स्वयं अतीत है चाहे वह किसी रूप में क्यों न हो। परन्तु अतीत को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देखा जा सकता है। इसके विषय में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उन शेष चिन्हों से ज्ञात हो सकता है जो उस समय की परिस्थितियों, मनुष्यों आदि ने किसी न किसी रूप में छोड़े हैं। अतः अतीत के तथ्यों के शेष चिन्ह ही इतिहास का निर्माण करते हैं।

इतिहास का जन्म : Origin of History—वस्तुतः इतिहास का प्रारम्भ उसी समय से होता है जबसे मानव पृथ्वी पर अवतरित हुआ है। परन्तु मानव के कार्यों और विचारों को हेरोडोटस (Herodotus) ने 500 ई० पू० में क्रमबद्ध रूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दिया है। इसीलिए उसको इतिहास का जनक कहा जाता है। उसने, जो घटनाएँ विश्व में घटीं, उनके विषय में अन्वेषण किया और अन्वेषणों के आधार पर उन घटनाओं का वर्णन किया। इन वर्णनात्मक घटनाओं को उसने 'इतिहास' (History) का नाम दिया। वह पहला व्यक्ति था जिसने घटनाओं को कथा के रूप में लिखा और इसीलिए उसको कथात्मक इतिहास (Story-Telling-History) का जन्मदाता माना जाता है।[1]

प्रवोधक इतिहास का जन्म : Origin of Didactic History—जिस प्रकार हेरोडोटस ने कथात्मक इतिहास को जन्म दिया, उसी प्रकार 411 ई० पू० में थ्यूसीडाइड्स (Thucydides) ने प्रबोधक इतिहास को जन्म दिया। उसने तथ्यों की उपयोगिता को अपना पथ-प्रदर्शक वनाया तथा इन तथ्यों का संकलन करके उस समय की राजनीतिक दशा से उनका सम्बन्ध स्थापित किया। हेनरी जॉनसन ने लिखा है—"उसका उद्देश्य स्पष्टतः उपदेशात्मक था। उसको आशा थी कि उसका कार्य राजनीतिक पाठ प्रदान करने में समर्थ होगा। ऐसा इस कारण नहीं हो सकेगा क्योंकि उसके कार्य द्वारा स्थितियों को राजनैतिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, वरन् इसलिए होगा कि वह राजनीतिक दशाओं तथा घटनाओं का 'वास्तविक चित्र' प्रस्तुत करता है जो स्वयं राजनीतिक पाठ प्रदान करेगा। उसने जो कुछ भी लिखा है, वह उपदेशात्मक या प्रबोधक इतिहास है और वह इस क्षेत्र में शिक्षक तथा आदर्श के रूप में कार्य करेगा।"[2]

वैज्ञानिक इतिहास का उद्गम : Origin of Scientific History—इसके उद्गम के लिए विश्व जर्मन जाति का ऋणी है। सर्वप्रथम 19वीं शताब्दी में रैंक (Ranke) ने इतिहास का निर्माण वैज्ञानिक ढंग से किया। सन् 1824 ई० में उसकी एक पुस्तक प्रकाशित हुई, जिसमें उसने घटना की यथार्थता पर बल दिया और निष्पक्ष रूप से घटनाओं का वर्णन किया। बाद में निबूर (Niebhur) ने इस क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया, जिसका व्यापक प्रभाव यूरोप के विभिन्न देशों पर पड़ा।

---

1. "What he wrote was story-telling history and in this field he remains a master and model."

—Henry Johnson : *Teaching of History*, p. 11.

2. "His aim was distinctly didactic. He hoped that his work would teach political lessons; not because they were presented as such, but because, 'a true picture' of political conditions and events would itself convey political lesson. Wha the wrote was didactic history, and in this field he remains a master and model."

—Henry Johnson : *op. cit.*, p. 11.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास के सम्बन्ध में परस्पर विरोधी धारणाएँ
Conflicting Conceptions About History

19वीं शताब्दी से पूर्व इतिहास केवल साहित्य एवं वीर गाथाओं से सम्बन्धित था। इन वीर गाथाओं में अवास्तविक एवं काल्पनिक अतिशयोक्तियों को भर दिया जाता था। इस कारण सत्य का स्वरूप विकृत हो जाता था। इस रूप के परिणामस्वरूप इतिहास के विषय में बहुत-सी धारणाएँ प्रचलित हो गयीं। कुछ व्यक्ति इतिहास को कपोल-कल्पित कहानियों तथा असत्य तथ्यों का संकलन मात्र समझने लगे। वैज्ञानिक विचारधारा के प्रसार से पूर्व इतिहास को उपन्यास माना जाता था। इंगलैण्ड के प्रधानमन्त्री सर राबर्ट वालपोल (Sir Robert Walpole) को उनकी बीमारी में जब उसकी पत्नी ने इतिहास पढ़ने के लिए दिया, तब वालपोल चिल्लाकर बोला—'हाँ, कोई भी वस्तु लेकिन इतिहास नहीं होना चाहिए।' नैपोलियन 'इतिहास को सर्वसम्मत काल्पनिक कहानियाँ, कहा करता था।[1] स्पेन्सर का विचार है—इतिहास पथ-प्रदर्शन के लिए महत्त्वहीन एवं अनुपयुक्त है, उसका कथन है कि 'यदि तुम चाहते हो तो इतिहास के तथ्यों को मनोरंजन के लिए पढ़ो, यह कहकर अपनी चापलूसी मत करो कि वे शिक्षाप्रद हैं।"[2] फ्रांस में विषयों का निर्धारण करते समय इतिहास को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने हेतु कुछ निरीक्षकों से जो परामर्श लिया गया, वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। एक निरीक्षक ने कहा कि इतिहास की शिक्षा निरर्थक है। जो पढ़ना जानते हैं, वे इतिहास का अपने लिए अध्ययन कर सकते हैं। दूसरे निरीक्षक ने कहा कि इतिहास में शिक्षण असम्भव है। तीसरे ने कि कहा इतिहास का शिक्षण हानिकारक है। इसके द्वारा छात्रों में व्यर्थ का अभिमान विकसित किया जाता है।

19वीं शताब्दी में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ, जिसने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्ति उत्पन्न की। इसके परिणामस्वरूप अब इतिहास को मानव-जीवन के क्रमिक सद्विकास की अविरल कहानी माना जाता है। इस क्रान्ति के पूर्व तथा बाद में इतिहास के सम्बन्ध में कुछ ऐसी धारणाएँ प्रचलित हुईं, जिनके द्वारा इतिहास के सत्य स्वरूप की विवेचना करने का प्रयत्न किया गया; उदाहरणार्थ—क्रामवेल (Cromwell) ने घोषणा की कि इतिहास के रूप में ईश्वर ने अपने को व्यक्त किया है। फ्राइड (Freud) का कथन है कि इतिहास शताब्दियों से सत्यासत्य की व्याख्या करता चला आ रहा है। जोन्स का मत है कि—"इतिहास जीवन के अनुभवों की खान है और आज का युवक उसका अध्ययन इसलिए करता है, जिससे कि वह जाति

1. "What is history ?" said Napolean, "but a fable agreed upon."
2. "Read them (the facts of history) if you like, for amusement, but do not flatter yourself that they are instructive."

—Spencer.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के अनुभवों से लाभ उठा सके।"[1] हरबार्ट (Herbart) के शिष्य ज़िलर (Zille
ने इतिहास को केन्द्रीय विषय बनाया और इसको आधार बनाकर अध्ययन-कोर्स
निर्माण किया।

इतिहास का अर्थ एवं परिभाषा
Meaning & Definition of History

इतिहास का शाब्दिक अर्थ : Meaning of History—'History' शब्द
उत्पत्ति लैटिन तथा ग्रीक शब्द 'Historia' से मानी जाती है, जिसका अर्थ है—जान
(Knowing)। भारतीय परम्परा के अनुसार 'इतिहास' शब्द का अर्थ है—'ऐसा
हुआ'। इस शाब्दिक अर्थ द्वारा अतीत की घटनाओं की ओर संकेत दिया जाता है
'इतिहास' शब्द के अतिरिक्त हमारे देश में 'तवारीख' शब्द और प्रचलित है। परन्तु
शब्द इतिहास के वास्तविक अर्थ का बोध कराने में असफल है, क्योंकि 'तवारीख
शब्द तारीख का बहुवचन है। इतिहास केवल तिथियों या तारीखों का ही संग्रह मा
नहीं है वरन् इनसे अधिक है।

इतिहास की परिभाषा : Definition of History—इतिहास की विभि
परिभाषाएँ उनकी व्याख्याओं सहित नीचे दी जा रही हैं—

'इतिहास' शब्द का दो अर्थों में प्रयोग—इस शब्द का घटनाओं का संक
तथा स्वयं एक घटना के रूप में—प्रयोग किया गया है। इतिहास के निर्माण के लि
घटना का होना आवश्यक है। जब इतिहास स्वयं एक घटना है, तो प्रश्न यह उठ
है कि वह घटना कब, कहाँ, कैसे और क्यों घटी ? इतिहास इन प्रश्नों का ही उत्त
है। हेनरी जॉनसन का विचार है कि—'इतिहास' विस्तृत रूप में प्रत्येक घटना है
कि कभी घटित हुई।" इस प्रकार वह स्वयं अतीत काल से सम्बन्धित है; अर्थ
भूतकालीन घटनाओं का उल्लेख ही इतिहास है। इसका अर्थ यह है कि उसमें प्राची
काल से लेकर एक क्षण पहले समाप्त हुए समय तक की सभी घटनाओं का वर्णन
जाना चाहिए। परन्तु इसका आशय यह नहीं है कि उसमें अतीत काल में सब जी
अथवा विश्व में हुई सभी उथल-पुथल का विचार होना भी आवश्यक हो। इति
में केवल मानव-जीवन की घटनाओं का ही उल्लेख होता है।

डॉ० राधाकृष्णन् ने इतिहास को राष्ट्र की स्मरण-शक्ति कहा है। जिस प्र
वैयक्तिक ऐक्य में स्मरण-शक्ति का बहुत महत्त्व है उसी प्रकार राष्ट्र की जातियों
लिए यह आवश्यक है और जातियों की स्मरण-शक्ति ही इतिहास है। उनके
कथन में पर्याप्त सत्यता है।

एक विद्वान् ने इतिहास को 'नवद्वार कलैण्डर' कहा है। इसमें उसने इति

1. 'History is a veritable mine of life experiences and the you
of today studies history that he may profit by the experienc
of the race."
—Jon

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को केवल तिथि बताने या देने वाला कहा है। परन्तु इतिहास केवल तिथि ही नहीं बताता, बल्कि 'कैसे', 'कहाँ' और 'क्यों' जैसे प्रश्नों का भी उत्तर देता है।

कुछ विद्वानों का विचार है कि इतिहास केवल युद्धों का ही विवेचन करता है, लेकिन उन्होंने इतिहास के दूसरे पक्ष को नहीं देखा जबकि इतिहास मानव समाज के प्रत्येक पहलू का वर्णन करता है।

इतिहास की सबसे उपयुक्त परिभाषा रेपसन महोदय ने दी है, जो कि सत्य है—"इतिहास घटनाओं या विचारों की उन्नति का एक सुसम्बद्ध विवरण है।"[1] इसमें इतिहास की वैज्ञानिकता को भी स्पष्ट किया गया है। विज्ञान एक सुसंगठित एवं क्रमबद्ध ज्ञान होता है। इस परिभाषा में घटनायें एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं जो इतिहास का निर्माण करती हैं। घटनाओं के तारतम्य को लेकर तथा उनका पूर्ण वर्णन करने से इतिहास की रचना होती है।

प्रो० घाटे के अनुसार—"इतिहास हमारे सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा-जोखा है।"[2] घाटे ने आगे लिखा है कि इतिहास को काल और देश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है क्योंकि इतिहास उस काल से मानव का अध्ययन करता है, जब से वह पृथ्वी पर अवतरित हुआ है। इस प्रकार 'पृथ्वी पर मानव-जीवन के विकास का अध्ययन ही इतिहास है।"

जॉन ह्यूजिंगा के अनुसार—"इतिहास वह बौद्धिक स्वरूप है जिसमें सभ्यता अपने अतीत को चित्रित करती है।"[3]

हेनरी जॉनसन का मत है कि "इतिहास स्वयं विकास का रूप है और इसलिए यह पूर्णतया नवीन कभी नहीं रहा। इतिहास, अन्वेषण के रूप में प्रारम्भ हुआ और अब भी अन्वेषण है। इतिहास ने लेखा-जोखा का रूप धारण कर लिया था और अब भी वह एक लेखा है। इतिहास वह था जो वास्तविक रूप में घटित हुआ और अब भी उसका वही रूप है। इतिहास वही रहा है जो मानव ने अतीत के प्रति सोचा और अब भी वही है जो हम सब अतीत के विषय में सोचते हैं। इस प्रकार इतिहास सदैव से अतीत की कृति रहा है।"

मेटलेण्ड का विचार है, "मानव ने जो कुछ किया और कहा है, यहाँ तक कि जो कुछ उसने सोचा है, वह इतिहास है।"[4]

---

1. "History is a connected account of the course of events or progress of ideas." —Rapson.
2. "It is scientific study and a record of our complete past." —Ghate.
3. "History is the intellectual form in which civilization renders account to itself of its past." —Huizinga, John : *Philosophy & History*, p. 9.
4. "What men have done and said and above all, what they have thought that is History." —Maitland.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास मानव-जीवन के विकास की कहानी है। इसमें अतीत के मानव-जीवन का ऐसे ढंग से विवेचन किया जाता है जिसमें वर्तमान के मानव-जीवन को सरलता से समझा जा सके। इतिहास मानव द्वारा निर्मित संस्थाओं के उद्गम, उनके विकास एवं उनके अतीतकालीन भेद तथा उनके वर्तमान स्वरूप आदि पर प्रकाश डालकर मानव को मानव से परिचित कराता है। अतः इस विश्व में हुई मानव की समस्त गतिविधियों का वर्णन इतिहास में किया जाता है। इस प्रकार सम्पूर्ण विश्व मानव का निवास-स्थान है और इतिहास उसके विचारों, कार्यों, आन्दोलनों आदि का वर्णन करता है।

इतिहास की आधुनिक धारणा
Modren Concept of History

19वीं शताब्दी के अन्तिम चरण तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब विज्ञान का बोलबाला हो गया था, तब इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान के रूप में देखा जाने लगा था। केवल इतिहासकारों ने ही नहीं, वरन् राजनीतिशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने भी इस 'विज्ञानों के विज्ञान' (Science of Sciences) का अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया था। फिर भी इतिहास की प्रकृति के विषय में विवाद बना रहा। कुछ विद्वानों ने इतिहास से 'कारण' (Cause) तथा 'कार्य-कारण भाव' (Causality) को निकालने पर बल दिया। इसके विपरीत दूसरे विद्वानों ने इनके कारण इतिहास को समाज के सच्चे विज्ञान या विज्ञानों के विज्ञान के रूप में देखा। आज कोई भी इस बात से सहमत नहीं होता कि इतिहास अलौकिक शक्तियों के हस्तक्षेप से प्रभावित होता है। अब सामान्यतः यह विश्वास किया जाने लगा है कि इतिहास को उन्हीं विधियों का अनुसरण करके समझा जा सकता है जिनका अनुसरण भौतिक तथा सामाजिक वैज्ञानिक करते हैं। इसी कारण आज इतिहास को उस अध्ययन क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जो वास्तविकता का वर्णन करता है। इस अध्ययन-क्षेत्र में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके ही वास्तविकता की खोज की जाती है।

आज इतिहासकार इतिहास का निर्माण करने के लिए सर्वप्रथम तथ्यों (Facts) का संग्रह करता है। इसके उपरान्त वह उन तथ्यों का सत्यापन (Verification) करता है। तथ्यों का सत्यापन उसके समक्ष एक गम्भीर समस्या उत्पन्न कर देता है। समस्या यह है कि अतीत के अवशेष उसके समक्ष परिवर्तित तथा विकृत रूप में आते हैं। परन्तु आधुनिक युग ने ऐसे साधन उपलब्ध करा दिये हैं कि इनके परिवर्तित एवं विकृत रूप के होते हुए भी इतिहासकार वास्तविकता को खोजने में सफल हो जाता है। परन्तु जब वह अतीत के लिखित अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि के द्वारा इतिहास का निर्माण करता है, तब उसे तथ्यों के सत्यापन में कठिनाई की अनुभूति करनी पड़ती है। उन अभिलेखों, प्रतिवेदनों आदि की विषय-वस्तु अविश्वसनीय हो सकती है। उस समय इतिहासकार को दूसरी लिखित सामग्री तथा अन्य प्रमाणों का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रयोग करना पड़ता है। तभी वह वास्तविकता को प्रस्तुत करने में समर्थ हो सकता है। परन्तु ऐसा करना सभी क्षेत्रों में सम्भव नहीं है क्योंकि उनसे सम्बन्धित दूसरी अन्य सामग्री एवं प्रमाण प्राप्त नहीं होते हैं।

जब इतिहासकार तथ्यों की विश्वसनीयता का निर्धारण कर लेता है तब उसके बाद वह तथ्यों को उनके महत्त्व के अनुसार वर्गीकृत करता है। इसके उपरान्त वह वर्गीकरण की शुद्धता का सत्यापन करता है। ऐसा करने में वह कल्पना तथा पूर्व-धारणाओं का प्रयोग करता है। इनका प्रयोग करना उसके लिए अनिवार्य है। यहाँ इतिहासकार का काल्पनिक होने का अर्थ यह नहीं है कि वह तथ्यों का आविष्कार करे। परन्तु उसकी कल्पना उसके स्रोतों द्वारा प्रदान की जाने वाली सूचनाओं से बँधी रहती है। अतः वह घटनाओं का आविष्कार नहीं कर सकता है। कल्पना तथा पूर्वधारणाओं के प्रयोग के कारण ही गेटे (Goethe) ने कहा था कि इतिहास की समय-समय पर पुनः रचना की जानी चाहिए; क्योंकि प्रत्येक सन्तति नवीन रुचियों तथा वस्तुओं को नवीन ढंग से देखने तथा उनके प्रति नवीन दृष्टिकोण लेकर आगे बढ़ती है। ये नवीन दृष्टिकोण एवं रुचियाँ ही पूर्वधारणाएँ कहलाती हैं। अतः इन पूर्वधारणाओं से प्रभावित इतिहास को वास्तविकता पर पहुँचाने के लिए समय-समय पर उसकी पुनः रचना करना अनिवार्य है।

अन्त में, इतिहासकार वर्गीकृत (Classified) तथ्यों का विश्लेषण करके एक सामान्य सिद्धान्त का निर्धारण करता है। अतः उक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता कि आधुनिक धारणा के अनुसार इतिहास समाज का एक सच्चा विज्ञान है जो मानव समाज की विवेचना वैज्ञानिक विधि से करता है।

इतिहास का स्वरूप
Nature of History

इतिहास का स्वरूप क्या है? इतिहास विज्ञान है या कला? इतिहास से सम्बन्धित इन समस्याओं पर पर्याप्त समय से वाद-विवाद चला आ रहा है। कुछ विद्वान इतिहास को केवल विज्ञान बताते हैं तो कुछ इसे कला बतलाते हैं। इसके वास्तविक स्वरूप को देखना ही यहाँ हमारा ध्येय है, इसके स्वरूप के सम्बन्ध में प्रचलित धारणाओं को देखने से पूर्व विज्ञान क्या है? यह देखना आवश्यक है। विज्ञान वह नियमित ज्ञान है जो कि प्रयोगात्मक तथा निरीक्षणात्मक ढंग से प्राप्त किया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि "प्रकृति के किसी घटना के कार्य कारण के सम्बन्ध में ज्ञान के क्रमबद्ध संग्रह को विज्ञान कहते हैं।"[1] इस प्रकार विज्ञान ज्ञान का वह भण्डार है जिसमें निरीक्षण, परीक्षण एवं प्रयोग द्वारा प्रकृति की समानता एवं असमानता का अध्ययन किया जाता है। परन्तु इसके लिए जानकारी ही प्राप्त करना आवश्यक नहीं है, वरन् उसे क्रमबद्ध भी होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए एम० पाइनकेयर ने कहा है कि

1. "Science is systematised body of knowledge concerning the relationship between cause and effect of a particular phenomena."

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"विज्ञान तथ्यों से इस प्रकार बना है जिस प्रकार पत्थरों से एक मकान बना होता है, परन्तु केवल तथ्यों के एकत्रीकरण को उसी भाँति विज्ञान नहीं कहा जा सकता जिस प्रकार पत्थरों के ढेर को मकान नहीं कहा जा सकता।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि वही ज्ञान विज्ञान की श्रेणी में रखा जा सकता है जो क्रमबद्ध तथा तर्कपूर्ण एवं प्रमाण-युक्त हो। जिस प्रकार मकान के लिए चूना या गारे की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार ज्ञान को विज्ञान बनाने हेतु तर्क एवं प्रमाणों की आवश्यकता है। इसीलिए हक्सले (Huxley) ने कहा है कि—"मैं उस ज्ञान को विज्ञान मानता हूँ जो तर्क तथा प्रमाणों पर आधारित है।" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विज्ञान वैज्ञानिक विधियों से सत्यासत्य की खोज करता है। प्रो० गूच (Gooch) ने विज्ञान की घटनाओं को क्रमानुसार कारण सूचित करने वाला कहा है।

क्या इतिहास एक विज्ञान है ? : Is History a Science ?—इतिहास की वैज्ञानिकता के विषय में बहुत-से विद्वानों को सन्देह है। इन विद्वानों ने इसके विपक्ष में अधोलिखित तर्क दिए हैं—

(1) इतिहास किसी निश्चित सिद्धान्त अथवा आदर्शों पर आधारित नहीं है। इसके द्वारा हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। जब इसके द्वारा किसी निश्चित सिद्धान्त की स्थापना नहीं हो पाती तो उसे विज्ञान की संज्ञा किस प्रकार प्रदान की जा सकती है। इसके तथ्यों में सदा विषमता होती है। उनमें एकरूपता का अभाव है। इसमें भौतिक विज्ञान तथा गणित की भाँति निष्कर्ष नहीं मिलते, जैसे गणित में दो और दो 'चार' होते हैं, जो प्रत्येक काल तथा परिस्थिति में अपरिवर्तनीय होते हैं।

(2) इतिहास की वैज्ञानिकता के विरुद्ध सबसे बड़ा तर्क यह है कि इतिहास एक ऐसा विषय है जो मनुष्य की इच्छा तथा उसके कार्यों का विवेचन करता है। क्योंकि मनुष्य की इच्छाओं पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं लगाया जा सकता है तथा वह अपने विचारों के लिए पूर्ण स्वतन्त्र है, अतः ऐसी स्थिति में उसके द्वारा किसी निश्चित नियम का निर्धारण नहीं हो सकता।

इतिहास एक विज्ञान है : History is a Science—जो विद्वान इसकी वैज्ञानिकता की पुष्टि करते हैं, उनका मत है कि इतिहास की वैज्ञानिकता के विरुद्ध जो विचारधारायें हमें प्राप्त हैं, उन्हें हम व्यर्थ अथवा निराधार नहीं कह सकते। इन विचारधाराओं की वास्तविकता स्वीकार करनी पड़ेगी। यह पूर्णतया सत्य है कि इति-हास भौतिक-विज्ञान की भाँति एक शुद्ध विज्ञान नहीं है और न इसमें प्रयोग किए जा सकते हैं। परन्तु इतिहास अनेक घटनाओं का विवरण है, जो किस प्रकार, कब, क्यों

---

1. "Science is built up of facts as a house is built of stones, but an accumulation of facts is no more a science than a heep of tsones is a house." —Poincare.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा कहाँ घटित हुई; उन सबका वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निष्पक्ष विवेचन करता है। इस कारण हम उसे विज्ञान कह सकते हैं क्योंकि जिस ज्ञान का आधार तथ्यों पर आश्रित है, वह एक प्रकार से विज्ञान है।

स्पैन्सर (Spencer) ने, जो शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का प्रवर्त्तक एवं प्रबल समर्थक था, विज्ञान का वर्गीकरण इस प्रकार किया था—

1. सूक्ष्म-विज्ञान (Abstract Sciences)—इसके अन्तर्गत तर्कशास्त्र तथा गणित को रखा।

2. सूक्ष्म-स्थूल-विज्ञान (Abstract-Concrete Sciences)—इसके अन्तर्गत भौतिक तथा रासायनिक विज्ञान को माना।

3. स्थूल-विज्ञान (Concrete Sciences)—इनके अन्तर्गत जीव-विज्ञान, नक्षत्र-विज्ञान, मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र को रखा। उसने इतिहास को समाज-शास्त्र के अन्तर्गत माना।

पीयर्सन (Pearson) ने विज्ञान के दो भेद किये हैं—(1) भौतिक-विज्ञान, तथा (2) जीव-विज्ञान। उसने इतिहास को जीव-विज्ञान की श्रेणी में रखा। उसने भी जीव-विज्ञानों के समूह को स्थूल-विज्ञान माना है। इस प्रकार विज्ञान के वर्गीकरण को देखने से यह ज्ञात होता है कि इतिहास एक ऐसा विज्ञान है जो भौतिक विज्ञानों की भाँति निश्चित सिद्धान्तों का सृजन न करने के कारण अन्य सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत आता है।

इतिहास की वैज्ञानिकता के विषय में प्रो० घाटे ने लिखा है कि इतिहास एक आलोचनात्मक विज्ञान है जिसके द्वारा हम किसी तथ्य, किसी घटना अथवा किसी वस्तु की छानबीन करते हुए किसी वास्तविक एवं सत्य निर्णय पर पहुँचते हैं और उसका उसी के अनुरूप अर्थ निकालते हैं। ऐतिहासिक विधि जो कि निरीक्षण, तुलना तथा नियमीकरण से बनती है, विज्ञान की सजातीय है। इतिहास भी इन्हीं नियमों के अनुसार अन्वेषण करता है, अर्थात् वैज्ञानिक ढंग को सत्य की खोज के लिए ग्रहण करता है।

(1) इतिहास में तथ्यों का संकलन होता है, चाहे वे किसी भी स्थान पर प्राप्त क्यों न हों। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि इतिहासकार उन समस्त तथ्यों का संकलन करता है जो उसे इतिहास के निर्माण के लिए कहीं से भी प्राप्त होते हों।

(2) वह एकत्रित तथ्यों का बड़ी सतर्कता तथा निष्पक्षता के साथ विश्लेषण करता है। इस विश्लेषण का उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि तथ्य सत्य हैं या सम्भावित या असत्य।

(3) अन्त में, वह विश्लेषण तथा तुलनात्मक निरीक्षण के द्वारा सत्य पर पहुँचता है और सामान्य सिद्धान्तों का निर्माण करता है। परन्तु ये सामान्य सिद्धान्त भौतिक-विज्ञान के सिद्धान्तों के समान प्रयोग-सिद्ध नहीं होते। इतिहास के नियम

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समस्त दशाओं तथा समय में सत्य नहीं उतरते हैं। लेकिन उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक होता है और उनके अन्वेषण की विधियाँ भी वैज्ञानिक होती हैं।

इतिहास वह विषय है जो मानव तथा मानव-जीवन से सम्बन्ध रखने वाली बातों तथा उसके कार्यों से सम्बन्ध रखता है। उसकी प्रयोगशाला भौतिक तथा रासायनिक प्रयोगशालाओं की भाँति नहीं है। उसकी प्रयोगशाला समस्त विश्व है। भौतिक विज्ञान की प्रयोगशालाओं में समस्त वस्तुयें मानव के अधिकार में रहती हैं, लेकिन इतिहास की सामग्री भिन्न है वह तो अस्थि-चर्म-रुधिर-पिण्डमय मानव के बहुविधिक कार्यों से उपलब्ध होती है। यह संकीर्ण अर्थ में विज्ञान की कसौटी पर भले ही खरा नहीं उतरे, बल्कि उदार अर्थ में यह भी समस्त सामाजिक विज्ञानों की भाँति एक विज्ञान है।

उपर्युक्त विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि—इतिहास विज्ञान के उदार सिद्धान्तों के अनुसार वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। इतिहास एक वैज्ञानिक विषय है, इसमें किसी प्रकार के सन्देह के लिए स्थान नहीं है।

इतिहास : एक कला : History as an Art—इतिहास की वैज्ञानिकता सिद्ध करने के पश्चात् हमारी दृष्टि उन विद्वानों की ओर आकर्षित होती है जो इतिहास को एक कला मानते हैं। जब इतिहास एक विज्ञान है तो कला नहीं हो सकता। यदि कला है तो विज्ञान नहीं हो सकता। इस प्रकार वह दो नावों पर कैसे सवारी कर सकता है। इन विद्वानों का मत है कि विज्ञान तो सत्य तथ्यों का अस्थि-पंजर ही प्रदान करता है। परन्तु कवि की कल्पना इन अस्थि-खण्डों को रक्त-माँस देकर जीवन प्रदान करती है। कवि की भावुकता से ये सत्य तथ्य सजीव हो उठते हैं। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि अनुसंधान के पश्चात् उसको सुन्दर तथा सरल भाषा में व्यक्त करना कला का कार्य है। रूपक, उपमा, अलङ्कार तथा सुन्दर काव्य-रचना सम्पन्न भाषा-शैली की आवश्यकता इतिहास लिखने में होती है। सरल अभिव्यंजना-प्रधान तथा आकर्षक भाषा में यदि ऐतिहासिक तथ्यों का विवरण दिया जाय तो वह पाठकों की समक्ष में सरलता से आ सकता है। इस दृष्टि से इतिहास कला है। घटना सम्बन्धी बातों का संकलन 'विज्ञान' है और उनकी रचना 'कला' है। ये दोनों इतिहास के ही अंग हैं।

साहित्यकारों और कलाकारों का यह कहना है कि इतिहास साहित्य का एक अंग था, इसकी कोई अलग सत्ता नहीं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि 'इतिहास' और 'कला' दोनों एक-दूसरे पर आश्रित हैं, क्योंकि इतिहास के पास ऐसी बहुत-सी सामग्री है जिसको कला की सहायता के बिना प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, इस कारण वह कला है। कला का शाब्दिक अर्थ है कि वैज्ञानिक अनुसन्धानों का प्रयोग मानव की समस्याओं को हल करने में किया जाय। इसीलिए इतिहास का महत्त्व है। इस कारण इतिहास को कलात्मक रूप देना आवश्यक है। इसलिए इतिहासकार से कवि की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कल्पना-शक्ति प्रयोग करने के लिए कहा गया। इतिहासकार कवि की कल्पना-शक्ति से उन सत्यों को पाठक के योग्य बनाये जिससे वे सुन्दर तथा समझने के योग्य बन जायें। लेकिन इतिहासकार को इस बात के लिए भी सतर्क रहना चाहिए कि कल्पना में कहीं वह तथ्यों की आधारशिला को न भूल जाय। जब अपनी कल्पना और सहृदयता के साथ इतिहासकार उस युग के साथ, जिसका वह इतिहास लिख रहा है, सहानुभूतिपूर्वक विचार करेगा, तभी इतिहास का वास्तविक निर्माण-कार्य होगा। अतः यह आवश्यक है कि इतिहास को कला का रूप प्रदान किया जाय, जिसके द्वारा यह स्पष्ट हो सके कि वास्तव में वह सजीव मानव तथा सजीव समाज का लेखा है।

इतिहास—विज्ञान एवं कला दोनों हैं : History is both a Science and Art—हम उपर्युक्त विवेचन द्वारा इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इतिहास विज्ञान तथा कला—दोनों का समन्वय है। जब सत्य की खोज करता है तब वह 'विज्ञान' है और जब वह उन सत्यों के प्रतिपादन तथा वर्णन का विषय है तब वह 'कला' है। इस प्रकार इतिहास वह माध्यम है जिससे ज्ञान तथा क्रिया अविभाजित ऐक्य प्राप्त करते हैं। गीता में एक स्थान पर कहा गया है कि "विद्वान ज्ञान तथा क्रिया को एक मानकर खोजते हैं।" ("The wise seek knowledge and action as one.")। इस प्रकार इतिहास गीता के इस कथन की सत्यता को सत्य सिद्ध करता है, अर्थात् इतिहास में विद्वान ज्ञान तथा क्रिया की प्राप्ति कर सकता है। इसमें ज्ञान सत्य की खोज है और क्रिया सत्य का वर्णन है। इस सम्बन्ध में लार्ड एक्टन (Lord Acton) का निष्कर्ष बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। उसका कथन है कि इतिहास का अध्ययन पक्षपात-रहित, आलोचनात्मक तथा नवीन है। इस प्रकार उन्होंने इतिहास को वैज्ञानिक तथा कलात्मक—दोनों ही रूप प्रदान किए हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. "History is a scientific study and record of our complete past." Comment.

   "इतिहास हमारे सम्पूर्ण भूतकाल का वैज्ञानिक अध्ययन तथा लेखा है।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
2. "History is both a Science and Art." Illustrate.

   "इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों हैं।" स्पष्ट कीजिए।
3. What is the modern concept of History ? —(P. U., 1967)

   इतिहास की आधुनिक धारणा क्या है ?
4. To what extent can you consider History as ascience ?

   —(P. U., 1968)

   आप इतिहास को एक विज्ञान के रूप में किस सीमा तक स्वीकार करते हैं ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—कथनों की अधोलिखित तालिका में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं उसके समक्ष 'सत्य' तथा जिसे 'असत्य' समझते हैं उसके सामने कोष्ठक में 'असत्य' लिखिए—

(i) इतिहास समस्त जीवों की समस्त गतिविधियों का वर्णन करता है। ( )

(ii) अतीत के शेष चिह्न ही इतिहास का निर्माण करते हैं। ( )

(iii) 'हिस्ट्री' शब्द की उत्पत्ति 'पोलिस' शब्द से हुई। ( )

(iv) इतिहास स्वयं एक घटना है। ( )

(v) इतिहास विज्ञान एवं कला दोनों है। ( )

(vi) इतिहास मानव समाज की विवेचना प्रयोगात्मक विधि से करता है। ( )

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में स्थान रिक्त है। इस रिक्त स्थान की उपयुक्त शब्द द्वारा पूर्ति कीजिए—

(i) कथात्मक इतिहास का जन्मदाता.........था।

(ii) ....इतिहास का जनक था।

(iii) ....ने प्रबोधक इतिहास को जन्म दिया।

(iv) ....ने वैज्ञानिक इतिहास का निर्माण किया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2

विद्यालय-पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्त्व

IMPORTANCE OF HISTORY IN THE SCHOOL-CURRICULUM

"India has a rich cultural heritage. History provides a window to get a glimpse of that."

—*A Handbook for History Teachers* : NCERT

विषय-प्रवेश

भारत में अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति के अन्तर्गत इतिहास-शिक्षण का शिक्षालय-विषय के रूप में सूत्रपात किया गया। इस पद्धति में इतिहास को ब्रिटिश स्कूलों का अनुकरण करके भारतीय विद्यालयों में परीक्षा विषय के रूप में सन्निहित किया गया। उस समय इसका परीक्षा के दृष्टिकोण के अतिरिक्त और कोई महत्त्व नहीं था और न इसके उद्देश्यों एवं प्रयोजनों की ओर कोई ध्यान दिया गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय विद्यालयों में इतिहास सबसे अनुपयुक्त विषय माना जाता था, जिसका व्यावहारिक जीवन में कोई महत्त्व नहीं था।

इस प्रकार की स्थिति के बहुत-से कारण थे। परन्तु सबसे प्रमुख कारण यह था कि भारतीय विद्यालयों में इतिहास का अर्थ भारतीय इतिहास के साथ प्रत्येक स्तर पर इङ्गलैण्ड के इतिहास से लगाया जाता था। इसके अतिरिक्त भारतीय इतिहास को केवल राजाओं के बीच हुए युद्धों तथा साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन तक ही सीमित करके पढ़ाया जाता था। इतिहास को भारतीय समाज के विकास की कहानी के रूप में कभी ग्रहण नहीं किया गया। आधुनिक परिस्थितियों में इतिहास के अध्ययन को एक मुख्य परीक्षा-विषय के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता, क्योंकि आज की सामाजिक प्रवृत्ति ने इतिहास के महत्त्व को बहुत बढ़ा दिया है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षालय पाठ्यक्रम में इतिहास का महत्त्व
Importance of History in School-Curriculum

विद्यालय-पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्त्व को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विचारकों एवं लेखकों के मतों को नीचे दिया जा रहा है—

(अ) के० पी० चौधरी (K. P. Chaudhary) का मत—इतिहास को सार्वभौमिक रूप से विद्यालय पाठ्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण विषय माना गया है। यह समाज में मनुष्य के विकास का अध्ययन है। यद्यपि इतिहास अधिकांशतः अतीत से सम्बन्धित है, परन्तु यह वर्तमान पर भी बल देता है, जिससे आज के समाज का अतीत के प्रकाश में अध्ययन किया जा सके। इस प्रकार इतिहास उस सामाजिक वातावरण पर प्रकाश डालता है, जिसमें बालक रहता और जीवन-यापन करता है। इतिहास के अध्ययन के अभाव में न तो हम अपने वर्तमान को समझ सकते हैं और न भविष्य का आकलन कर सकते हैं। इसी कारण पाठ्यक्रम में इतिहास को स्थान प्रदान किया जाता है।

(1) अतीत के लिए प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक—हमारे देश के नवयुवकों में एक ही प्रवृत्ति घर कर गई है कि वे अपने अतीत को तुच्छ मानते हैं और उसको घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इस कारण वे उसे समझने के योग्य नहीं मानते। उनके हृदयों में ऐसी प्रवृत्ति दृढ़ हो जाने का प्रमुख कारण पाश्चात्य प्रणाली के अनुसार शिक्षित होना है। परन्तु भारतीय इतिहास के अध्ययन से उन्हें उनके अतीत से अवगत कराया जाना चाहिए तथा उन्हें इस योग्य बनाया जाना चाहिए जिससे वे अपने अतीत का वर्तमान की दृष्टि से विश्लेषण एवं मूल्यांकन कर सकें। इससे उनके हृदय में अपने अतीत के लिए प्रेम एवं गौरव-भावना उत्पन्न हो सके। अतः देश के प्रति प्रेम जाग्रत करने हेतु इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान देना आवश्यक है।

(2) भारतीय जीवन के ढंग से अवगत कराने के लिए आवश्यक—इतिहास का अध्यापन भारतीय विद्यालयों में अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि इसके अध्यापन से बालक 'भारतीय जीवन के ढंग' (Indian way of life) या भारतीय जीवन-शैली के विकास को समझने में समर्थ हो सकेंगे। जीवन के ढंग को समझकर सामाजिक एकता को स्थापित किया जा सकता है। इसके ज्ञान से जाति, धर्म, भाषा आदि के बन्धनों को समाप्त कर भावात्मक एकता का विकास किया जा सकता है।

(3) सामाजिक विषमताओं को दूर करने हेतु—इतिहास का वैज्ञानिक अध्ययन समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान में बहुत सहायक होता है। इस प्रकार के अध्ययन से भाषा तथा साम्प्रदायिक सम्बन्धों को दृढ़ एवं मधुर बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से भी इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।

(ब) ग्राण्ट रॉबर्टसन (Grant Robertson) का मत—इतिहास के द्वारा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छात्रों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है अर्थात् इतिहास स्वयं ज्ञान का भण्डार है, जिसमें बालक स्वेच्छानुसार अन्वेषण कर सकते हैं। इसके द्वारा बालकों को पथ-प्रदर्शित किया जाता है। इसके द्वारा छात्रों की जिज्ञासा को सन्तुष्ट किया जाता है। इतिहास उनको विभिन्न राष्ट्रों, व्यक्तियों, उनके विचारों, परम्पराओं, प्रथाओं तथा समस्याओं का ज्ञान प्रदान करता है। इससे वे अपनी ज्ञान-पिपासा को शान्त कर सकते हैं।

(स) के० डी० घोष (K. D. Ghosh) का मत—इतिहास के द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो कि विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती। इसमें सन्देह नहीं कि इतिहास में बालक को अपने मस्तिष्क का सबसे अधिक उपयोग करना पड़ता है। बालक को, जो कुछ वह इतिहास में पढ़ता है, उसको स्मरण रखने के लिए स्मरण-शक्ति का उपयोग करना पड़ता है। जब बालक इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों, संस्थाओं आदि के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है, तब उसकी कल्पना-शक्ति को विकसित होने के बहुत-से अवसर प्राप्त होते हैं। इन सबसे प्रमुख लाभ इतिहास के अध्ययन से यह होता है कि बालक निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित एवं समन्वित करना सीख जाता है। इन तथ्यों को वह तार्किक रूप से नियोजित करना जान जाता है। इसके अतिरिक्त जब वह ऐतिहासिक चरित्रों के विषय में अध्ययन करता है, तब उसकी निर्णय-शक्ति का विकास पर्याप्त रूप से होता है। हैपोल्ड ने लिखा है कि "बालक इतिहास के अध्ययन से बहुत-से धार्मिक, राजनीतिक या सामाजिक विवादास्पद प्रश्नों तथा समस्याओं के विषय में अपना मस्तिष्क स्थिर करना सीख जाता है, अर्थात् उनको सुलझाने की उसमें क्षमता विकसित हो जाती है।"[1] इस प्रकार इतिहास के द्वारा बालकों को एक विशेष प्रकार का मानसिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिसके द्वारा बालक अपने जीवन की प्रतिदिन की समस्याओं को हल करने में सफल होता है। इस दृष्टिकोण से उसमें तथ्यों के संकलन, उनके परीक्षण एवं उनके आधार पर अपना निष्पक्ष निर्णय देने की योग्यता आ जाती है। इस प्रकार वह सत्य की खोज का प्रेमी बन जाता है।

इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष (Mental Horizon) को विस्तृत

---

1 "He has also to make up his mind about religious, political or social questions of controversial kind, to generalize, so far as he can, about wide sweeps of time through study in comparsion and contrast, to weigh evidence and from existing data to arrive at conclusion legitimately supported by such data.'
—F. C. Happold : Quoted by K. D. Ghosh in 'Creative Teaching of History, p. 11.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करता है, जिससे वह समस्त वसुधा को एक कुटुम्ब समझने के लिए उद्यत हो जाता है। वह समस्त विश्व को ऐक्य के दृष्टिकोण से देखता है। इस प्रकार इसमें सत्य देश-प्रेम के साथ-साथ विश्व-बन्धुत्व की भावना भी विकसित हो जाती है।

इतिहास का प्रमुख कार्य यह स्पष्ट करना है कि मानव तथा समाज का विकास किस प्रकार हुआ। उसका यह कार्य नहीं कि वह राजाओं, रानियों, युद्धों, सन्धियों तथा तिथियों के विषयों में ही विवरण प्रस्तुत करे। वह अतीत के वर्णन द्वारा वर्तमान का स्पष्टीकरण करता है। वर्तमान की विशद् रीति से सहृदयतापूर्वक व्याख्या करना ही इतिहास का महान उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। हम तभी अपना सुखमय जीवन व्यतीत कर सकते हैं जबकि हम अपने जीवन की सम-सामयिक समस्याओं को पूर्ण रूप से समझ सकें। इन समस्याओं को समझने एवं सुलझाने में इतिहास हमारी सहायता करता है। इतिहास-शिक्षा की हम इसलिए ही व्यवस्था करते हैं। इसके अतिरिक्त उसका कार्य एक पग और आगे है। वह यह है कि उसके द्वारा बालकों में भविष्य के सम्बन्ध में सोचने की प्रवृत्ति जाग्रत की जाती है।

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इतिहास का महत्त्व
Importance of History from National Outlook

भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता आधुनिक भारत की एक महत्त्वपूर्ण माँग है, जिसे किसी के द्वारा अस्वीकृत नहीं किया जा सकता। आज भारत में जिसकी सर्वाधिक आवश्यकता है—वह भावात्मक एकता ही है, जिसके फलस्वरूप आन्तरिक कलह एवं संघर्ष देश की प्रगति पर घातक प्रभाव न डाल सकें। भावात्मक एकता के लिए इतिहास का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। इसके अध्ययन से बालकों में विभिन्न धारणाएँ विकसित की जा सकती हैं, जो भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकता के लिए आधारशिला का कार्य करेंगी। ये धारणाएँ अधोलिखित हैं—

(अ) विभिन्न समुदायों तथा अल्पसंख्यकों के योगदान का सम्मान करना।

(ब) अपनी संस्कृति में निहित एकता को परखना।

(स) बालकों द्वारा इस तथ्य को परखना कि देश में जो भी उन्नति हुई, वह विभिन्न जातियों एवं समुदायों के लोगों के परस्पर मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का ही परिणाम है।

(द) छात्रों को अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना और इस बात को परखने के लिए तत्पर बनाना कि वे एकीकृत संस्कृति के अधिकारी हैं।

(य) राष्ट्रीय संस्कृति के लिए जिन लोगों ने योगदान दिया है—चाहे वे विभिन्न क्षेत्रों के क्यों न हों, उनको सम्मान प्रदान करना।

(र) बालकों में विभिन्न वातावरणों की अन्योन्याश्रितता को समझने की चेतना का विकास करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जीवन में इतिहास की उपादेयता
Utility of History in Life

सामान्यतः लोग यह पूछते हैं कि वास्तविक जीवन में इतिहास की क्या उपयोगिता है? इस प्रकार का प्रश्न पूछने में उनका अभिप्राय यह है कि बालक इतिहास के अध्ययन से भविष्य में अपना जीवन-निर्वाह कर सकता है? यह सत्य है कि इतिहास, गणित, विज्ञान जैसे विषयों की भाँति जीवन-निर्वाह में प्रत्यक्ष रूप से सहायता नहीं करता है। परन्तु यहाँ स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि क्या शिक्षा-प्राप्ति का एकमात्र उद्देश्य जीविका-प्राप्ति ही है? यदि मान भी लिया जाय कि जीविका निर्वाह ही सर्वस्व है तो हम कह सकते हैं कि इतिहास भी अन्य विषयों की भाँति बालकों को अपने पैरों पर खड़ा होने के योग्य बना सकता है। मानव-जीवन के कुछ ऐसे कार्य-क्षेत्र हैं जिनमें इतिहास का अध्ययन आवश्यक है, उदाहरणार्थ—शिक्षण, उच्च शासकीय सेवाएँ, पत्रकारिता, विदेश विभाग के कर्मचारियों हेतु कूट-नीतिज्ञता आदि। यदि सरकारी कर्मचारी जनता के सेवक हैं तो उन्हें जन-जीवन की विविध गतिविधियों से परिचित होना आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव में वे सफल लोक-सेवक नहीं बन सकते। इन गतिविधियों की जानकारी के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है।

यदि हम अपनी वर्तमानकालीन सामाजिक, नैतिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक समस्याओं का समाधान चाहते हैं, तो सभ्यता के विकास की दृष्टि से भौतिक-विज्ञान विशेष रूप से सहायक नहीं हो सकेंगे। इनके समाधान के लिए मानव को मानव के स्वरूप को पहचानना पड़ेगा और मानव के स्वरूप को पहचानने में इतिहास हमारी पर्याप्त सहायता करता है। इसके अतिरिक्त मानव के स्वरूप को पहचानने के परिणाम-स्वरूप ही मनुष्य अपना सच्चा विकास कर सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि सफल जीवन के लिए इतिहास का अपना एक विशेष महत्त्व है और यही उसकी जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण उपादेयता है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What should be the place of history in the school curriculum? What place has been assigned to it in our state at the various levels of school instruction? Critically examine its present position and suggest changes. —(Udaipur, B. Ed., 1967)
   शाला के पाठ्यक्रम में इतिहास का क्या स्थान होना चाहिए? हमारे राज्य में विभिन्न शाला-स्तरों पर इसको क्या स्थान दिया गया है? इसकी वर्तमान स्थिति की आलोचना कीजिए तथा परिवर्तन के लिये सुझाव दीजिए।
2. What is the place of History in education? Mention its main features and definitions. —(P. U., 1969)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षा में इतिहास का क्या स्थान है ? उसकी प्रमुख विशेषताओं एवं परिभाषाओं का उल्लेख कीजिए।

3. "It is a veritable mine of life experiences and the youth of today studies History that he may profit by the experiences of the race." Discuss the place of history is school curriculum in the light of this statement. —(A. U., 1972)

"इतिहास जीवन के अनुभवों की खान है और आज का नवयुवक इतिहास का अध्ययन इसलिए करता है कि वह अपनी प्रजाति के अनुभवों से लाभान्वित हो सके।" इस कथन के प्रकाश में विद्यालय के पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

4. Why History has been placed as one of the subject in the curriculum ? How far History can develop the attitude of love and respect among pupils ? —(A. U., 1973, 77)

इतिहास विषय को पाठ्यक्रम में क्यों रखा गया है ? इतिहास द्वारा छात्रों में प्रेम तथा आदर की भावना का विकास किस सीमा तक सम्भव है ?

5. Write short note on 'Significance of History is school curriculum'. —(A. U., 1976)

'विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास के महत्त्व' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

6. What is the importance of History in school curriculum ? How can you inculcate the feelings of patriotism by teaching History ? Discuss. —(A. U., 1980; R. U., 1982)

स्कूल पाठ्यक्रम में इतिहास का क्या महत्त्व है ? इतिहास-शिक्षण से आप देश-प्रेम की भावना का समावेश कैसे कर सकते हैं ? विवेचना कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं, उसके समक्ष 'सत्य' तथा जिसे असत्य समझते हैं, उसके सामने कोष्ठक में 'असत्य' शब्द लिखिए—

(i) इतिहास आर्थिक वातावरण पर प्रकाश डालता है। ( )

(ii) इतिहास छात्रों में भावी जीवन के लिये प्रेम उत्पन्न करने के लिए आवश्यक है। ( )

(iii) भारतीय इतिहास के अध्ययन से बालक भारतीय जीवन के ढंग के विकास को समझने में असमर्थ हो सकेंगे। ( )

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iv) इतिहास समाज में मानव के विकास का अध्ययन है। ( )

(v) इतिहास बालक के मानसिक अन्तरिक्ष को विस्तृत करने में सहायक है। ( )

(vi) इतिहास द्वारा बालकों को ज्ञान का भण्डार प्रदान किया जाता है। ( )

(vii) इतिहास आर्थिक एकता स्थापित करता है। ( )

(viii) इतिहास का भावात्मक तथा राष्ट्रीय एकता के विकास में बहुत महत्त्व है। ( )

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य, प्राप्य उद्देश्य तथा मूल्य
AIMS, OBJECTIVES AND VALUES OF TEACHING HISTORY

"The teaching of history is schools should lead to the realization that history is the study of the process of social change and development."—*A Hand-book for History Teachers.*

—NCERT

विषय-प्रवेश

किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए उद्देश्य का ज्ञान होना परमावश्यक है। अतः शिक्षण-कार्य उद्देश्य के अभाव में सुचारु रूप से संचालित नहीं किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में बी० डी० भाटिया ने लिखा है—"उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवारविहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट पर जा लगेगी।"[1] स्वतः प्रश्न उठता है कि इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य क्या हैं? परन्तु इनको जानने से पूर्व यह जानना अनिवार्य हो जाता है कि इन उद्देश्यों के निर्धारण का आधार क्या है?

उद्देश्यों के निर्धारक : Determinants of the Aims—'शिक्षा' समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा होगी, उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा। अतः इस बात का सदैव प्रयास किया गया है कि समाज के उद्देश्य

---

1. "Without the knowledge of aims, thc educator is like a sailor who does not know his goal or his destination, and the child is like a rudderless vessel which will be driften along some where ashore."

—B. D. Bhatia.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समाज की माँगों, आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुकूल हों। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर विभिन्न देशों में विभिन्न कालों में शिक्षा के विभिन्न उद्देश्यों का निर्माण किया गया। परन्तु आधुनिक शिक्षा में बालक को अत्यधिक महत्त्व प्रदान किया जाने लगा है। इस कारण शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में उसकी आवश्यकताओं, रुचियों, क्षमताओं आदि का भी ध्यान रखा जाने लगा है। समाज यह निर्धारित करता है कि "क्या प्राप्त किया जाना चाहिए ?" शिक्षक यह निर्धारित करता है कि "क्या प्राप्त किया जा सकता है ?" इनसे निकला हुआ परिणाम ही शैक्षिक उद्देश्य होता है। अतः शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारक—समाज, शिक्षक, छात्र तथा प्रचलित जीवन-दर्शन हैं। यद्यपि शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में व्यवस्थापिका, राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री आदि भी भाग लेते हैं। परन्तु वे केवल शिक्षा की दिशा का निर्धारण करते हैं।

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
Aims of Teaching History

प्रत्येक विषय के उद्देश्य सामान्य शिक्षा के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किये जाते हैं और शिक्षा के उद्देश्य उक्त वर्णित निर्धारकों के अनुसार निर्धारित किए जाते हैं। हमारे देश में 'माध्यमिक शिक्षा-आयोग' ने माध्यमिक शिक्षा के अधोलिखित उद्देश्यों पर बल दिया है—

1. लोकतान्त्रिक नागरिकता का विकास।
2. नेतृत्व का विकास।
3. व्यक्तित्व का विकास।
4. व्यावसायिक कुशलता का विकास।
5. चरित्र-निर्माण आदि।

उक्त समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति किसी एक विषय के अध्ययन द्वारा नहीं हो सकती। परन्तु इतिहास-शिक्षण इन उद्देश्यों की प्राप्ति में बहुत सहायक है। यह सत्य है कि इतिहास प्रत्यक्ष रूप से रोटी तथा मक्खन देने वाला विषय नहीं है, परन्तु इसके द्वारा छात्रों के चरित्र-निर्माण, नेतृत्व, नागरिकता के गुणों आदि के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया जाता है।

शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कालों में इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया। उदाहरणार्थ—लिवी (Livy) तथा थ्यूसीडाइड्स (Thucydides) के समय में इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य स्मरणीय वस्तुओं को सुरक्षित रखना तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान पुरानी सन्तति के द्वारा नवीन सन्तति को सौंपना था। प्राचीनकाल में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य निर्देश देना या आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना तथा दोनों; अर्थात् निर्देश देना तथा आश्रयदाताओं को प्रसन्न रखना था। मध्यकाल में इसका उद्देश्य अपने देश के अतीत के लिए आदर तथा प्रेम उत्पन्न करना हो गया। आधुनिक काल में इसका प्रमुख उद्देश्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतीत की सहायता से वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया। इसके अतिरिक्त सं[illegible] देश-प्रेम, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास आदि भी इसके उद्देश्य माने गये।

हम इतिहास-शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों का विवेचन अधोलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत करेंगे—

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य।

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य।

(अ) इतिहास-शिक्षण के सामान्य उद्देश्य
General Aims of Teaching History

(1) **इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न करना : To create interest for History**—विभिन्न विद्वानों ने इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करना माना है। जॉन डीवी (John Dewey) का मत है—"हमारी इतिहास में इसलिए रुचि नहीं है कि वह अतीत के गौरव को बताता है बल्कि इसमें इसलिए रुचि है क्योंकि इसके द्वारा वर्तमान सामाजिक जीवन के विभिन्न स्वरूपों तथा शक्तियों का स्पष्टीकरण किया जाता है। साथ ही यह हमें भविष्य के विषय में सोचने के लिए तैयार करता है।" इस कारण इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह छात्रों में इतिहास के प्रति रुचि जागृत करे। वस्तुतः यह वर्तमान ही है जो हमें अपनी ओर आकर्षित करता है और हम उसे जानने के लिए तत्पर होते हे। इसी कारण हम अतीत की खोज करते हैं। हम अतीत की खोज इस कारण नहीं करते हैं कि हमें ऐसा करना रोचक मालूम पड़ता है वरन् इसलिए करते हैं कि आज के मानव के विचारों एवं कार्यों की जड़ अतीत में निहित है। अतः इतिहास के शिक्षक को छात्रों के समक्ष अतीत के इतिहास द्वारा वर्तमान को स्पष्ट करके उनमें इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

(2) **वर्तमान को स्पष्ट करना : To explain the Present**—इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना है। कार्ल आगस्त मुलर का मत है "इतिहास के द्वारा हम अपने काल की क्रियाओं का अर्थ लगा सकते हैं। यदि इतिहास नहीं होगा तो विद्यालय-अध्ययन तथा अध्यापन निरर्थक है, क्योंकि इतिहास हमारे वर्तमान को स्पष्ट करता है।" इतिहास के अभाव में सामाजिक वातावरण का कोई अर्थ नहीं है। अतः बालक को समाज में व्यवस्थित होने के लिए अपने सामाजिक वातावरण या अपनी प्रचलित परिस्थितियों का ज्ञान होना आवश्यक है। इतिहास के अतीत के द्वारा इस सामाजिक वातावरण को अर्थपूर्ण बनाया जाता है। इसी कारण इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य वर्तमान को स्पष्ट करना माना गया है।

(3) **मानसिक शक्तियों का विकास : Development of Mental Powers**—इतिहास के द्वारा छात्रों को एक विशेष प्रकार की मानसिक शिक्षा प्रदान की जाती है जो विद्यालय के किसी अन्य विषय द्वारा प्रदान नहीं की जा सकती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इसके अध्ययन से छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों के विकास में बहुत सहायता मिलती है। छात्र इसके द्वारा विभिन्न विवादास्पद प्रश्नों एवं समस्याओं के विषय में अपना स्वतन्त्र निर्णय बनाने में समर्थ हो जाता है। अतः इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना माना गया है।

(4) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास : Development of Scientific Outlook—विद्वानों का मत है कि इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का निर्माण करना होना चाहिए। उनका मत है कि इसके लिए इतिहास का अध्यापन इस प्रकार किया जाय जिससे वे अवैज्ञानिक वस्तुओं को त्यागने में समर्थ हो सकें। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास के लिए उनकी निरीक्षण शक्ति, तर्क शक्ति तथा सत्य निर्णय करने की शक्तियों का विकास करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त छात्रों को निष्पक्षता एवं अपनी योग्यता के अनुसार तथ्यों को संकलित, परीक्षित, वर्गीकृत एवं तुलना करने के योग्य बनाया जाय।

(5) राष्ट्रीय भावना का विकास : Development of National Feeling—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का विकास माना गया है। बहुत-से विद्वान् देश-प्रेम की भावना के विकास को इतिहास-शिक्षण का एक मूल्य मानते हैं। वस्तुतः विभिन्न देशों एवं विभिन्न कालों में देश-प्रेम की भावना का विकास इतिहास-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य रहा है। जर्मनी ने अपने विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान इसीलिए ही प्रदान किया था कि इसके द्वारा छात्रों में देश-भक्ति की भावना का विकास सरलता से किया जा सकता है। इतिहास छात्रों को उनके पूर्वजों की देनों का ज्ञान प्रदान करके उनमें देश-भक्ति की भावना विकसित करता है।

(6) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास : Development of International Understanding—इतिहास-शिक्षण का एक अन्य उद्देश्य—छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए छात्रों को निष्पक्षता तथा सच्चाई के साथ प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराया जाना आवश्यक है। सी० पी० हिल (C. P. Hill) ने लिखा है कि इतिहास शिक्षक इस विषय का अध्यापन इस प्रकार करे जिससे छात्र 'सत्य' की खोज के लिए तत्पर हो सकें तथा वे विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों को समझने में समर्थ हो सकें। इस प्रकार के ज्ञान से उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है।

राष्ट्रीय भावना तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास नामक उद्देश्यों का विस्तृत विवेचन आगे पृथक् अध्यायों में किया गया है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ब) इतिहास-शिक्षण के मुख्य उद्देश्य
Specific Aims of Teaching History

इसके अन्तर्गत अधोलिखित उद्देश्यों को रखा जा सकता है—

(1) ऐतिहासिक विधि का ज्ञान कराना।

(2) समय-ज्ञान की भावना को विकसित करते हुए स्थान तथा समय में सम्बन्ध स्थापित करना।

(3) मानव-उन्नति का काल-क्रम के अनुसार अध्ययन कराना।

(4) छात्रों को उन समस्याओं तथा कठिनाइयों से अवगत कराना जो मानव के समक्ष उसके सामाजिक विकास में आयी थीं।

(5) छात्रों को इतिहास का ज्ञान इस प्रकार प्रदान करना जिससे उनमें निम्नलिखित प्रकार के भाव उत्पन्न हो सकें—

(i) सूचनाएँ कहाँ और किस प्रकार प्राप्त की जायें।

(ii) प्रमाणों को किस प्रकार जाँचा जाय ?

(iii) तार्किक निष्कर्ष किस प्रकार निकाले जायें ?

(iv) तथ्यों को किस प्रकार संगठित, विश्लेषित एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाय।

वर्तमान परिस्थितियों में भारत में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
Aims of Teaching History in Present Conditions in India

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने राष्ट्रीय विकास के लिए धर्म-निरपेक्षता, लोकतन्त्र, समाजवाद तथा शान्ति को निर्देशक सिद्धान्तों (Guiding Principles) के रूप में ग्रहण किया है। इतिहास का अध्यापन करते समय इन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना परमावश्यक है। परन्तु वास्तविकता कुछ और है। आजकल इतिहास के अध्यापन और उसकी पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में इन स्वीकृत सिद्धान्तों का किसी भी प्रकार से प्रयोग नहीं किया जा रहा है। इस समय इतिहास के अध्यापन में राजनीतिक इतिहास, युद्धों, संधियों तथा ऐतिहासिक चरित्रों के वर्णन पर अधिक बल दिया जाता है, जबकि आवश्यकता इस बात की है कि इसके अध्यापन द्वारा सामाजिक विकास की समझदारी पर बल दिया जाय, क्योंकि इसके माध्यम से छात्रों में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न की जा सकती है। साथ ही उनके दृष्टिकोण को व्यापक एवं उदार बनाया जा सकता है। आज साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता तथा धार्मिक कट्टरता एवं धर्मान्धता ने इतिहास के अध्यापन को प्रभावित करके राष्ट्रीय इतिहास के वास्तविक चित्र को धूमिल बना दिया है। साथ ही इन्होंने संकीर्ण भावनाओं को विकसित करने में सहयोग दिया है।

उक्त परिस्थितियों का ध्यान में रखकर इतिहास-शिक्षण के अग्रलिखित प्राप्य उद्देश्यों (Objectives) पर बल दिया जा सकता है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) छात्रों को यह अनुभूति करायी जाय कि इतिहास सामाजिक परिवर्तन तथा विकास की प्रक्रिया का अध्ययन है।

(2) छात्रों को आधुनिक समाज, जिसमें वे रह रहे हैं, का ज्ञान प्रदान किया जाय।

(3) छात्रों को देश की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक निर्बलताओं से अवगत कराया जाय। साथ ही उन्हें दूर करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(4) छात्रों में सत्य देश-प्रेम की भावना का विकास किया जाय। इसके लिए उन्हें राष्ट्रीय विरासत (National Heritage) की समझदारी प्रदान की जानी चाहिए। उनको यह बताया जाय कि इस विरासत का विकास किस प्रकार हुआ है? हमने विभिन्न जातियों, धर्मों तथा संस्कृतियों को अपनी विरासत में किस प्रकार मिलाया?

(5) छात्रों को राष्ट्रीय विरासत के साथ-साथ मानवीय विरासत से भी अवगत कराया जाय जिससे उनमें अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सके।

(6) छात्रों को भारतीय संस्कृति की विविधता एवं एकता से अवगत कराया जाय।

(7) छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन का विकास किया जाय।

शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य
Aims of Teaching History at the Different Stages of Education

1. **प्राइमरी स्तर पर उद्देश्य : Aims at Primary Stage**—इस स्तर पर इतिहास शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर विषय का प्रतिपादन करना चाहिए—

(अ) इतिहास के प्रति छात्रों की रुचि जाग्रत करना। रुचि को जाग्रत करने के लिए अधिक सूचनाएँ प्रदान न की जायँ और न उनके मस्तिष्क पर परीक्षा का निरर्थक भार डाला जाय।

(ब) ऐतिहासिक कल्पना जाग्रत करना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को कहानियों द्वारा शिक्षण प्रदान करना चाहिए, क्योंकि इस स्तर पर बालक कहानीप्रिय होता है।

(स) छात्रों को इस बात से परिचित कराना कि हमारे प्रतिदिन के जीवन पर अतीत का प्रभाव होता है।

(द) छात्रों में समय-ज्ञान को धीरे-धीरे विकसित करना। इसके लिए इतिहास शिक्षक स्थूल वस्तुओं का उपयोग करे; उदाहरणार्थ—समय-चार्ट, समय-रेखा आदि।

(य) छात्रों में देश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस स्तर पर विश्व-इतिहास से भी कहानियाँ ली जायें। उनके शिक्षण से उनमें विश्व-बन्धुत्व के अंकुर उत्पन्न किये जा सकते हैं।

2. जूनियर स्तर पर उद्देश्य : Aims at Junior Stage—इस स्तर पर इतिहास शिक्षक को निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिए; यथा—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक प्रेम उत्पन्न करना चाहिए। इसके लिए राजनीतिक इतिहास के स्थान पर सामाजिक इतिहास के अध्ययन पर बल दिया जाय।

(ब) छात्रों को शुद्ध रूप से विचार करने के लिए तत्पर बनाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनकी अन्य मानसिक शक्तियों को विकसित करना चाहिए।

(स) उनको ऐतिहासिक तथ्यों एवं कार्यों की आलोचना करने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(द) इस स्तर पर छात्रों को अतीत के प्रकाश में अधिक से अधिक वर्तमान को समझने के योग्य बनाना। इसके अतिरिक्त उन्हें भविष्य के विषय में भी सोचने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

(य) छात्रों में समय-ज्ञान को विकसित करने के लिए अमूर्त साधनों का भी उपयोग करना चाहिए।

(र) छात्रों में सत्य स्वदेश-प्रेम तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को विकसित किया जाय।

(ल) मानचित्र पर घटनाओं सम्बन्धी स्थलों तथा राज्य-सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना। इसके लिए इतिहास-शिक्षक को इतिहास का भूगोल से सम्बन्ध स्थापित करके शिक्षण प्रदान करना चाहिए।

3. हायर सेकेण्डरी स्तर पर उद्देश्य : Aims at Higher Secondary Stage—इस स्तर पर इतिहास-शिक्षण को अग्रलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छात्रों को तत्पर बनाना चाहिए—

(अ) इस स्तर पर छात्रों में इतिहास के लिए वास्तविक रुचि को दृढ़ बनाना।

(ब) छात्रों को मानसिक प्रशिक्षण प्रदान करना; अर्थात् उनकी मानसिक शक्तियों को एक मुख्य प्रकार से प्रशिक्षित करना, जिससे उनकी तर्क एवं निर्णय-शक्तियों का पर्याप्त विकास हो सके जिससे वे प्रत्येक तथ्य को तर्क तथा प्रमाणों के आधार पर ही स्वीकार करना सीख जायें।

(स) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृतियों का ज्ञान प्रदान करना जिससे वे अपने देश की विश्व-संस्कृति के लिए प्रदान की गई देनों को समझ सकें।

(द) अतीत के आधार पर वर्तमान को समझने की क्षमता उत्पन्न करना तथा उसके भविष्य के आकलन के लिए सामर्थ्य उत्पन्न करना।

(य) विकास के सिद्धान्त से अवगत कराना।

(र) समय-ज्ञान के विकास को दृढ़ बनाना।

(ल) छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(व) राष्ट्र की सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक समस्याओं से अवगत कराकर उनको स्वयं समस्या हल करने के योग्य बनाना।

(ह) मानव सभ्यता के विकास की विशेषताओं से अवगत कराना।

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य
Objectives of History Teaching

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य-उद्देश्यों को जानने से पूर्व उद्देश्य तथा प्राप्य उद्देश्यों का अर्थ एवं अन्तर देखना अनिवार्य है। प्रायः उद्देश्य और प्राप्य-उद्देश्य दोनों का एक ही अर्थ लगाया जाता है, परन्तु ऐसा नहीं है। इनके वास्तविक अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इनकी पृथक्-पृथक् परिभाषाएँ तथा उनके अन्तर को नीचे दिया जा रहा है—

उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Aim—इसके अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी० गुड ने लिखा है—"उद्देश्य पूर्व-निर्धारित साध्य होता है जो किसी कार्य या क्रिया का मार्ग-दर्शन करता है।"[1] उद्देश्य में दूरदर्शिता होती है। साथ ही इसमें आदर्शवादिता होती है।

प्राप्य उद्देश्य का अर्थ : Meaning of Objective—जब हम किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करते हैं तो उसके लिए हमें जिन छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना पड़ता है, उन्हें उस उद्देश्य के प्राप्य उद्देश्य कहते हैं। प्राप्य उद्देश्य के अर्थ को स्पष्ट करते हुए कार्टर वी० गुड ने लिखा है—'प्राप्य उद्देश्य वह मानदण्ड या साध्य है जिसको छात्र द्वारा विद्यालय क्रिया को पूर्ण करके प्राप्त किया जाता है।"[2] इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करते हुए गुड ने आगे लिखा है—"प्राप्य उद्देश्य छात्र के व्यवहार में यह इच्छित परिवर्तन है जो विद्यालय द्वारा पथ-प्रदर्शित अनुभव का परिणाम होता है।"[3] इस प्रकार प्राप्य उद्देश्य में व्यावहारिकता अधिक होती है। दूसरे, इसको प्राप्त कराने का दायित्व शिक्षक के कन्धों पर होता है।

उद्देश्य तथा प्राप्य उद्देश्य में अन्तर : Difference between Aim and Objective—इन दोनों के अन्तर को आगे स्पष्ट किया जा रहा है—

---

1. "Aim is a foreseen end that gives direction to an activity."
—Carter V. Good.
2. "Objective is a standard or goal to be achieved by the pupil when the work in the school activity is completed."
—Carter V. Good.
3. "Objective is a desired change in the behaviour of a pupil as a result of experience directed by the school."
—Carter V. Good.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्देश्य	प्राप्य उद्देश्य
1. उद्देश्य का क्षेत्र व्यापक होता है।	1. प्राप्य उद्देश्य का क्षेत्र सीमित होता है।
2. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय-कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	2. प्राप्य उद्देश्य लक्ष्य की छोटी-छोटी शाखाएँ होती हैं। अतः इनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ-विशेष की विषय-वस्तु पर होता है।
3. उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। अतः इसे पूर्ण रूप में प्राप्त करना सम्भव नहीं है।	3. प्राप्य उद्देश्यों की प्राप्ति सम्भव है क्योंकि इनमें व्यावहारिकता होती है।
4. उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय लगता है।	4. प्राप्य उद्देश्य की प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगता।

इतिहास-शिक्षण के प्राप्य उद्देश्य : Objectives of History Teaching—यहाँ इतिहास-शिक्षण के कुछ प्राप्य उद्देश्यों का उल्लेख किया जा रहा है। परन्तु यह पूरी सूची नहीं है और न किसी व्यक्ति के लिए इतिहास के सम्पूर्ण प्राप्य उद्देश्यों की सूची बनाना सम्भव है। ये केवल सुझाव मात्र हैं—

1. ज्ञानात्मक प्राप्य उद्देश्य : Knowledge Objective—इसके अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, धारणाओं, सिद्धान्तों, विचारों, समस्याओं, प्रवृत्तियों, आन्दोलनों आदि का—

(i) प्रत्यास्मरण कर सकेगा।
(ii) मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र आदि पर उनका प्रदर्शन कर सकेगा।
(iii) पुनर्प्रस्तुतीकरण कर सकेगा।
(iv) पहिचान कर सकेगा।

2. अवबोध प्राप्य उद्देश्य : Understanding Objective—इसके अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, घटनाओं, धारणाओं, गतिविधियों, सिद्धान्तों, प्रवृत्तियों आदि की समझदारी प्राप्त करेगा अर्थात्—

(i) छात्र इनमें विभेद कर सकेगा।
(ii) छात्र उनको वर्गीकृत कर सकेगा।
(iii) छात्र इनकी तुलना कर सकेगा।
(iv) छात्र इनकी विषमताओं को समझ सकेगा।
(v) छात्र महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वहीन, प्रमुख एवं गौण कारणों, प्रभावों, घटनाओं आदि में अन्तर स्पष्ट कर सकेगा।
(vi) छात्र साध्य एवं साधनों, कारण एवं प्रभाव आदि के सम्बन्ध को पहचान सकेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(vii) ऐतिहासिक घटनाओं, प्रवृत्तियों आदि को स्पष्ट करने के लिए कारण प्रस्तुत कर सकेगा।

(viii) अतीत से उदाहरण दे सकेगा।

3. कौशल प्राप्य उद्देश्य : Skill Objective—छात्र ऐतिहासिक मानचित्रों, रेखाचित्रों, चित्रों, तालिकाओं, चार्टों आदि में आवश्यक विवरण को—

(i) पहचान सकेगा।

(ii) अशुद्धियों को जान सकेगा।

(iii) तैयार कर सकेगा।

4. अभिरुचि प्राप्य उद्देश्य : Interest Objective—इसके अन्तर्गत छात्र में ऐतिहासिक घटनाओं, संस्थाओं, व्यक्तियों आदि के बारे में जानने तथा अध्ययन करने की रुचि उत्पन्न होगी।

5. अभिवृत्ति प्राप्य उद्देश्य : Attitude Objective—इसके अन्तर्गत छात्र में निम्नलिखित अभिवृत्तियाँ विकसित होंगी—

(i) व्यक्तियों, धर्मों, संस्कृतियों आदि के प्रति विधेयात्मक अभिवृत्ति विकसित होगी।

(ii) अतीत के आधार पर समस्याओं के अध्ययन की अभिवृत्ति विकसित होगी।

(iii) ऐतिहासिक सामग्री के आधार पर ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालने की अभिवृत्ति होगी।

6. प्रयोग प्राप्य उद्देश्य : Application Objective—इसके अन्तर्गत छात्र ऐतिहासिक तथ्यों, धारणाओं, घटनाओं, गतिविधियों आदि से सम्बन्धित—

(i) समस्याओं को जान सकेगा तथा उनसे सम्बन्धित सामग्री का संग्रह कर सकेगा।

(ii) उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण कर सकेगा।

(iii) अनुमान तैयार कर सकेगा।

(iv) सामान्य नियम बना सकेगा।

(v) निष्कर्ष निकाल सकेगा।

(vi) प्रमाणों, तथ्यों तथा सम्मतियों के बीच अन्तर कर सकेगा।

(vii) प्रमाणों तथा तथ्यों का चयन करके उनका परीक्षण कर सकेगा।

इतिहास शिक्षण के मूल्य
Values of Teaching History

इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों पर दृष्टिपात करने के उपरान्त यह जानना आवश्यक हो जाता है कि इतिहास-शिक्षण के मूल्य क्या हैं? परन्तु इसके मूल्यों को

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

देखने से पूर्व यह समझना आवश्यक है कि उद्देश्य एवं मूल्य में अन्तर क्या है ? इनके अन्तर को नीचे स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य एवं मूल्य में अन्तर : Difference between Aims & Values—उद्देश्य एक चेतनशील तथा क्रियाशील अभिप्राय होता है जो कि सदैव हमारे समक्ष रहता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करना हमारा मुख्य लक्ष्य होता है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हम विभिन्न प्रकार के साधन जुटाते हैं। ये साधन वह मार्ग हैं जिनके द्वारा हम अपने उद्देश्य या निर्दिष्ट स्थान को प्राप्त करते हैं। इस प्राप्ति के मार्ग में उद्देश्य सदैव हमारे समक्ष बना रहता है। परन्तु मूल्य वह अनुभव या फल है जो कि हमें अपने उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग में प्राप्त होते हैं। उद्देश्य हमारा एक होता है, परन्तु उसकी प्राप्ति में हमें बहुत-से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। यह भी आवश्यक नहीं है कि हम सदैव अपने उद्देश्य को प्राप्त ही कर लें। कभी-कभी प्राप्ति नहीं भी हो पाती, परन्तु हमें उसकी प्राप्ति के मार्ग में बहुत-से अनुभव प्राप्त हो सकते हैं। इस प्रकार प्राप्त हुए अनुभव या फल मूल्यों की श्रेणी में रखे जाते हैं। प्रो० घाटे ने अपनी पुस्तक "Teaching of History" में इन दोनों शब्दों के अन्तर को एक सुन्दर उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है। घाटे ने लिखा है कि कोलम्बस ने भारत पहुँचने के लिए एक नवीन मार्ग की खोज करना—अपना लक्ष्य निर्धारित किया था, परन्तु कोलम्बस अपने निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सका और इस लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में उसने अमरीका की खोज की। इस प्रकार कोलम्बस द्वारा 'अमरीका की खोज' मूल्य की श्रेणी के अन्तर्गत रखी जायगी, लक्ष्य के अन्तर्गत नहीं।

संक्षेप में इन दोनों के अन्तर को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्य	मूल्य
1. उद्देश्य स्वभावतः दार्शनिक एवं सैद्धान्तिक होते हैं।	1. मूल्य अपनी प्रकृति में व्यावहारिक एवं वास्तविक होते हैं।
2. उद्देश्य का निर्धारण विषय के अध्ययन या अध्यापन से पूर्व किया जाता है।	2. मूल्यों का ज्ञान अध्ययन एवं अध्यापन के बाद होता है।
3. उद्देश्य की प्राप्ति आश्यक नहीं है।	3. मूल्य सदैव प्राप्य होते हैं।

इतिहास-शिक्षण के मूल्य : Values of Teaching History—इतिहास-शिक्षण के मूल्य के बारे में एम० रॉलिन (M. Rallin) ने लिखा है—"मैं बच्चों को सबसे पहले इतिहास पढ़ाने के पक्ष में हूँ, क्योंकि इसमें उन्हें ज्ञान प्राप्त होता है, मनोरंजन होता है, उनमें समझदारी पैदा होती है तथा उनकी भावनाओं का विकास होता है। साथ ही इतिहास उनके स्मृति-पटल पर तथ्यों की बहुलता भी एकत्रित करता है जो उनके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास-शिक्षण के प्रमुख मूल्यों का विवेचन इस प्रकार है—

1. नैतिक मूल्य : Ethical Values—पाठ्यक्रम में इतिहास को इस कारण बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है कि वह नैतिकता की शिक्षा प्रदान करता है। इसके अध्ययन से बालक संतों, महात्माओं, सुधारकों, नेताओं तथा प्रसिद्ध व्यक्तियों के बहुमूल्य विचारों के सम्पर्क में आता है। उनका जीवन छात्रों को उनकी भाँति उत्साही तथा सत्यनिष्ठ बनने के लिए प्रोत्साहन देता है। इसके अतिरिक्त बालक यह जान जाता है कि अन्त में सत्य की ही विजय होती है—चाहे सत्य-प्रेमी को जीवन में कितने ही कष्ट क्यों न उठाने पड़ें। असत्यता के द्वारा पतन ही होता है, इससे भी बालक परिचित हो जाते हैं। इसकी आलोचना में यह कहा गया है कि मनोवैज्ञानिक आधारों के अनुसार इतिहास के पाठ द्वारा नैतिकता की शिक्षा नहीं देनी चाहिए। इतिहास द्वारा नैतिकता की शिक्षा को प्रदान करने के विरुद्ध निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किये गये हैं—

(अ) सत्यता आदि अच्छे गुणों की विजय सदैव नहीं होती है और बुराई तथा असत्यता का सदैव पतन नहीं होता है। बहुत-से अवसरों पर यह देखा गया है कि ईमानदार तथा सत्य-प्रेमी मनुष्य जीवन-भर कष्ट भुगतते हैं और अयोग्य तथा मिथ्याभाषी सफलता प्राप्त करते हैं।

(ब) अनुभव एवं निरीक्षण के आधार पर यह देखा गया है कि छात्र सन्तों तथा पवित्र मनुष्यों के कार्यों में कोई रुचि नहीं लेते हैं। वे शूरवीरों के कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं और उनकी पूजा करने लगते हैं। वे इस बात पर कोई ध्यान नहीं देते कि हमारे नायकों में क्या गुण हैं, क्या अवगुण हैं ? उनके नायक चाहे कितने ही अवगुण रखते हैं, इसका बिना ध्यान किये वे उसके अनुयायी बन जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि छात्र गुरुनानक या चैतन्य के अध्ययन में कोई रुचि नहीं लेते हैं, वरन् क्रियाशील व्यक्तियों के अध्ययन में अधिक रुचि रखते हैं, जैसे—क्लाइव, तैमूर, बाबर आदि। इस प्रकार के व्यक्तियों के चरित्र उनको सरलतापूर्वक अपनी ओर आकर्षित एवं प्रभावित कर लेते हैं।

(स) इसके विरुद्ध एक यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है कि महानुभावों के चरित्र विभिन्न जटिलताओं से परिपूर्ण होते हैं। उनके चरित्रों में गुण तथा अवगुण—दोनों विद्यमान होते हैं। यदि केवल उनके गुणों का ही वर्णन किया जाय तो यह अवैज्ञानिक होगा। यदि दोनों का विवरण दिया जाय तो छात्रों में भी अवगुण उत्पन्न होना सम्भव है।

उपर्युक्त तर्क पर्याप्त सशक्त हैं। इनको हम निराधार नहीं कह सकते हैं। इस प्रकार इतिहास-शिक्षण के द्वारा दी गई इस नैतिकता की शिक्षा को अनुपयुक्त कहकर हमको इतिहास के अध्यापक के हृदय को दुःखी नहीं करना चाहिए, वरन् उसको यह सुझाव दिया जाय कि वह इतिहास के शिक्षण में इसका प्रत्यक्ष रूप से

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रतिपादन न करके अप्रत्यक्ष रूप से बालकों को शिक्षा दे सकता है। डॉ० कीटिं (Keating) ने कहा है—"यदि हमें इतिहास के शिक्षण के नैतिक महत्त्व प्राप्त करने हैं तो उसके प्रकरणों का शिक्षण समस्यात्मक विधि द्वारा किया जाय।"[1]

2. **सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्य : Cultural & Social Values**—इतिहास हमें अपनी वर्तमान संस्कृति को समझने के योग्य बनाता है। यह वर्तमान काल की संस्थाओं तथा दशाओं के उद्गम की विवेचना करता है और इन प्रश्नों का उत्तर देता है, जैसे—कब, कैसे और कहाँ से इन संस्थाओं का उद्गम हुआ। यह हमें अतीत काल के वर्णन द्वारा वर्तमान काल की संस्कृति को स्पष्ट करता है और यह बताता है कि प्राचीन भारतीय संस्कृति की आत्मसात् करने की विशेषता के कारण आज की संस्कृति इस रूप में हमें प्राप्त हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इतिहास हमारे वर्तमान समाज तथा संस्कृति का स्पष्टीकरण करता है। अतः यह हमें सामाजिक समस्याओं के समझने तथा सुलझाने में बहुत सहायता प्रदान करता है। आज जब भारत में व्यक्ति भौतिक मूल्यों की ओर आकृष्ट हो रहे हैं तो यह आवश्यक हो जाता है कि वे अपनी संस्कृति में आस्था रखें और अपने सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्यों को जानें। साथ ही अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति ममत्व की भावना विकसित करें।

3. **अनुशासनात्मक मूल्य : Disciplinary Values**—इतिहास मानसिक शिक्षा के लिए बहुत ही लाभदायक हैं। इसके द्वारा स्मरण, तर्क तथा कल्पना-शक्ति का विकास होता है। यह कहा जा सकता है कि इतिहास के द्वारा जितना मस्तिष्क को शिक्षित किया जा सकता है, उतना शिक्षालय के किसी अन्य विषय से नहीं किया जा सकता। परन्तु यह तभी सम्भव है, जब बालक स्वयं इतिहास के अध्ययन में तुलना तथा विवेचना करे। इसके अतिरिक्त वह स्वयं तथ्यों के विवेचन के पश्चात् सत्यता का पता लगाये तथा अपनी निर्णय-शक्ति का प्रयोग करे और सिद्धान्तों का निर्धारण करे।

4. **सूचनात्मक मूल्य : Informative Values**—इसमें कोई सन्देह नहीं कि इतिहास सूचनाओं का भण्डार है, जिसके द्वारा छात्र अपनी ज्ञान-पिपासा को तृप्त कर सकता है। इतिहास में बालक अपनी शक्ति तथा अनुभव के आधार पर खोज कर सकता है। इतिहास मानव की—विज्ञान और कला, भाषा तथा साहित्य, सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन, दार्शनिक तथा आर्थिक विकास से सम्बन्धित सब समस्याओं का हल प्रदान करता है। इतिहास मानव के भविष्य के लिए पथ-प्रदर्शन करता है।

---

1. Quoted by Ghosh, K. D. : *Creative Teaching of History*, p. 1

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. राष्ट्रीय मूल्य : Nationalistic Values—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि इतिहास अपने अध्ययन करने वालों में देश-प्रेम तथा देश-भक्ति उत्पन्न करता है। इसी तत्त्व के कारण जर्मन निवासियों ने इतिहास को बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया था। देश-प्रेम तथा देश-भक्ति का उद्देश्य निर्धारित कर उन्होंने अपनी शिक्षालयों में इतिहास-शिक्षण प्रारम्भ किया और इसके द्वारा एक पवित्र आर्य-जाति का सृजन किया। हिटलर ने इसी उद्देश्य से विश्व में इस जाति को सर्वप्रथम स्थान दिया और इसी की सत्ता समस्त विश्व में स्थापित करने का प्रयत्न किया। उसने जर्मन निवासियों के सम्मुख यह सिद्धान्त रखा कि 'मेरा देश, सत्य या असत्य' (My Country right or wrong) इसी की उन्नति हमारा उद्देश्य है। परन्तु इस प्रकार का इतिहास-शिक्षण इतिहास के वैज्ञानिक आधार की जड़ों को खोखला बनाता है। वैज्ञानिक इतिहास सतर्कता के साथ तथ्यों का एकत्रीकरण, आलोचनात्मक तथा असंवेगात्मक तर्कपूर्ण विवेचन चाहता है। यदि 'मेरा देश, सत्य या असत्य' किन्तु एकमात्र देश, इस उद्देश्य से इतिहास का शिक्षण किया जाता है तो वह अन्तर्राष्ट्रीय भावना को भारी ठेस पहुँचायेगा। इतिहास का उद्देश्य—युक्तिसंगत देश-प्रेम उत्पन्न करना तथा विश्व-बन्धुत्व की भावना को विकसित करना है।

6. नागरिक मूल्य : Civic Values—गार्लिक (Garlick) महोदय का कथन है कि "इतिहास स्वदेश-प्रेम की भावना को जाग्रत करने का प्रयत्न करता है। यह राष्ट्रीय गर्व को प्रदान कर अच्छे नागरिक बनाने का प्रयत्न करता है। यही इसका प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।" यहाँ यह प्रश्न उठता है कि इतिहास का यदि यह उद्देश्य है तो नागरिकशास्त्र को विद्यालय पाठ्यक्रम में एक पृथक् विषय के रूप में क्यों स्थान प्राप्त हुआ? नागरिकशास्त्र-शिक्षण का प्रमुख ध्येय—अच्छे नागरिक उत्पन्न करना है। जब नागरिकशास्त्र इतिहास का एक अंग था, तब योग्य नागरिक उत्पन्न करना—इतिहास शिक्षण का उद्देश्य माना जा सकता था। परन्तु जब वैज्ञानिक और लोकतान्त्रिक प्रवृत्तियों ने नागरिकशास्त्र को एक पृथक् विषय का स्थान प्रदान कर दिया तब इतिहास-शिक्षण का योग्य नागरिक उत्पन्न करना—उद्देश्य नहीं माना जा सकता। इसका शिक्षण योग्य नागरिक उत्पन्न करने में सहयोग प्रदान कर सकता है, क्योंकि इसके द्वारा छात्रों के समक्ष, अतीत में नागरिकों ने अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का किस प्रकार निर्वाह किया? नागरिकों को राज्य के द्वारा क्या सुविधायें प्रदान की गयीं आदि बातों का विवेचन प्रस्तुत करके योग्य नागरिक बनने में सहायता प्रदान की जा सकती है। इतिहास सामाजिक जीवन के धार्मिक, नैतिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अंगों का विवेचन करके जीवन की वास्तविक समस्याओं का ज्ञान कराता है और यह ज्ञान दैनिक नागरिकता के क्षेत्र में बहुत लाभदायक सिद्ध होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि योग्य नागरिक उत्पन्न करना—इतिहास-शिक्षक का उद्देश्य नहीं है, वरन् एक मूल्य है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपर्युक्त विवेचन को देखने से यह प्रतीत होता है कि इतिहास के अध्ययन से बहुत से मूल्य प्राप्त होते हैं। हम यह जानते हैं कि किसी भी विज्ञान का महत्त्व सत्य के प्रतिपादन में है और इसलिए हम इतिहास से भी और कुछ नहीं चाहते, केवल सत्य की अभिव्यक्ति चाहते हैं और यह सत्य के प्रतिपादन में पर्याप्त सहायक है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Teaching of history in our high schools can be used for developing civic and moral sense in the students." Discuss fully. —(A U., 1959)

   "हमारे हाईस्कूलों में इतिहास-शिक्षण को छात्रों में नागरिक तथा नैतिक भावना को विकसित करने के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।" इसकी विवेचना कीजिए।

2. What are the aims of education according to Mudaliar Commission ? To what extent can they be realised by the teaching of history ? —(A. U., 1973)

   मुदालियर कमीशन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य क्या हैं ? इतिहास-शिक्षण द्वारा ये उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त किये जा सकते हैं ?

3. What are aims of teaching history at the secondary school stage ? What changes will you suggest in the context of present political and socio-economic changes ? —(Raj., B. Ed., 1967, P. U., 1971)

   माध्यमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षा के क्या उद्देश्य हैं ? वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के सन्दर्भ में उनमें क्या परिवर्तन किये जाने चाहिए ?

4. What should be the aims of teaching history at primary middle and higher secondary stages and why ? —(A. U., 1969)

   प्राथमिक, मिडिल एवं उच्चस्तर माध्यमिक स्तरों पर इतिहास-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए और क्यों ?

5. What is the differnce between the aims and values of teaching a subject ? Summarize the aims and values of teaching history in secondary schools. —(A. U., 1971)

   किसी विषय के शिक्षण के उद्देश्यों और मूल्यों में क्या अन्तर है ? माध्यमिक विद्यालय में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों और मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

6. Discuss the aims of teaching history in higher classes of schools. To what extent, in your opinion, theses aims are being achieved through history teaching ? —(A. U., 1973, 76, 78)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विद्यालय की उच्च कक्षाओं में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्यों की व्याख्या कीजिए। आपकी राय में इतिहास-शिक्षण से इन उद्देश्यों की पूर्ति किस सीमा तक सम्भव है ?

7. Why should a teacher of history know the aims of teaching the subject ? Why should be the aims of teaching history at primary stage and why ? —(A. U., 1974)

इतिहास के शिक्षक को इतिहास के उद्देश्यों की जानकारी क्यों आवश्यक है ? प्राइमरी स्तर पर इतिहास-शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए, और क्यों ?

8. Write short note on 'Aims of teaching history at primary stage." —(A. U., 1977)

'प्राथमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

9. Write short note on 'Aims of teaching history in the higher classes.' —(A. U., 1978)

'उच्च कक्षाओं में इतिहास-शिक्षण के उद्देश्य' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

10. 'Discuss the main aims of teaching history at junior stage.' —(A. U., 1980; R. U., 1982)

जूनियर स्तर पर इतिहास-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों का विवेचन कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—सही विकल्प को छाँटिये—

1. शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण में—
   (i) समाज की आर्थिक परिस्थितियाँ,
   (ii) बालक,
   (iii) समाज की आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक, जीवन-दर्शन तथा बालक,
   (iv) शासक की आकांक्षाओं को आधार बनाया जाता है।
2. इतिहास-शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य—
   (i) लोकतन्त्रीय नागरिकता का विकास,
   (ii) आर्थिक कुशलता का विकास,
   (iii) अतीत की सहायता से वर्तमान को स्पष्ट करना,
   (iv) नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान करना है।

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं उसके समक्ष 'हाँ' तथा जिसे असत्य समझते हैं उसके सामने कोष्ठक में 'नहीं' लिखिये—

(i) उद्देश्य पूर्व निर्धारित साध्य होता है। ( )
(ii) उद्देश्य व्यावहारिक एवं प्रयोगात्मक होता है। ( )

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iii) प्राप्य-उद्देश्य व्यावहारिक होते हैं जिनकी प्राप्ति का दायित्व शिक्षक तथा पाठ-विशेष की विषय-वस्तु पर होता है। (

(iv) उद्देश्य का क्षेत्र संकुचित होता है। (

(v) इतिहास का प्रयोगात्मक प्राप्य-उद्देश्य छात्रों में ऐतिहासिक घटनाओं के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालने की अभिवृत्ति का विकास करना है। (

(vi) मूल्य प्राप्य होते हैं। (

(vii) इतिहास-शिक्षण से आर्थिक एवं प्रौद्योगिक मूल्यों की प्राप्ति होती है। (

(viii) इतिहास-शिक्षण बालकों में नागरिकता के अच्छे गुणों के विकास में सहायक है। (

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

4

इतिहास-शिक्षण और राष्ट्रीय एकता

HISTORY TEACHING AND NATIONAL INTEGRATION

"National integration aims at unifying the people and not necessarily among them conform to one pattern."—NCERT.

विषय-प्रवेश

प्रत्येक देश अपने निवासियों में राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता है, क्योंकि यह माना जाता है कि जब व्यक्ति में राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित हो जायगा तभी वह अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति तथा उसकी रक्षा कर सकता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण के फलस्वरूप राष्ट्रीय विकास बड़ी तीव्र गति से होता है। अतः प्रत्येक देश में राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और उपयोगी साधन माना गया और राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण एवं राष्ट्रीय भावना का विकास शिक्षा के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य निर्धारित किये गये। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया।

जब हम शताब्दियों की दासता से स्वतन्त्र हुए तब हमारे कर्णधारों ने इस बात का अनुभव किया कि राष्ट्रीय एकता स्थापित करने तथा राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के दृष्टिकोण से इतिहास को विद्यालय पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। विभिन्न आयोगों, समितियों तथा विचार सम्मेलनों ने इस विचारधारा का समर्थन किया। साथ ही इन विचारों को क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न सुझाव दिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता
Need of National Integration

यदि आज भारत एक समृद्धिशाली देश बनना चाहता है तो यह आवश्यक है कि उसकी राष्ट्रीय एकता को सुरक्षित किया जाए। इस समय आर्थिक विषमताओं, भाषायी विभिन्नताओं, सामाजिक विषमता एवं अन्तरों, धार्मिक भेदभावों, स्थानीय तथा क्षेत्रीय लगावों आदि ने हमारे राष्ट्रीय जीवन को निर्बल बना दिया है। इस कारण यह आवश्यक हो गया है कि भारत की राष्ट्रीय एकता को कायम किया जाय। साथ ही इस बात पर बल दिया जाने लगा है कि इस एकता को कायम करने के लिए विरोधात्मक एवं ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों को दबाकर राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित एवं अग्रसर बनाने वाली शक्तियों को प्रोत्साहित किया जाय। भावात्मक एवं राष्ट्रीय एकीकरण हमें आन्तरिक तथा बाह्य खतरों से भी सुरक्षा प्रदान करेंगे। साथ ही इनके द्वारा भविष्य में सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति भी प्रदान की जायगी।

संक्षेप में भारत के लिए राष्ट्रीय एकता को प्राप्त करना अधोलिखित कारणों से आवश्यक है—

(1) विविधता में अपनी एकता को कायम रखने के लिए;

(2) तीव्र गति से सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक उन्नति को प्राप्त करने के लिए;

(3) विभिन्न समूहों की संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति के अंश के रूप में विकसित करके राष्ट्र के सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए;

(4) समय-समय पर उपस्थित होने वाली ध्वंसात्मक प्रवृत्तियों पर रोक लगाने के लिए;

(5) बाह्य आक्रमणों एवं आन्तरिक खतरों से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए।

राष्ट्रीय एकता का अर्थ
Meaning of National Integration

राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति को भावात्मक रूप से एकीकृत होना आवश्यक है। हम उस व्यक्ति को भावात्मक रूप से एकीकृत कह सकते हैं जो सुसंतुलित (Well-balanced) व्यक्तित्व रखता है। साथ ही उसकी प्रेरणाएँ, आकांक्षाएँ तथा भावनाएँ पर्याप्त रूप से निर्मल हैं और उसके हित पूर्णतः संकुचित एवं स्वार्थपूर्ण नहीं हैं। जब इस दृष्टिकोण को राष्ट्र के रूप में ग्रहण करते हैं तो राष्ट्रीय एकता का अर्थ यह लिया जाता है कि संकुचित भावनाओं, पक्षपातों, भाषायी तथा सांस्कृतिक विभिन्नताओं, आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक कट्टरता एवं विषमताओं को दूर करके व्यापक एवं उदार दृष्टिकोण का निर्माण किया जाय जिससे व्यक्ति दूसरे सांस्कृतिक एवं जातीय समूहों को सम्मान की दृष्टि से देख सके और उनके साथ सहिष्णुता की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नीति को प्रयोग में ला सके। यह दृष्टिकोण उनको क्षुद्र एवं वर्गीय पक्षपातों से ऊपर उठायेगा और देश-प्रेम तथा राष्ट्रीय गर्व की भावना का विकास करेगा। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय एकता व्यक्तियों को मन, वचन तथा कर्म से एक बनने पर बल देती है। जब व्यक्ति मन, वचन तथा कर्म से एक हो जायेंगे तब उसका फल राष्ट्रीय एकता होगा।

राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यभाग
Role of History for National Integration

डॉ० सम्पूर्णानन्द का मत है कि राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए शिक्षा अति महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकती है। अतः विद्यालय पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाय, क्योंकि इसके अध्यापन के द्वारा छात्रों में उन विचारों, भावनाओं, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं का विकास किया जा सकता है जो राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए आधार का काम करते हैं। संक्षेप में राष्ट्रीय एकता के मूलाधार निम्नलिखित हैं—

(1) छात्रों में यह भावना विकसित हो जाय कि भारत एक राष्ट्र है।

(2) यह भावना विकसित की जाय कि भारत की विविधता में एकता निहित है।

(3) देश की संस्कृति के लिए प्रेम उत्पन्न किया जाय।

(4) छात्रों को इस तथ्य से अवगत कराया जाय कि भारत ने सदैव दूसरी संस्कृतियों को स्वयं आत्मसात् करने के लिए सफल एवं महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि उसने सदैव उनका भारतीयकरण किया है।

(5) देश के विभिन्न भागों की आर्थिक अन्योन्याश्रितता एवं समान समस्याओं से अवगत कराना।

(6) छात्रों में यह समझदारी विकसित करना कि देश की सामाजिक तथा आर्थिक उन्नति भारत के सभी क्षेत्रों तथा लोगों के सहयोग पर निर्भर है।

(7) छात्रों में दूसरे लोगों, उनके विश्वासों, परम्पराओं आदि के लिए आदर की भावना का विकास करना।

(8) राष्ट्रीय हित के समक्ष व्यक्तिगत या स्थानीय या क्षेत्रीय हित को त्यागने की तत्परता।

उपर्युक्त विचारों, भावनाओं आदि के विकास के लिए भारतीय इतिहास का अध्यापन परम आवश्यक है। साथ ही यह 'भारतीयता' (Indianness) की भावना के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण एवं निर्णयात्मक कार्य कर सकता है। परन्तु इतिहास का अध्यापक उक्त कार्यों को तभी कर सकता है जब उसका शिक्षण वस्तुनिष्ठ ढंग

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से किया जायेगा। छात्रों के समक्ष घटनाओं का विवरण उचित ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए जिससे उनके मस्तिष्कों में सम्पूर्णता तथा उचित दृष्टिकोणों का निर्माण हो सके। इसके लिए शिक्षक को इतिहास का अध्यापन उदार एवं निष्पक्ष ढंग से करना होगा। इस प्रकार से किया गया अध्यापन छात्रों में आलोचनात्मक चिन्तन तथा अतीत की उपलब्धियों एवं निर्बलताओं का मूल्यांकन करने की शक्ति विकसित करेगा। यह उनमें सहिष्णुता, देश-प्रेम की भावना तथा पारस्परिक सम्बन्धों को समझने की भावना के विकास में भी सहायक होगा। साथ ही यह छात्रों को प्रचार तथा सम्मतियों में से तथ्यों को छाँटने के लिए भी समर्थ बनायेगा। अतः इतिहास-शिक्षण को वस्तुनिष्ठ बनाना आवश्यक है। साथ ही सांस्कृतिक संश्लेषण पर बल दिया जाना चाहिए। दूसरे शब्दों में इसका शिक्षण करते समय उन तत्त्वों पर अधिक बल दिया जाय जिन्होंने विभिन्न संस्कृतियों को मिलाने में सहयोग दिया है।

राष्ट्रीय एकता के लिए इतिहास का कार्यक्रम
Programme of History for National Integration

राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए इतिहास के कार्यक्रम में अधोलिखित तथ्यों पर बल दिया जा सकता है—

प्राथमिक स्तर : Primary Stage

(1) कार्यक्रम में लोक-गीतों एवं राष्ट्र-भक्तों की कहानियाँ। परन्तु कहानियाँ भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न व्यक्तियों की होनी चाहिए। साथ ही यह भी ध्यान रखा जाय कि इनका प्रतिपादन ऐतिहासिक कार्यक्रम के अनुसार किया जाय।

(2) सामाजिक जीवन की स्थितियों का सरलतम ज्ञान कराया जाय।

(3) स्थानीय ऐतिहासिक सामग्री का अध्ययन कराया जाय और यह भी स्पष्ट किया जाय कि राष्ट्रीय इतिहास के विकास में इस स्थान के लोगों का क्या योगदान है।।

माध्यमिक स्तर : Secondaay Stage

(1) विभिन्न क्षेत्रों की संस्कृतियों एवं सामाजिक परिस्थितियों का ज्ञान।

(2) भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास पर बल दिया जाय। साथ ही भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताओं एवं उसकी अन्य संस्कृतियों के लिए दी गई देनों का विवेचन। उनको यह स्पष्टतः बताया जाय कि भारतीय संस्कृति आज जिन रूपों में है, वह विभिन्न जातियों एवं समुदायों के लोगों के परस्पर मैत्री-पूर्ण सम्बन्धों का ही परिणाम है।

विश्वविद्यालय स्तर : University Stage

(1) भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं, साहित्य, संस्कृतियों आदि का तुलनात्मक अध्ययन।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं शैक्षिक समस्याओं का व्यावहारिक ज्ञान ।

छात्रों में इतिहास के पाठों द्वारा राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने के लिए उनका अध्यापन किस ढंग से किया जाय । इसको स्पष्ट करने के लिए उदाहरणस्वरूप नीचे एक पाठ की व्याख्या की जा रही है—

प्रकरण—भारतीय इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

(अ) सद्भावनाओं का विकास—इस पाठ के अध्यापन द्वारा छात्रों में अधोलिखित बातों की समझदारी विकसित की जायेगी—

(1) भारत एक भौगोलिक इकाई है जिसने विभिन्न प्रकार से देश के निवासियों के जीवन को प्रभावित किया है ।

(2) छात्रों को इस तथ्य से अवगत कराना कि भारतवासी विभिन्न प्रजातियों के वंशज हैं ।

(3) इस बात की जानकारी कराना कि भारत में भाषा, धर्म तथा सामाजिक परम्पराओं की विभिन्नता होते हुए भी एक मूलभूत एकता है ।

(4) देश की भौगोलिक एकता ने समान संस्कृति के विभिन्न पक्षों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है ।

(ब) विषय-वस्तु तथा शिक्षण-बिन्दु : Content and Teaching Hints—शिक्षक प्रस्तुतीकरण के प्रत्येक सोपान पर ऐतिहासिक तथ्यों का भौगोलिक पृष्ठभूमि के साथ समन्वय स्थापित करेगा ।

(i) शिक्षक जब देश के पर्वतों तथा नदियों के विषय में बतायेगा तब उसको मानचित्र में उनकी स्थिति प्रदर्शित करनी होगी । साथ ही वह इस तथ्य पर बल देगा कि देश के विभिन्न भागों के लोग इन पर्वतों एवं नदियों को पवित्र मानते थे । इसके प्रमाण के लिए वह उनके समक्ष निम्नलिखित श्लोकों को प्रस्तुत करेगा—

(क) गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिन सन्निधि कुरु ।।

(ख) महेन्द्रो मलयः साध्यः शुक्तिं मान्धक्ष पर्वतः ।
विन्ध्यक्ष पारियान्त्रश्च सप्नते कुल पर्वताः ।।

(ii) इसके उपरान्त शिक्षक देश की जलवायु तथा वनस्पति के विभाजन के विषय में बतायेगा । वह लोगों की आदतों की विभिन्नता, भोजन, वेशभूषा, भाषा आदि का देश के विभिन्न भागों की भौगोलिक विशेषताओं के साथ समन्वय स्थापित करेगा ।

(iii) वह इस तथ्य को भी स्पष्ट करेगा कि भौगोलिक विभिन्नताओं के कारण विभिन्न भाषाओं, कलाओं आदि को जन्म मिला ।

(iv) शिक्षक इस तथ्य को भी समझायेगा कि भारत की भौगोलिक इकाई की पूर्णता ने मातृभूमि की इस पवित्र धारणा—'जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' को जन्म दिया ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(v) छात्रों को इस तथ्य से अवगत कराना कि हमारे विभिन्न धर्मों तथा उनके नेताओं तथा प्रवर्तकों ने सम्भवतः इस एकता की अनुभूति कर ली थी। इसी कारण उन्होंने देश के विभिन्न भागों में अपने केन्द्र स्थापित करने का प्रयास किया था।

(स) अन्य क्रियाएँ : Other Activities—(i) छात्रों से भारत का मानचित्र बनवाया जायेगा जिसमें सभी धर्मों के तीर्थस्थान प्रदर्शित किये जायेंगे।

(ii) छात्रों को उन श्लोकों तथा कविताओं को याद करने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा, जो देश की एकता पर बल देती हैं। उदाहरणार्थ—रामधारीसिंह दिनकर द्वारा रचित 'हिमालय', इकबाल द्वारा रचित 'सारे जहाँ से अच्छा', 'वन्दे-मातरम्' नामक गान।

(iii) सभी छात्रों को राष्ट्रीय गीत को हृदयंगम करने के लिए प्रोत्साहित करना।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. How far is it possible to promote national integration through the teaching of history ? Illustrate your answer with suitable examples. —(P. U., 1970)

इतिहास-शिक्षण द्वारा राष्ट्रीय एकता का विकास करना किस सीमा तक सम्भव है ? अपने उत्तर को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं उसके समक्ष 'सत्य' तथा जिसे असत्य समझते हैं उसके सामने कोष्ठक में 'असत्य' शब्द लिखिए—

(i) इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में सत्य देश-प्रेम की भावना का विकास करना है। ( )

(ii) भारत में राष्ट्रीय एकता की स्थापना करना सांस्कृतिक जीवन को विश्रृंखलित करने के लिए अनिवार्य है। ( )

(iii) राष्ट्रीय एकता के विकास के लिए छात्रों में यह भावना विकसित की जाय कि भारत विविधताओं से पूर्ण एक राष्ट्र है। ( )

(iv) राष्ट्रीय एकता के लिए व्यक्तियों में मन, वचन व कर्म की एकता का होना आवश्यक है। ( )

(v) राष्ट्रीय एकता के लिए प्राथमिक स्तर पर भारत के विभिन्न क्षेत्रों की भाषाओं, साहित्य, कला, संस्कृतियों आदि का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाय। ( )

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का कार्यभाग

ROLE OF HISTORY IN THE DEVELOPMENT OF INTERNATIONAL UNDERSTANDING

"Understanding of the ways of life and cultures of other peoples, their contribution to humnn civilization through the ages and their present day interdependence, is the beginning of the process of developing world-mindedness."

—S. V. C. Aiya

विषय-प्रवेश

राष्ट्रीयता की भावना जब तक उदार, व्यापक एवं सहिष्णु रहती है, तभी तक ग्राह्य बनती है। जब वह संकीर्ण बन जाती है तब घातक एवं हेय हो जाती है। नाजियों की राष्ट्रीयता के समान संकीर्ण राष्ट्रीयता युद्धों की जननी होती है, अशान्ति को आश्रय प्रदान करती है, मानव मात्र में भेद डालती है और उन्हें एक-दूसरे से पृथक् करती है। इसी उग्र राष्ट्रीयता के कारण एक राष्ट्र अपनी सुख-समृद्धि दूसरे राष्ट्र की बलि देकर करना चाहता है। आज मानव अपने राष्ट्र के लिए दूसरे राष्ट्र की हत्या करना चाहता है। जवाहरलाल नेहरू ने ठीक ही लिखा है—"राष्ट्रीयता एक ऐसा विचित्र तत्त्व है, जो एक देश के इतिहास में जहाँ जीवन विकास, शक्ति और एकता का संचार करता है वहाँ संकुचित भी बनाता है, क्योंकि इसके कारण एक व्यक्ति अपने देश के बारे में विश्व के अन्य देशों से पृथक् रूप में सोचता है।"[1]

---

1. "Nationalism is a curious phenomenon, which at a certain stage in the country's history, gives life, growth, strength and unity but at the same time it has a tendency to limit one, because one thinks of one's country as something different from the rest of the world." **—Jawahar Lal Nehru.**

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

संकुचित राष्ट्रीयता के परिणामस्वरूप ही विश्व को दो महायुद्धों का सामना करना पड़ा और आज वह तीसरे महायुद्ध के सम्भावित संकट से ग्रसित है। आज विश्व के सभी देशों के कर्णधार इस बात का अनुभव करते हैं कि यदि मानव-जाति को विनाश से बचाना है तो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जाय। रोमा रोलां का कथन है—"भयंकर विनाशकारी परिणाम वाले दो विश्वयुद्धों ने कम से कम यह सिद्ध कर दिया है कि क्षुद्र और आक्रमणकारी राष्ट्रीयता के संकीर्ण बन्धनों को तोड़ डालना चाहिए और प्रेम, दया तथा सहानुभूति पर आधारित मानव-सम्बन्धों का विकास करने के लिए मानव-जाति के स्वतन्त्र संघ का निर्माण किया जाना चाहिए।"[1]

अन्तर्राष्ट्रीयता का अर्थ
Meaning of Internationalism

अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विश्व-मैत्री एवं विश्व-बन्धुत्व की भावनाओं पर आधारित है। मानव मात्र का कल्याण हो—उनमें भाई चारे का सम्बन्ध हो, समस्त वसुधा ही कुटुम्ब के समान प्रतीत हो, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना इन्हीं श्रेष्ठ विचारों पर निर्भर करती है। डॉक्टर वाल्टर ए० सी० लेब्स का कथन है—"अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना इस ओर ध्यान दिए बिना कि व्यक्ति किस राष्ट्रीयता या संस्कृति के हैं, एक-दूसरे के प्रति सब जगह उनके व्यवहार का आलोचनात्मक एवं निष्पक्ष रूप से निरीक्षण करने और आकलन करने की योग्यता है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को इस योग्य होना चाहिए कि सब राष्ट्रीयताओं, संस्कृतियों और प्रजातियों का इस संसार में रहने वाले लोगों की समान रूप से महत्त्वपूर्ण विभिन्नताओं के रूप में निरीक्षण कर सके।"[2]

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के साधन
Means for the Development of International Understanding

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए सिनेमा, फिल्म, टेलीविजन, रेडियो, शिक्षा आदि साधनों को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसके विकास में इन

---

1. "The two Global Wars, with their terribly devastating results, have at least established the fact the that narrow bonds of sordid and aggressive nationalism must be smashed through and an unwalled and unhedged federation of mankind should be brought into being for fostering for human relations on the plane of love and sympathy." —Romain Rolland.
2. "International understanding is the ability to observe critically and objectively and appraise the conduct of men everywhere to each other irrespective to the nationality or culture to which they belong. To do this, one must be able to observe all nationalities, cultures and races as equally important varieties of human beings inhabiting this earth."—Dr. Walter A. C. Laves.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सबका अपना-अपना महत्त्व है परन्तु इनमें 'शिक्षा' को सबसे प्रभावशाली साधन माना जाता है। इसके कई प्रमुख कारण हैं। प्रथम, यह एक स्वीकृत तथ्य है कि युद्धों का जन्म मनुष्यों के मस्तिष्कों में होता है। जब युद्धों को मानव मस्तिष्क द्वारा जन्म दिया जाता है तो इसी मस्तिष्क में शान्ति के मूलाधारों की नींव क्यों न डाली जाय। इस कार्य को केवल शिक्षा ही सफल ढंग से कर सकती है क्योंकि इसके द्वारा छात्रों में उचित दृष्टिकोणों तथा मानवीय हित के लिए कार्य करने की भावना का विकास किया जा सकता है। शिक्षा छात्रों को विश्व में होने वाले परिवर्तनों एवं घटनाओं से अवगत कराकर इस बात का आभास करा सकती है कि सहयोग एवं सह-अस्तित्व के अभाव में जीवन चलाना असम्भव है। द्वितीय, जिन संस्थाओं में शिक्षा प्रदान की जाती है, वे सर्वोत्तम सांस्कृतिक तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं और निष्पक्षता तथा सत्य के क्षेत्र में समाज के साधारण स्तर से ऊँची होती है क्योंकि उनमें एक विशेष वातावरण की स्थिति होती है। इस तथ्य की पुष्टि यूनेस्को द्वारा प्रकाशित 'टुवर्ड्स वर्ल्ड अण्डरस्टैंडिंग' नामक पत्रिका द्वारा की गई जिसमें लिखा है—"विद्यालय आस-पास की संस्कृति में निहित सर्वोत्तम तत्त्वों को व्यक्त कर सकते हैं और साधारणतः करते भी हैं। वे सत्य ईमानदारी और निष्पक्षता के सामान्य स्तर से ऊँचा उठाने का प्रयास करते हैं।" अतः सभी देशों के शिक्षा-शास्त्रियों ने इस बात पर बल दिया कि शिक्षा के माध्यम से बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जाय, इसीलिए शिक्षा का एक उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना निर्धारित किया गया। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम में उन तत्त्वों, विषयों और क्रियाओं को स्थान प्रदान किया जाय, जो इस कार्य में सहयोग प्रदान कर सकती हैं। अतः इतिहास को इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास का कार्यभाग
Role of History in the Development of International Understanding

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है। इसके अध्यापन से छात्रों में उन अभिरुचियों, मनोवृत्तियों तथा निष्पक्षता आदि दृष्टिकोणों का विकास किया जा सकता है जो अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में आधार का कार्य करेंगे। कुछ विद्वानों का मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं

1. "Schools may and generally do represent the best elements in the surrounding culture. They should be and they generally are, above the average level of the community in their regard for truth and honest and fair dealing. They contrive to raise appreciably the standards and values of people."

— Towards World Understanding (UNESCO)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सद्भावना विश्व-इतिहास के अध्ययन का पारितोषिक सिद्ध होगा। इस प्रकार वे अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए विश्व-इतिहास पर बल देते हैं। एच० ए० एल० फिशर (H. A. L. Fisher) तथा अल्तमिरा का मत है कि राष्ट्रीय इतिहास का शिक्षण करने से पूर्व छात्रों को गुफाओं के मनुष्यों, बेबीलोनियन, अरब-वासियों, ग्रीकवासियों तथा रोमवासियों के विषय में ज्ञान दिया जाय। इससे उनके मस्तिष्क में प्रारम्भ से ही विश्व-बन्धुत्व के तत्त्वों को कूट-कूटकर भरा जा सकता है। यह भावना आगामी जीवन के लिए आधार का कार्य करेगी। इसके अतिरिक्त छात्रों को निष्पक्षता एवं सच्चाई के साथ प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान कराना चाहिए। जब बालकों में इस प्रकार के अंकुर उत्पन्न कर दिये जायेंगे तब वे विश्व-संघ तथा विश्व-सरकार जैसी संस्थाओं का निर्माण करने में सफल होंगे क्योंकि वे बालक ही कल के नागरिक हैं। सी० पी० हिल (C. P. Hill) का मत है कि इतिहास के अध्यापन से छात्रों को सत्य की खोज करने के लिए तत्पर बनाया जा सकता है और विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक सम्बन्धों एवं प्रभावों और उनकी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझने की क्षमता उत्पन्न करके अन्तर-राष्ट्रीय सद्भावना का विकास किया जा सकता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक निष्पक्षता से अपने राष्ट्र एवं अन्य दूसरे राष्ट्रों की सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियों एवं निर्बलताओं का वर्णन करे। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो वह अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को विकसित करने में असमर्थ रहेगा।

इतिहास का पाठ्यक्रम : History Curriculum

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम में विभिन्न स्तरों के लिए अधोलिखित तथ्यों को स्थान प्रदान किया जा सकता है—

प्रारम्भिक स्तर : Primary Stage

इस स्तर पर अग्रलिखित तथ्यों से सम्बन्धित कहानियों को स्थान दिया जाना चाहिए—

(1) शिकारी मानव, (2) भेड़ों को पालने वाला मानव, (3) किसान के रूप में मानव, (4) मिस्र के मनुष्य, जिन्होंने अनाज पैदा किया, (5) बेबीलोनिया के मनुष्य, (6) मोहनजोदड़ो की सभ्यता, (7) भारतीय आर्य, (8) फोनेसियन जाति, (9) ग्रीस की सभ्यता, तथा (10) रोमन सभ्यता।

माध्यमिक स्तर : Secondary Stage

(1) विभिन्न राष्ट्रों की संस्कृतियों का ज्ञान।

(2) विभिन्न राष्ट्रों ने मानव-जाति के कल्याण हेतु जो योगदान दिया है, उससे परिचित कराना।

(3) विभिन्न देशों की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परि-स्थितियों से परिचित कराना।

(4) अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का परिचय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्वविद्यालय स्तर : University Stage

(1) वे आन्दोलन, जिन्होंने विश्व-बन्धुत्व को बढ़ाने में सहयोग दिया।
(2) विश्व की विभिन्न संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
(3) विश्व के धर्मों, साहित्यों एवं कलाओं आदि का तुलनात्मक अध्ययन।

निष्कर्ष

यह सत्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में इतिहास बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य करता है और इसी कारण इतिहास-शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य—अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास को माना गया है परन्तु इतिहास को ही एकमात्र इस भावना के विकास के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता, वरन् इसके विकास में अन्य विषयों का शिक्षण भी सहायक है। इसके अतिरिक्त कला एवं साहित्य की मानवीय भावना, विज्ञान का मानव-जाति के कल्याण के लिए उपयोग, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा का अध्यापन, रेडियो, टेलिविजन, समाचार-पत्र, फिल्में आदि द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में सहायता प्रदान की जा सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल-कूद, संगीत एवं कलात्मक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी सहायक है। छात्रों, शिक्षकों एवं कलात्मक क्लबों का एक देश से दूसरे देश में जाना और वहाँ की परिस्थितियों का अध्ययन करना भी इस सम्बन्ध में पर्याप्त रूप से सहायक सिद्ध हो सकता है। वस्तुतः इस सद्भावना का विकास शिक्षकों के दृष्टिकोण पर बहुत निर्भर है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Mention in detail the devices you would employ in the teaching of history in order to create a spirit of internationalism in children. —(A. U., 1965)

   आप बालकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने के लिए किन युक्तियों का प्रयोग करेंगे ? विस्तारपूर्वक लिखिए।

2. How far do you accept education for international understanding as an aim of history-teaching ? What steps would you take to promote the spirit of internationalism in children ?

   आप अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य किस सीमा तक स्वीकार करते हैं ? आप बालकों में अन्तर्राष्ट्रीयता को विकसित करने के लिए किन उपायों को काम में लायेंगे ?

3. How far is it possible to promote international understanding through the teaching of history ? —(P. U., 1970)

   इतिहास के अध्यापन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को किस सीमा तक बढ़ावा दिया जाना सम्भव है ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं उसके समक्ष कोष्ठक में 'हाँ' और जिस कथन को असत्य समझते हैं उसके सामने कोष्ठक में 'नहीं' लिखिये—

(i) अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास के लिए छात्रों में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना विकसित करना अनिवार्य है। (

(ii) अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास के लिये छात्रों के मस्तिष्क में युद्ध की भावना का विकास करना आवश्यक है। (

(iii) अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास का प्रमुख साधन शिक्षा है। (

(iv) अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास में इतिहास का अध्यापन निरर्थक है।

(v) अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास के लिये पाठ्यक्रम में विश्व-इतिहास का अध्यापन अनुपयोगी है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

6

इतिहास का पाठ्यक्रम
HISTORY CURRICULUM

"The ideal of the teacher should be so to plan historical course as to give pupils a broad sweep of historical development and not drill them in details of any one of the courses of history."

—*Professor Taut.*

विषय-प्रवेश

इतिहास का अर्थ, वैज्ञानिकता एवं उसके उद्देश्यों को जानने के पश्चात् हमें यह निर्णय करना होगा कि उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कौन-सी और कितनी विषय-वस्तु पढ़ानी चाहिए। साथ ही इस विषय-वस्तु का चयन एवं संगठन किस प्रकार किया जाय जिससे हमारे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। इन प्रश्नों का उत्तर देना ही यहाँ हमारा उद्देश्य है। ये सभी प्रश्न इतिहास के पाठ्यक्रम के निर्धारण से सम्बन्धित हैं। अतः हम इनका क्रमशः नीचे विवेचन कर रहे हैं—

पाठ्यक्रम का अर्थ
Meaning of Curriculum

'करीकुलम' (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के एक शब्द (क्यूररे) 'Currere' से हुई है, जिसका अर्थ है—'Race-Course' (दौड़ का मैदान) इस प्रकार 'पाठ्यक्रम वह दौड़ का मैदान है, जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।' इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कुछ परिभाषायें आगे दी जा रही हैं—

1. कनिंघम—"पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक यन्त्र है जिससे

4

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वह अपनी सामग्री (विद्यार्थी) को अपने आदर्श (लक्ष्य) के अनुसार अपने कलागृह (विद्यालय) में मोड़ता है।"[1]

2. माध्यमिक शिक्षा आयोग—"पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाए जाते हैं, वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता निहित है जिसको छात्र-विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, वर्कशॉप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के अगणित अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है, जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।"[2]

3. मुनरो—"पाठ्यक्रम में वे समस्त अनुभव निहित हैं जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लाया जाता है।"[3]

पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त
Principles of Curriculum Construction

यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि इतिहास का कोई सामान्य आदर्श पाठ्यक्रम नहीं है, जो विश्व की समस्त जातियों के लिए उपयुक्त हो। परन्तु ऐसा पाठ्यक्रम बनाना सम्भव है। पाठ्यक्रम बनाते समय जिन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, वे निम्नलिखित हैं—

(1) एकता का सिद्धान्त : Principle of Unity—इतिहास अखण्ड तथा सम्पूर्ण एकता में आवद्ध है। इस एकता को ध्यान में रखकर हमें इतिहास के तथ्यों का चयन करना चाहिए। हमें जातियों की उन देनों को चुनना चाहिए जो वि

---

1. "It (curriculum) is a tool in the hands of the artist (teacher) to mould his material (pupil) according to his ideal (objective) in his studio (school)." —Cuningham
2. "Curriculum does not mean only the academic subjects traditionally taught in the school, but it includes the totality of experiences. That a pupil receives through the manifold activities that go on in the school, in the classroom, library laboratory, workshop, playground and in the numerous informal contracts between teachers and pupils. In this sense the whole life of the school becomes the curriculum which can touch the life of the students at all points and help in the evolution of a balanced personality." —Secondary Education Commission
3. "Curriculum embodies all the experiences which are utilized by the school to attain the aims of education." —Munroe

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सामान्य भण्डार में वृद्धि करती हैं। हमें इस बात को अपने सम्मुख रखना चाहिए कि मानव जाति का इतिहास—विकास का इतिहास है। इस कारण हम मानव गाथा को विभिन्न भागों में नहीं ले सकते हैं, क्योंकि इनके द्वारा मानव-चित्र पूर्ण रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। इस एकता को स्थिर रखने के लिए हमें इतिहास की सामग्री को अपनी सम्पूर्णता के साथ इतिहास-शिक्षण प्रारम्भ करने से पूर्व निश्चित कर लेना चाहिए। इस एकता के द्वारा हम इतिहास का शिक्षण प्रभावशाली बना सकते हैं और उसका अन्य विषयों से समन्वय कर सकते हैं।

(2) रुचि का सिद्धान्त : Principle of Interest—इतिहास की विषय-सामग्री का चयन करते समय ऐसे तथ्य चुने जायँ जो बालक में इतिहास के लिए रुचि उत्पन्न कर सकें परन्तु रुचि को आनन्द से मिश्रित नहीं करना चाहिए। इतिहास के वे तथ्य चुने जायें जिनके द्वारा बालकों में इतिहास की सत्यता को जाँचने की प्रवृत्ति उत्पन्न की जा सके।

(3) समन्वय तथा केन्द्रीकरण का सिद्धान्त : Principle of Concentration and Correlation—पाठ्यक्रम बनाते समय इस सिद्धान्त को ध्यान में रखना चाहिए। हरबार्ट (Herbart) ने सर्वप्रथम यह बताया कि हमारा पाठ्यक्रम विभिन्न कणों में संगठित है। पाठ्यक्रम के तथ्य ऐसे होने चाहिए जिनके द्वारा समन्वय स्थापित किया जा सके। उसके शिष्य ज़िलर (Ziller) ने इस सिद्धान्त को केन्द्रीयकरण का रूप दिया। उनका विचार था कि एक विषय को केन्द्र बनाकर अन्य विषयों का शिक्षण प्रदान किया जाय। इसके लिए उसने इतिहास को केन्द्र बनाया, जिस प्रकार क्राफ्ट को बेसिक शिक्षा में केन्द्रीय विषय बनाया गया। इस सिद्धान्त को प्रयोग में तभी लाया जा सकता है; जब उसके तथ्य इसके लिए चुने जायें। उन्हीं तथ्यों का निर्णय किया जाय, जो समन्वय तथा केन्द्रीय-करण स्थापित करने में सहायता प्रदान कर सकें। इसके लिए इतिहास को छात्रों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित किया जाय और स्थानीय इतिहास की सामग्री को पाठ्य-क्रम में रखा जाय। इतिहास की वह सामग्री चुनी जाय, जिसमें दोनों प्रकार अर्थात् शीर्षात्मक तथा अनुप्रस्थीय रूप से समन्वय स्थापित हो सके। इतिहास का एक पाठ दूसरे पाठ को समझने में सहायता दे। इस प्रकार का समन्वय 'शीर्षात्मक समन्वय' कहलाता है। जब एक पाठ्य-वस्तु दूसरे विषय की पाठ्य-वस्तु से पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करती है, तब वह 'अनुप्रस्थीय समन्वय' कहलाता है। इतिहास के पाठ्यक्रम को बनाते समय इस सिद्धान्त को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

(4) शैक्षिक मूल्य का सिद्धान्त : Principle of Educative Value—इतिहास के पाठ्यक्रम का मुख्य ध्येय केवल सूचना देना ही नहीं है, वरन् यह बालकों के चरित्र-निर्माण में भी सहायता प्रदान करता है। इसके द्वारा तर्क-शक्ति, विचार-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शक्ति, स्मरण-शक्ति तथा निर्णय-शक्ति का भी विकास होता है। इसके द्वारा वर्तमान काल की समस्याओं का हल प्राप्त होता है। इन सब ध्येयों की पूर्ति का ध्यान रख कर हमें इतिहास के तथ्यों का चयन करना चाहिए। यदि इतिहास के तथ्यों का चयन ठीक प्रकार से किया जाय तो इतिहास समाजिक शिक्षा का स्थान ग्रहण कर सकता है, जो बालक को उसके वातावरण के अनुकूल शिक्षा देकर—उसमें सामाजिक चेतना उत्पन्न कर सकती है।

(5) **समय का सिद्धान्त : Principle of Availability of Time**—इस सिद्धान्त का भी ध्यान रखना आवश्यक है। उतनी ही पाठ्य-सामग्री का चयन किया जाना चाहिए जो निर्धारित समय में पूर्ण की जा सके।

(6) **आन्तरिक परिस्थितियाँ : Internal Circumstances**—ऐसी अनेक व्यावहारिक परिस्थितियाँ हैं, जो इतिहास के पाठ्यक्रम से निर्धारण को प्रभावित करती हैं। इतिहास-कक्ष तथा उसकी सामग्री इतिहास के तथ्यों को प्रस्तुत करने में अत्यन्त सहायक है। शिक्षालय में यदि एक प्रोजेक्टर है तो इसके द्वारा इतिहास-शिक्षक सामाजिक इतिहास को सफलता के साथ प्रस्तुत कर सकता है। कहने का अभिप्राय यह है कि उन्हीं तथ्यों का चयन किया जाना चाहिए, जिनको प्रस्तुत करने के लिए शिक्षालय सामग्री प्रदान कर सकता है। पुस्तकालय भी पाठ्यक्रम के निर्धारण को बहुत प्रभावित करता है।

(7) **वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त : Principle of Individual Differences**—पाठ्यक्रम को बनाते समय इस सिद्धान्त को भी ध्यान में रखना चाहिए। इतिहास की पाठ्य-सामग्री बच्चों के मनोवैज्ञानिक विकास तथा गुणों के अनुसार रखनी चाहिए। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम में उस सामग्री को स्थान दिया जाय जो बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति करे। इस प्रकार पाठ्यक्रम बाल-केन्द्रित होना चाहिए।

(8) **सामाजिक अनुरूपता का सिद्धान्त : Principle of Social Relevance**—इस सिद्धान्त के अनुसार इतिहास के पाठ्यक्रम में उस सामग्री को भी स्थान दिया जाना चाहिए, जिसके द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके और छात्र उसके अध्ययन से अपने भावी जीवन में समाज में सक्रिय भाग ले सकें।

प्रो० सी० पी० हिल ने पाठ्यक्रम के निर्धारण के लिये अग्रलिखित सुझाव दिये हैं[1]—

---

1. **Hill, C. P. :** *Suggestions on the Teaching of History*, pp. 15-17.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) पाठ्यक्रम इस प्रकार नियोजित किया जाय कि वह शिक्षालयों की आवश्यकताओं को पूर्ण करे।

(2) पाठ्यक्रम इस प्रकार रचा जाय जिससे इतिहास का अन्य विषयों से सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

(3) बालकों की रुचि, अवस्था आदि का ध्यान रखकर विभिन्न स्तरों के अनुकूल पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाय।

(4) पाठ्यक्रम में लोच (Flexibility) होना चाहिए जिससे उसमें नवीन अनुभवों को स्थान दिया जा सके।

(5) उच्च कक्षाओं के लिए विशेष काल निर्धारित किये जायँ।

(6) इतिहास का पाठ्यक्रम सदैव सामाजिक पुनर्जीवन के निर्माण के लिए एक साधन का कार्य करे।

प्रो० घाटे के अनुसार, इतिहास के पाठ्यक्रम का निर्धारण अधोलिखित बातों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए—

(1) जूनियर स्तर के लिए केन्द्रीय विचार या सम्बन्धित विचारों के समूह का चयन किया जाना चाहिए और इसको आधार बनाकर पाठ्यक्रम का ढाँचा तैयार किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम उस केन्द्रीय विचार का ऐतिहासिक क्रम के अनुसार विकास प्रदर्शित करे।

(2) उन तथ्यों का चयन किया जाय जो विश्लेषणात्मक हों तथा मानवीय विकास या उन्नति की योजना में उपयुक्त हों।

(3) उन तथ्यों का चयन होना चाहिए जो क्रम उत्पन्न करें तथा इतिहास के प्रस्तुतीकरण में एकता बनी रहे।

(4) उन तथ्यों को चुना जाय जो वर्तमान विश्व को किसी न किसी रूप में स्पष्ट करें और जो छात्रों के लिए महत्त्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण हैं।

के० पी० चौधरी ने पाठ्यक्रम निर्धारण के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए हैं—

(1) पाठ्यक्रम निर्धारण में बालक तथा उसके वातावरण को केन्द्र बनाया जाय।

(2) उन तथ्यों को चुना जाय जो भारतीय समाज को समझने में सहायता प्रदान करें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) उन तथ्यों का चयन किया जाय जो वर्तमान जीवन की व्याख्या करने में सहायता प्रदान करें।

(4) इतिहास के तथ्यों का चयन करते समय इसके उद्देश्यों को ध्यान में अवश्य रखना चाहिए।

पाठ्यक्रम निर्धारण के लाभ
Advantages of Curriculum Construction

इतिहास का पाठ्यक्रम निर्धारित करने से अधोलिखित लाभों की प्राप्ति की जा सकती है—

(1) कार्य की विस्तृत योजना निर्धारित करने से कार्य सुचारु रूप से चलता है। उससे नियमहीनता को दूर किया जा सकता है।

(2) इसके द्वारा कार्य की पुनरावृत्ति को समाप्त किया जा सकता है। हमारे विद्यालयों में बालक स्कूल छोड़ने से पूर्व भारतीय इतिहास की कई वार पुनरावृत्ति करता है। इसका कारण इतिहास के पाठ्यक्रम के सम्वन्ध में पूर्व-निश्चित योजना का अभाव है।

(3) इसके द्वारा बालक की प्रगति की भी परीक्षा होती है कि विद्यार्थी ने कितना ग्रहण कर लिया है और कितना ग्रहण करना शेष है।

(4) यह कार्य-कुशलता का पोषक तत्त्व है तथा इसके द्वारा परीक्षा के प्रश्न-पत्रों के बनाने में भी सहायता मिलती है।

तथ्यों के चयन का मनोवैज्ञानिक आधार
Psychological Basis of the Selection of Facts

मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार इतिहास-शिक्षा की व्यवस्था अभी विद्यालयों में नहीं हो पायी है। विभिन्न अवस्थाओं की क्षमता का ज्ञान प्राप्त करना और उसके पश्चात् यह पता लगाना कि प्रत्येक अवस्था पर किन तथ्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए, यह बड़ा जटिल कार्य है। बालकों की शिक्षा उनके मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए। इतिहास के अध्यापकों तथा पाठ्यक्रम के निर्धारकों का यह मुख्य कर्त्तव्य है कि विभिन्न अवस्था के विद्यार्थी-समूहों के लिए इतिहास की शिक्षा की व्यवस्था करें। शिक्षाशास्त्रियों तथा समाजशास्त्रियों ने इस समस्या को मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान करने का प्रयत्न किया है। इस आधार के अनुसार पाठ्यक्रम बनाने के दो प्रयास किये गये हैं, जिनका विवेचन आगे किया जा रहा है—

1. सांस्कृतिक-युग सिद्धान्त : Culture Epoch Theory—सांस्कृतिक युग सिद्धान्त या पुनरावृत्ति के सिद्धान्त के प्रवर्त्तक अमरीका के डॉ० स्टेनले हाल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(Stanley Hall) हैं। इन्होंने मानव-जीवन के प्रारम्भिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के विकास पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया और मनुष्य के क्रमिक विकास का अध्ययन कर यह निश्चय किया कि मनुष्य अपने जीवन-काल में ही मानव-विकास के सम्पूर्ण क्रमों की पुनरावृत्ति करता है। डॉ० स्टेनले हाल का कथन है कि प्राणी खेल में ही अपनी जाति के विकास की सीढ़ियों को पार करता है। सभ्यता के आदिकाल में मनुष्य की मानसिक स्थिति कदाचित आज के बालकों के समान थी। बालक अपने पूर्वजों के सभी अनुभवों का उत्तराधिकारी होता है। वह सूक्ष्म रूप में उनके समस्त संस्कार लेकर उत्पन्न होता है। इन संस्कारों की अभिव्यक्ति वह अपने खेलों द्वारा करता है। पर इस अभिव्यक्ति की आवश्यकता क्या है, इसका उत्तर माँ के उदर में स्थित भ्रूण की विभिन्न अवस्थाओं से मिल सकता है। शरीर-विज्ञानशास्त्रियों का मत है कि भ्रूण अपनी माँ के उदर में सभी प्रधान जीवों की मूल अवस्था को पार करने के पश्चात् मानव-जाति के आकार में आता है। इस सिद्धान्त के अनुसार मानव और जाति के विकास में समानता होती है। इसका अर्थ यह है कि जिन अवस्थाओं में होकर मानव-जाति का सांस्कृतिक विकास हुआ है, व्यक्ति भी अपने जीवन में उन्हीं अवस्थाओं की पुनरावृत्ति करता है अर्थात् उन्हीं अवस्थाओं में होकर उसका विकास होता है। दूसरे शब्दों में, बालक अपनी बाल्यावस्था के कुछ वर्षों में अपने पूर्वजों की उन सब महत्त्वपूर्ण क्रियाओं को दोहराता है, जिन्होंने आदिकाल से लेकर अब तक मानव-जाति के सांस्कृतिक विकास में योग प्रदान किया है। इसलिए बालक के लिए इतिहास की सामग्री जाति के सांस्कृतिक विकास की उस अवस्था से लेनी चाहिए, जिस अवस्था में होकर बालक गुजर रहा हो। इसका अर्थ यह है कि यदि बालक छोटी अवस्था में हो तो उसे प्रारम्भिक मानव के जीवन की कहानी पढ़ने को देनी चाहिए और यदि वह युवावस्था में हो तो उसे जाति के यौवनकाल का इतिहास पढ़ने को देना चाहिए। इस दृष्टि से इतिहास के पाठ्यक्रम के तथ्यों का चुनाव होना चाहिए।

इस सिद्धान्त के प्रवर्त्तकों का विश्वास है कि बालक सर्वप्रथम स्वार्थी तथा असभ्य होता है। जो वस्तु उसके हाथ में आती है, वह उसको नष्ट-भ्रष्ट कर देता है। उसके पश्चात् उसे साहसिक कार्यों से पूर्ण कहानियाँ सुनना रुचिकर होता है, क्योंकि इस स्तर पर वह मनोवैज्ञानिक रूप से रुधिर के प्यासे हिंसक पशु के तुल्य है। इन्हीं बातों के आधार पर इतिहास के तथ्यों का निर्णय करना चाहिए। मानव-जाति की शिशु-अवस्था का इतिहास शिशुओं के लिए उपयुक्त है। बाल्यावस्था का इतिहास बालकों को पढ़ाना चाहिए और मानव-जाति के इतिहास का अन्तिम चरण प्रौढ़ों के लिए उपयुक्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार हम इतिहास-शिक्षा की अग्रलिखित रूप से व्यवस्था कर सकते हैं—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) प्राचीनकाल का इतिहास (प्राइमरी स्तर पर),

(2) मध्यकाल का इतिहास (जूनियर-स्कूल स्तर पर),

(3) वर्तमान काल का इतिहास (हाई-स्कूल कक्षाओं के लिए),

(4) वर्तमान काल का आलोचनात्मक इतिहास (उच्च कक्षाओं के लिए)।

सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त के विपक्ष में तर्क : Arguments against Culture Epoch Theory—इसके विपक्ष में निम्नलिखित तर्क दिए जाते हैं—

(1) वैज्ञानिकता की कसौटी पर यह सिद्धान्त खरा नहीं उतरता है। इस सिद्धान्त का वैज्ञानिक विवेचन नहीं हो सकता है और यह सिद्धान्त बहुत कुछ कल्पना के आधार पर निर्मित हुआ है। इसका मूल सिद्धान्त है कि बालक स्वतः बर्बर तथा असभ्य है, यंह भ्रमात्मक तथा असत्य प्रतीत होता है, क्योंकि बालक बर्बर तथा असभ्य नहीं होता है, बालक का विकास वंशानुगत परम्पराओं तथा वातावरण के अनुसार होता है, जबकि एक बर्बर मनुष्य अपनी वंश-परम्परा तथा वातावरण-विशेष की परिस्थिति के अनुसार पूर्ण विकसित प्राणी होता है।

(2) पाठ्यक्रम में लोचपन होना चाहिए, न कि दृढ़ता। इसमें ऐतिहासिक अन्वेषणों तथा समय के परिवर्तनों को स्थान मिलना चाहिए। इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यक्रम में नवीन खोजों तथा परिवर्तनों को स्थान नहीं दिया जा सकता है।

(3) इस सिद्धान्त से समर्थकों का कहना है कि व्यक्ति तथा जाति के विकास में समानता होती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बाल्यावस्था के स्तर पर दोनों में समानता दृष्टिगोचर होती है, परन्तु उसके पश्चात् जब ऐतिहासिक काल आता है, तब उसमें तथा बालक के विकास-काल में कोई समानता नहीं दिखाई पड़ती। इस काल में बालक का विकास तीव्र गति से होता है और बालक के शारीरिक विकास तथा बौद्धिक विकास में सन्तुलन स्थापित नहीं हो पाता।

(4) इस सिद्धान्त के विपक्ष में एक तर्क यह दिया जाता है कि समस्त जातियों ने अपने विकास में एक ही मार्ग को नहीं अपनाया; अर्थात् उनका किसी एक ही नियम के अनुसार क्रमिक विकास नहीं हुआ। संसार में ऐसी अनेक जातियाँ हैं जो सभ्यता की दौड़ में दूसरों की अपेक्षा बहुत आगे बढ़ गई हैं। कुछ जातियाँ ऐसी हैं जो बहुत ही पिछड़ी हुई हैं। सम्भव है कि अनेक ऐसी जातियाँ भी हों, जिन्हें विकास में उतनी कठिनाई का अनुभव न हुआ हो, जितनी कठिनाई का अनुभव अन्य जातियों को हुआ हो।

सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त के पक्ष में तर्क : Argument in Favour of Culture-Epoch Theory—(1) इस सिद्धान्त से इतिहास के शिक्षकों तथा इतिहासकारों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

को पाठ्यक्रम के निर्धारण में बड़ी सहायता मिली है। इस सिद्धान्त के अनुसार बच्चों की इतिहास-शिक्षा की सुन्दर योजना बनायी जा सकती है तथा इसके द्वारा बालकों के लिए एक सुन्दर पाठ्यक्रम निश्चित किया जा सकता है।

(2) विषय-प्रतिपादन तथा शिक्षण-विधियों में भी इस सिद्धान्त ने पर्याप्त मात्रा में सहायता दी है। इसने इतिहास के शिक्षकों को इतिहास को वास्तविक बनाने के लिए बाध्य कर दिया है। इतिहास का अध्यापक विभिन्न प्रतिरूप, चित्र तथा अन्य सहायक सामग्री की सहायता से इतिहास को वास्तविक तथा सजीव बना सकता है।

(3) इस सिद्धान्त पर इसलिए बल दिया जाता है कि इतिहास केवल सूचना ही नहीं देता है, वरन् इसके द्वारा बालक की बुद्धि का भी विकास किया जाता है। इसलिए अध्यापक को सूचना ही नहीं देना है, वरन् बालकों की कल्पना-शक्ति को भी विकसित करना है। इसके अतिरिक्त उसे बालकों के स्थायीभावों को ठीक प्रकार से संगठित करना है। इसी कारण इस सिद्धान्त के समर्थकों ने इसकी पूर्ति के लिए साहित्यिक तत्त्वों का उपयोग करने के लिए भी परामर्श दिया, अर्थात् भावुकता तथा कल्पना-शक्ति के विकास के लिए साहित्यिक तत्त्वों का उपयोग किया जाय।

2. **जीवन-गाथा सिद्धान्त : Biographical Theory**—यह सिद्धान्त भी मनोविज्ञान पर आधारित है। इसका मुख्य प्रवर्त्तक कारलाइल (Carlyle) है। इस सिद्धान्त के समर्थकों का मत है कि इतिहास के तथ्यों का निर्णय जीवन-गाथाओं के अनुसार हो सकता है। उनका विचार है कि महापुरुष अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः उनकी जीवन-गाथाओं को इतिहास के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना चाहिए; अर्थात् इन महापुरुषों की जीवन-गाथाओं के द्वारा इतिहास की शिक्षा प्रदान की जाय। कारलाइल का विचार है कि "सामान्य पुरुष भेड़ों के झुण्ड के समान हैं और महापुरुष उन शिकारी कुत्तों के समान हैं जो भेड़ों की रक्षा करते हैं।" इसके समर्थकों का कथन है कि निश्चित क्रम तथा काल के अनुसार इन महापुरुषों के जीवन का क्रमिक इतिहास निर्मित करना चाहि[illegible] उन्होंने आगे कहा कि इतिहास कालक्रम के अनुसार महापुरुषों की जीवन-गाथाओं की एक लड़ी है। विश्व-इतिहास भी इसी प्रकार महापुरुषों की जीवन-गाथाओं की एक शृंखला है। जैसा ऊपर कहा गया है कि महापुरुष काल-विशेष के प्रतिनिधि होते हैं, उनके जीवन का अध्ययन करने से उनके समय का पूरा ज्ञान हो जाता है। इन्हीं महापुरुषों के द्वारा ऐतिहासिक आन्दोलन प्रभावित होते हैं तथा चलाये जाते हैं। इस सिद्धान्त के परिणामस्वरूप ही इतिहास में वीर-पूजा की उत्पत्ति हुई है। ये महापुरुष मानवता के ऐसे सजग प्रहरी होते हैं जो अपनी प्रजा का सदा नेतृत्व करते हैं और साधारण जनता उनका अनु-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करण करती रहती है। जनता में न तो स्वयं इतनी शक्ति है और न इतनी बुद्धि कि वह अपना पथ स्वतः निर्धारित कर सके।

जीवन-गाथा सिद्धान्त की आलोचना : Criticism of Biographical Theory—(1) यह सिद्धान्त प्रजातन्त्र का विरोधी है, यह अधिनायकवाद पर बल देता है और समाजवाद के लिए मार्ग प्रशस्त नहीं करता। इसके अतिरिक्त यह साधारण मनुष्य के विषय में कुछ नहीं कहता है।

(2) महापुरुष अपने काल-विशेष के प्रतिनिधि नहीं होते हैं। वे सदैव अपने समय से ऊपर रहते हैं और साधारण समाज से स्पष्टतः पृथक् रहते हैं। वे अपने समय के क्रान्तिकारी तथा विद्रोही होते हैं। वे सदा अपने समय की व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करते हैं। ये महापुरुष अपने क्षेत्र में महान् भले ही हों, परन्तु वे सम्पूर्ण मानव-जीवन की प्रतिभा अथवा विकास का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

उपर्युक्त आलोचना में सत्यता का आभास है, फिर भी इस सिद्धान्त से हमें तथ्यों के चयन में पर्याप्त सहायता मिलती है। इतिहास-शिक्षक को इस सिद्धान्त का उपयोग करते समय अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) कोई भी महापुरुष अपने काल-विशेष का पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकता है। अतः विभिन्न स्तरों के व्यक्तियों की गाथाओं का चयन होना चाहिए। इस प्रकार के चयन का परिणाम यह होगा कि हमारे सम्मुख इतिहास का सर्वाङ्गीण रूप उपस्थित होगा। उसमें शान्ति के पुजारी तथा युद्ध के संचालक—दोनों का स्पष्ट चरित्र उपस्थित हो सकेगा।

(2) किसी एक महापुरुष की जीवन-गाथा के चयन से तब तक कोई लाभ न होगा, जब तक उसकी जीवन-गाथा के साथ ही साथ उसके मानवीय सिद्धान्तों, शिष्यों, समर्थकों तथा उनकी गतिविधियों का पूरा चित्र न उपस्थित किया जाय। इसके अतिरिक्त विचारों की प्रतिक्रिया पर भी ध्यान देना होगा। यदि हम बौद्ध धर्म के विषय में अध्यापन कर रहे हैं तो केवल गौतम बुद्ध के चरित्र के विषय में बताने से कोई लाभ न होगा, जब तक कि हम उनके शिष्यों, समर्थकों, प्रचारकों तथा विरोधियों के विषय में ज्ञान नहीं देते; अर्थात् हमें अशोक, कनिष्क, हर्ष, कुमारिल भट्ट तथा शंकराचार्य के विषय में भी ज्ञान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनका विभिन्न व्यक्तियों पर क्या प्रभाव पड़ा, यह भी बताना नितान्त आवश्यक है।

(3) इस बात का प्रयत्न होना चाहिए कि इनकी ऐतिहासिकता या ऐतिहासिक आधार समाप्त न हो जाय अर्थात् वे कल्पित कहानी न बन जायें।

(4) जिस जीवन-गाथा को चुना जाय, उसको इन बातों की कसौटी पर कस लेना अनिवार्य है। यह जीवन-गाथा या घटना किस काल का इतिहास बताती है तथा इस कथा का वास्तविक उपयोग क्या है, इन बातों को ध्यान में रखकर यदि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का चयन किया जाये तो प्रारम्भिक अवस्था के लिए इतिहास की शिक्षा की व्यवस्था हो सकती है।

तथ्यों का संगठन
Organization of Facts

इस प्रकार तथ्यों के निर्णायक सिद्धान्तों की विवेचना करने के पश्चात् हमारे सम्मुख यह प्रश्न उठता है कि इन चयन किये हुए तथ्यों को प्रस्तुतीकरण के लिए किस रीति से संगठित किया जाय? कक्षा के सम्मुख इस पाठ्य-सामग्री को रखने के पूर्व ही हमें इसका उचित रूप से संगठन करना होगा। इसके संगठन के लिए निम्न-लिखित सिद्धान्तों को अपनाया जा सकता है—

1. **एक-समान केन्द्र-विधि : Concentric Method**—इस विधि के विकास का श्रेय पेस्तालॉजी (Pestalozzi) को है, जो भिखारियों को उद्यमी मनुष्य बनाना चाहता था। उसका विचार था कि इतिहास के शिक्षण द्वारा समाज की पुनर्रचना की जा सकती है। यह विधि जर्मनी में इतिहास-शिक्षण के लिए प्रयोग में लायी गयी, जो बहुत ही प्रभावशाली तथा सफल हुई और इसका प्रभाव यूरोप के अन्य देशों पर भी पड़ा। इस योजना के अनुसार इतिहास की सम्पूर्ण बातें प्रत्येक वर्ष पढ़ाई जाती हैं। पीठिका समान रहती है; अर्थात् यदि हम भारत का इतिहास समस्त स्तरों पर पढ़ाना चाहते हैं तो इसकी रूपरेखा समान रहेगी। केवल पाठ्यक्रम में संक्षिप्त तथा विस्तृत होने का ही भेद रहेगा। प्रत्येक वर्ष उन रूपरेखाओं को विस्तृत बनाया जायेगा। सर्वप्रथम, केवल रूपरेखायें ही दी जायेंगी, तत्पश्चात् प्रति वर्ष उनके क्षेत्र में वृद्धि होती जायेगी। इस प्रकार इसमें ज्ञान की पीठिका समान रहती है पर ज्ञान के वृत्तों का आयाम निरन्तर बढ़ता चलता है। यह पुनरावृत्ति हर वार आयामों के साथ प्रस्तुत की जाती है।

एक-समान केन्द्र विधि की आलोचना : Criticism of Concentric Method—यद्यपि यह विधि बहुत लाभदायक है, तथापि इसमें कतिपय न्यूनतायें हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(1) इसके विपक्ष में एक महत्त्वपूर्ण एवं सशक्त तर्क यह दिया जाता है कि इस विधि के द्वारा तथ्यों की आवृत्ति होती है जिससे इतिहास के प्रतिपादन में कोई रोचकता नहीं आ पाती और जिसके कारण छात्रों में नीरसता आती है तथा वे इन तथ्यों को सुनने तथा पढ़ने में कोई रुचि नहीं लेते। परन्तु इसके समर्थकों का कहना है कि विषय की रोचकता का श्रेय उसके अध्यापक पर निर्भर है। नीरस से नीरस विषय को अध्यापक की कला रोचक बना सकती है। इस तर्क में पर्याप्त सत्यता है।

(2) दूसरा तर्क यह दिया जाता है कि यह विधि मनोवैज्ञानिक ढंग पर आधारित नहीं है। यह मनोवैज्ञानिक सूत्रों; जैसे—सरल से कठिन की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर आदि का अनुसरण नहीं करती है।

(3) इस सिद्धान्त के अनुसार तीन-चार वर्षों के अन्दर ही दो-तीन सहस्र

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वर्षों का इतिहास पढ़ाने का यत्न किया जाता था । अतः छात्रों को समय तथा काल का वास्तविक बोध नहीं हो पाता और विभिन्न चरित्रों तथा समय की विशेषताओं को समझ सकना विद्यार्थी के लिए कठिन हो जाता है, क्योंकि प्रत्येक समय छात्र को काल सम्बन्धी एक दीर्घ मार्ग पार करना पड़ता है, जिसमें अनेक कठिनाइयाँ आती हैं । वह इसी को तय करने में लगा रहता है । उसे उतना अवकाश ही नहीं मिल पाता है कि वह काल-क्रम तथा समय-विशेष की विशेषताओं को समझ सके ।

(4) इसके विरुद्ध एक तर्क यह भी उपस्थित किया जा सकता है कि किसी भी स्तर पर बालक को इतिहास का पूर्ण ज्ञान नहीं हो पाता, क्योंकि उसके वृत्त की प्रत्येक स्तर या कक्षा पर वृद्धि होती रहती है, अतः बालक किसी वर्ष में इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाता ।

इन आलोचनाओं से अध्यापक को दुःखी नहीं होना चाहिए । इस विधि का प्रयोग यदि सतर्कता के साथ किया जाय तो यह अत्यन्त हितकारी सिद्ध होगी। प्रो० घाटे का विचार है कि प्रारम्भिक कक्षाओं में ऐतिहासिक चरित्रों का चयन और उच्च कक्षाओं में आलोचनात्मक तथा प्रकरणात्मक अध्ययन किया जाय तो इसके पर्याप्त दोषों का निराकरण किया जा सकता है ।

2. **कालक्रम-विधि : Chronological Method**—इस सिद्धान्त के लिए मेंह पेस्तालॉजी की ओर ध्यान देना पड़ेगा । पेस्तालॉजी ने इस विधि का कक्षा-कक्ष में प्रयोग किया । उसने इस विधि को रूसो के "शिक्षा प्रकृति के अनुसार" दी जाय नामक सिद्धान्त पर आधारित किया । रूसो ने कहा था कि—"हर एक प्रकार के शिक्षण के लिए एक विशिष्ट समय होता है, जिसका पालन हमें विधिवत् करना चाहिए; अर्थात् हमें उसी के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए ।"[1] अपने गुरु के इन शब्दों के अनुसार पेस्तालॉजी ने कहा कि "प्रत्येक बालक को उसी प्रकार पढ़ाना चाहिए जैसी उसकी प्रकृति की माँग हो । इसके विपरीत, दूसरी विधि हानिकारक सिद्ध होगी ।"[2] इस प्राकृतिक प्रस्तुतीकरण को इतिहास में उसने अपनाया और कहा कि समस्त इतिहास को विभिन्न स्तरों पर बाँट देना चाहिए और प्रत्येक स्तर की विषय-सूची भिन्न होनी चाहिए । यह विधि सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त से भी सहायता प्राप्त कर सकती है । यदि हम इतिहास को इस विधि के अनुसार विभिन्न स्तरों पर रखें तो हमको प्रत्येक स्तर पर एक काल का इतिहास रखना पड़ेगा । परन्तु

1. "There is a time for every kind of teaching and we ought to recognize it."—Rousseau : Quoted by R. L. Singh, *Teaching of History and Civics*, p. 104.
2. "Each child should be taught that which he has to learn at the time of his nature's call. Any other method is futile and harmful."—Pestalozzi : Quoted by R. L. Singh, *op. cit.*, p. 104.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वितरण कालक्रम के अनुसार होगा; उदाहरणार्थ—हम भारतीय इतिहास को विभिन्न स्तरों के लिए निम्न प्रकार से निर्धारित कर सकते हैं—

1. प्राचीनकाल—कक्षा 6 के लिए।
2. राजपूत तथा सल्तनत काल—कक्षा 7 के लिए।
3. मुगल काल—कक्षा 8 के लिए।
4. ब्रिटिश काल—कक्षा 9 के लिए।
5. आधुनिक काल (स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् का काल) कक्षा 10 के लिए।

इतिहास के शिक्षक को इन कालों का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) प्रत्येक काल अपनी कुछ विशेषताएँ रखता है। उसका चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उस काल की मुख्य विशेषताओं का परित्याग तो नहीं किया गया या उनका सम्बन्ध-विच्छेद तो नहीं हो गया है।

(2) प्रत्येक काल की एक केन्द्रीय समस्या होनी चाहिए, जिसके चारों ओर विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं तथा व्यक्तियों का होना आवश्यक है; उदाहरणार्थ—यदि हम मराठा-काल का चयन करते हैं, तो उस काल की सबसे प्रमुख समस्या—स्वराज्य-प्राप्ति थी और उसको प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रयत्न किये गये जो कि ऐतिहासिक घटनाएँ हैं, जैसे शिवाजी की आगरा यात्रा, पानीपत का युद्ध (सरदेसाई के अनुसार) आदि। इसमें बहुत-से व्यक्तियों ने कार्य किया; जैसे—शाहजी, शिवाजी, बाजीराव प्रथम, बालाजीराव, दत्ताजी, भाऊ, विश्वासराव आदि।

(3) जो काल चुना जाय, वह महापुरुषों की क्रियाओं से सम्पूर्ण होना चाहिए क्योंकि बालक गुरु नानक, कबीर तथा चैतन्य आदि के कार्यों में रुचि नहीं रखते वरन् नेपोलियन, राणा प्रताप तथा सिकन्दर के कार्यों में रुचि रखते हैं।

कालक्रम-विधि की आलोचना : Criticism of Chronological Method—

(1) इस सिद्धान्त के द्वारा मनोविज्ञान तथा शिक्षण-सूत्रों का उल्लंघन किया जाता है। जब हम इतिहास को कालों में विभाजित करते हैं तब एक काल ऐसा भी हो सकता है जो बहुत सरल तथा दूसरा जटिल हो। यदि हम कालक्रम के अनुसार उनको लें तो हो सकता है कि पहले जटिल आये और उसके पश्चात् सरल। उस समय "सरल से जटिल की ओर" वाले सूत्र का उल्लंघन करते हैं।

(2) इस सिद्धान्त के अनुसार काल की घटनाओं के भूलने की सम्भावना है, क्योंकि जो काल एक स्तर पर पढ़ाया जा चुका है, उसकी आवृत्ति का कोई अवसर दूसरे स्तर पर नहीं मिलता है।

(3) यदि इतिहास का शिक्षक इतिहास का विभाजन सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त के अनुसार करता है तो पहले प्राचीनकाल का इतिहास ही बालकों को पढ़ाया जायगा, अतः उसे सरलातिसरल रूप में रखना पड़ेगा और उस काल के इतिहास का विस्तृत

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा गम्भीर अध्ययन करने का अवसर ही नहीं मिलेगा। वे अपने प्राचीनकाल के इतिहास की सांस्कृतिक और सामाजिक विकास की बातों का अध्ययन नहीं कर पायेंगे। इस प्रकार प्राचीनकाल का इतिहास कुछ कहानियों तथा गाथाओं तक ही सीमित रह जायगा। इससे यह स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त प्राचीनकाल के इतिहास के साथ पूर्ण न्याय नहीं कर पाता, जो कि इस सिद्धान्त की सबसे बड़ी दुर्बलता है।

कालक्रम तथा एक-समान-केन्द्र विधियों में सामंजस्य : Co-ordination between Concentric and Chronological Method—इन दोनों विधियों के गुण-दोषों को देखने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि इन दोनों विधियों में किस प्रकार समन्वय स्थापित किया जाय, क्योंकि एक विधि सर्वांग रूप से सम्पूर्ण नहीं हो सकती, इन दोनों विधियों के समन्वय से संगठन का प्रश्न पर्याप्त सीमा तक निम्न-लिखित प्रकार से सुलझाया जा सकता है—

(1) **प्रारम्भिक स्तर**—प्राथमिक स्तर पर हम जीवन-गाथा-सिद्धान्त को ग्रहण कर सकते हैं। इस स्तर पर हमारा ध्येय—स्थूल तथा सरल सामग्री देने का है। वे कहानियाँ चुनी जायें, जो समस्त पाठ्यक्रम को पूरा करती हों, परन्तु वे कहानियाँ कालक्रम के अनुसार हों।

(2) **माध्यमिक स्तर**—जूनियर हाईस्कूल स्तर पर हम कालक्रम विधि को ग्रहण कर सकते हैं और इसके द्वारा पाठ्यक्रम में सम्पूर्ण इतिहास को स्थान प्रदान कर सकते हैं। छठी कक्षा में प्राचीन भारत का इतिहास सातवीं तथा आठवीं कक्षा में मध्यकालीन तथा आधुनिक भारत का इतिहास रख सकते हैं।

(3) **उच्चतर माध्यमिक स्तर**—इस स्तर पर हमारे पास 3 वर्ष का समय है; उसमें एक-समान-विधि को ग्रहण कर सकते हैं। परन्तु यहाँ हमारा दृष्टिकोण तथ्यात्मक न होकर, आलोचनात्मक होना चाहिए। मुख्य सिद्धान्तों तथा समस्याओं पर अधिक बल देना चाहिए और गौण घटनाओं तथा व्यक्तियों को हटाया जाना चाहिए। यदि हमारे पास केवल एक वर्ष का समय है, तो एक काल में विशेषज्ञता प्राप्त करना हमारा मुख्य ध्येय होगा। इस प्रकार इस योजना में इतिहास की तीन बार पुनरावृत्ति हो जायगी और दोनों विधियों के लाभ प्राप्त किये जा सकेंगे।

(4) **प्रकरण विधि : Topical Method**—प्रकरण-विधि काल-क्रम-विधि को प्रयोग में लाने के लिए एक मार्ग है। कालक्रम-विधि के अनुसार समस्त इतिहास को विभिन्न कालों में विभाजित कर दिया जाता है तथा इन कालों को छोटे-छोटे विभिन्न भागों में बाँट दिया जाता है और इन विभागों को 'प्रकरण' के नाम से पुकारा जाता है। प्रकरण एक काल का छोटा समुदाय खण्ड नहीं है, जैसा कि कहा है, प्रकरण इतिहास में एक विचार या आन्दोलन होता है। इसके द्वारा ऐतिहासिक श्रृंखला को गति प्राप्त होती है। इसका सम्बन्ध मुख्य धारा से पृथक् नहीं होता है। इस विधि को संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में प्रधानता प्रदान की गई है। प्रकरण से तात्पर्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एक पृथक् घटना से नहीं है, वरन् उससे है जो किसी कारण का प्रतिनिधित्व करे और इतिहास की मुख्य घटना को प्रभावित करे; उदाहरणार्थ—इङ्गलैण्ड की औद्योगिक क्रांति, फ्रांस की क्रांति, आयरिश होम-रूल-बिल आदि। भारतीय इतिहास को हम विभिन्न प्रकरणों में विभाजित कर सकते हैं; जैसे—भारत में आर्यों का आगमन, आर्यों द्वारा अपनी संस्कृति का प्रचार, मौर्यों का प्रभावशाली साम्राज्य, गुप्तवंश का शासन काल, राजपूतों का उत्थान, तुर्क साम्राज्य की स्थापना, भारत में मुगलों का उत्कर्ष, मराठों का उत्कर्ष, अंग्रेजों का व्यापारियों के रूप में आगमन, सन् 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता युद्ध, सन् 1942 का "भारत छोड़ो" आन्दोलन आदि; ये ऐसे प्रकरण नहीं हैं, जिनका एक ही व्यक्ति से सम्बन्ध रहा हो। ये एक प्रकार के आन्दोलन हैं—इनमें अनेक व्यक्तियों ने भाग लिया था। जब एक व्यक्ति किसी भावना-विशेष का प्रवर्त्तक होता है, तब वह भी एक प्रकरण हो सकता है; क्योंकि उसकी भावना का अनेक व्यक्ति समर्थन कहते हैं; उदाहरणार्थ—गौतम बुद्ध, अशोक, नेपोलियन, मेजनी, रूसो, बिस्मार्क, क्रॉमवेल, जार्ज वाशिंगटन, महात्मा गाँधी, लेनिन, कार्ल मार्क्स आदि व्यक्ति एक-एक प्रकरण हो सकते हैं।

प्रकरण-विधि के गुण : Merits of Topical Method—(1) इस विधि के द्वारा इतिहास का विस्तृत रूप से विवेचन सम्भव है।

(2) इसके द्वारा ऐतिहासिक तथ्यों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है; अर्थात् इसके द्वारा तथ्यों को सरल बनाया जाता है जिससे वे सफलतापूर्वक ग्रहण किये जा सकें।

(3) कालक्रम-विधि के अनुसार तथ्यों का संगठन तभी सम्भव है, जब इस विधि को अपनाया जाय।

(4) इसके द्वारा बालकों में सुगमता से समय-ज्ञान विकसित किया जा सकता है।

(5) यह विधि अध्यापक के लिए अत्यन्त हितकारी है। इसके द्वारा वह अपनी पाठ्य-सामग्री का प्रस्तुतीकरण सरलता से कर सकता है तथा अपने छात्रों को प्रकरण छाँटने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

परावर्तन विधि : Regressive Method—यदि इतिहास का उद्देश्य—वर्तमान का स्पष्टीकरण करना है तो हमको वर्तमान के साथ प्रारम्भ करके पीछे की ओर, अर्थात् अतीत की ओर जाना पड़ेगा। वर्तमान काल अतीत की देन है, अर्थात् इसका आधार अतीत है। परन्तु इस विधि के समर्थकों का कहना है कि कुछ समय के पूर्व के भूतकाल से हमको प्रारम्भ करना चाहिए; क्योंकि आज जो हम परिवर्तित दशाएँ देख रहे हैं, उनमें से बहुत-कुछ का कारण कुछ समय के पूर्व का भूतकाल ही है। इस सिद्धान्त के समर्थकों के अनुसार कुछ समय के पूर्व के भूत से प्रारम्भ करके धीरे-धीरे अतीत को देखना चाहिए, तभी हम वर्तमान के विकास का आधार प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि यह विधि तर्कपूर्ण नहीं है, तथापि मनोवैज्ञानिकता पर आधारित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है, क्योंकि इसके अनुसार हम वर्तमान से प्रारम्भ करते हैं—जो स्थूल तथा सरल है। उसके द्वारा पीछे की ओर देखते हैं और वर्तमान काल की जड़ों की खोज अतीत में करते हैं। इस प्रकार हम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सूत्र "ज्ञात से अज्ञात की ओर" का अनुसरण करते हैं।

इसके द्वारा किसी समस्या का पहले परिचयात्मक रूप दिया जाता है; फिर इतिहास-शिक्षक छात्रों के सम्मुख यह समझाने का प्रयत्न करता है कि किन कारकों तथा किन बातों के परिणामस्वरूप आज की दशाएँ हमारे सम्मुख उपस्थित हुई हैं। तत्पश्चात् वर्तमान समय की समस्या पर विस्तृत रूप से विचार करता है। वर्तमान का उपयोग भूत का परिचय प्राप्त करने के लिए किया जाता है, परन्तु इसका पुनः परावर्तन नहीं होता।

प्रो॰ घाटे ने इस विधि को 'लोलक-विधि' (Pendulum Method) का नाम दिया है। यदि अध्यापक मध्यकाल का इतिहास पढ़ा रहा है तो उसे कभी प्राचीन की ओर जाना पड़ता है और कभी आधुनिक की ओर। परन्तु इस पद्धति का प्रयोग इतिहास के पाठ की प्रस्तावना में नहीं करना चाहिए, जैसा कि प्रशिक्षण विद्यालयों के विद्यार्थी करते हैं, वरन् उनको आवश्यकतानुसार इसका क्रमिक रूप से प्रयोग करना चाहिए।

इतिहास के पाठ्यक्रम के विषय
Contents of History Syllabus

तथ्यों के निर्णय के सिद्धान्तों तथा संगठन की विधियों का अवलोकन करने के पश्चात् प्रश्न स्वतः ही उठता है कि पाठ्यक्रम में किन-किन तथ्यों को स्थान मिलना चाहिए ? इस प्रश्न का उत्तर विभिन्न परिस्थितियों तथा वातावरण और राष्ट्रों के अनुसार पृथक्-पृथक् हो सकता है परन्तु हमारे राष्ट्र में जो नमूना अपनाया गया है, उसके अनुसार विभिन्न विषयों को स्थान दिया गया है जो कि निम्नलिखित हैं—

(1) **प्राचीन काल की संस्कृतियों की रूपरेखा : Outline of Ancient Cultures**—साधारण रूप से हम भारतीय इतिहास का अध्ययन आर्यों के आगमन से या उनसे पूर्व के इतिहास से प्रारम्भ करते हैं। परन्तु अब वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह स्वीकार कर लिया गया है कि भारतीय इतिहास का अध्ययन मानव-जाति के विकास के इतिहास से प्रारम्भ किया जाना चाहिए। इसके लिए जैसा कि के॰ डी॰ घोष ने सुझाव दिया है—"हमें पाठ्यक्रम में सुमेरिया, ग्रीस, रोम, बेबीलोनिया, मिस्र आदि देशों की प्राचीन संस्कृतियों की कहानी रखनी चाहिए। इसके द्वारा बालक क्रम को समझने में समर्थ होंगे, परन्तु ये कहानियाँ सरल तथा रूपरेखा के रूप में होंगी।"

(2) **राष्ट्रीय इतिहास : National History**—राष्ट्रीय इतिहास, इतिहास के पाठ्यक्रम का केन्द्र होना चाहिए। बालकों को देश में आने वाली जातियों, उनके उत्थान तथा पतन का भी ज्ञान दिया जाय। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि बालक को राष्ट्रीय इतिहास के अंगों का पूर्ण ज्ञान दिया जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) स्थानीय इतिहास : Local History—पाठ्यक्रम के लिए स्थानीय इतिहास से भी तथ्य लिए जायँ।

(4) विश्व-इतिहास : World History—जारविस (Jarvis) ने कहा है कि इतिहास एक सम्पूर्ण एकता है। यह विश्व-इतिहास के द्वारा प्राप्त की जा सकती है। हम इसके ज्ञान के बिना अपने राष्ट्र का इतिहास प्रस्तुत नहीं कर सकते, क्योंकि कोई भी राष्ट्र अकेला नहीं रह सकता; अर्थात् उसका अस्तित्व अकेलेपन में सम्भव नहीं है, इसलिए हमें विश्व-इतिहास से तथ्यों का चयन करके पाठ्यक्रम में रखना चाहिए। विश्व-इतिहास का पाठ्यक्रम हम प्रारम्भिक कक्षाओं में कहानियों के रूप में तथा उच्च कक्षाओं में इसका उन्नत पाठ्यक्रम निर्धारित कर सकते हैं।

विश्व-इतिहास के प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में निम्नलिखित तथ्य होने चाहिए—

1. शिकारी मानव, 2. भेड़ों को पालने वाला मानव, 3. किसान के रूप में मानव, 4. मिस्र के मनुष्य, जिन्होंने अनाज पैदा किया, 5. बेबीलोनिया के मनुष्य—(नहरों के द्वारा सिंचाई, लेखन कला की उत्पत्ति), 6. मोहनजोदड़ो की सभ्यता, 7. भारतीय आर्य, 8. फोनोसियन जाति, 9. ग्रीस की सभ्यता—(स्वतन्त्र मनुष्य, घोड़ों का प्रयोग, व्यायाम तथा खेल आदि), 10. रोमन सभ्यता।

इसके अतिरिक्त उच्च कक्षाओं के लिए विश्व-इतिहास का उन्नत पाठ्यक्रम होगा, जिसमें प्राचीन देशों को ही स्थान नहीं दिया जायगा वरन् प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक संस्कृतियों को भी स्थान मिलेगा। इसके अतिरिक्त उन आन्दोलनों का समावेश किया जाना चाहिए, जिन्होंने समस्त विश्व को प्रभावित किया है।

(5) प्रान्तीय इतिहास : Provincial History—इससे भी कहानियाँ ली जानी चाहिए। भारत के प्रान्त स्वयं अपना एक पृथक् इतिहास रखते हैं। जो छात्र जिस प्रान्त का निवासी है, उसको उसके इतिहास की कहानियों का ज्ञान कराया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त समस्त प्रान्तों का इतिहास राष्ट्र के इतिहास के साथ-साथ चलता रहे। इनका अलग कोई महत्त्व नहीं है, वरन् राष्ट्रीय इतिहास को सफल बनाने में इन्होंने जो कार्य किए हैं, उनका वर्णन किया जाना चाहिए।

(6) सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक इतिहास : Social, Cultural, and Economic History—इससे भी विषय लिए जाने चाहिए।

(7) प्रचलित या वर्तमान परिस्थितियों का ज्ञान : Knowledge of Current Affairs—वे विषय भी रखे जायँ, जिनके द्वारा छात्र वर्तमान परिस्थितियों से परिचित हो सकें।

विभिन्न कक्षाओं के लिए इतिहास के पाठ्यक्रम की रूपरेखा[1]

An Outline of History Syllabus for Various Classes

कक्षा 5

इस स्तर पर आधुनिक भारत से सम्बन्धित कहानियाँ रखने का सुझाव दिया

1. *"Contents of History of Indian Schools"*—Published by Ministry of Education, Government of India, pp. 6-13.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गया है, जैसे—क्लाइव, मीर कासिम, टीपू सुल्तान, नाना फड़नवीस, रणजीतसिंह, झाँसी की रानी, प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के शहीद, राजा राममोहन राय, सैयद अहमदखाँ, विवेकानन्द, ऐनी बेसेन्ट, फिरोजशाह मेहता, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मोतीलाल नेहरू, महात्मा गाँधी, सुभाषचन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल आदि।

कक्षा 6

इस स्तर पर भारतीय समाज का विकास, अर्थात् प्राचीनकाल से लेकर सल्तनत काल तक रखा जाय। इस काल का आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, एवं राजनीतिक आदि सभी पक्षों के अनुसार विवेचन प्रस्तुत किया जाना चाहिए; उदाहरणार्थ—इसमें निम्नलिखित प्रकरणों को स्थान मिलेगा—

(1) भारतीय इतिहास के सूत्र; (2) सिन्धु घाटी की सभ्यता; (3) आर्यों की सभ्यता; (4) महाकाव्य काल; (5) जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म; (6) सिकन्दर का आक्रमण, नन्द वंश, मौर्य वंश आदि; (7) मौर्य-सिथियन सभ्यता; (8) कुशाण साम्राज्य; (9) गुप्त साम्राज्य, (10) हूणों के आक्रमण; (11) दक्षिण का इतिहास; (12) गुप्त साम्राज्य—स्वर्ण-युग क्यों; (13) भारतीय संस्कृति एवं औपनिवेशिक विस्तार; (14) इस्लाम का अभ्युदय; (15) गुलाम वंश; (16) खिलजी वंश; (17) तुगलक वंश; (18) बहमनी तथा विजय नगर साम्राज्य; (19) सैयद वंश; (20) लोदी वंश; (21) सल्तनत काल की संस्कृति एवं उसका भारतीय संस्कृति पर प्रभाव।

व्यावहारिक कार्य—समय-रेखाओं का निर्माण, ऐतिहासिक मानचित्र, चार्ट, रेखाकृतियों का निर्माण, अभिनय, ऐतिहासिक स्थानों तथा अजायबघरों का पर्यटन, ऐतिहासिक मॉडलों का निर्माण करना आदि।

कक्षा 7

इस स्तर के लिए भारतीय समाज का विकास अर्थात् मुगल काल से लेकर कम्पनी काल तक निर्धारित किया जाय। इसमें निम्नलिखित प्रकरणों का समावेश किया जाना चाहिए—

(1) बाबर के आक्रमण एवं उसके द्वारा मुगल साम्राज्य की स्थापना;
(2) हुमायूँ तथा शेरशाह;
(3) अकबर;
(4) जहाँगीर तथा शाहजहाँ;
(5) शाहजहाँ का काल—स्वर्णयुग क्यों?
(6) औरंगजेब तथा उसकी नीति की प्रतिक्रिया;
(7) मराठों का उत्कर्ष; उनके द्वारा मुगल साम्राज्य की जड़ों को खोखला करना;
(8) यूरोपियनों का आगमन;
(9) अंग्रेजों की शक्ति का विस्तार;

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(10) सिक्खों का उत्कर्ष;
(11) ईस्ट इण्डिया कम्पनी का विभिन्न राज्यों से संघर्ष और शक्ति का एकीकरण;
(12) प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम;
(13) मुगल काल का सांस्कृतिक इतिहास;
(14) कम्पनी काल में संस्कृति, शिक्षा, धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आदि।

व्यावहारिक कार्य—पिछले स्तर की रूपरेखाओं के अनुसार ही होगा।

कक्षा 8

इस स्तर पर भारत का आधुनिक इतिहास रखना चाहिए। इसमें निम्नलिखित प्रकरणों को स्थान मिलना चाहिए—

(1) संवैधानिक इतिहास;
(2) शासन-प्रवन्ध का इतिहास;
(3) स्वतन्त्रता संघर्ष का इतिहास;
(4) शिक्षा का इतिहास;
(5) स्थानीय स्वशासन का इतिहास;
(6) आर्थिक इतिहास;
(7) नवभारत (स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के भारत का इतिहास);
(8) वर्तमान संविधान आदि।

इन प्रकरणों के साथ-साथ प्रादेशिक इतिहास भी प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

व्यावहारिक कार्य—पिछले स्तरों की रूपरेखाओं के अनुसार होगा तथा इस स्तर पर 'सूत्र-पद्धति' का भी प्रयोग किया जाना चाहिए।

कक्षा 9, 10 तथा 11

(1) भारतीय इतिहास का आलोचनात्मक ढंग से अध्ययन;
(2) विश्व-इतिहास का उन्नत पाठ्यक्रम;
(3) पश्चिमी सभ्यता के प्रमुख आन्दोलन जो निम्नलिखित हैं :
    अ. पुनरुत्थान तथा सुधारवादी आन्दोलन;
    ब. फ्रांस की क्रान्ति;
    स. यूरोप में राष्ट्रवाद;
    द. औद्योगिक क्रांति;
    य. समाजवादी आन्दोलन का विकास;
    र. अन्तर्राष्ट्रीय संगठन—लीग ऑफ नेशन्स तथा संयुक्त राष्ट्र संघ,
    ल. विज्ञान का विकास।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(4) पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व के कुछ राष्ट्रों का इतिहास :
अ. चीन;
ब. अफगानिस्तान;
स. जापान;
द. इण्डोनेशिया;
य. वर्मा तथा तिब्बत।

(5) भारत की प्रचलित या वर्तमान समस्याएँ :
अ. भारत में विज्ञान के विकास का इतिहास;
ब. भारतीय कृषि का इतिहास तथा उसकी समस्याएँ;
स. औद्योगिक समस्याएँ;
द. भारत में भाषा-सम्बन्धी समस्याएँ;
य. सामाजिक समस्याएँ;
र. आर्थिक समस्याएँ;
ल. शिक्षा की समस्याएँ;

व्यावहारिक कार्य—
अ. मानचित्रों का निर्माण;
ब. सूत्रों का प्रयोग;
स. समाचार पत्रों का प्रयोग;
द. ऐतिहासिक जरनल, पत्र तथा पत्रिकाओं का प्रयोग;
य. ऐतिहासिक स्थानों का पर्यटन;
र. ऐतिहासिक एलबम तथा सिक्कों आदि का संकलन;
ल. समय-चार्टों, रेखाओं, चित्रात्मक ग्राफ आदि का निर्माण कार्य

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Discuss the comparative merits and demerits of 'Topi and 'Chronological' methods of history. Illustrate your ans with examples. —(P. U., 19

प्रकरणात्मक तथा कालक्रम विधियों के गुण-दोषों का तुलनात्मक वि कीजिए। अपने उत्तर को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

2. Give a critical comment on the history syllabus of hi secondary classes of your state. What changes would suggest in it ? —(P. U., 19

अपने राज्य की उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास के पाठ्यक्र आलोचनात्मक विवेचना कीजिए। आप उसमें परिवर्तन लाने के लिए सुझाव देंगे ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. What principles would you bear in mind while framing curriculum in history for the Higher Secondary Classes ?
—(P. U., 1969)
आप उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के इतिहास का पाठ्यक्रम बनाते समय किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखेंगे ?

4. What principles should guide the teacher in framing the syllabus of history for class VIII ? —(Raj. B. Ed., 1963)
कक्षा 8 के लिये इतिहास का पाठ्यक्रम बनाते समय शिक्षक को किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए ?

5. Distinguish between 'Concentric' and 'Chronological' methods of organizing history syllabus, clearly bringing out the comparison between the two. —(Raj. B. Ed., 1964)
इतिहास के पाठ्यक्रम को संगठित करने की एक-समान-केन्द्र विधि तथा काल-क्रम विधि के अन्तर को इनकी तुलना करते हुए स्पष्ट कीजिए।

6. Examine critically the current syllabus of history for the High School classes aud suggest modifications.
—(A. U., 1962)
हाईस्कूल कक्षाओं के इतिहास के प्रचलित पाठ्यक्रम का मूल्यांकन कीजिए और उसके सुधार के लिए सुझाव दीजिये।

7. What place do stories occupy in teaching History ? Draw a list of 12 stories that you will teach, in a session, to class V.
—(A. U., 1972)
इतिहास-शिक्षण में कहानियों का क्या स्थान है ? 12 कहानियों की एक सूची प्रस्तुत कीजिये जिन्हें आप विद्यालय के एक सत्र में कक्षा पंचम को पढ़ायेंगे।

8. उन सिद्धान्तों की विवेचना कीजिये जो आपको इतिहास की विषय-वस्तु का चयन करने में दिग्दर्शन करेंगे ? —(A. U., 1962)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों में जो सत्य हैं उनके समक्ष 'हाँ' को और जो असत्य हैं उनके समक्ष 'नहीं' को रेखांकित कीजिए—
   (i) पाठ्यक्रम में केवल कक्षा-कक्ष में पढ़ाये जाने वाले विषय आते हैं। (हाँ/नहीं)
   (ii) पाठ्यक्रम में विद्यालयी तथा विद्यालय की चहार दीवारी के बाहर के सभी अनुभव निहित हैं। (हाँ/नहीं)
   (iii) इतिहास की पाठ्यवस्तु का चयन सांस्कृतिक-युग-सिद्धान्त के अनुसार किया जाना चाहिये। (हाँ/नहीं)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iv) इतिहास की पाठ्यवस्तु के चयन के लिये बालकों की रुचि को आ...
बनाया जाय। (हाँ/नहीं)

(v) जीवनगाथा सिद्धान्त प्रजातन्त्र विरोधी है। (हाँ/नहीं)

(vi) इतिहास के तथ्यों का संगठन एक समान-केन्द्र विधि के अनुकूल ...
जा सकता है। (हाँ/नहीं)

(vii) एक समान-केन्द्र विधि में इतिहास के तथ्यों की पीठिका समान ...
है। (हाँ/नहीं)

(viii) एक समान-केन्द्र विधि मनोवैज्ञानिक है। (हाँ/नहीं)

(ix) कालक्रम विधि के अनुसार इतिहास के तथ्यों को पाठ्यक्रम में ...
क्रमानुसार संगठित किया जाता है। (हाँ/नहीं)

(x) कालक्रम विधि मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षण-सूत्रों के अनुकूल है। (...
नहीं)

(xi) प्रकरण इतिहास में एक विचार या आन्दोलन होता है। (हाँ/नहीं)

(xii) परावर्तन विधि या लोलक विधि मनोवैज्ञानिकता पर आधारित ...
(हाँ/नहीं)

(xiii) भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इतिहास को महत्त्वपूर्ण स...
प्राप्त है। (हाँ/नहीं)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7

इतिहास का वर्गीकरण
CLASSIFICATION OF HISTORY

"Pupils should be helped to appreciate the unity of history, and not to view it at a broken pattern of stories which they are all too likely to equate with tales of adventure."

—*C. P. Hill.*

विषय-प्रवेश

इतिहास केवल एक ही प्रकार का हो सकता है। इतिहास मानवता के क्रमिक विकास की कहानी के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है। इसलिए हमें विश्व का इतिहास तथा सामाजिक इतिहास जानना चाहिए। वस्तुतः हम मानव में रुचि रखते हैं और यह जानने का प्रयास करते हैं कि वह पृथ्वी पर कब आया और उसने किस प्रकार सामाजिक जीवन का विकास किया। इसके अतिरिक्त उसने हमारे लिए इतिहास किस प्रकार तैयार किया। हम किसी विशेष काल में रुचि नहीं रखते, वरन् समस्त समय एवं कालों में रुचि रखते हैं। इसके अतिरिक्त हम सामाजिक जीवन के एक विशेष क्षेत्र में रुचि नहीं रखते, वरन् जीवन के उन सभी अंगों में रुचि रखते हैं जिन्होंने मानव-जीवन के विकास में सहयोग दिया है।

यही हमारा आदर्श है। इसको हम विद्यालय जीवन के कुछ वर्षों के कोर्स में प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसलिये हमें एक समझौता करना पड़ता है। हम विश्व-इतिहास में से एक छोटा भाग ले लेते हैं जिसे राष्ट्रीय इतिहास कहते हैं और उसका अध्ययन हम अपने विद्यालयों में करते हैं। हम राष्ट्रीय इतिहास से भी एक छोटा भाग ले लेते हैं जिसे स्थानीय इतिहास का नाम दे सकते हैं, जिसका विद्यालय जीवन के किसी भी स्तर पर अध्ययन करा सकते हैं।

हम विश्व के इतिहास को विभिन्न प्रकार से बाँट सकते हैं। हम विश्व-

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास का काल विशेष अध्ययन के लिए ले सकते हैं; उदाहरणार्थ—प्राचीनकाल का विश्व इतिहास, मध्यकालीन विश्व-इतिहास आदि। हम विश्व-इतिहास के किसी विशेष अंग को अध्ययन के लिए ले सकते हैं; जैसे—सांस्कृतिक इतिहास, राजनीतिक इतिहास, धार्मिक इतिहास, आर्थिक इतिहास आदि।

हम चाहे किसी भी प्रकार से इतिहास का अध्ययन करें, पर वह चेतनायुक्त समष्टि या सम्पूर्ण मानव-विकास का ही एक अंग होगा। यह विभाजित किया हुआ भाग चेतनायुक्त समष्टि से अलग अपना कोई अस्तित्व नहीं रखता। हम किसी भी काल के इतिहास को पढ़ायें, हमें उसके अतीत और भविष्य दोनों की ओर ध्यान देना पड़ेगा। इस तथ्य को अपने सम्मुख रखे विना हम सफलतापूर्वक इसका शिक्षण नहीं कर सकते। यदि हम राजनैतिक इतिहास का अध्यापन करना चाहें तो हम आर्थिक और सामाजिक इतिहास से सहायता लिए विना उसको सफलतापूर्वक स्पष्ट नहीं कर सकेंगे। उसको स्पष्ट करने के लिए हमें यह वताना पड़ेगा कि आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ राजनैतिक इतिहास की दिशा प्रदान करती हैं। यदि हम किसी देश का इतिहास पढ़ा रहे हैं तो हमें स्मरण रखना पड़ेगा कि वह देश इस विशाल विश्व का ही एक अंग है और इसने विश्व के इतिहास को प्रभावित किया है। साथ ही स्वयं उससे भी प्रभावित हुआ।

यह एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि कोई भी राष्ट्र अन्य राष्ट्रों से पृथक् नहीं रह सकता; उदाहरणार्थ—हम अपने ही राष्ट्र को ले सकते हैं। हम पढ़ते हैं कि भारत अपनी भौगोलिक स्थितियों—पर्वत, समुद्र आदि के कारण अन्य देशों से पृथक् है परन्तु ये सव वातें व्यर्थ हैं; क्योंकि भारत कभी भी शेष विश्व से अलग नहीं रहा। वाह्य देशों के लोग पर्वतों को पार करके तथा समुद्र के मार्ग से भारत में प्राचीन समय से आते रहे हैं और उनका आना किसी भी काल में नहीं रुका। भारतीय भी इन मार्गों से दूसरे देशों—जावा, सुमात्रा, कम्बोडिया, यूनान, मध्य एशिया, चीन, मेसोपोटामिया आदि—में गये। यह बात जितनी भारत के लिए सत्य है उतनी ही विश्व के अन्य देशों के लिए सत्य है।

अतः विभिन्न राष्ट्रों के इतिहास का क्रमिक विकास एक ही स्रोत से हुआ है। उनके विकास का इतिहास एकाकी तथ्य नहीं है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को अतीत से प्रभावित करता रहा है और मानवता के विकास में अपना सहयोग प्रदान करता आ रहा है। इस प्रकार हम जारविस के शब्दों में कह सकते हैं—"इतिहास एक सम्पूर्ण एकता है।" ये शब्द सदैव से हमारे कानों में गुंजार करते आ रहे और मानव की इतिहास को अनुपम अखण्डता को स्थिर रखने के लिए प्रोत्साहित करते रहे हैं।

इतिहास का वर्गीकरण
Classification of History

इतिहास अविभाज्य है। यह सम्पूर्ण एकता है। अध्ययन एवं अध्यापन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सुविधानुसार लोगों ने इसका वर्गीकरण किया है। लोगों ने इतिहास को मानव के निवास-स्थान एवं उसकी विशेष क्षेत्रों की क्रियाओं के आधार पर वर्गीकृत किया है। इन आधारों पर वर्गीकृत किये गए भेदों का विवेचन नीचे दिया जा रहा है—

निवास-स्थान के अनुसार इतिहास का वर्गीकरण—मानव किसी स्थान, जैसे ग्राम, कस्बा और शहर में रहता है तो इनके इतिहास को स्थानीय इतिहास कहते हैं। उसी प्रकार जब मानव उससे अधिक विस्तृत भौगोलिक एकता में रहता है तो उसके इतिहास को प्रान्तीय या प्रादेशिक इतिहास कह देते हैं। जब इससे भी अधिक विस्तृत भौगोलिक एकता में निवास करता है तो उसके इतिहास को राष्ट्रीय इतिहास कहते हैं। जब मानव सम्पूर्ण विश्व को अपना निवास-स्थान मानकर देश या विदेश का कोई भेद नहीं रखता है तब उसके इतिहास को विश्व-इतिहास कहते हैं। विश्व-इतिहास मानव के सम्पूर्ण इतिहास की विवेचना करता है। इस प्रकार इतिहास के अधोलिखित भेद माने गए हैं—

(अ) विश्व-इतिहास (World History),
(ब) राष्ट्रीय इतिहास (National History),
(स) प्रान्तीय इतिहास (Provincial History),
(द) स्थानीय इतिहास (Local History)।

(अ) विश्व-इतिहास—यदि हम जानना चाहते हैं कि विश्व में क्या हो रहा है और विश्व को वास्तव में समझना चाहते हैं तो हमें एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा। इस दृष्टिकोण को उत्पन्न करने के लिए बहुत-से साधन सुझाये गये हैं, परन्तु सबसे प्रमुख और जिसकी महत्ता को सब विद्वान स्वीकार करते हैं, विश्व के इतिहास का शिक्षण है। इसके द्वारा बालकों को मानवता का इतिहास तथा राष्ट्रों की अन्योन्याश्रितता का ज्ञान प्राप्त होता है। विश्व-इतिहास के हमें दो रूप मिलते हैं—एक तो 18वीं शताब्दी तक का इतिहास तथा दूसरा वर्तमान शताब्दी तक का। 18वीं शताब्दी तथा उससे पूर्व की घटनायें केवल अपने राष्ट्र तथा निकटवर्ती राष्ट्रों को ही प्रभावित कर पाती थीं। फ्रांस की क्रान्ति का प्रभाव धीरे-धीरे योरोप महाद्वीप में फैला था। अप्रत्यक्ष रूप से भले ही समानता, भ्रातृत्व तथा स्वतन्त्रता के शब्दों ने दूसरे राष्ट्रों को बाद में प्रभावित किया हो परन्तु आज की घटनाओं की भाँति प्रत्यक्ष रूप से नहीं किया था। वैज्ञानिक प्रगति ने विश्व के सभी राष्ट्रों को एक-दूसरे के समीप ला दिया। आज एक राष्ट्र का कोई प्रश्न उस राष्ट्र का ही नहीं वरन् समस्त विश्व का प्रश्न बन जाता है; उदाहरणार्थ—स्वेज नहर का प्रश्न मिस्र राष्ट्र का नहीं था, वरन् विश्व की राजनीति का प्रश्न था। आज रोडेशिया का प्रश्न केवल रोडेशिया तथा इंग्लैण्ड का ही प्रश्न नहीं है वरन् समस्त विश्व का प्रश्न बना हुआ है। आज वियतनाम का प्रश्न सम्पूर्ण विश्व को अपनी ओर आकृष्ट कर रहा है। इतिहासकारों का मत है कि विश्व-इतिहास के आधुनिक रूप को शिक्षण के लिए लिया जाय। लेकिन इस रूप के शिक्षण के लिए जो पाठ्य-वस्तु ली जाय, उसका चयन बड़ी सतर्कता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से किया जाना चाहिए। इसके लिए इतिहासकार को उन विचारों तथा सिद्धान्तों पर भी ध्यान देना चाहिए जो प्रत्येक महाद्वीप में कम या अधिक रूप में फैले हुए हैं, जैसे—साम्यवाद, राष्ट्रवाद, पूँजीवाद आदि। दूसरे, इतिहासकार को उन महापुरुषों पर भी दृष्टि डालनी चाहिए जिन्होंने विश्व के सम्मुख अपने विचार महत्त्वपूर्ण ढंग से रखे; जैसे—गांधी जी, बरट्रेण्ड रसल, लेनिन आदि। इतिहासकार को उन संस्थाओं तथा संगठनों पर भी ध्यान देना चाहिए, जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सुधारने का प्रयत्न किया है; उदाहरणार्थ—लीग ऑफ नेशन्स, संयुक्त राष्ट्र-संघ, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आदि।

विश्व-इतिहास का शिक्षण क्यों ?—विश्व-इतिहास की विवेचना पर दृष्टिपात करने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि—हम विश्व-इतिहास का शिक्षण क्यों करते हैं ? इसका शिक्षण शिक्षा के किस स्तर पर किया जाना चाहिए ? ये प्रश्न प्रत्येक शिक्षाशास्त्री के सम्मुख उपस्थित होते हैं। इनका उत्तर अधोलिखित है—

(1) इतिहास मानव-विकास की गाथा है। जब से मानव इस पृथ्वी पर अवतरित हुआ, उसी समय इतिहास का जन्म हुआ है। यह केवल भारतीयों, चीनियों आदि के विकास की कहानी नहीं है, वरन् सम्पूर्ण मानवता के विकास की कहानी है। इतिहास की इस परिभाषा रूपी कसौटी पर विश्व-इतिहास ही खरा उतरता है। इसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विश्व-इतिहास को पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

(2) कोई भी राष्ट्र अकेला कभी नहीं रहा, और न अन्य राष्ट्रों से पृथक् होकर जीवित ही रह सकता है। यदि हम किसी भी राष्ट्र से सम्बन्धित विकास की कहानी का अध्ययन करते हैं तो हमें यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि उसने सांस्कृतिक विकास के उसी मार्ग को अपनाया जो दूसरे राष्ट्रों में अपनाया गया था। हम अपने राष्ट्र को उदाहरण के लिए ले सकते हैं। हमारी सभ्यता विश्व की प्राचीन सभ्यता कही जाती है। यदि उसका ही विश्लेषण किया जाय तो यह प्रतीत होगा कि यह विभिन्न जातियों के प्रभावों के कारण इस दशा में पहुँची है। उसने विभिन्न जातियों के प्रभावों को अपने में आत्मसात् कर लिया और उनको अपना सांस्कृतिक रूप प्रदान किया। इन सब बातों का निरीक्षण करके हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि समस्त देश तथा राष्ट्र एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं। इस कारण विश्व-इतिहास का शिक्षण आवश्यक है, क्योंकि हम एक राष्ट्र के इतिहास का शिक्षण—दूसरे राष्ट्र के इतिहास से सम्बन्ध बताये बिना नहीं कर सकते।

(3) विश्व-इतिहास के द्वारा विश्व-मैत्री की भावना को विकसित कर सकते हैं। समस्त राष्ट्र तीसरे महायुद्ध के भय से ग्रसित हैं। इस भय तथा तनाव को दूर करने के लिए विश्व-इतिहास का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके द्वारा समस्त राष्ट्रों के युवकों में विश्व-बन्धुत्व की भावना उत्पन्न की जा सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति—विश्व-इतिहास के अध्ययन का सुन्दर एवं महान् पुरस्कार होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व-इतिहास किस स्तर पर पढ़ाया जाय ?—विभिन्न शिक्षा-शास्त्रियों के सम्मुख यह प्रश्न समस्या के रूप में है कि विश्व-इतिहास को किस स्तर के अध्ययन के लिए रखा जाय ? अधिकांश शिक्षा-शास्त्री इस बात से सहमत हैं कि विश्व-इतिहास प्रारम्भिक स्तर पर नहीं रखा जाय क्योंकि इतिहास कारण तथा प्रभाव (Cause & effect) का विज्ञान है। इसके लिए तर्क-शक्ति की आवश्यकता है। रूसो (Rousseau) ने, जो शिक्षा-क्षेत्र में प्रगतिशील शिक्षा का जनक कहा जाता है, प्रारम्भिक स्तर को 'तर्क की सुप्तावस्था' (Sleep of Reason) कहा है। इस कारण यह काल विश्व-इतिहास के अध्ययन के लिए उपयुक्त नहीं है। दूसरे, बालक विश्व की समस्याओं को इस स्तर पर समझने में असमर्थ रहेंगे। तीसरे, सांस्कृतिक समस्याएँ बालक की रुचि तथा प्रकृति के अनुसार ठीक नहीं हैं। इन सब के आधार पर हम कह सकते हैं कि विश्व-इतिहास को उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए रखा जाना चाहिए। मेकेन्जी (Mackenzie) ने विश्व-इतिहास के लिए एच० जी० वैल्स तथा कारटेर (H. G. Wells and Carter) की पुस्तकों को निर्धारित किया है। उत्तर-प्रदेश के शिक्षा-बोर्ड ने विश्व-इतिहास को हाई स्कूल के लिए निर्धारित कर दिया है। इस दिशा में अन्य प्रदेशों के शिक्षा बोर्डों को भी ध्यान देना चाहिए।

(ब) राष्ट्रीय इतिहास—भारतीय विद्यालयों के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय इतिहास की प्रधानता है। परन्तु राष्ट्रीय इतिहास के शिक्षण में विभिन्न कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। सर्वप्रथम एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से पूर्णतया पृथक् नहीं रह सकता। यदि हम भारतीय इतिहास का शिक्षण इस प्रकार प्रारम्भ कर दें कि भारत में आधे लोग बाहर से आये, तो यह प्रश्न खड़ा होता है कि कहाँ से, और कब आये ? और उनसे पहले भारत में कौन-सी जाति रहती थी, उसकी सभ्यता किस प्रकार की थी, तथा उसने अपनी सभ्यता किस प्रकार प्राप्त की थी ? यदि हम इन सब प्रश्नों का विश्लेषण करना प्रारम्भ करें तो हमें दूसरे राष्ट्रों के इतिहास को भी ध्यान रखना पड़ेगा। उनकी सहायता के बिना हम इन प्रश्नों की विवेचना नहीं कर सकते। इसी कठिनाई को दूर करने के लिए कुछ विद्वानों का विचार है कि प्रारम्भिक स्तर पर ही हमें विश्व-इतिहास का अध्ययन कराना चाहिए। इन विद्वानों में अल्तमिरा (Altamira) तथा एच० ए० एल० फिशर (H. A. L. Fisher) उल्लेखनीय हैं। उनका विचार है कि राष्ट्रीय इतिहास का शिक्षण देने से पूर्व छात्रों को गुफाओं के मनुष्यों, बेबीलोनियन, अरबवासियों, ग्रीसवासियों तथा रोमवसियों के विषय में ज्ञान देना चाहिए और इसके पश्चात् माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय इतिहास के साथ-साथ विश्व-इतिहास का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम निर्धारित करना चाहिए। दूसरी समस्या राष्ट्रीय इतिहास के शिक्षण में यह उत्पन्न होती है कि राष्ट्र में बहुत-से ऐसे प्रान्त हैं जो कि अपना स्वयं एक इतिहास रखते हैं। भारत के बहुत-से प्रान्त तो योरोप के बहुत-से देशों से बड़े हैं। तब यह प्रश्न उठता है कि उस प्रान्तीय इतिहास का शिक्षण किया जाय, जिसमें बालक रहता है या भारत के सम्पूर्ण इतिहास का शिक्षण किया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाय ? इस प्रश्न को हम विभिन्न स्तरों पर इतिहास को श्रेणीबद्ध करते समय हल कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय इतिहास राष्ट्र के सम्पूर्ण इतिहास को जो देन प्रदान करता है, हमें उनका शिक्षण राष्ट्रीय इतिहास के साथ करना चाहिए।

अतः भारतीय विद्यालयों में जो इतिहास पढ़ाया जाय, वह राष्ट्रीय दृष्टिकोण से पढ़ाया जाना चाहिए। इसमें सम्पूर्ण राष्ट्रीय जीवन की बातों के साथ-साथ प्रान्तों द्वारा प्रदान की गई देनों को स्थान प्रदान किया जाय। इस प्रकार के विवेचन से छात्रों में देशभक्ति, प्रेम एवं अतीत के लिए गौरव की भावनाओं का विकास किया जा सकेगा। साथ ही विघटनकारी प्रवृत्तियों को रोकने में सहायता मिल सकेगी।

(स) प्रान्तीय इतिहास—भारतीय उपमहाद्वीप के प्रान्त, आकार तथा जन-संख्या में योरोपीय देशों से भी बड़े हैं। साथ ही उनमें से बहुत-से प्रान्तों का अपना एक विशिष्ट इतिहास है; उदाहरणार्थ—राजस्थान, मध्य प्रदेश, बंगाल, पंजाब आदि। राजस्थान का इतिहास अपना एक विशिष्ट महत्त्व ही नहीं रखता वरन् उसने राष्ट्रीय इतिहास को महान् योगदान दिया है। उसके महान् राजाओं ने सम्पूर्ण मध्य काल की राजनीति में सक्रिय भाग लिया। अकबर इस प्रदेश के राजपूत राजाओं के बल पर ही मुगल साम्राज्य की नींव दृढ़ बना सका था। पंजाब के बल पर अंग्रेज लोग अपनी शक्ति को कायम रखने में समर्थ हो सके। स्वतन्त्र भारत भी इस प्रदेश के शौर्य पर गर्वान्वित होता है। जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं कि इन प्रान्तों के इतिहासों को पाठ्यक्रम में स्वतन्त्र अस्तित्व प्रदान नहीं किया जाय वरन् उनको राष्ट्रीय इतिहास का एक अंग बनाकर पढ़ाया जाना चाहिए।

(द) राष्ट्रीय इतिहास—विभिन्न इतिहासकारों का मत है कि स्थानीय इतिहास को इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाना चाहिए। हस्लक (Hasluck) का विचार है कि इतिहास के कोर्स में स्थानीय इतिहास के कुछ पाठों का समावेश करना अत्यन्त हितकारी है। के० डी० घोष (K. D. Ghosh) का भी मत है कि राष्ट्रीय इतिहास के लिए स्थानीय इतिहास की जो देन है, उनका समावेश करना आवश्यक है। प्रो० घाटे का विचार है स्थानीय इतिहास का अर्थ यह नहीं है कि जिस कस्बे अथवा जिले में बालक रहता है; उसका इतिहास ही स्थानीय इतिहास है। जिस पड़ोस में अथवा जिस स्थान पर मनुष्य रहता है, उस स्थान के वातावरण की भी विशेषता होती है। छात्रों को इन विशेषताओं का ज्ञान होना चाहिए या उनसे उनको परिचित कराया जाय। एक दूसरे विद्वान का मत है कि उत्तम प्रकार से चयन किया हुआ स्थानीय इतिहास पाठ को विस्तार प्रदान करता है तथा अनुभवपूर्ण क्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करता है; जैसे—किसी ऐतिहासिक स्थान का भ्रमण या पर्यटन।

हमारे देश में स्थानीय इतिहास के अध्ययन के लिए बहुत अवसर प्राप्त हैं यदि कोई विद्यालय प्राचीन नगर या कस्बे में स्थित है जो ऐतिहासिक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है, वह स्थान स्थानीय इतिहास के शिक्षण के लिए बहुत लाभदायक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है। ऐसे स्थान—आगरा, दिल्ली, ग्वालियर, हैदराबाद आदि हैं। भारतीय शिक्षालयों में स्थानीय इतिहास के शिक्षण पर बिलकुल भी ध्यान नहीं दिया जाता है। इतिहास के अध्यापकगण अपने छात्रों को इतिहास के पृथक्-पृथक् तथ्यों की गोलियों को सटकने के लिए तत्पर बनाते हैं। इस प्रकार स्थानीय इतिहास के प्रति उनका व्यवहार असहानुभूतिपूर्ण रहता है, जो अनुचित है।

स्थानीय इतिहास के महत्त्व, लाभ एवं उसकी अध्यापन-विधियों का अगले अध्याय में पृथक् रूप से विवेचन किया गया है।

यद्यपि इतिहास मानव-जीवन के सभी अंगों की विवेचना करता है। फिर भी बहुत-से इतिहासकारों ने उसके पृथक्-पृथक् अंगों पर बल दिया है। इस कारण इतिहास के निम्नलिखित भेद किये जाते हैं—

(अ) राजनीतिक इतिहास (Political History),
(ब) आर्थिक इतिहास (Economic History),
(स) सामाजिक इतिहास (Social History)।

(अ) राजनीतिक इतिहास—अरस्तू ने इतिहास को मानव की कहानी माना था लेकिन उसने मनुष्य के कार्यों में राजनीतिक कार्यों को ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। अरस्तू ने इतिहास के राजनीतिक अंग को मानव-उन्नति तथा विकास के लिए मुख्य आधार माना है। फ्रीमैन (Freeman) का विचार है कि इतिहास राजनीतिक घटनाओं का एक लेखा है। उसने इतिहास को अतीत की राजनीति माना है और इतिहास द्वारा समाज के राजनीतिक जीवन के विकास का ही वर्णन किया जाना चाहिए। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि समाज के जीवन पर राजनीतिक घटनाओं का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है और वे सामाजिक तथा आर्थिक परिणामों का निर्धारण भी करती हैं। यदि इतिहास का निर्माण किया जाय तो उसमें राजनीतिक घटनाएँ क्रम पैदा करने में बहुत सहायता प्रदान करती हैं। इनके द्वारा काल-क्रम सरलता से प्रतिपादित किया जा सकता है। परन्तु इस प्रकार इतिहास को केवल राजनीतिक विषय का लेखा बनाना भूल होगी। उसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) राजनैतिक इतिहास वैज्ञानिक इतिहास का लेखा देने में असमर्थ रहता है, क्योंकि राजनीतिक इतिहास केवल शासकों तथा उनके कार्यों से ही सम्बन्ध रखता है। वह साधारण मनुष्यों के विषयों में कुछ भी वर्णन नहीं करता। कुछ मनुष्यों का विचार है कि शासक या राजा लोग अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु यह तर्क ठीक प्रतीत नहीं होता, क्योंकि साधारण मनुष्यों के विषय में राजाओं के रहन-सहन से कुछ पता नहीं लगाया जा सकता है। बहुधा ऐसा देखा गया है कि राजा लोग बड़े ऐश्वर्य एवं विलासिता का जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु उनकी प्रजा का जीवन बहुत ही कष्टों तथा दुःखों में व्यतीत होता है। यदि वे अपने समय का प्रतिनिधित्व करते हैं तो उनकी प्रजा का जीवन भी सुखमय होना चाहिए, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) इसमें कोई सन्देह नहीं है कि राजनैतिक क्रियायें सामाजिक तथा आर्थिक कारणों से निश्चित होती हैं परन्तु कभी-कभी भौगोलिक परिस्थितियों से भी निश्चित की जाती हैं। फ्रांस की क्रान्ति केवल रूसो तथा वाल्टेयर के प्रचार से नहीं हुई, वरन् उसकी नींव में सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ थीं, जिन्होंने क्रान्ति को जन्म दिया।

(3) मानव केवल संवेग, भावना या बुद्धिमात्र ही नहीं, वरन् उनसे कहीं अधिक है। यदि इतिहास अपने नाम के महत्त्व को प्रकट करना चाहता है तो उसे मानव जीवन के प्रत्येक अंग का वर्णन करना चाहिए, न कि मात्र राजनैतिक अंग का। उसे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, नैतिक, शैक्षिक आदि सभी क्षेत्रों के विकास का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करना चाहिए।

(ब) आर्थिक कारण—मार्क्सवादियों का विचार है कि आर्थिक आवश्यकता ही समस्त सामाजिक आचरण की जड़ है। अर्थशास्त्र कुछ भी नहीं है, वरन् समस्त मानवीय सम्बन्धों का आधार है। राजनैतिक तथा सामाजिक परिवर्तन अधिकतर आर्थिक परिवर्तनों के कारण ही होते हैं। इतिहास हमें बतलाता है कि यदि राजनैतिक परिवर्तनों का विश्लेषण किया जाय तो हमें उसके कारण अधिकतर आर्थिक ही मिलेंगे। रूसी क्रान्तियों की जड़ आर्थिक ही थी। स्वेज नहर का प्रश्न, वास्तव में अपनी प्रकृति में आर्थिक ही था परन्तु वह समस्त राष्ट्रों के सम्मुख राजनैतिक प्रश्न के रूप में उपस्थित हुआ। इन्हीं कारणों से इतिहासकारों का मुख्य अभिप्राय—आर्थिक कारणों तथा परिणामों की विवेचना करना रहा है।

यह सत्य है कि इतिहास में आर्थिक कारण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं और यह भी सत्य है कि अध्ययन की दृष्टि से इसको प्राचीन काल में स्पर्श नहीं किया गया था, क्योंकि उस काल में राजनीतिक कारण प्रधान था। परन्तु इसको ही समस्त विकास का आधार मानना भूल होगी। मानव केवल रोटी के लिए ही जीवित नहीं रहता; अर्थात् वह भोजन के लिए ही जीवित नहीं रहता, वरन् उसमें पर-सेवा की भावना भी होती है, जिसकी सन्तुष्टि करना आवश्यक है। इतिहास हमें त्याग के कार्यों के बहुत-से उदाहरण प्रदान करता है जिससे मनुष्य अपने में स्वार्थ त्याग करने की भावना विकसित करता है। बहुत-से राजनैतिक परिवर्तन ऐसे हैं, जो कि आर्थिक कारणों के बिना भी हुए हैं। प्राचीनकाल के बहुत-से शासकों तथा राजाओं ने चढ़ाइयाँ कीं जिनका कारण आर्थिक नहीं था; उदाहरणार्थ—मुहम्मद तुगलक ने हिमालय के कुछ प्रदेशों को अपने अधिकार में करने के प्रयत्न से आक्रमण किया था, परन्तु उसका कारण आर्थिक न होकर अपने राज्य की सीमा बढ़ाना था।

(स) सामाजिक इतिहास—राजनीतिक तथा आर्थिक इतिहास पृथक् रूप से जीवन-चित्र का पूर्ण रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत नहीं कर पाते। हमारे सामाजिक जीवन का कोई शृङ्खलाबद्ध घटनाचक्र नहीं है। उनका क्रमबद्ध इतिहास भी तैयार नहीं किया जा सकता। पाठ्यक्रम की दृष्टि से भी यदि हम विचार करें तो उनकी सहायता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से पाठ्यक्रम निर्मित, करना भी अत्यन्त कठिन है। सामाजिक इतिहास का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इसके अन्तर्गत वे सभी बातें आती हैं जो समाज में घटित हुई हैं। इस जीवन के अन्तर्गत कृषि, उद्योग, शिक्षा, कौटुम्बिक जीवन, भोजन, वस्त्र तथा शारीरिक क्रियायें, श्रम तथा नौकरी, साहित्य, शिल्प-कला, सिलेई, परम्परा तथा संस्थायें, धर्म, रहन-सहन आदि सब-कुछ आ जाता है। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसी बातें हैं जो सामाजिक जीवन के अन्तर्गत आती हैं। इस प्रकार से आर्थिक तथा राजनैतिक परिवर्तन भी सामाजिक जीवन के ही अंग हैं। हम देखते हैं कि सामाजिक तथ्यों का चयन करना बड़ा कठिन है। एक समस्या यह उठ खड़ी होती है कि इनका चयन किस प्रकार किया जाय और उनका चयन करते समय किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखा जाये ?

सामाजिक इतिहास के विरुद्ध एक तर्क यह भी दिया जाता है कि इसके द्वारा समय-ज्ञान विकसित करना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। इसी कारण इतिहासकार सामाजिक इतिहास को पाठ्यक्रम में रखने के पक्ष में नहीं है। इसके अतिरिक्त समस्त सामाजिक परिवर्तनों का एक आदर्श नहीं है। इन सभी कारणों से सामाजिक इतिहास को एक अलग विषय का स्थान नहीं दिया जा सकता।

विभिन्न विभागों में समन्वय की आवश्यकता : The Need of Correlation between the different division of History—जब तक इन विभिन्न विभागों में समन्वय नहीं किया जायगा तब तक इतिहास का शिक्षण ठीक रूप से व्यवस्थित नहीं हो सकता। इसके समन्वय के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जा रहे हैं—

(1) यह सदैव हितकारी रहेगा—यदि इतिहास का विभाजन राष्ट्र के दृष्टि-कोण से किया जाय। उसका भी विभाजन काल-विशेष की दृष्टि से किया जा सकता है। परन्तु यह विभाजन का कार्य बड़ी सतर्कता तथा दूरदर्शिता के साथ किया जाना चाहिए।

(2) जिस काल-विशेष को इतिहास शिक्षण के लिए चुना जाय, उसके मुख्य अंगों का पूर्ण विवेचन किया जाये और उनकी महत्ता के अनुसार उन पर ठीक प्रकार से ध्यान दिया जाय।

(3) इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जो भी काल-विशेष तथा वर्ग-विशेष चुना जाय, उनके तथ्यों की ऐतिहासिक क्रमबद्धता तथा घटनाओं की शृङ्खला कभी टूटने न पाये। समय तथा काल-विशेष का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाय इसके अतिरिक्त घटनाओं के कारण तथा उनके परिणामों की भी विवेचना करना इतिहास का कार्य है।

इन उपर्युक्त सुझावों को ध्यान में रखकर हम इतिहास के शिक्षण के लिए भारतीय इतिहास का इस प्रकार वर्गीकरण कर सकते हैं—किसी भी राष्ट्र के प्रारम्भिक इतिहास के वर्गीकरण में कठिनाई नहीं होती। इन राष्ट्रों का प्रारम्भिक इतिहास संस्थाओं तथा रीति-रिवाजों तक ही सीमित रहता है। गूच का कथन है कि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"प्रत्येक राष्ट्र का प्रारम्भिक इतिहास क़ानून-निर्माताओं के स्थान पर व्यक्ति-वि तथा रीति-रिवाजों का होना चाहिए।"[1] हमारे प्राचीन भारत के इतिहास "सामाजिक पक्ष की प्रधानता" है। लेकिन उसकी विवेचना के साथ-साथ दूसरे प की भी विवेचना की जानी चाहिए। उस समय की राजनैतिक स्थिति कैसी थी आर्थिक क्रियायें किस प्रकार की थीं ? इसके अतिरिक्त शैक्षिक जीवन के विषय में वर्णन किया जाय। गुरुकुल पद्धति तथा हमारी शैक्षिक प्रगति ने किन-किन बातों दूसरे राष्ट्रों को प्रभावित किया और दूसरे राष्ट्रों से इन क्षेत्रों में किन वस्तुओं ग्रहण किया गया ? इसके अतिरिक्त धार्मिक क्षेत्र का भी विवरण दिया जाना चाहि जाति-प्रथा की विवेचना आर्थिक दृष्टिकोण से भी की जानी चाहिए। इसी प्र मध्यकाल की भी विवेचना होनी चाहिए यद्यपि इस युग में राजनैतिक घटना की प्रधानता रही, फिर भी दूसरे अंगों को अछूता नहीं छोड़ा जाना चाहिए। लेकि आधुनिक युग की दूसरे ढंग से विवेचना की जानी चाहिए। कम्पनी के काल पृथक् रूप से विवेचन किया जाय। इसके बाद के काल को निम्नलिखित अंगों विभाजित करके विवेचना की चाहिए—

(अ) शैक्षिक विकास,
(ब) संवैधानिक विकास,
(स) स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास,
(द) सामाजिक एवं धार्मिक सुधार,
(य) स्वतन्त्रता-प्राप्ति तथा संविधान,
(र) स्वतन्त्र भारत की औद्योगिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनी समस्यायें आदि।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Attempt a defence of the teaching of World History al with National History ? At what stage will you introd World History ? —(L. T., 19

   राष्ट्रीय इतिहास के साथ विश्व-इतिहास के शिक्षण के पक्ष में तर्क प्रस्तुत की और बताइये कि आप इसका शिक्षण शिक्षा के किस स्तर पर करेंगे ?

2. What is the importance of World History ? Explain Examples.

   विश्व-इतिहास का क्या महत्त्व है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

3. How would you relate local history with regional or provi and national history ? Illustrate your answer with suit examples.

---

1. "The early history of every nation must be rather of in duals of customs than of law givers." —Go

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आप प्रादेशिक और राष्ट्रीय इतिहास का स्थानीय इतिहास से किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित करेंगे ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

4. Write short note on "Study of local history."—(A. U., 1980)
'स्थानीय इतिहास का अध्ययन' पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित कथन यदि सत्य हैं तो 'हाँ' और यदि असत्य हैं तो 'नहीं' पर (√) का चिह्न लगाइए—
   (i) विश्व इतिहास का शिक्षण प्राइमरी कक्षाओं में हो। (हाँ/नहीं)
   (ii) इतिहास कारण तथा प्रभाव का विज्ञान है। (हाँ/नहीं)
   (iii) राजनैतिक इतिहास वैज्ञानिक इतिहास का लेखा प्रदान करता है। (हाँ/नहीं)
   (iv) सामाजिक इतिहास का विषय-क्षेत्र अति संकुचित है। (हाँ/नहीं)
   (v) प्रत्येक देश के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में राष्ट्रीय इतिहास की प्रधानता रहती है। (हाँ/नहीं)
2. निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उनके समक्ष कोष्ठकों में लिखे शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर कीजिए—
   (i) भारत के प्रान्त········तथा जनसंख्या में योरोपीय देशों से बड़े हैं। (आकार, प्रकार, समृद्धि)
   (ii) विश्व-इतिहास में मानव के········की गाथा होती है। (विकास, समृद्धि, उन्नति)
   (iii) स्थानीय इतिहास के द्वारा बालकों में········परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के लिए आदर की भावना विकसित की जाती है। (राष्ट्रीय, प्रान्तीय, अन्तर्राष्ट्रीय, स्थानीय)
   (iv) विश्व-इतिहास द्वारा छात्रों में········की भावना विकसित की जाती है। (राष्ट्रीयता, विश्वमैत्री, जातीयता)

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

1. निवास-स्थान के आधार पर इतिहास को कितने भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है ?
2. राजनैतिक इतिहास के अध्यापन में आने वाली दो बाधाओं को बताइए।
3. सामाजिक इतिहास के शिक्षण की दो कठिनाइयों को बताइए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8

स्थानीय इतिहास का महत्त्व
IMPORTANCE OF LOCAL HISTORY

"The Study of Local History is of real importance and should most certainly find some space, however small, in the school history syllabus."
—*E. L. Hasluck.*

विषय-प्रवेश

स्थानीय इतिहास का अर्थ यह नहीं है कि जिस कस्बे, नगर या जिले बालक रहता है, उसका इतिहास ही स्थानीय इतिहास है वरन् पड़ोस में अथवा जि स्थान पर मनुष्य रहता है, उस स्थान के वातावरण की भी अपनी विशेषता हो है। अतः छात्रों को इन विशेषताओं का भी ज्ञान होना आवश्यक है। ई० एल हस्लक का मत है कि इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थानीय इतिहास के पाठों का सम वेश करना हितकारी है क्योंकि स्थानीय इतिहास राष्ट्रीय इतिहास को व्यापक बन में सहायक होता है। के० डी० घोष (K. D. Ghosh) का मत है—"राष्ट्री इतिहास के लिए स्थानीय इतिहास की जो देन है, उसका समावेश करना आवश्यक है।"

स्थानीय इतिहास का महत्त्व
Importance of Local History

ई० एल० हस्लक ने स्थानीय इनिहास के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए लि है—"स्थानीय इतिहास का अध्ययन वास्तविक महत्त्व का है। यह उन विभि ऐतिहासिक आन्दोलनों को रोचक एवं विस्तृत ढंग से स्पष्ट करता है, जिन्हे राष्ट्रीय इतिहास को प्रभावित किया है और स्थानीय परिस्थितियों को सौन्दर्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एवं रोचक बनाता है। यह छात्रों का ऐतिहासिक दृश्यों, नामों तथा भवनों आदि के साथ प्रतिदिन का सम्पर्क स्थापित करके उनके लिए एक रोचक एवं वास्तविक वातावरण का निर्माण करता है। यह छात्रों के विचारों को वर्तमान की ओर से हटाकर उन तथ्यों एवं वस्तुओं की ओर ले जाता है, जो गुजर चुकी हैं अर्थात् उन बातों के विषय में सोचने के लिए तत्पर बनाता है जो बीत चुकी हैं।"

स्थानीय इतिहास के लाभ
Advantages of Local History

स्थानीय इतिहास का अर्थ तथा महत्त्व देखने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि स्थानीय इतिहास से क्या लाभ हैं? इससे प्राप्त होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं—

(1) स्थानीय इतिहास के द्वारा बालकों में अपनी स्थानीय परम्पराओं तथा रीति-रिवाजों के प्रति आदर की भावना उत्पन्न की जा सकती है। ये परम्परायें तथा रीति-रिवाज उस स्थान के नैतिक जीवन का प्रतिबिम्ब होती हैं।

(2) इसके द्वारा अनुदारता की भावना को दूर किया जा सकता है तथा बालकों के दृष्टिकोण को व्यापक बनाया जा सकता है।

(3) स्थानीय इतिहास अपने पूर्वजों के विषय में परिचय कराता है तथा इसके ज्ञान में हम अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसके द्वारा बालकों में उस स्थान के प्रति प्रेम एवं भक्ति की भावना उत्पन्न होती है।

(4) स्थानीय इतिहास का शिक्षण बालकों में निर्धन मनुष्य के जीवन के प्रति सद्भावना तथा सहानुभूति उत्पन्न करता है और इसके ज्ञान से वे उन समस्याओं को समझने का प्रयत्न करते हैं, जो उनकी निर्धनता का कारण बनी हुई हैं।

(5) स्थानीय इतिहास बालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करता है।

(6) आधुनिक युग में पाठ्यक्रम-सहगामी क्रियाओं पर अधिक बल दिया जा रहा है। परन्तु स्थानीय इतिहास बालकों के विकास के लिए एक नवीन मार्ग की सृष्टि करता है। इसके शिक्षण से उनके चरित्र का निर्माण सुचारु रूप से किया जा सकता है।

इतिहास के पाठ्यक्रम में स्थानीय इतिहास की विषय-सामग्री
Contents of Local History in History Syllabus

कुछ विद्वानों का विचार है कि स्थानीय इतिहास पृथक् विषय नहीं होना चाहिए। उन्होंने इसके पक्ष में दो तर्क दिये—प्रथम, इसमें पृथक् तथा विस्तृत पाठ्यक्रम बनाना कठिन है। द्वितीय, इसमें पाठ्य-पुस्तकों का बहुत अभाव है। इन कारणों को ध्यान में रखकर विद्वानों ने इसके अध्ययन के लिए 'आकस्मिक विधि' को अपनाने के लिए कहा है। जब अध्यापक राष्ट्रीय इतिहास की विवेचना कर रहा हो तो उसको प्रसंगवश स्थानीय तथा क्षेत्रीय (Regional) घटनाओं पर भी प्रकाश डालना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाहिए। इस प्रकार के विवेचन से इतिहास-शिक्षक छात्रों में इतिहास के प्रति उत्पन्न कर सकता है, क्योंकि बालक अपनी निकटवर्ती तथा पड़ोस की वस्तुओं अधिक रुचि रखता है और इसके द्वारा राष्ट्रीय इतिहास भी रोचक ढंग से समझ आ जायेगा। प्रश्न उठता है कि आकस्मिक ढंग से स्थानीय इतिहास के किन का विवेचन किया जाय? स्थानीय इतिहास की अधोलिखित विषय-वस्तु का अध्ययन किया जाना चाहिए—

(1) उस मुख्य नगर या क्षेत्र का ऐतिहासिक विकास जिसमें विद्या स्थित है।

(2) उस नगर या क्षेत्र के पास-पड़ोस में घटित हुई वे घटनायें जिन राष्ट्रीय महत्त्व है।

(3) राष्ट्रीय इतिहास के विकास में उस स्थान की देन।

(4) स्थानीय परम्परायें एवं रीति-रिवाज, ऐतिहासिक भवन, कला-के आदि से परिचित कराना।

स्थानीय इतिहास के अध्ययन की विधियाँ
Methods of Study of Local History

(1) स्थानीय स्थानों के निरीक्षण एवं भ्रमण द्वारा स्थानीय इतिहास अध्ययन किया जा सकता है।

(2) स्थानीय समुदायों के संगठन से भी स्थानीय इतिहास का ज्ञान प्र किया जा सकता है; जैसे—पुरातत्व सम्वन्धी समुदाय।

(3) स्थानीय परिवर्तनों के अध्ययन से भी स्थानीय इतिहास की जानक प्राप्त की जा सकती है।

(4) व्याख्यान तथा योजना-पद्धतियों के माध्यम से भी स्थानीय इतिहास जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इतिहास-शिक्षक का यह कर्त्तव्य है कि स्थानीय इतिहास का उत्तम ढं उपयोग करें; जिससे छात्रों में अपने नगर या क्षेत्र के प्रति प्रेम एवं भक्ति उ हो सके। परन्तु उनमें यह दृष्टिकोण उत्पन्न न किया जाय कि उनका क्षेत्र ही प्राप्त करने का अधिकारी है और अन्य क्षेत्र नहीं। ऐसा दृष्टिकोण राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के विकास में बाधक सिद्ध होगा। अत: उसे किसी स्थान प्रति निष्पक्ष दृष्टिकोण, प्रेम एवं भक्ति उत्पन्न करनी चाहिए। यदि कोई विद्या प्राचीन नगर या कस्बे में स्थित है, जो ऐतिहासिक वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध इतिहास-शिक्षक को उन ऐतिहासिक वस्तुओं के विषय में बालकों को प्रत्यक्ष प्रदान करना चाहिए; उदाहरणार्थ—आगरा, देहली, इलाहाबाद, ग्वालियर, अमृत फतेहपुरसीकरी, हैदरावाद आदि स्थानों में स्थित विद्यालयों के इतिहास-शि स्थानीय ऐतिहासिक वस्तुओं की सहायता से छात्रों को राष्ट्रीय इतिहास का प्र एवं स्थूल ज्ञान प्रदान करने में समर्थ हैं, अत: उनको इनसे अधिकाधिक लाभ उठा चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What is meant by Local History ? Explain with reference to a particular district, mentioning clearly the use you make of it.

—(A. U., 1967)

स्थानीय इतिहास का क्या तात्पर्य है ? किसी जिले का उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए कि आप इसका लाभ किस प्रकार प्राप्त करेंगे ?

2. What should be the place of local history in the history syllabus ? How shall you relate it with regional and national history ? Illustrate with suitable examples from local history.

—(Raj., B. Ed., 1967)

स्थानीय इतिहास का इतिहास के पाठ्यक्रम में क्या स्थान होना चाहिए ? स्थानीय इतिहास को क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय इतिहास से किस प्रकार सम्बद्ध करेंगे ?

3. Critically estimate the value of teaching local history.

—(A. U., 1971)

स्थानीय इतिहास के महत्त्व पर प्रकाश डालिए ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश —सही विकल्प को छाँटिये—

1. स्थानीय इतिहास के अध्ययन के लिये
   (अ) समस्या-पद्धति
   (ब) प्रयोगशाला-पद्धति
   (स) निरीक्षण एवं भ्रमण
   (द) समाजीकृत-अभिव्यक्ति पद्धति सबसे उपयुक्त है ।
2. स्थानीय इतिहास की विषय-वस्तु में
   (अ) प्रान्तीय घटनायें
   (ब) राष्ट्रीय घटनायें
   (स) स्थानीय ऐतिहासिक तथ्य, भवन, कला-केन्द्र, परम्पराओं आदि
   (द) अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का समावेश होता है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

9

इतिहास में कक्षा-शिक्षण के सिद्धान्त

PRINCIPLES OF CLASS-TEACHING IN HISTORY

"Savoir par Coeur n'est pas Savoir"
(To know by heart is not knowledge.)
—*Montaigue.*

विषय-प्रवेश

शिक्षक को शिक्षण करने से पूर्व विषय-वस्तु एवं कक्षा-कक्ष—दोनों की व्यवस्था पर ध्यान देना चाहिए। उसे शिक्षण करते समय इतिहास के सामान्य उ एवं पाठ के मुख्य उद्देश्यों को सदैव अपने समक्ष रखना चाहिए, क्योंकि उद्दे स्पष्टता के अभाव में सफल शिक्षण करना सम्भव नहीं है। शिक्षक को आत्म-वि द्वारा अपनी शिक्षण-पद्धति का निर्धारण करना चाहिए। इसके साथ ही वह एवं शैली के निर्धारण में बालकों की आयु, रुचि, मानसिक स्तर, क्षमता, तथा उपलब्ध समय एवं सामग्री को भी ध्यान में रखे। इनको ध्यान में रख अपनी पद्धति एवं शैली में आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी कर सकता है।

इतिहास-शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

इतिहास की शिक्षा किस प्रकार दी जाय? इसके सम्बन्ध में कुछ सिद्धान्त हैं, जो देखने में साधारण प्रतीत होते हैं, परन्तु यदि शिक्षक उनका करे तो उसे शिक्षण में सफलता प्राप्त होती है। ये सामान्य सिद्धान्त लिखित हैं—

(1) प्रारम्भिक कक्षाओं में निश्चित तथा बोधगम्य तथ्यों को प्रस्तुत चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) छोटी कक्षाओं में श्रव्य-दृश्य सामग्री पर अभिनयात्मक रीति का उपयोग करना चाहिए।

(3) कथन-कौशल द्वारा छात्रों की मानसिक प्रक्रियाओं को सक्रिय बनाना चाहिए।

(4) सामान्य विचारधाराओं या सामान्यीकरण का उपयोग उच्च कक्षाओं में होना चाहिए, परन्तु इन विचारधाराओं को समझाने के लिए मूर्त तथ्यों का उपयोग करना चाहिए। ऐसा करने से सामान्यीकरण असीमित नहीं हो पाता।

(5) प्रत्येक स्तर पर अतीत का वर्तमान से प्रसंगानुकूल सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

(6) ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत करते समय मानचित्र, श्यामपट-आकृति आदि साधनों का उपयोग किया जाय। इसके अतिरिक्त बालक द्वारा ऐतिहासिक एटलस का उपयोग करने पर बल देना चाहिए।

(7) तथ्यों को पृथक् रूप से प्रस्तुत नहीं किया जाय, वरन् कार्य-कारण सम्बन्ध के साथ उनको छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। ऐतिहासिक तथ्यों को समन्वयात्मक रूप से प्रस्तुत करना चाहिए जिससे ऐतिहासिक एकता को स्थापित किया जा सके। इसके साथ ही तथ्यों का पूर्ण प्रकटीकरण होना चाहिए।

(8) इतिहास को सजीव एवं रोचक बनाने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाय, उनका चयन पाठ प्रारम्भ करने से पूर्व होना चाहिए।

(9) निरर्थक तथ्यों एवं जटिलता को समाप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

(10) इतिहास के सभी अंगों पर प्रकाश डालना चाहिए। यह नहीं होना चाहिए कि एक अंग पर अधिक बल दिया जाय और दूसरों को स्पर्श तक नहीं किया जाय।

(11) जो भी तथ्य एवं घटनायें प्रस्तुत की जायें, वे कालानुक्रम के अनुकूल हों। ऐसा करने से बालकों में समय-ज्ञान विकसित करने में सहायता प्राप्त होगी।

विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर इतिहास-प्रतिपादन
Presentation of History at Various Stages

(1) प्राइमरी स्तर

इस अवस्था के छात्र कहानी सुनना तथा कहानी कहना अधिक पसन्द करते हैं। इस अवस्था को 'कहानी-कहने की अवस्था' भी कहा गया है। कहानियाँ चाहे विश्व-इतिहास, राष्ट्रीय-इतिहास या प्रान्तीय-इतिहास से ली जायें, परन्तु उनका चयन बड़ी सतर्कता के साथ करना चाहिए। ये कहानियाँ राम, कृष्ण, बुद्ध, अशोक, राणा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रताप आदि की हों या मानव ने किस प्रकार भोजन या अग्नि की खोज की—इस प्रकार की हों, परन्तु प्रत्येक दशा में ये कहानी के रूप में ही होनी चाहिए और इनमें कहानी की समस्त विशेषताओं का समावेश होना चाहिए। कहानी क्रियाशीलता से पूर्ण होनी चाहिए; अर्थात् वे निष्क्रियता उत्पन्न न करें वरन् क्रियाशील, संक्षिप्त तथा सजीव हों। कहानी छात्रों के मानसिक तथा शारीरिक विकास, रुचि-ज्ञान तथा अनुभव के आधार पर हो। कहानी की भाषा छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए। वाक्य-विन्यास सरल एवं छोटा हो। शब्द सुगम तथा बालकों की ग्राह्य-शक्ति के अनुसार हों। समास-शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं होना चाहिए, जिससे कहानी के प्रत्येक अंग का चित्र छात्रों के सम्मुख उपस्थित हो जाय और कहानी सुनते समय छात्र ऐसा अनुभव करने लगें—मानो प्रत्येक घटना उनके समक्ष ही घटित हुई हो।

इन कक्षाओं को पढ़ाने के लिए अध्यापक को अपने विषय पर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। इससे वह अपने शिक्षण में चार-चाँद लगा सकता है। इसके अतिरिक्त इस स्तर के अध्यापक को कहानी कहने की कला में निपुण होना चाहिए। कहानी कहना—एक कला है। कहानी को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने वाला व्यक्ति कवि के समान प्रखर बुद्धि से युक्त होता है, परन्तु इस स्तर के अध्यापक को अपने परिश्रम से इस कला को सीखना चाहिए और एक अच्छा कहानी कहने वाला बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्यामपट का प्रयोग

अध्यापक को कहानियों को उपयुक्त विभागों में विभाजित कर लेना चाहिए। यदि वह गौतम बुद्ध के जीवन-चरित्र के विषय में पढ़ा रहा है तो उसको तीन भागों में सुविधानुसार बाँटा जा सकता है—(1) जन्म से लेकर महानिष्क्रमण तक, (2) गृह-त्याग से लेकर ज्ञान-प्राप्ति तक, (3) उनके द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार और निर्माण-प्राप्ति। परन्तु इस विभाजन के विषय में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि विभाजन करते समय कहानी का क्रम न टूट जाय। अध्यापक को चाहिए कि प्रत्येक भाग या अन्विति कह लेने के पश्चात् कतिपय शब्दों की सहायता से उस भाग का सारांश श्यामपट पर लिख दे। यह सारांश प्रश्नों द्वारा छात्रों की सहायता से लिखना चाहिए। सारांश अल्प शब्दों तक ही सीमित होना चाहिए। परन्तु यह ध्यान रहे कि इस कार्य द्वारा कथा-प्रवाह में बाधा न पड़े। इस सारांश के पश्चात् अध्यापक कहानी का दूसरा भाग प्रारम्भ कर देगा। सारांश देने की एक अन्य पद्धति भी है। इसके अनुसार अध्यापक कहानी कहने के साथ-साथ उसकी मुख्य बातों को श्यामपट पर लिखता रहता है। इस प्रकार कहानी कहने के साथ-साथ श्यामपट पर सारांश भी तैयार होता जाता है और उसके लिखने के लिए अध्यापक को छात्रों को निर्देश दे देना चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ अध्यापकों का विचार है कि पूरी कहानी कहने के पश्चात् अध्यापक को प्रश्नों द्वारा छात्रों की सहायता से श्यामपट पर सारांश लिखना चाहिए। इससे लाभ यह होता है कि कहानी का क्रम नहीं टूटता और

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बालकों द्वारा ग्रहण किये हुए ज्ञान की भी परीक्षा हो जाती है तथा अध्यापक को भी अपनी सफलता का ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार तैयार किये हुए सारांश को छात्रों को लिखा देना चाहिए। तत्पश्चात् अध्यापक उन रूपरेखाओं को बालकों से विकसित करवा सकता है।

सारांश के अतिरिक्त श्यामपट का प्रयोग मानचित्र या श्यामपट-आकृति बनाने तथा स्थूल वर्णन करने के लिए किया जा सकता है। अध्यापक को किसी कठिन बात को समझाने के लिए इसका प्रयोग करना चाहिए। परन्तु श्यामपट का प्रयोग करने में अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) शिक्षक को श्यामपट का प्रयोग करते समय उसको ढक न लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से अनुशासन भंग होने का भय रहता है। उसको कक्षा में अपनी पीठ नहीं दिखानी चाहिए, वरन् उसको 45° के कोण से खड़ा होकर लिखना चाहिए—

(2) श्यामपट-लेख सुस्पष्ट, सुन्दर तथा एक-सा होना चाहिए, जिससे वह पूरी कक्षा को दिखाई दे सके। दूसरे, इस स्वर के छात्रों में अनुकरण-प्रवृत्ति प्रबल होती है। यदि अध्यापक का लेख सुन्दर नहीं होगा तो वे भी अच्छा लिखने का प्रयत्न नहीं करेंगे। इसलिए उसे सुन्दर तथा स्वच्छता के साथ लिखना चाहिए।

(3) श्यामपट पर चित्र, रेखाचित्र, समय-रेखा इत्यादि इस प्रकार बनाये जायें कि वे पूरी कक्षा को दिखाई पड़ें, अर्थात् उनका आकार कक्षा के अनुपात में हो।

(4) श्यामपट पर लिखने के पश्चात् कक्षा का निरीक्षण भी करना चाहिए जिससे बालकों की अशुद्धियों का पता चल सके।

पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग

इस स्तर पर पाठ्य-पुस्तक के प्रयोग के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। प्रो० घाटे का विचार है कि इस स्तर की जिस कक्षा में इतिहास पढ़ाया जाता है, उस कक्षा के विद्यार्थी अवस्था के अनुसार पर्याप्त रूप से समझदार होते हैं, जो पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग लाभ के साथ कर सकते हैं। परन्तु एक अन्य विद्वान का विचार है कि इस स्तर की अन्तिम कक्षा के छात्रों को प्रारम्भिक रूप से पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग करना चाहिए, अर्थात् उसके अनुसार कक्षा 5 पर पुस्तक का प्रयोग कराया जाय। परन्तु प्रो० घाटे का विचार ही उपयुक्त प्रतीत होता है। कक्षा 3 से ही छात्रों को पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग कराया जाय, उनकी पुस्तकें सरल भाषा में हों और चित्रों से परिपूर्ण होनी चाहिए। उनकी पुस्तकें बच्चे की मातृभाषा में होनीचाहिए। पाठ्य-पुस्तक का सबसे प्रमुख लाभ यह है कि बालक विद्यालय में पढ़ने के पश्चात् अपने घर पर जाकर इसके प्रयोगसे दोहरा सकता है। इसके द्वारा ऐतिहासिकतथ्यों को क्रमबद्ध

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। पाठ की पुनरावृत्ति के लिए भी पाठ्य-पुस्त लाभदायक है। यद्यपि इस स्तर पर मौखिक कार्य अधिक होना चाहिए, परन्तु उन द्वारा छात्रों को अपनी पाठ्य-पुस्तकों को पढ़ने के लिए शिक्षित किया जा सकता है पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त बालकों को विषय से सम्बन्धित अन्य पुस्तकों को पढ़ने लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए। पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग साधन के रूप में हो, साध्य न बन जाय।

चित्र, प्रतिरूप, मानचित्र का प्रयोग

चित्र, प्रतिरूप, मानचित्र आदि वस्तुएँ—प्रदर्शनात्मक उदाहरणों (Visu Illustrations) के अन्तर्गत आती हैं। मौखिक उदाहरणों की भाँति प्रदर्शनात्म उदाहरणों का अभिप्राय भी क्लिष्ट भाव को स्पष्ट तथा सरल बना देता है। इन प्रयोग से छात्रों का ज्ञान व्यवस्थित तथा निश्चित हो जाता है, क्योंकि कानों से सु हुई बात को वे आँख से देख लेते हैं। प्राचीनकाल की समस्त व्यवस्थायें वर्तम समय की व्यवस्थाओं से सर्वथा भिन्न थीं। वर्तमान युग के बालकों के लिए प्राच समय के मनुष्यों के वस्त्र, आभूषण, अस्त्र-शस्त्र, सिक्के, आवागमन के साधनों विषय में बिना देखे समझना कठिन प्रतीत होता है। इसलिए अध्यापकों को प्रदर्शन त्मक उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक अतीत की इन वस्तुओं ज्ञान प्रतिरूप, चित्र तथा प्रत्यक्ष वस्तुओं के द्वारा प्रदान कर सकता है। बच्चों प्राचीनकाल के हथियारों, यन्त्रों (औजारों) तथा सिक्कों को प्रत्यक्ष रूप से दिख चाहिए। यदि उनके पड़ौस में कोई ऐतिहासिक सामग्री हो तो उसे छात्रों को ले जाकर उन वस्तुओं का प्रत्यक्ष ज्ञान कराना चाहिए तथा उनके विषय में पूर्ण समझा देना चाहिए; उदाहरणार्थ—आगरा-किला तथा ताजमहल के विषय में श के द्वारा ही ज्ञान न देकर अध्यापक बालकों को वहाँ ले जाकर उनके विषय समझाये। परन्तु अध्यापक के पास प्रायः प्रत्यक्ष सामग्री का अभाव रहता है, उ स्थान पर वह प्रतिरूप प्रयोग में ला सकता है। प्रतिरूप किसी वास्तविक वस्तु किसी निश्चित अनुपात में बनी हुई प्रतिमूर्ति होती है परन्तु प्रतिरूपों का भ में अभाव है। प्रत्येक वस्तु का प्रतिरूप या मॉडल नहीं बनाया जा सकता प्रतिरूप का बनाना अत्यन्त सरल कार्य भी नहीं है। प्रतिरूप बनाने में अधिक लगता है। इसीलिए प्रतिरूप के अभाव में चित्रों का भी प्रयोग किया जा सकता ये मॉडल की अपेक्षा कम मूल्यवान हैं तथा सरलता से प्राप्त हो सकते हैं। इस के छात्रों के लिए चित्र की सहायता से पाठ को सरल तथा रोचक बनाने के इतिहास के अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए, जो हितकारी सिद्ध होंगी :

(1) चित्रों का चयन बड़ी सतर्कता के साथ करना चाहिए, जिस प्रका इस स्तर के छात्र क्रियाशील कहानियों को सुनने में अधिक आनन्द लेते हैं,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रकार उनको जो चित्र दिखाये जायँ, वे क्रियाशील होने चाहिए। भगवान् बुद्ध का ध्यान-मुद्रा का चित्र दिखाने से इस स्तर के विद्यार्थियों को अधिक लाभ नहीं होगा, वरन् उनको भगवान् बुद्ध का अपने बच्चे राहुल तथा पत्नी यशोधरा को छोड़ते समय का चित्र दिखाना चाहिए; वे इसको देखने में अधिक रुचि लेंगे। गाँधीजी का वह चित्र दिखाना चाहिए, जब वे दण्डी-यात्रा या मद्यपान के विरुद्ध अनशन कर रहे थे। चेतक की समाधि के समीप खड़े हुए राणा प्रताप का चित्र भी अत्यन्त मार्मिक और प्रभावशाली होगा। भूतकाल के आवागमन के साधनों को भी चित्रों द्वारा प्रदर्शित कराया जा सकता है।

(2) पाठ के शिक्षण में चित्रों का प्रयोग अधिक नहीं करना चाहिए। प्रशिक्षण-विद्यालयों के विद्यार्थी 40 मिनट के पाठ में 7 या इससे अधिक चित्र दिखा देते हैं। इससे एक तो अध्यापक स्वयं भ्रमित हो जाता है कि कब, कौन-सा चित्र दिखाया जायगा; दूसरे, छात्र उनको ठीक प्रकार से नहीं देख पाते। एक पाठ में आवश्यकतानुसार दो चित्र या अधिक से अधिक तीन चित्रों का प्रयोग करना चाहिए। चित्रों को टाँगकर अध्यापक को उन पर प्रश्न पूछने चाहिए, जिससे छात्र उनकी महत्ता को समझ सकें। छात्रों को चित्र देखने के लिए कुछ समय दिया जाय और फिर उनसे प्रश्न पूछे जायँ। छात्रों को भी चित्रों का प्रयोग करने का अवसर दिया जाना चाहिए। निःसन्देह चित्रों के विकृत होने का भय रहेगा, तथापि उनको यह अवसर मिलना ही चाहिए।

(3) इतिहास-कक्ष में सुन्दर तथा ऐतिहासिक चित्रों का संकलन होना चाहिए।

(4) चित्र कक्षा के आकार के अनुसार अनुपात में होने चाहिए।

(5) चित्र सौन्दर्यपूर्ण एवं स्वाभाविक हों जिससे कि छात्रों के अवधान को आकर्षित किया जा सके।

इस स्तर पर मानचित्र का भी प्रयोग होना चाहिए। मानचित्र का उपयोग बड़ा ही लाभप्रद होता है, परन्तु इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि केवल स्थान निर्देशन के लिए इनका उपयोग न किया जाय, वरन् मानचित्र पर घटनाओं से सम्बन्धित स्थलों द्वारा राज्य सीमा तक ज्ञान कराकर उन्हें भौगोलिक स्थिति से परिचित कराना चाहिए। इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों की राज्य-सीमाओं का भी ज्ञान इसके द्वारा दिया जाय तथा जिन मार्गों से आक्रमणकारी भारत आये, उनको भी मानचित्रों में प्रदर्शित करना चाहिए।

समय-ज्ञान का विकास

इस स्तर के छात्रों में समय-ज्ञान को विकसित करना चाहिए। इसके लिए अध्यापक को उसके सम्मुख कहानियाँ कालक्रम के अनुसार प्रस्तुत करनी चाहिए। इन कहानियों के सम्बन्ध को भी अध्यापक को स्पष्ट करना चाहिए। समय-रेखाओं तथा चित्रों द्वारा उन्हें कालानुभव तथा समय-ज्ञान भी कराना चाहिए। इस स्तर पर समय-रेखाओं को कक्षा में बालकों के सम्मुख श्यामपट पर अध्यापक को बनाना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चाहिए और उनसे घर से बनवाने के लिए कहा जाय। कालक्रम तथा रेखाचित्रों द्वारा भी समय का ज्ञान कराया जा सकता है।

इतिहास-शिक्षण में क्रियाशीलता की आवश्यकता

किसी भी स्तर पर इतिहास-शिक्षण ऐसा नहीं होना चाहिए, जिसमें अध्यापक ही कार्यरत रहें और छात्र निष्क्रिय बने रहें। वे केवल निष्क्रिय श्रोता ही बने रहें; वरन् इतिहास-शिक्षण में क्रियाशीलता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाना चाहिए। जब तक बालक पठन-पाठन में सक्रिय सहयोग न देंगे तब तक वह शिक्षा उपयोगी न होगी। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इतिहास की शिक्षा को किस प्रकार सक्रिय बनाया जाय ? उसको सक्रिय बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का प्रयोग अध्यापक को इतिहास के शिक्षण में करना चाहिए—

(1) कभी-कभी कहानियों को पहेली तथा समस्याओं के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए और उनके सम्बन्ध में बालकों से प्रश्न पूछे जाने चाहिए। उन्हें अपनी कल्पना द्वारा कहानी का रूप निर्मित करने का अवसर भी प्रदान किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त उनसे जो प्रश्न पूछे जायें, वे ऐसे होने चाहिए जिससे बालकों को सोचने तथा चिन्तन करने का अवसर प्राप्त हो। दूसरे, छात्रों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। इसके लिए बालकों को विचार-विनिमय की स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।

(2) अभिनय-कला का प्रयोग भी इस स्तर पर किया जाना चाहिए। जिस प्रकार छोटे बच्चे कहानी कहने या सुनने में रुचि लेते हैं, उसी प्रकार वे स्वयं क्रिया करने में भी आनन्द लेते हैं। इसी तथ्य के फलस्वरूप इस स्तर पर अभिनय अधिक सफल होता है। यहाँ अभिनय से तात्पर्य यह है कि छात्र किसी ऐतिहासिक व्यक्ति, जैसे—राम, अकबर, शिवाजी, राणाप्रताप इत्यादि से सम्बन्धित किसी प्रसंग का एक छोटा नाटक खेलें। इस साधन के उचित उपयोग से इतिहास का अध्ययन रोचक होकर छात्रों के सम्मुख अतीत का चित्र उपस्थित कर देता है।

इस स्तर पर अभिनय के प्रयोग के पक्ष में यह कहा जाता है कि छात्रों में एक प्रकार की झिझक एवं लज्जा पाई जाती है। उनके लिए अपने भावों को व्यक्त कर सकना भी कठिन होता है। जब उनसे बोलने के लिए कहा जाता है, तब वे बड़ी कठिनाई से कतिपय शब्द बोल पाते हैं। इस झिझक एवं लज्जा को अभिनय के प्रयोग से मिटाया जा सकता है। इसी अवस्था से अभिनय-कला का उपयोग करना चाहिए, क्योंकि आगे चलकर इसका उपयोग करने में बाधाएँ उपस्थित हो सकती हैं। इस अभिनय-कला से बालक अपनेपन को भूल जाते हैं और यह अनुभव करने लगते हैं कि वे वही पात्र हैं, जिनका वे अभिनय कर रहे हैं। इसके लिए अध्यापक का यह कर्त्तव्य है कि वह उन प्रसंगों का सतर्कता के साथ चयन करे, जिनका अभिनय सफलता के साथ किया जा सके।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) इस स्तर पर हस्तकला का भी प्रयोग किया जाना चाहिए। हस्तकला द्वारा बच्चा अपने भावों को व्यक्त कर सकता है। इसके द्वारा इतिहास का शिक्षण रोचक बनाया जाता है और वह बालकों में कल्पना-शक्ति को विकसित करने में अत्यन्त सहायक होता है। इसके द्वारा अध्यापक बालकों की रुचि का ज्ञान प्राप्त कर सकता है कि किस बालक की चित्तवृत्ति का रुझान किस दिशा में है। इस ध्येय से वह छात्रों को अपनी कापियों में प्राचीनकाल के चित्र बनाने के लिए कह सकता है।

उपर्युक्त सुझावों के द्वारा इतिहास-शिक्षण में क्रियाशीलता प्रदान की जा सकती है।

(2) माध्यमिक स्तर

माध्यमिक स्तर की अवधि 6 वर्ष है। इस स्तर पर पाठशाला-जीवन को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है, जो निम्नलिखित हैं—

(अ) प्रारम्भिक—(आयु—11 से 13 वर्ष तक) कक्षाएँ 6 तथा 7

(ब) माध्यमिक—(आयु—13 से 15 वर्ष तक) कक्षाएँ 8 तथा 9

(स) अन्तिम—(आयु—15 से 16 वर्ष तक). कक्षाएँ 10 तथा 11

(अ) प्रारम्भिक खण्ड

इस अवस्था के बालक कथा-प्रेमी होने के साथ-साथ नायक-पूजक भी होते हैं। उनको वीरगाथाएँ प्रदान की जायँ, क्योंकि ये उनकी कौतूहल-प्रवृत्ति एवं कल्पना-शक्ति को जाग्रत करती हैं तथा उनके संवेगों को सक्रिय बनाती हैं। कथाओं के माध्यम से उनके चरित्र का निर्माण एवं उनमें विभिन्न उच्चादर्शों का विकास किया जा सकता है। इस खण्ड के अध्यापन में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) इन कक्षाओं में शिक्षण-पद्धति मुख्यतः कथनात्मक होनी चाहिए। परन्तु कथन सरल तथा प्रसंगानुसार ओजस्वी एवं सरल होने चाहिए।

(2) इस खण्ड के शिक्षक के लिए जिन ऐतिहासिक व्यक्तियों, स्थलों एवं तथ्यों का चयन किया जाय, वे पूर्णतः सत्य होने चाहिए। इन कक्षाओं में काल्पनिक कहानियों के लिए स्थान नहीं होना चाहिए।

(3) इन कक्षाओं में तार्किक कथन को गौण स्थान प्रदान किया जाय।

(4) इन कक्षाओं में केवल मौखिक प्रस्तुतीकरण को ही शिक्षण का साधन न बनाया जाय, वरन् विषय-प्रतिपादन के समय वास्तविक वस्तुओं, चित्रों, मानचित्रों आदि की भी सहायता ली जाय। इस प्रकार के साधनों से इतिहास-शिक्षण तथा अध्ययन में रुचि उत्पन्न की जाय।

(5) बालकों को केवल निष्क्रिय श्रोता न बनाया जाय, वरन् पाठ के विकास में उनका वैयक्तिक सहयोग प्राप्त किया जाय। इसके लिए बालकों से उचित समय पर प्रश्न पूछे जायँ और उनको स्वयं प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(6) शिक्षक को उनकी शंकाओं का समाधान सहानुभूतिपूर्ण ढंग से करना चाहिए।

(7) समय-ज्ञान के विकास के लिए विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण कालक्रमानुसार होना चाहिए।

(8) इस खण्ड में सूत्रों का प्रयोग वातावरण के निर्माण हेतु किया जा सकता है।

1. पाठ्य-पुस्तक—इन कक्षाओं में पाठ्य-पुस्तकों का प्रयोग होना चाहिए। परन्तु पाठ्य-पुस्तक साधन के रूप में ही प्रयुक्त होगी। इस स्तर पर इसका प्रयोग प्राइमरी कक्षाओं की अपेक्षा अधिक होगा क्योंकि प्राइमरी कक्षाओं में इसके प्रयोग के लिए केवल छात्रों को तैयार करना ही था। हमारे विद्यालयों में यह प्रथा चल रही है कि शिक्षक पाठ्य-पुस्तकों के पढ़ने पर अत्यधिक बल देते हैं, परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए। शिक्षक को अपने छात्रों को पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य उपयोगी पुस्तकों के वाचन पर भी बल देना चाहिए। वह उन्हें ऐतिहासिक उपन्यास, नाटक, जीवनियाँ आदि पढ़ने को भी प्रोत्साहित करें। इस स्तर पर भी पाठ्य-पुस्तकें या तो मातृभाषा में लिखी हों या प्रादेशिक भाषा में हों। पाठ्य-पुस्तकें छात्रों की रुचि के अनुसार हों। इस स्तर की पाठ्य-पुस्तक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

(अ) पाठ्य-पुस्तक कहानी या जीवन-गाथा के रूप में नहीं लिखी जानी चाहिए।

(ब) इसमें अधिकाधिक तिथियों का प्रयोग न हो, केवल मुख्य तिथियों का समावेश किया जाना चाहिये।

(स) इसमें चित्रों का भी प्रयोग किया जाय, परन्तु प्राइमरी स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के समान अधिक चित्रों का प्रयोग नहीं किया जाय।

(द) मानव-विकास के सभी अंगों पर प्रकाश डाला जाय और जटिल तथा विस्तृत वर्णनों को स्थान दिया जाय।

(य) पाठ्य-पुस्तक निष्पक्ष तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखी होनी चाहिए एवं उसमें तथ्यों का प्रस्तुतीकरण कालक्रमानुसार हो।

2. श्यामपट का प्रयोग—इस स्तर पर भी श्यामपट का उपयोग सारांश लेखन के लिए करना चाहिए। ये सारांश छात्रों द्वारा पुस्तिका के एक ओर लिखे जाने चाहिए और दूसरी ओर उनके द्वारा उनको घर पर विकसित कराया जाय। इसके अतिरिक्त श्यामपट का प्रयोग युद्ध योजनाएँ, घेरे को समझाने, मार्गों तथा सेनाओं की स्थिति समझाने के लिए होना चाहिए।

3. मानचित्रों तथा चित्रों का उपयोग—मानचित्रों का उपयोग इस स्तर पर स्थानों को दिखाने के लिए किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त राज्य-सीमाओं, क्षेत्रफल, आवागमन के मार्गों, दूरी आदि के लिए भी उनका उपयोग होना चाहिए। दुर्भाग्यवश हमारे शिक्षालयों में मानचित्र का उपयोग केवल स्थानों को प्रदर्शित करने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के लिए ही किया जाता है। इस स्तर पर छात्रों को ऐसे चित्र दिखाने चाहिए जो सामाजिक जीवन को व्यक्त करते हों। ऐसे चित्रों का भी प्रदर्शन होना चाहिए जिनमें महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन हो।

4. अभिनय तथा हस्तकला—इन कक्षाओं में अभिनय का उपयोग होना चाहिए परन्तु इसका उपयोग नाटकों के रूप में किया जाय। इस स्तर पर वेश-भूषा तथा अन्य सामग्री पर अधिक ध्यान देना चाहिए जो कि एक नाटक के लिए आवश्यक हों। पात्रों के कथनों को पूर्णतया तैयार कराया जाय। परन्तु इसका उपयोग कभी-कभी होना चाहिए। इन कक्षाओं में हस्तकला का भी उपयोग होना चाहिए परन्तु इसका समन्वय विद्यालय के हस्तकार्य से किया जाय। इस स्तर पर मानचित्रों के बनाने पर अधिक ध्यान दिया जाय।

5. लिखित कार्य एवं गृहकार्य—इन कक्षाओं में लिखित कार्य प्राइमरी स्तर की अपेक्षा अधिक महत्त्व रखता है। इतिहास के अध्यापक को लिखित कार्य निम्नलिखित सुझावों के अनुसार देना चाहिए—

(अ) पाठ का सारांश श्यामपट पर अध्यापक द्वारा दिया जाना चाहिए और उसको छात्रों द्वारा घर से विकसित कराया जाय। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह देखे कि छात्रों ने श्यामपट-सारांश को अपने ही शब्दों में व्यक्त किया है या दूसरे के शब्दों में।

(ब) अध्यापक छात्रों से पाठ्य-पुस्तक पढ़वाने के पश्चात् संक्षिप्त नोट तथा सारांश लिखने के लिए कहे और स्वयं उनको देखे।

(स) अध्यापक अपने छात्रों को निबन्ध लिखने के लिए आदेश दे। वह इन निबन्धों को गृहकार्य के रूप में दे सकता है। उनसे नियमपूर्वक विशेष उपकरणों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखवाये। ये निबन्ध सरल होने चाहिए।

(द) कभी-कभी छात्रों में कल्पना-विकास के लिए उन्हें ऐतिहासिक प्रसंगों पर काव्य-रचना करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।

गृह-कार्य देते समय अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(i) गृह-कार्य सरल तथा संक्षिप्त होना चाहिए।

(ii) जो निबन्ध छात्रों को गृह-कार्य के लिए दिए जायँ, वे विस्तृत क्षेत्र से सम्बन्धित हों, जिससे छात्र को अपनी पाठ्य-पुस्तक का पर्याप्त भाग पढ़ना पड़े और कभी-कभी उनको अन्य पुस्तकों के उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहन दिया जाय। यह तो तभी हो सकता है, जब उनको इसी प्रकार का गृहकार्य निरन्तर दिया जाय।

(iii) गृह-कार्य ऐसा हो जिससे स्वाध्ययन की नींव पड़े।

(iv) गृह-कार्य कक्षा के कार्य से भिन्न होना चाहिए। अध्यापक को गृह-कार्य देते समय नवीनता का ध्यान रखना चाहिए। कभी-कभी वह मानचित्र बनाने के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लिए कह सकता है। यह बहुत ही लाभदायक होगा, यदि गृह-कार्य को हस्त-कार्य रूप में दिया जाय।

(v) गृह-कार्य कभी-कभी ऐसा दिया जाय, जिससे बालकों में तुलनात्मक अध्ययन की प्रवृत्ति विकसित हो।

6. पर्यटन—सम्भव हो तो छात्रों को ऐतिहासिक स्थलों को दिखाने के लिए अवश्य ले जाया जाये। परन्तु इसके निरीक्षण में उनका उचित मार्गदर्शन होना आवश्यक है।

(ब) माध्यमिक खण्ड

इस खण्ड में कक्षा 8 तथा कक्षा 9 के बालक आते हैं। इन कक्षाओं के छात्रों में प्रारम्भिक खण्ड के छात्रों की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पर्याप्त अन्तर होता है। ये छात्र बाल्यावस्था को पार करके किशोरावस्था में पदार्पण करते हैं तथा वास्तविकता में अधिक विश्वास करते हैं। इन कक्षाओं में छात्रों की रुचि वर्तमान में अधिक होती है। इस खण्ड के बालकों की स्मृति, कल्पना आदि शक्तियों का विकास हो चुकता है। मूर्त्त विचारों के अतिरिक्त सामान्यीकरण को समझने के योग्य हो जाते हैं। इस खण्ड में इतिहास-शिक्षण करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) इन कक्षाओं में विषय-प्रतिपादन मूर्त्त एवं संश्लेषणात्मक होना चाहिए। परन्तु इतिहास-शिक्षक को इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि "इतिहास मानव-समाज के उद्विकास की अविरल गाथा है।" इसलिए उसे इतिहास को विकासात्मक विषय बनाना आवश्यक है।

(2) प्रमुख ऐतिहासिक पात्रों एवं घटनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। इस खण्ड पर व्यक्ति की अपेक्षा ऐतिहासिक घटनाओं को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए।

(3) इतिहास के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि—सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए। परन्तु शिक्षण-कार्य की मूल रूपरेखा राजनीतिक घटनाओं पर आधारित होनी चाहिए।

(4) पाठ्य-पुस्तकों तथा अतिरिक्त वाचन पर भी बल दिया जाय।

(5) सन्दर्भ-पुस्तकों (Reference Books) का पठन आवश्यक समझा जाना चाहिए।

(6) मौखिक अध्यापन में प्रश्नों, अभिनयों एवं सहायक साधनों का प्रयोग किया जाय।

(7) इस खण्ड में बालकों को वाद-विवाद करने के लिए अवसर प्रदान किये जायें। इससे उनकी चिन्तन एवं तर्क-शक्तियों का विकास होगा।

(8) स्रोत पद्धति, प्रयोगशाला एवं योजना-पद्धतियों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(9) इस खण्ड में लिखित-कार्य तथा श्यामपट सारांश का महत्त्व नहीं भुलाया जाना चाहिए अर्थात् इनको प्रयोग में लाया जाय।

(10) इन कक्षाओं के बालकों को भी ऐतिहासिक स्थलों को दिखाया जाय। इसके अतिरिक्त उनसे विभिन्न रचनात्मक कार्य, समय-रेखाओं, सिक्कों के प्रतिरूप मानचित्र आदि का निर्माण कराया जाय।

(स) अन्तिम खण्ड

इस खण्ड के बालकों में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पर्याप्त परिवर्तन आ जाता है। अतः इस स्तर पर इतिहास की शिक्षण-विधि में परिवर्तन करना आवश्यक है। इस खण्ड पर इतिहास का प्रतिपादन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(1) इस स्तर पर विषय-प्रतिपादन मुख्यतः प्रसंगात्मक होना चाहिए। परन्तु प्रसंग को कालक्रमानुसार प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(2) इस स्तर पर व्याख्यान पद्धति के साथ-साथ स्रोत-पद्धति, समस्या-पद्धति, योजना-पद्धति, प्रयोगशाला-पद्धति, वाद-विवाद, प्रश्नोत्तर आदि का प्रयोग किया जाय।

(3) इन कक्षाओं में प्रस्तुतीकरण का आधार तर्कात्मक होगा।

(4) इस स्तर पर बालकों को तर्क, आलोचना तथा अन्य मानसिक क्षमताओं के विकास हेतु अवसर प्रदान किये जायँ।

(5) लिखित कार्य में निबन्धात्मक शैली को अपनाया जाय।

(6) बालकों की सत्यान्वेषण करने की जिज्ञासा एवं क्षमता को परिपक्व बनाने का प्रयत्न किया जाय।

(7) मानचित्र, समय-रेखा, समय-तालिका आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(8) ऐतिहासिक स्थलों का निरीक्षण कराया जाय।

(9) अभिनय का भी प्रयोग होना चाहिए।

(10) समय-ज्ञान के विकास के लिए अमूर्त एवं मूर्त—दोनों प्रकार के साधनों का प्रयोग होना चाहिए।

पाठ्य-पुस्तक एवं अतिरिक्त वाचन

इस खण्ड पर बहुपाठ्य-पुस्तकों के पठन पर बल देना चाहिए, जिससे छात्र विभिन्न इतिहास-लेखकों के मतों से अवगत हो सकें। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त दूसरी उपयोगी सामग्री के पठन पर भी बल दिया जाये। प्रासंगिक वाचन (Collateral Reading) के लिए शिक्षक को आवश्यक पुस्तकों एवं ग्रन्थों की सूची पहले से ही तैयार रखनी चाहिए और छात्रों को इस सूची को लिखवा दें, जिससे वे आवश्यकता पड़ने पर उनका उपयोग कर सकें।

7

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्यामपट का प्रयोग

श्यामपट का उपयोग इस स्तर पर सारांश-लेखन तथा विभिन्न ढाँचे प्रदर्शित करने के लिए होगा। सारांश में विशेष बातों को लिखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त श्यामपट पर विशेष बातों को प्रस्तुतीकरण के स्तर पर साथ-साथ लिखते चलना चाहिए। जो बातें श्यामपट पर लिखी जायेंगी वे रूपरेखाओं के रूप में होंगी। उन्हें विस्तृत रूप में नहीं दिया जायगा। इन बातों को कालक्रम के अनुसार श्यामपट पर लिखना चाहिए। इसके अतिरिक्त विभिन्न जटिल बिन्दुओं तथा बातों को समझाने के लिए भी इसका उपयोग किया जाना चाहिए। वास्तव में श्यामपट अध्यापक का अभिन्न मित्र है। वह इसके बिना इतिहास-शिक्षण नहीं कर सकता।

कक्षा वाद-विवाद का उपयोग

इस स्तर पर वाद-विवाद का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस प्रणाली से छात्रों में विचारों को प्रकट करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित किया जा सकता है तथा इससे वे निर्णय करने में समर्थ होंगे। इतिहास-अध्यापक इस प्रणाली से लाभ उठाना चाहता है तो उसे निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. कक्षा-वाद-विवादों में लोचपन होना चाहिए।
2. छात्रों को अपने विचार तथा मत प्रकट करने की स्वतन्त्रता प्रदान की जानी चाहिए।
3. अध्यापक को सदैव निरर्थकता को रोकने के लिए तत्पर रहना चाहिए।
4. वाद-विवाद विषय की पूर्ण तैयारी के पश्चात् होने चाहिए।
5. वाद-विवादों का मुख्य अभिप्राय—ज्ञान प्रदान करना होना चाहिए।

सूत्र-पद्धति का उपयोग

इस अवस्था के विद्यार्थी कार्य-कारण सम्बन्ध को समझने में समर्थ होते हैं, इसलिए इस स्तर पर सूत्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। छात्रों को मौलिक सूत्रों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उनके सार निकलवाने चाहिए। इसके पश्चात् छात्रों को तत्कालीन डायरी, रिपोर्ट तथा उपन्यासों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इनका उपयोग इस प्रकार किया जा सकता है—अध्यापक एक कथन उनको दे और उस पर प्रश्न पूछे, जिससे उसके विषय में वे अपने विचार प्रकट कर सकें। इसके पश्चात् उनको भारतीय सूत्रों की पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाय और तत्पश्चात् उन पर वाद-विवाद कर निर्णय बनाये जायँ।

लिखित कार्य

इस स्तर पर लिखित कार्य पर्याप्त मात्रा में करवाना चाहिए। छात्रों को कभी-कभी प्रश्न देने चाहिए और उनके उत्तर लिखवाकर घर से मँगवाये जायँ और अध्यापक उनको ठीक प्रकार से जाँचे तथा उन्हें सुधार के लिए सुझाव दे। इ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतिरिक्त विभिन्न प्रकरणों के सारांश लिखवाये। इनमें मानचित्रों तथा ढाँचों का भी समावेश करवाये।

ऐतिहासिक समुदाय

इस स्तर के विद्यार्थियों को समूहों में विभक्त कर दिया जाय और उनसे विभिन्न वस्तुओं को एकत्रित करवाया जाय। कोई समूह सिक्कों को एकत्रित करे, कोई मोहरें आदि एकत्रित करे। इस प्रकार उनमें इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न होगी और अतीतकाल को वास्तविक बनाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह समुदाय विभिन्न भाषणों का आयोजन करे, जिससे उनके मानसिक स्तर को विकसित किया जा सके। इस समुदाय को भ्रमण का भी आयोजन करना चाहिए, जिससे वे अपने स्थानीय इतिहास का अध्ययन कर सकें।

प्रतिपादन की विषय-सामग्री

इस स्तर पर विश्व-इतिहास की रूपरेखा दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त भारतीय इतिहास तथा उसके काल-विशेष का ज्ञान दिया जाय तथा भारतीय शासन पद्धति की रूपरेखा का ज्ञान इस अवस्था के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ ही वर्तमान काल की घटनाओं का ज्ञान भी दिया जाना चाहिए।

छात्रों द्वारा वैयक्तिक तथा सामूहिक कार्य

वैयक्तिक कार्य—छात्रों द्वारा स्रोतों का अध्ययन, लिखित कार्य, प्रासंगिक वाचन, मानचित्र, काल-रेखाएँ, चित्र, प्रतिरूप आदि का निर्माण कराया जा सकता है।

सामूहिक कार्य—इन कार्यों के अन्तर्गत भाषण-सम्भाषण, व्याख्यान, वाद-विवाद, ऐतिहासिक पर्यटन, अभिनय आदि करवाये जा सकते हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. How will you make use of black-board at different stages of education in History ? Disuss fully.

   आप इतिहास में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर श्यामपट का किस प्रकार उपयोग करेंगे ? स्पष्ट कीजिए।

2. What is the value of class-discussion and Source-Method at the senior stage ? How will you make use of them ?

   उच्च स्तर पर सूत्र-पद्धति तथा कक्षा-वाद-विवादों का क्या महत्त्व है ? आप इनका किस प्रकार प्रयोग करेंगे ?

3. What principles would you bear in mind while presenting History at the Higher Sscondary Stage ?

   उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इतिहास का प्रतिपादन करते समय आप किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखेंगे ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निर्देश—निम्नलिखित कथनों में जो सत्य हैं उनके समक्ष 'हाँ' तथा अ[सत्य] के समक्ष 'नहीं' लिखिये—

(i) कक्षा वाद-विवाद में छात्रों को विचार तथा मत प्रकट करने [की] स्वतन्त्रता दी जाती है।........

(ii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विषय-प्रतिपादन तर्कात्मक हो।......

(iii) जूनियर स्तर पर सूत्रों का प्रयोग ऐतिहासिक वातावरण के निर्मा[ण] के लिए हो।........

(iv) प्राइमरी स्तर पर अभिनय-कला का प्रयोग लाभदायक है।........

(v) प्राइमरी स्तर पर समय-ज्ञान का विकास करना निरर्थक है।......

(vi) माध्यमिक स्तर पर तथ्यों को पृथक् रूप से प्रस्तुत किया जाय।

(vii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इतिहास को सजीव बनाने के लिए ऐति-हासिक स्थानों का निरीक्षण करना सार्थक सिद्ध होगा।........

(viii) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अतिरिक्त वाचन के लिए संदर्भ पुस्त[कों] को प्रस्तावित किया जाय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

10

इतिहास-शिक्षण की विधियाँ

METHODS OF TEACHING HISTORY

"Correct history teaching means not only providing the pupil a background of historical knowledge, but also an insight into the meaning and significance of history and the ability to continue his studies for himself." —*T. S. Mehta*

विषय-प्रवेश

शिक्षा में शिक्षण-शास्त्र (Methodology) की उत्पत्ति रूसो के विचारों से मानी जाती है। रूसो स्वयं इस क्षेत्र में लॉक (Locke) तथा अन्य शिक्षाविदों के विचारों से प्रभावित हुआ था। 18वीं शताब्दी में रूसो ने शिक्षण में सुधार लाने के लिए विभिन्न विचार प्रदान किये। उसका विचार था—"प्रकृति के सृष्टा के यहाँ से प्रत्येक वस्तु अच्छी आती है, परन्तु मनुष्य के हाथों में आकर वह विकृत हो जाती है।" उसने यह भी प्रतिपादित किया कि 'प्रकृति', 'मनुष्य' तथा 'वस्तुएँ' महान शिक्षक हैं। हमारा प्रकृति पर नियन्त्रण नहीं है। अतः हमें अन्य दो को शैक्षिक प्रक्रियाओं में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करना चाहिए। ऐसा करके हम शिक्षा को प्रकृति के अनुकूल बना सकते हैं।

रूसो के बाद पेस्टॉलॉजी (Pestalozzi) ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उसने 1800 से 1825 तक अपने सिद्धान्तों एवं विचारों को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। उसने बालक के स्वाभाविक विकास पर आधारित करके शैक्षिक प्रक्रिया को संगठित कार्यक्रम (Organised Routine) में परिवर्तित करने का प्रयास किया। उसके कार्यों ने आधुनिक शिक्षण-विधियों का सूत्रपात किया। उसके अनुयायियों ने उसके विचारों एवं कार्यों का प्रसार योरोप तथा अमेरिका तक किया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आधुनिक दर्शन नवीन मनोविज्ञान तथा नवीन वैज्ञानिक प्रक्रियाओं पर आधारित है। यह सिद्धान्त रूप में बालक को महत्त्व प्रदान करता है। साथ ही सीखने की प्रक्रिया को एक गतिशील या सक्रिय प्रक्रिया मानता है। यह बालक की वैयक्तिक तथा सामूहिक दोनों प्रकार की रुचियों को महत्त्व प्रदान करता है और शिक्षा को अनुभवों की पुनर्रचना तथा पुनर्संङ्गठन की सतत् प्रक्रिया के रूप में देखता है। शिक्षण को सीखने के निर्देशन (Guidance of Learning) के रूप में देखता है।

शिक्षण-विधि का अर्थ : Meaning of Teaching Method—परम्परागत रूप से जब हम शिक्षण-विधियों के विषय में बातचीत करते हैं तो हमारा अभिप्राय यह होता है कि शिक्षक क्या करता है। परन्तु आधुनिक युग में शिक्षण-विधियों के साथ जो पद (Term) प्रयुक्त किये जाते हैं, वे छात्रों की सीखने की क्रियाओं (Learning Activites) का वर्णन करते हैं। उदाहरणार्थ—वाद-विवाद विधि (Discussion Method), प्रयोगशाला विधि (Laboratory Method), आगमन विधि (Inductive Method), निगमन विधि (Deductive Method), योजना विधि (Project Method) आदि। सार यह है कि प्रत्येक पद इस बात की व्याख्या कर रहा है कि शिक्षक क्या करता है। परन्तु यथार्थ में शिक्षक केवल इन क्रियाओं को निर्देशित करता है। जब यह कहा जाता है कि शिक्षक आगमन-विधि का प्रयोग कर रहा है। तब इसका अभिप्राय यह है कि वह आगमन-विधि से शिक्षण कर रहा है, परन्तु ऐसा नहीं है। वह केवल छात्रों द्वारा संचालित आगमन प्रक्रिया का निर्देशन कर रहा है। आगमन केवल छात्रों की क्रिया है, न कि शिक्षक की। इस दृष्टि से थट व गेरबेरिच ने शिक्षण-विधि को इस प्रकार परिभाषित किया है—"विधि प्रक्रियाओं की वह सुपरिभाषित संरचना है जिसमें परिस्थितियों की माँगों के अनुसार विभिन्न प्रविधियाँ तथा युक्तियाँ निहित होती हैं।"[1] इस दृष्टि से इन लेखकों ने प्रयोगशाला विधि, विनेटका योजना, योजना विधि आदि को शिक्षण-विधियों के अन्तर्गत रखा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि शिक्षण-विधि कार्य की वह सामान्य योजना है जिसका निर्धारण किसी विशेष शैक्षिक परिणाम या उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जाता है। अतः शिक्षण-विधि शैक्षिक उद्देश्यों से सम्बन्धित है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षण-विधि वह मार्ग है जिसके द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कार्य किया जाता है।

शिक्षा में विधि के साथ कुछ ऐसे पद भी प्रयुक्त किये जाते हैं। उदाहरणार्थ—व्याख्यान विधि (Lecture Method), प्रदर्शन विधि (Demonstration Method

---

1. "A method is a well-defined pattern of procedures within which a variety of techniques and devices may appear as circumstances may require."—Thut & Gerberich, *Foundations of Method for Secondary Schools*, p. 6-7.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा प्रश्न-विधि (Question Method)। ये पद इस बात की ओर संकेत देते हैं कि "शिक्षक क्या करता है। बताना या कहना (Telling), प्रश्न करना (Questioning), दिखाना (Showing), स्पष्ट करना (Explaining) तथा प्रदर्शन करना (Demonstrating), वस्तुतः युक्तियाँ (Devices) हैं।" इनके द्वारा शिक्षक छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर करता है। अतः इनको शिक्षण-विधियों के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। ये शिक्षण-विधि न होकर प्रविधियाँ (Techniques) हैं।

शिक्षण-विधि तथा प्रविधि में अन्तर : Difference between Method and Techniques—शिक्षण-विधि के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए हम विधि तथा प्रतिधि के अन्तर को निम्न प्रकार से स्पष्ट कर रहे हैं—

विधि (Method)	प्रविधि (Technique)
1. विधि की एक सामान्य संरचना (pattern) होती है।	1 प्रविधि की सामान्य संरचना विधि की संरचना पर निर्भर है।
2. विधि का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व होता है।	2. प्रविधि का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है वरन् यह विधि पर निर्भर होती है।

इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाली शिक्षण-विधियाँ
Method Useds in History Teaching

इतिहास-शिक्षण की कोई एक विशेष विधि नहीं है। इसका शिक्षण विभिन्न ढंगों एवं साधनों के प्रयोग से किया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि इतिहास एक ऐसा व्यापक विषय है, जिसमें विभिन्न विवादग्रस्त प्रकरणों की व्याख्या की जाती है। इस कारण इनको समझाने एवं सुलझाने के लिए विभिन्न विधियों एवं प्रविधियों तथा ढंगों का प्रयोग करना पड़ता है।[1] इस दृष्टि से इसमें निम्नलिखित विधियों को प्रयुक्त किया जा सकता है—

1. कथात्मक विधि
Story-telling Method

कथात्मक विधि में कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि का

1. Throughout this book, I have made suggestions on many different ways and means (of teaching history), but I have deliberately refrained from giving anyone priority of place, for there can be, I think no one method of teaching any subject, certainly not such subject as history, so wide and deep are its ramifications." —Miss Drumond. Quoted by K. D. Ghosh : *Creative Teaching of History*, p. 57.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समावेश होता है, क्योंकि इन सब में वाणी का उपयोग करना पड़ता है। छो कक्षाओं में कहानी कहना ही इतिहास सिखाने की सर्वोत्तम विधि है। प्लेटो (Pla ने भी इस विधि को छोटे बालकों के लिए लाभप्रद एवं उपयुक्त बताया था। बाल स्वभावतः कहानी-प्रिय होते हैं। कल्पना की उड़ान में उनकी बहुत-सी नैस प्रवृत्तियों का विकास होता है। मानव बाल्यावस्था तथा वृद्धावस्था—दोनों ही कहानी सुनने तथा कहने में रुचि प्रदर्शित करता है। कुछ मनुष्यों में कहानी कहने कला जन्मजात होती है और कुछ व्यक्ति प्रयत्न करके सीख लेते हैं। इतिहास शिक्षक को इस कला का जानना आवश्यक है। यदि उसमें यह कला स्वाभाविक से नहीं है तो उसे प्रयत्न करके अर्जित करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेगा वह सफल शिक्षक नहीं हो सकता तथा अपने छात्रों के साथ पूर्ण न्याय नहीं करेगा इस विधि की सफलता शिक्षक के अधोलिखित गुणों पर निर्भर है—

(1) शिक्षक जिस कहानी को अपने छात्रों को सुनाना चाहता है, उस पाठ्य-वस्तु पर उसका पूर्ण अधिकार हो।

(2) कथावाचक निजत्व की भावना से ग्रसित नहीं होना चाहिए। उस छात्रों में घुल-मिल जाना चाहिए, तभी वह कहानी कहने में सफलता प्राप्त सकता है।

(3) शिक्षक को कहानी की पाठ्य-वस्तु में रुचि लेनी चाहिए। यदि वह ऐ नहीं करेगा तो वह अपने छात्रों की रुचि को विषय के प्रति उत्पन्न करने में असफ रहेगा।

(4) कहानी कहने का ढंग रुचिकर, स्वाभाविक तथा भावपूर्ण होना चाहि अर्थात् उसमें कृत्रिमता नहीं आनी चाहिए।

(5) शिक्षक को अभिनय-कला का भी ज्ञान होना आवश्यक है जिससे भावानुसार अपने हाव-भाव प्रदर्शित करने में सफल हो सके। इसके साथ ही उस स्वर को भावों के अनुसार उतार-चढ़ाव करने की सामर्थ्य भी होनी चाहिए। य उसमें यह शक्ति नहीं होगी तो वह कहानी को सफलतापूर्वक प्रस्तुत नहीं कर सके और न सीखने हेतु उपयुक्त वातावरण ही निर्मित कर सकेगा।

(6) कहानी बालकों के मानसिक स्तर, रुचि एवं अवस्था के अनुकूल हो चाहिए। यदि छोटी कक्षा के छात्र हैं तो उनके लिए ऐसी कहानियों का चयन कि जाय, जिनके द्वारा उनकी कल्पना एवं कौतूहल प्रवृत्ति को सन्तुष्ट किया जा सके यदि छात्र 12 वर्ष की अवस्था के हैं तो उनको क्रियाशील पात्रों की कहानियाँ सुना चाहिए क्योंकि इस अवस्था का बालक उपयोगिता एवं सक्रियता में रुचि रखता है

(7) शिक्षक को ऐतिहासिक कहानियाँ कालक्रम के अनुसार सुनानी चाहि तथा छात्रों को जो भी कहानियाँ सुनाई जायें, वे जीवन-गाथाओं के रूप में हों।

(8) शिक्षक को कहानी सुनाने में छात्रों की सहायता लेनी चाहिए। उन्हें सतर्क तथा सक्रिय बनाये रखने तथा अपनी विषय-वस्तु को बोधगम्य बनाने के लि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रश्नों तथा सहायक सामग्री का भी उपयोग करते रहना चाहिए। श्यामपट पर कहानी की प्रमुख बातों, स्थलों तथा तिथियों को भी लिखते रहना चाहिए, जिससे छात्र बाद में उनका उपयोग कर सकें।

(9) कहानी की भाषा छात्रों के स्तर के अनुसार होनी चाहिए, जिससे वे उसको समझने में समर्थ हो सकें तथा उनका ध्यान लगा रह सके।

(10) शिक्षक को ऐतिहासिक महापुरुषों के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए ?

कथात्मक विधि के गुण : Merits of Story-Telling Method

(1) इसके द्वारा बालकों में इतिहास के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

(2) इससे बालकों की कल्पना-शक्ति का विकास होता है। इसके लिए अध्यापक बालकों को पहले रूपरेखा दे सकता है और इस रूपरेखा को बालकों से पूर्ण करवा सकता है। बालक इसको पूर्ण करने में अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करेंगे।

(3) इस विधि से बालक अपने गुप्त भावों को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त करते हैं। बालकों को विभिन्न पात्रों के कथन दोहराने के लिए कहा जा सकता है, जिससे उनकी झिझक तथा लज्जाशील प्रवृत्ति समाप्त हो सकती है।

(4) कहानी के द्वारा उनकी जिज्ञासा को तृप्त करके उन्हें अनुशाशित किया जा सकता है।

(5) जारविस (Jarvis) का विचार है कि इससे बालकों में नैतिक गुणों का विकास होता है क्योंकि वे नैतिक पुरुषों की कहानियाँ पढ़ते एवं सुनते हैं, अतः उनके कार्यों का स्वतः ही बालकों पर प्रभाव पड़ता है। इस अवस्था में उनके अनुकरण करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। अतः वे अपना चरित्र उनमें अनुसार बनाने का प्रयत्न करते हैं।

2. खण्ड-विधि
Patch Method

इतिहास-शिक्षण में खण्ड-विधि का प्रतिपादन मिस एम० रीवस (Miss M. Reeves) ने किया है। इस विधि में शिक्षक इतिहास से एक ऐसी सामान्य विषय-वस्तु का चयन करता है, जिसको सुविधा एवं सरलता से विभिन्न प्रकरणों में विभाजित किया जा सकता है। ये विभाजित प्रकरण ऐसे होते हैं जिनको वैयक्तिक रूप से छात्र पढ़ एवं लिख सकते हैं। साथ ही उनके बारे में वे खोज कर सकते हैं। इन प्रकरणों को छोटे समूहों के द्वारा भी पढ़ा एवं लिखा जा सकता है। उदाहरणार्थ, अकबर नामक खण्ड को चुना जा सकता है। इस खण्ड में सम्राट, दरबारी, लेखक, कलाकार, विद्वान, सेनापति, कूटनीति तथा व्यापारी आदि प्रकरण निहित हैं। प्रत्येक प्रकरण से सम्बन्धित संदर्भ पुस्तकें तथा अन्य पुस्तकें अध्ययन के लिए होंगी।

खण्ड-विधि के सोपान : Steps of Patch Method—इस विधि के तीन प्रमुख सोपान हैं। सोपानों का विवेचन अग्रलिखित है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(अ) स्पष्टीकरण : Explanation—स्पष्टीकरण का कार्य इतिहास-शिक्षक का है। शिक्षक को चयन किये हुए खण्ड के विषय में पूर्ण रूप से बताना चाहिए उसे छात्रों को खण्ड के क्षेत्र के विषय में लिखित रूप में सामग्री प्रदान करनी चाहिए साथ ही वह छात्रों को खण्ड से सम्बन्धित आवश्यक पुस्तकों की सूची प्रदान करे।

(ब) अनुसन्धान : Investigation—इस स्तर पर छात्र खण्ड के सम्बन्ध में खोज करेंगे। अतः यह स्तर छात्रों का है। परन्तु शिक्षक को सदैव वहाँ उपलब्ध रहना चाहिए जिससे छात्र अध्ययन एवं खोज करते समय जिन समस्याओं का सामना करें, उनके सम्बन्ध में वे उससे मार्ग दर्शन एवं सहायता प्राप्त कर सकें। छात्रों की इस स्तर की क्रियाएँ उनको इस बात का ज्ञान कराती हैं कि इतिहासकार किस प्रकार इतिहास की रचना करता है।

(स) एकीकरण : Integration—खण्ड विधि का तीसरा सोपान एकीकरण है। इस स्तर पर छात्र पृथक्-पृथक् खोजों को एकीकृत करते हैं। उनके द्वारा यह कार्य विभिन्न प्रकार से किया जाता है। उदाहरणार्थ, अध्ययन किये गये विभिन्न अंशों को पुस्तक का रूप प्रदान करना, किसी प्रदर्शनी में चित्रों तथा निबन्धों के रूप में उस सामग्री को प्रदर्शित करना, प्रत्येक समूह का नेता नियुक्त करना जिससे वह खोज एवं अनुसन्धान के परिणामों को स्पष्ट कर सके। साथ ही अनुसन्धान या खोज की प्रगति को बता सके।

खण्ड-विधि के लाभ : Advantages of Patch Method—इस विधि के प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं—

1. यह विधि छात्रों को स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
2. इसके द्वारा छात्रों को विभिन्न प्रकार की पुस्तकों का प्रयोग करना सिखाया जाता है।
3. यह विधि छात्रों में विभिन्न कौशलों का विकास करती है।
4. इसके द्वारा छात्रों को विस्तारपूर्वक अध्ययन करने के लिए अवसर प्रदान किये जाते हैं।
5. यह विधि छात्रों को जटिल ऐतिहासिक परिस्थिति में विभिन्न कारकों (Factors) की अन्त:क्रिया को समझने में सहायता प्रदान करती है।

3. स्रोत या आधार विधि
Source Method

इतिहास पढ़ाने की विधियों में स्रोत विधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसका महत्त्व जानने से पूर्व यह प्रश्न उठता है कि 'स्रोत' शब्द का क्या अर्थ है और इस विधि का प्रयोग किस स्तर पर किया जाना चाहिए? इन प्रश्नों के उत्तर अग्र-लिखित हैं—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. स्रोत का अर्थ : Meaning of Source—भूतकाल के इतिहास का पता लगाना एक जटिल प्रश्न है। वर्तमान समय में निवास करने वाला मनुष्य व्यक्तिगत रूप से इस बात का ज्ञान किस प्रकार प्राप्त कर सकता है कि शताब्दियों पूर्व किसी देश में क्या हुआ। इतिहास एक वैज्ञानिक विषय है, अतः इतिहासकार निरर्थक तथा काल्पनिक कहानियों के आधार पर अपनी ऐतिहासिक बातों का निर्माण नहीं कर सकता। वह चाहे किसी काल का इतिहास लिखे, उसके लिए नितान्त आवश्यक है कि वह उस समय की वास्तविकता का वर्णन करे। अतः इतिहास का आधार 'तथ्य' (Facts) हैं। इतिहास के तथ्य स्पष्ट प्रमाणों तथा वास्तविक आधारों पर आश्रित होते हैं। अतः इतिहासकार वास्तविक तथ्यों के आधार पर ही ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करते हैं। कोई भी लेखक किसी भी प्रकार से स्वयं भूतकाल में नहीं जा सकता। अतः उस समय जो व्यक्ति उपस्थित थे, उन्होंने जो घटनाएँ देखीं और उन्हें लिखकर रखा, अथवा उनके पत्र-व्यवहार पर इतिहासकार को निर्भर रहता पड़ता है। इन प्रमाणों और आधारों को—चाहे वे लिखित हैं अथवा अलिखित, तथ्य कहते हैं। ये तथ्य ही हमारे इतिहास के स्रोत हैं। इन तथ्यों के द्वारा हमें एक एसा स्रोत मिलता है, जिससे हम इतिहास का शरीर निर्मित कर लेते हैं।

एस० वी० सी० ऐंया ने स्रोत के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा—"स्रोत भूतकालीन घटनाओं द्वारा छोड़े गये शेषचिन्ह हैं। यद्यपि इतिहास की घटनाएँ वास्तविक रूप में घटित होती हैं फिर भी वे अधिक समय तक वास्तविक नहीं रह पातीं। उनके द्वारा छोड़े गये शेषचिन्ह ही उन्हें वास्तविकता प्रदान करते हैं। इतिहासकार इन्हीं शेषचिन्हों के आधार पर कार्य करता है। वह इन शेषचिन्हों की सफलता से अतीत की घटनाओं का तार्किक एवं क्रमबद्ध वर्णन प्रस्तुत करने में समर्थ होता है।"[1]

2. स्रोतों का किस स्तर पर प्रयोग किया जाय—स्रोतों के प्रयोग के विषय में भिन्न-भिन्न मत हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि इन स्रोतों का प्रयोग उच्च कक्षाओं में होना चाहिए, क्योंकि जूनियर हाई स्कूल स्तर के छात्रों की बुद्धि इतनी विकसित

---

1. "The sources are the 'traces' left behind by past events. The events of history are no longer realities, though they once actually happened; traces left by them make them real. A historian works directly upon these traces (i. e. sources) and through them he works upon the events. He reconstructs a systematic and logical account of the past events with the help of the sources."—S. V. C. Aiya : *Teaching History in Secondary School*, pp. 66-67.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नहीं हो पातीं कि वे इनको समझ सकें तथा इनका प्रयोग कर सकें। परन्तु शो-कीटिंग का मत है कि इनका प्रयोग जूनियर स्तर पर किया जाना चाहिए। परन्तु यह प्रयोग वातावरण स्थापित करने के लिए किया जाय। स्रोतों के द्वारा ऐसा वातावरण उत्पन्न किया जाय, जिससे बालक शिक्षा प्राप्त कर सके। इस स्तर पर स्रोतों का विश्लेषण नहीं किया जाना चाहिए।

स्रोतों का वर्गीकरण : Classification of Sources

इतिहास के स्रोत भूतकाल के लोगों द्वारा छोड़े हुए शेषचिह्न हैं। ये शेषचिह्न विभिन्न रूपों में पाये जाते हैं। इन शेषचिह्नों को अध्ययन की सुविधानुसार अधो-लिखित भागों में बाँटा जा सकता है—

(अ) पुरातत्त्वीय स्रोत (Archaeological Sources)

(ब) साहित्यिक स्रोत (Literary Sources)

(स) मौखिक परम्पराएँ (Oral Traditions)

(अ) पुरातत्त्वीय स्रोत : Archaeological Sources—इन सूत्रों को निम्नलिखित तीन भागों में बाँटा जा सकता है—

(1) स्मारक सम्बन्धी स्रोत : Monumental Sources—स्मारक सम्बन्धी स्रोतों के अन्तर्गत भवन, मूर्तियाँ (Images), बर्तन आदि आते हैं। भारत में लार्ड कर्जन द्वारा पुरातत्त्व विभाग की स्थापना की गई थी। इस विभाग ने मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, तक्षशिला, कौशाम्बी, सारनाथ, काशी, पाटलिपुत्र, नालन्दा, साँची, भारहुत आदि स्थानों पर खुदाई कार्य किया। इससे उसने प्राचीन इतिहास की सामग्री खोज निकाली। इस खुदाई कार्य से जो वस्तुएँ प्राप्त हुईं, वे उस काल के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

(2) पुरालेख सम्बन्धी स्रोत : Epigraphics—पुरालेख सम्बन्धी स्रोतों के अन्तर्गत पत्थरों, स्तम्भों, चट्टानों, ताम्रपत्रों, भवनों की दीवारों आदि के लेख एवं मूर्तियाँ आती हैं। इनके द्वारा भारतीय इतिहास के विभिन्न पक्षों के लिए महत्त्वपूर्ण प्रमाण प्रदान किये जाते हैं।

(3) मुद्रा-विषयक स्रोत : Numismatics—ये स्रोत सिक्कों के अध्ययन से इतिहास की सामग्री प्रदान करते हैं। प्राचीनकाल के सिक्के भारत के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।

(ब) साहित्यिक स्रोत : Literary Sources—इन स्रोतों को अग्रलिखित वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :

(1) धार्मिक साहित्य : Religious Literature—इस साहित्य के अन्तर्गत धर्म ग्रंथ आते हैं। धार्मिक साहित्य भारतीय इतिहास की महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रदान करता है। इनमें वेद, रामायण, महाभारत, त्रिपिटक, पुराण आदि आते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) **लौकिक साहित्य : Secular Literature**—इस साहित्य को निम्नलिखित दो भागों में बाँटा जा सकता है—

(क) **निजी साहित्य : Private Literature**—इस प्रकार का साहित्य वह साहित्य है जिसकी रचना किसी लेखक ने व्यक्तिगत रूप से की हो। इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत कालिदास द्वारा रचित 'शाकुन्तलम्', विशाखादत्त का 'मुद्राराक्षस', कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र', बाबर का 'बाबरनामा', जहाँगीर की 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' आदि रचनाएँ आती हैं।

(ख) **सार्वजनिक साहित्य : Official Literature**—यह किसी अधिकारी के द्वारा तैयार किया जाता है। इसके अन्तर्गत राजकीय आदेश, सनद, फरमान, न्यायालय के निर्णय आदि आते हैं।

(3) **विदेशी प्रमाण : Foreign Testimony**—विदेशियों के विवरण इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं। इस प्रकार के साहित्य के अन्तर्गत यूनानी लेखकों—मेगस्थनीज, पेट्रोलिक्स आदि की कृतियों का उल्लेख किया जा सकता है जिन्होंने भारत के सम्बन्ध में लिखा था।

(स) **मौखिक परम्पराएँ : Oral Traditions**—मौखिक परम्पराएँ इतिहास तथा स्थानों के नामों के सम्बन्ध में जानने में बहुत सहायक हैं। उदाहरणार्थ—पाटलिग्राम को विभिन्न कालों में पाटलिपुत्र, अजीमाबाद, बंकीपुर तथा पटना के नाम से जाना गया है। इन नामों के महत्त्व को समझने में मौखिक परम्पराएँ महत्त्वपूर्ण भाग अदा करती हैं।

स्रोतों का वर्गीकरण हम दूसरे ढंग से भी करते हैं, वे निम्नलिखित हैं—

1. **मौलिक स्रोत : Primary Sources**—इसके अन्तर्गत प्रत्यक्ष अवशेष सामग्री आती है; उदाहरणार्थ—स्मारक, सिक्के, यन्त्र आदि। इसके अन्तर्गत प्रत्यक्ष अंक या छाप भी आती है; उदाहरणार्थ—आज्ञा-पत्र, आदेश, फरमान, संविधान, सन्धियाँ, न्यायालयों के निर्णय तथा व्यक्तिगत इतिहास आदि।

2. **सहायक स्रोत : Secondary Sources**—इसके अन्तर्गत पुस्तकें, जीवन चरित्र, आत्मकथाएँ, इतिहास आदि आते हैं।

स्रोतों की विश्वसनीयता : Reliability of Sources—समस्त स्रोत विश्वसनीय नहीं हैं; उदाहरणार्थ—चन्दवरदाई के 'पृथ्वीराज-रासो' को पृथ्वीराज चौहान के इतिहास को जानने के लिए प्रमाणयुक्त स्रोत के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता है। अतः शिक्षक को स्रोतों का प्रयोग बड़ी सतर्कता के साथ करना चाहिए। उसे उनको स्वयं के लिए परीक्षित करना चाहिए। यदि परीक्षण के आधार पर स्रोत विश्वसनीय एवं प्रामाणिक सिद्ध होते हैं तो उसे उनका प्रयोग करना चाहिए, अन्यथा नहीं। स्रोतों की विश्वसनीयता को जाँचने के लिए अग्रलिखित रीतियों को प्रयोग में लाया जा सकता है :—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) उसको यह देखना चाहिए कि स्रोत के रचियता ने पक्षपातपूर्ण ढंग से अपने पात्र का विवेचन तो नहीं किया है।

(2) यदि किसी विषय पर परस्पर विरोधी विचारधारायें प्रचलित हैं तो उसे उनकी प्रामाणिकता आलोचनात्मक ढंग से जाँचनी चाहिए और आवश्यकतानुसार अपने निर्णय का भी प्रयोग करना चाहिए।

(3) उसका स्रोतों की तिथियों की अशुद्धियों की ओर भी ध्यान देना चाहिए। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि उसे स्रोतों की जाँच कालक्रम के आधार पर करनी चाहिए।

इतिहास-शिक्षण में स्रोतों का प्रयोग : Use of Sources in the Teaching of History.

इतिहास-शिक्षक किसी प्रकरण का शिक्षण करते हुए स्रोतों का प्रयोग पाठ में निम्नलिखित स्तरों पर कर सकता है—

(1) **पाठ के प्रारम्भ में स्रोतों का प्रयोग : Pre-lesson Use of Sources**—इतिहास-शिक्षक अपने पाठ के प्रारम्भ में स्रोतों का प्रयोग कर सकता है। वह छात्रों की जिज्ञासा को जाग्रत करने के लिए स्रोतों के सम्बन्ध में प्रश्न पूछ सकता है। उदाहरणार्थ—विलियम जोन्स, मैकाले तथा राममोहन राय के अंग्रेजी के प्रस्ताव के सम्बन्ध में क्या विचार थे ? शिक्षक अंग्रेजी के पक्ष एवं विपक्ष के तर्कों की परिपुष्टि कर सकता है।

(2) **पाठ के मध्य में स्रोतों का प्रयोग : Mid-lesson Use of Sources**—शिक्षक पाठ का विकास करते समय भी स्रोतों का प्रयोग कर सकता है। इस स्तर पर स्रोतों का प्रयोग करने का मुख्य अभिप्राय छात्रों को प्रदान किये जाने वाले ज्ञान को समृद्ध एवं स्पष्ट करना होगा, उदाहरणार्थ—यदि शिक्षक औरंगजेब के चरित्र के विषय में पढ़ा रहा है तो वह औरंगजेब द्वारा अपने भाइयों को लिखे हुए पत्रों को प्रस्तुत करके छात्रों की रुचि को पाठ में रत कर सकता है। ये पत्र छात्रों की जिज्ञासा को औरंगजेब तथा उसके भाइयों और उनके आपसी सम्बन्धों को अधिकाधिक जानने के लिए जाग्रत करेंगे।

(3) **पाठ की समाप्ति पर स्रोतों का प्रयोग : Post-lesson Use of Sources**—शिक्षक अपने पाठ को समाप्त करने के बाद भी स्रोतों का प्रयोग कर सकता है। वह छात्रों को मौलिक या सहायक स्रोतों से उपयुक्त उद्धरण प्रदान करके उनके आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए कह सकता है। इस प्रकार से शिक्षक छात्रों की रुचि को कायम रखने में सफल हो सकता है। यह प्रयोग प्रतिभाशाली छात्रों के लिए विशेषतः रोचक होगा।

उपर्युक्त प्रकार से स्रोतों का प्रयोग करके शिक्षक छात्रों की जिज्ञासा को जाग्रत करके छात्रों को उन्नत अध्ययन एवं अनुसन्धान कार्य करने के लिए प्रेरित कर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सकता है। धीरे-धीरे उनको स्वतन्त्र रूप से स्रोतों का उपयोग करने के लिए भी तैयार किया जा सकता है। इनके प्रयोग से छात्रों में स्वाध्ययन एवं उनके कुशल प्रयोग के लिए उपयुक्त आदतों के निर्माण में सहायता प्रदान की जा सकती है।

शिक्षक इतिहास का अध्यापन करते समय स्रोतों का प्रयोग निम्नलिखित अभिप्रायों की पूर्ति के लिए कर सकता है—

1. इनका प्रयोग कक्षा में ऐतिहासिक वातावरण उत्पन्न करने के लिए किया जा सकता है।
2. इनके द्वारा अपने मौखिक पाठ को पूर्ण बना सकता है।
3. ऐतिहासिक आलोचनाओं की परीक्षा करने के लिए।

(1) **वातावरण**—शिक्षक स्रोतों के उपयोग से इतिहास-शिक्षण को वास्तविक बन सकता है। यदि अध्यापक प्राचीनकाल की सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति का ज्ञान दे रहा है तो शिक्षक स्रोतों का प्रयोग करके बालकों के सम्मुख उसी काल का वातावरण उत्पन्न कर सकता है, जिससे छात्र उसी काल का अनुभव प्राप्त करने में समर्थ हो सकें।

(2) **मौखिक पाठ की पूर्ति**—स्रोतों का प्रयोग प्रत्येक स्तर पर किया जा सकता है। शिक्षक इनका प्रयोग मौखिक पाठ की कठिन बातों का सरलीकरण करने के लिए कर सकता है। अध्यापक को उन सभी स्रोतों का प्रयोग करना चाहिए जिनके द्वारा वह अपने पाठ को पूर्णतया समझने योग्य बना सकता है।

(3) **ऐतिहासिक आलोचनाओं की परीक्षा**—इसके लिए स्रोत प्रयोग में लाये जा सकते हैं। अनेक पाठ्य-पुस्तकें एक मत के अनुसार लिखी हुई होती हैं। उनमें सत्यता को स्पष्ट नहीं किया जाता। अध्यापक इन सत्यों को स्पष्ट करने हेतु विभिन्न लिखित स्रोतों का उपयोग कर सकता है; उदाहरणार्थ, यदि शिक्षक पानीपत के तृतीय युद्ध के विषय में पढ़ा रहा है तो उसे पाठ्य-पुस्तकों पर ही आधारित नहीं रहना चाहिए, वरन् उनमें दिये हुए तथ्यों की सत्यता को ज्ञात करने के लिए उसको 'भाऊसाहबजी बाखर', 'काशीराज' द्वारा लिखित लेख तथा भाऊ के पत्रों का अध्ययन स्वयं करना चाहिए और छात्रों को इन स्रोतों के आधार पर ऐतिहासिकता को प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अध्यापक को इस विधि का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. उसे उन पुस्तकों को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए, जिनमें इतिहास के स्रोतों का संकलन हो।
2. छात्रों को उनके अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वे शिक्षक के मौखिक पाठ के पश्चात् पुस्तकालय में जाकर उनका अध्ययन करें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. छात्रों के स्वाध्ययन के पश्चात् अध्यापक छात्रों की सहायता से उन पर वाद-विवाद करे।
4. वाद-विवाद के पश्चात् अध्यापक उन पर गृह-कार्य दे और उनके विषय में विचार प्रकट करवाये।
5. अध्यापक को इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि उसे छात्रों को अनुसन्धानकर्त्ता नहीं बनाना है।
6. स्रोतों के अध्ययन को समय के अनुसार क्रम में रखे अर्थात् जितना समय प्राप्त है, उसी के अनुसार अध्ययन के लिए समय दे।

छात्रों द्वारा लिखित स्रोतों का प्रयोग निम्नलिखित विधि से कराया जाना चाहिए—

शिक्षक विद्यार्थियों को एक कथन दे, फिर उस पर प्रश्न पूछे जिससे वे विश्लेषण के आधार पर उसके विषय में अपना निर्णय बना सकें। छात्रों को मौन-विधि से उद्धरण पढ़ने को दिया जाय और उस पर विचारोत्तेजक प्रश्न पूछे जाएं। एक ही घण्टे में इस प्रकार के उद्धरण देने में कोई आपत्ति नहीं है, किन्तु उन पर चर्चा अवश्य होनी चाहिए; उदाहरणार्थ—

'अपने राज्य में लोगों के मान-सम्मान की रक्षा का शिवाजी ने सदैव प्रयास किया। उसने विद्रोह किया, कारवाँ को लूटा और लोगों को परेशान किया। परन्तु घृणित कार्यों से उसने अपने को सदैव पृथक् रखा और जब कभी मुस्लिम स्त्रियाँ अथवा बच्चे उसके हाथ में पड़ जाते थे तो वह उनका आदरपूर्वक ध्यान रखता था। इस सम्बन्ध में उसकी आज्ञायें बड़ी कठोर थीं और जो उनका उल्लंघन करते थे, उन्हें दण्ड दिया जाता था।"

—(खाफी खाँ)

इस पर निम्नलिखित प्रश्न शिक्षक के द्वारा कक्षा के सामने रखे जायेंगे—

1. यह कथन किस काल से सम्बन्धित है?
2. शिवाजी ने किन लोगों को लूटा तथा परेशान किया?
3. शिवाजी का मुस्लिम स्त्रियों तथा बच्चों के प्रति कैसा व्यवहार था?
4. प्रजा के द्वारा दूसरे धर्मावलम्बियों के प्रति सद्व्यहार का पालन कराने के लिए उसने क्या किया?
5. खाफी खाँ का यह कथन शिवाजी के चरित्र के किस गुण को स्पष्ट करता है?

अध्यापक उद्धरणों की विवेचना के पश्चात् निर्णयों को लिखने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करेगा।

स्रोत-विधि के गुण : Merits of Source Method

(1) इससे भाषण-विधि में परिवर्तन होता है और अध्यापक को भी कम बोलना पड़ता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) इस विधि के प्रयोग से विद्यार्थियों को इतिहास की घटनाओं का सत्य ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

(3) इस विधि के द्वारा अतीत का वातावरण स्थापित किया जा सकता है और भूतकाल को वास्तविक बनाया जा सकता है।

(4) स्रोत-विधि से छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास होता है। उनमें परीक्षा, शब्द-ज्ञान, तुलना, कल्पना आदि शक्तियों का विकास होता है।

(5) इतिहास पढ़ने के लिए पाठ्य-पुस्तक रूपी साधन अपूर्ण हैं। उसको पूर्णता प्रदान करने के लिए इस विधि का उपयोग किया जाना आवश्यक है।

स्रोत-विधि की सीमाएँ : Limitations of Source Method

(1) यह विधि बहुत ही विस्तृत है। इसके प्रयोग के लिए समय अधिक चाहिए, जबकि इतिहास के लिए समय तालिका में कम समय मिलता है।

(2) इस विधि का छोटी कक्षाओं में प्रयोग नहीं हो सकता। ठीक प्रकार से तो इसका उपयोग माध्यमिक स्तर पर भी सम्भव नहीं है।

(3) कोई ऐसी प्रामाणिक पुस्तक प्राप्त नहीं है, जिसमें भारतीय स्रोतों का संकलन हो।

(4) इस विधि की एक सीमा यह है कि शिक्षकों को वे स्रोत सुगमता से उपलब्ध नहीं हैं जिनका वह प्रयोग करना चाहते हैं। यदि कभी उनको मौलिक स्रोत प्राप्त भी हो जायँ तो उनके प्रयोग में सबसे बड़ी कठिनाई भाषा की है। इसके अतिरिक्त शिक्षक परावृत्त रचना या इतिहास-लेख में प्रशिक्षित नहीं होते हैं। इस प्रशिक्षण के अभाव में वे मौलिक स्रोतों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं।

(5) इस विधि के अनुसार शिक्षण करने के लिए एक पाठ की रूपरेखा उदाहरणस्वरूप नीचे दी जा रही है—

प्रकरण—'मुगल साम्राज्य का पतन'

इस पाठ के शिक्षण द्वारा निम्नलिखित विचारों या समझदारियों को विकसित किया जा सकता है—

(i) मुगल साम्राज्य का पतन किसी एक घटना का परिणाम नहीं था वरन् एक दीर्घकालीन प्रक्रिया थी।

(ii) मुगल सम्राटों द्वारा विकसित की गई शासन-पद्धति मुगल साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण थी।

(iii) उनकी भूमि सम्बन्धी नीति भी इसके पतन का एक कारण बनी।

(iv) मुगल शासन के स्थायित्व में शासकों के व्यक्तित्वों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

(v) औरंगजेब द्वारा अकबर की नीति के विपरीत कार्य करने के कारण असन्तोष और अविश्वास को जन्म मिला।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(vi) निर्बल एवं अयोग्य उत्तराधिकारियों ने साम्राज्य के पतन में महत्त्वपू... योग दिया।

विषय-वस्तु तथा शिक्षण-बिन्दु : Contents and Teaching Hints

उपर्युक्त विचारों या समझदारियों के विकास के लिए अध्यापक अधोलिखि... स्रोतों का प्रयोग करेगा—

(i) केप्टन हॉकिन्स (Captain Hawkins) के विवरणों में चुंगी की वसू... एवं उसके निर्धारण से सम्बन्धित उद्धरण (Extract)।

(ii) बर्नियर (Bernier) के विवरणों में चुंगी की प्रचलित व्यवस्था... प्रभावों से सम्बन्धित उद्धरण।

(iii) औरंगजेब के पत्रों एवं फरमानों के उपयुक्त उद्धरण।

(iv) मुनक्की (Mauncci) द्वारा औरंगजेब की नीति की विवेचना से सम्ब... न्धित उद्धरण।

(v) भीमसेन द्वारा जागीरदारी व्यवस्था के विवेचन से सम्बन्धित उद्धरण।

(vi) बर्नियर द्वारा किसानों की दशा के विवेचन से सम्बन्धित उद्धरण।

(vii) खाफी खाँ द्वारा वर्णित किसानों की दशा से सम्बन्धित उद्धरण।

शिक्षक इन उद्धरणों को क्रम से प्रस्तुत करेगा और साथ-साथ प्रश्नों द्वा... उनका छात्रों से विश्लेषण करायेगा। इसके उपरान्त वह सम्पूर्ण कक्षा को कई भा... में विभाजित करेगा। प्रत्येक समूह मुगल साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारणों... पृथक्-पृथक् रूप से अध्ययन करेगा। प्रत्येक समूह जिस कारण के विषय में अध्य... करेगा, उस पर सम्पूर्ण कक्षा के समक्ष अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगा। इसके उपरा... शिक्षक स्वयं अपनी व्याख्या देगा। इसके उपरान्त वह प्रयुक्त किये गये उद्धरणों... मुद्रित या टाइप की हुई प्रतियाँ वितरित कर देगा जिससे वे इन उद्धरणों का बाद... उपयोग कर सकें।

4. पाठ्य-पुस्तक विधि
Text-Book Method

बहुधा यह कहा जाता है कि भारत में समस्त शिक्षण-कार्य पाठ्य-पुस्तक वि... से किया जाता है। परन्तु यह कथन अस्पष्ट-सा दिखाई पड़ता है, क्योंकि प्रत्... शिक्षण-विधि का प्रयोग पाठ्य-पुस्तक को आधार बनाकर किया जा सकता है। ... तक कि इसका उपयोग प्रगतिशील एवं क्रियाशील शिक्षण-विधियों में भी किया ... सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि पाठ्य-पुस्तक वह साधन है, जिनके द्वा... किसी निर्दिष्ट लक्ष्य या तथ्य को प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार हम ... सकते हैं कि पाठ्य-पुस्तक विधि एक स्वतन्त्र शिक्षण-विधि नहीं है, बल्कि यह ... प्रक्रिया या माध्यम है, जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। छात्र अनु... तथा ज्ञान की प्राप्ति दो ढंगों से करते हैं—प्रत्यक्ष रीति तथा अप्रत्यक्ष रीति ... प्रथम ढंग के अनुसार ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष रूप से वास्तविक वस्तुओं का अध्य...

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किया जाता है। अप्रत्यक्ष रीति के अन्तर्गत दो ढंग हैं—प्रथम के अनुसार, बालक पुस्तकों में व्यक्तियों के संकलित विचारों का अध्ययन करता है; अर्थात् पुस्तक के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति करता है। दूसरे ढंग के अनुसार बालक मौखिक रूप से किये हुए प्रस्तुतीकरण के द्वारा ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तक वह साधन है जिसके द्वारा बालक ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है। इस साधन की सफलता उसके उचित प्रयोग पर निर्भर है। इस साधन के उपयोग के अधोलिखित रूप हैं—

(1) सर्वप्रथम इस साधन का प्रयोग इसमें दिए हुए किसी विचार या तथ्य को कण्ठस्थ करने के लिए किया जा सकता है। शिक्षक छात्रों को कोई पाठ घर से कण्ठस्थ करने के लिए दे दिया करते हैं। दूसरे दिन वे बालकों से उसे मौखिक रूप से सुनते हैं। जो ऐसा नहीं कर पाता, वह दण्ड का भागी होता है।

(2) इसका दूसरा उपयोग पाठ को पूर्णतया रटने हेतु नहीं किया जाता है, अपितु रटने के साथ-साथ समझने के लिए भी किया जाता है। इस प्रकार के प्रयोग के द्वारा बालकों में अर्जित ज्ञान को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करने की शक्ति उत्पन्न की जा सकती है। इस प्रकार उनकी अभिव्यंजना-शक्ति तथा लेखन-कला का विकास किया जाता है।

(3) इस साधन के प्रयोग का तीसरा रूप यह है कि पाठ्य-पुस्तक का कोई पाठ अध्ययन के लिए निर्धारित कर दिया जाता है। छात्रों से इस निर्धारित पाठ को अध्ययन करने तथा उसकी रूपरेखा या सारांश लिखने के लिए कहा जाता है। इसके उपरान्त शिक्षक तथा बालक—दोनों मिलकर इस सारांश पर वाद-विवाद करते हैं और उस पाठ के विषय में निश्चित धारणा बनाते हैं। इसके उपरान्त शिक्षक विवरणात्मक रूप से इस संक्षिप्त रूपरेखा को लिखने का आदेश देता है, जिससे उनके पास उसका लेखा रह सके।

(4) इस साधन के प्रयोग का चौथा रूप यह है कि बालक भाषा की पुस्तक की भाँति इतिहास की पाठ्य-पुस्तक को पढ़ते हैं और इस प्रकार क्रमानुसार कक्षा के सभी बालक इतिहास की पुस्तक को पढ़ते जाते हैं और पाठ पूरा हो जाता है। शिक्षक बालकों की ग्राह्यता को जाँचने के लिए बीच-बीच में प्रश्न पूछता रहता है।

(5) इस साधन के उपयोग का एक रूप यह भी है कि शिक्षक पाठ्य-पुस्तकों के पाठों के आधार पर बालकों को पृथक् कार्य निर्धारित करता है जिसमें पाठ की समस्त बातों का समावेश होता है। परन्तु यह कार्य इस प्रकार निर्धारित किया जाता है जिसकी पूर्ति के लिए छात्रों को अन्य पुस्तकों, सूत्रों तथा पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री एकत्रित करनी पड़ती है। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तक ज्ञानोपार्जन का आधार बन जाती है। इतिहास-शिक्षण में इसी रूप का उपयोग करना चाहिए क्योंकि इससे एक तो छात्र पुस्तकालय का उपयोग करना सीख जायेंगे। दूसरे, वे स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करना सीख जायेंगे।

इतिहास-शिक्षण में बहु-पाठ्य-पुस्तक प्रणाली को अपनाना चाहिए, क्योंकि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

एकाकी पाठ्य-पुस्तक के प्रयोग से छात्रों में मुद्रित पृष्ठों के प्रति निर्भरता की भा विकसित हो जाती है। परन्तु बहु-पाठ्य-पुस्तक के प्रयोग से छात्र उनका अध्य करके अपना निष्कर्ष बनाना सीख जाते हैं। दूसरे इतिहास-शिक्षण में इस प्रणाली उपयोग इसलिए भी आवश्यक है कि इतिहास में बहुत-से विवादग्रस्त विषयों समावेश होता है। उनकी सत्यता की जाँच करने हेतु बहु-पाठ्य-पुस्तकों का उप लाभप्रद है।

पाठ्य-पुस्तक विधि के गुण-दोष : Merits and Demerits of Text-Bo Method

गुण—1. पाठ्य-पुस्तक विधि छात्रों की निपुणता बढ़ाती है तथा उनमें पढ़ने स्वभाव उत्पन्न करती है, क्योंकि पाठ्य-पुस्तकें छात्रों के दृष्टिको लिखी जाती हैं।

2. इसमें छात्र स्वयं सक्रिय रहकर ज्ञान अर्जित करते हैं।
3. पाठ्य-पुस्तक विधि छात्रों के कार्य में नियोजन उत्पन्न करती है।
4. इसके द्वारा छात्रों को इतिहास की विषय-वस्तु का ज्ञान व्यवस्थित से प्राप्त होता है।
5. इस विधि के द्वारा बालकों को इस बात का ज्ञान प्राप्त हो जाता है किसी प्रश्न के लिए कितनी विषय-सामग्री लिखनी है तथा उसको कि प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए ?
6. इसके द्वारा छात्रों की बोधग्राह्यता की साथ-साथ परीक्षा होती चलती
7. इसके द्वारा बालकों की स्मरण-शक्ति का विकास होता है।
8. इससे छात्रों तथा शिक्षकों के समय की बचत होती है।

दोष—1. यह विधि छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित नहीं कर पाती है त उनके मानसिक अन्तरिक्ष को व्यापक बनाने में असमर्थ रहती है।

2. यह विधि छात्रों के पूर्व-ज्ञान को जाग्रत करने और उसका प्रयोग क में असमर्थ रहती है।
3. इसके प्रयोग से कक्षा का वातावरण अरुचिकर तथा नीरस रहता है।
4. इस विधि द्वारा छात्रों में रटने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।
5. इसके द्वारा छात्र मुद्रित पृष्ठों के तथ्यों व भावों का अन्धानुकरण क लगते हैं।
6. यह विधि शिक्षण के सूत्रों, जैसे—सरल से कठिन की ओर, ज्ञात अज्ञात की ओर, आदि की उपेक्षा करती है।

5. प्रयोगशाला विधि
Laboratory Method

शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति ने प्रत्येक विषय के लिए अपनी प्रयोगशाला स्था करने को बाध्य किया है। जब इतिहास के शिक्षकों द्वारा यह प्रश्न उठाया ज

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि हमारे विषय के लिए एक प्रयोगशाला की आवश्यकता है तो इस पर प्रधाना- र्य तथा अन्य अधिकारियों को आश्चर्य होता है। परन्तु इसके उत्तर में वे निम्न- लिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं—

(1) इतिहास का शिक्षक एक वैज्ञानिक विषय का शिक्षण करता है। क्योंकि तिहास एक विज्ञान है, इसलिए इतिहास हेतु प्रयोगशाला की आवश्यकता है।

(2) इसके द्वारा छात्रों के लिए एक ऐसे वातावरण की सृष्टि की जाती है, जसमें वे स्वयं सक्रिय रहकर ज्ञान अर्जित कर सकते हैं।

(3) इसकी आवश्यकता इसलिए भी वांछनीय है कि शिक्षक इसके द्वारा मय के अपव्यय एवं वस्तुओं की टूट-फूट को बचा सकता है। यदि इसकी व्यवस्था हीं होगी तो शिक्षक को अपने विषय की सामग्री को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में ले जाने में पर्याप्त समय लगेगा और उस सामग्री के टूटने-फूटने का भी डर रहेगा।

(4) प्रयोगशाला द्वारा अतीत को वास्तविक बनाने में सहायता मिलती है।

इतिहास-प्रयोगशाला की सामग्री—इतिहास की प्रयोगशाला में अधोलिखित सामग्री का होना आवश्यक है—

1. प्रायोगिक कार्य के लिए मेजें;
2. श्यामपट;
3. शो-केश;—इसमें सिक्के, मुहरें, बर्तन, वस्त्र, औजार आदि को रखा जायगा;
4. रेडियो;
5. मैजिक लैन्टर्न, प्रोजेक्टर, स्क्रीन आदि;
6. ऐतिहासिक मानचित्र;
7. समय-रेखाएँ, रेखाचित्र, समय-ग्राफ आदि;
8. ऐतिहासिक चित्र।

इस विधि के प्रयोग के लिए शिक्षक कार्यों का निर्धारण करता है। इसे 'कार्य-निर्धारण विधि' (Assignment Method) के नाम से भी पुकारा जाता है। शिक्षक कार्य-निर्धारण करके उसके विषय में एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिसमें वह इस पर भी बल देता है कि इस कार्य की पूर्ति में अमुक-अमुक पुस्तकों, स्रोतों आदि की आवश्यकता अपेक्षित है तथा अमुक-अमुक स्थान पर से इससे सम्बन्धित सामग्री प्राप्त होगी। इस विधि के अन्तर्गत शिक्षक का स्थान एक पथ-प्रदर्शक, मित्र एवं दार्शनिक का होता है। वह उनके कार्य में निरर्थक हस्तक्षेप नहीं करेगा। परन्तु उनको तभी सहायता प्रदान करेगा, जबकि उनको उसकी सहायता की आवश्यकता होगी। इन सूचनाओं को ग्रहण करने के उपरान्त छात्र वैयक्तिक रूप से प्रयोगशाला में बैठकर अपना-अपना कार्य करेंगे। इस प्रकार उन्हें अपनी वैयक्तिक विभिन्नताओं के अनुसार ज्ञान प्राप्त हो जायगा और उनकी वैयक्तिक विशेषता का विकास सम्भव हो जायगा। निर्धारित कार्य को पूर्ण करने के लिए समय निर्धारित कर दिया जाता है, जो

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बालक अपने कार्य को अवधि से पूर्व पूर्ण कर लेगा, उसे दूसरा कार्य प्रदान कर दि जाएगा। इन कार्यों की पूर्ति के आधार पर छात्रों को एक कक्षा से दूसरी कक्षा लिए उन्नति प्रदान की जाती है। प्रयोगशाला में प्रत्येक छात्र की उन्नति का रे रहता है, जिसमें शिक्षक उनकी उन्नति को लिखता रहता है।

एच० सी० हिल द्वारा इस विधि का स्वरूप इस प्रकार वर्णित कि गया है—

"प्रयोगशाला विधि में छात्रों का अधिकांश समय अपनी मेजों पर अध्य एवं लिखित कार्य करने में व्यतीत होता है। दो या तीन छात्र किसी संदिग्ध वि पर चर्चा कर सकते हैं। दूसरे, नोट्स की तुलना या किसी कार्य की रूपरेखा तै कर सकते हैं। एक छात्र शब्द-कोश को देखने में संलग्न हो सकता है....दूसरा एट पर ध्यान देने में व्यस्त हो सकता है....तीसरा छात्र किसी कठिनाई के विषय शिक्षक से राय ले सकता है या अपने नोट्स या रूपरेखा के विषय में आलोच प्राप्त कर सकता है। सामान्यत: कक्षा-कक्ष शान्त स्थान है, जिसमें छात्र किसी किसी लाभप्रद क्रिया में संलग्न रहता है।"[1]

प्रयोगशाला विधि के गुण-दोष : Merits & Demerits of Laborat Method

गुण—1. इसके द्वारा छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं।
2. इस विधि के प्रयोग से सामूहिक शिक्षण के दोषों को दूर किया सकता है।
3. इसके प्रयोग से बालकों में स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।
4. इसके प्रयोग से छात्र पुस्तकालय का प्रयोग करना सीख जाते हैं।
5. इस विधि के द्वारा वर्तमान परीक्षा-प्रणाली के दोषों को दूर किया सकता है।

---

1. In a laboratory method the great part of students will be stu and working at their tables. Two or three may be havin quiet conference on some moot points. Others may be com ring notes or outlines of some phase of work. One stu may be busy at the dictionary...another may be consu an atlas......a third may be conferring with the teacher a some difficulty or asking for a criticism on his notes or out ....In general, however, the room is a place of quite, di derely order, in which students are busily engaged in profita activities of one kind or another.—H. C. Hill : Quoted Bining & Bining, *Teaching the Social Studies in Secon School*, p. 151.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोष—1. यह विधि बहुत व्ययपूर्ण है। यह भारत जैसे निर्धन देश के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यहाँ तो सामान्य कक्ष भी उपलब्ध नहीं हो पाते। अतः विशेष कक्षों या प्रयोगशालाओं की व्यवस्था का कार्य एक स्वप्न के समान है।

2. इस विधि के प्रयोग से छात्रों द्वारा अर्जित किया हुआ ज्ञान शृंखलाबद्ध एवं सुसंगठित नहीं होगा।

3. यदि प्रयोगशाला में उचित ध्यान नहीं दिया गया तो यह विधि यांत्रिक बन सकती है।

4. भारत में छात्रों के लिए उपयुक्त पत्र-पत्रिकाओं, भारतीय इतिहास के स्रोतों का संकलन, उत्तम ऐतिहासिक पाठ्य-पुस्तकों आदि का अभाव है, जिनको प्रयोगशाला में रखा जा सके और छात्र उनका उपयोग कर सकें।

6. समस्या विधि
Problem Method

समस्या-समाधान एक सामान्य शैक्षिक विधि है जिसमें शिक्षक तथा छात्र सचेत, नियोजित एवं साभिप्राय प्रयास द्वारा किसी कठिनाई या प्रश्न या समस्या का हल खोजते हैं। समस्या-समाधान मात्र तथ्यों का संग्रह या तर्क के अभाव में विचारों, धारणाओं आदि की स्वीकृति नहीं है वरन् यह विमर्शी चिन्तन (Reflective thinking) की प्रक्रिया है। डीवी के अनुसार विमर्शी चिन्तन के दो पहलू हैं। प्रथम—वह संदेहात्मक स्थिति, हिचकिचाहट एवं मानसिक कठिनाई जिसमें चिन्तन का जन्म होता है। द्वितीय—वह खोज कार्य जो सन्देह एवं हिचकिचाहट को दूर करेगा तथा मानसिक कठिनाई का समाधान प्रदान करेगा। जार्ज जान्सन (George Johnson) ने लिखा है—"मस्तिष्क को प्रशिक्षित करने का सर्वोत्तम ढंग वह है जिसके द्वारा मस्तिष्क के समक्ष वास्तविक समस्यायें उत्पन्न की जाती हैं और उसको उनका समाधान निकालने के लिए अवसर तथा स्वतन्त्रता प्रदान की जाती है।"

समस्या विधि, योजना विधि से पर्याप्त समानता रखती है। इन दोनों विधियों में अन्तर इस बात का है कि योजना विधि में प्रायोगिक कार्य को महत्त्व प्रदान किया जाता है। यह प्रायोगिक कार्य एक वास्तविक स्थिति में सम्पन्न किया जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि योजना विधि में शारीरिक एवं मानसिक—दोनों प्रकार की क्रियाएँ सन्निहित होती हैं जबकि समस्या विधि में केवल मानसिक निष्कर्षों पर ही अधिक बल दिया जाता है, अर्थात् इसमें मानसिक हल ही प्रदान किया जाता है। इस प्रकार समस्या विधि में किसी समस्या या प्रश्न को एक विशेष स्थिति में वैज्ञानिक ढंग से हल किया जाता है। अतः इस विधि का सबसे प्रमुख गुण—मानसिक क्रिया एवं विमर्शी चिन्तन है। इतिहास-शिक्षण में इस विधि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इस विधि में शिक्षक या तो स्वयं बालकों को समस्या दे देता है या छात्र स्व प्रस्तुत करते हैं। समस्या एक छात्र के द्वारा भी प्रस्तुत की जा सकती है तथा कई छात्र उसको सामूहिक रूप से प्रस्तुत कर सकते हैं। परन्तु इसके प्रयोग में इस बात पर बल दिया जाता है कि छात्र समस्या को अपनी ससस्या समझकर हल करने हेतु तत्पर रहें। दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि छात्रों की समस्या में अपनत्व अनुभव करना चाहिए। समस्या छात्रों की रुचि एवं मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। इसके प्रयोग में अधोलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) **समस्या को प्रस्तावित करना : Introducing the Problem**—इस स्तर पर छात्रों को समाधान के लिए तैयार किया जायेगा। इस स्तर पर शिक्षक समस्या-समाधान के लिए पृष्ठभूमि तैयार करेगा। वह छात्रों को समस्या के सम्बन्ध में निश्चित विचार बनाने के लिए तैयार करेगा।

(2) **समस्या समाधान के लिए निर्देशित करना : Directing the Work on the Problem**—इस स्तर पर शिक्षक समस्या-समाधान के कार्य को निर्देशित करेगा। वह छात्रों को समस्या-समाधान के विभिन्न स्तरों के प्रति उपयुक्त दृष्टिकोण ग्रहण करने के लिए प्रेरित करेगा। छात्रों को समस्या-समाधान के लिए सहायता प्रदान करेगा। वह उनको तथ्यों को एकत्रित एवं संगठित करने के ढंग को बतायेगा। साथ ही वह समस्या के समाधान के लिए छात्रों को एकत्रित एवं संगठित तथ्यों की जाँच करने के लिए प्रेरित करेगा। वह निष्कर्षों के निर्माण में उनको सहायता देगा।

(3) **निष्कर्षों के सत्यापन में सहायता : Helping Students in Verifying Conclusions**—वह छात्रों के निष्कर्षों के सत्यापन में सहायता प्रदान करेगा। साथ ही वह उन्हें यह जानने के लिए प्रेरित करेगा कि ये निष्कर्ष प्रयोग में लाये जा सकते है या नहीं।

इतिहास की विभिन्न समस्याओं को समाधान के लिए छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है; उदाहरणार्थ—

1. अकबर को पाखण्डी क्यों कहा जाता है ?
2. क्या शिवाजी की आगरा की यात्रा का उद्देश्य—भारत में हिन्दू साम्राज्य की स्थापना के लिए जानकारी प्राप्त करना था ?
3. मुहम्मद-बिन-तुगलक को एक पागल बादशाह क्यों कहा जाता है ? आदि।

समस्या विधि के गुण-दोष : Merits & Demerits of Problem Method

गुण—
1. इस विधि के प्रयोग से छात्र 'सबसे उत्तम क्या है ?'—के विषय में आलोचना, निर्णय, मूल्यांकन, तुलना तथा चयन करना सीख जाते हैं।
2. इसके प्रयोग से छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं।
3. इसके प्रयोग से छात्र समस्या हल करने के ढंग को सीख जाते हैं।
4. इसके द्वारा छात्र तथ्यों को एकत्रित एवं व्यवस्थित करना सीख जाते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. इससे छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो जाता है तथा वे मुद्रित पृष्ठों का अन्धानुकरण नहीं करते।
6. इसके प्रयोग से बालक ऐतिहासिक विधि से अवगत हो जाते हैं।

दोष—1. यह विधि जूनियर स्तर के छात्रों हेतु व्यवहार्य नहीं है।
2. बार-बार प्रयोग करने से यह पद्धति नीरस एवं यांत्रिक बन जाती है।
3. इसमें समय बहुत लगता है, जबकि इतिहास को समय-तालिका में आवश्यकतानुसार भी समय प्राप्त नहीं हो पाता है।
4. इसमें सदैव सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

7. योजना विधि
Project Method

किलपैट्रिक (W. H. Kilpatrick) द्वारा डीवी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्तों के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया गया। इसका निर्माण विद्यालय के परम्परागत एवं शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया। इसमें छात्रों की क्रियाशीलता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। 'प्रोजेक्ट' शब्द की परिभाषा विभिन्न प्रकार से की गई है। किलपैट्रिक के अनुसार, "प्रोजेक्ट वह सहृदयपूर्ण अभिप्राययुक्त क्रिया है, जो पूर्ण संलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण में पूरी की जाय।"[1] प्रो० स्टीवेन्सन के अनुसार, "प्रोजेक्ट एक समस्यामूलक कार्य है, जिसका समाधान उसके प्रकृत वातावरण में रहते हुए ही किया जाता है।"[2] प्रो० बैलार्ड के अनुसार, "प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा-सा अंश है जिसको विद्यालय में प्रतिपादित किया जाता है।"[3] इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि योजना वह क्रिया है जो वास्तविक जीवन में रहकर ही पूर्ण की जाती है, अर्थात् वह अपने स्वाभाविक वातावरण में ही पूर्ण होती है।

इतिहास में इस पद्धति के प्रयोग के बारे में विभिन्न मत हैं। प्रो० बाइनिंग तथा बाइनिंग का मत है कि इतिहास में योजना पद्धति का व्यवहार कठिन है। परन्तु टी० डब्ल्यू० सौसम्स (T. W. Sussams) का कथन है कि इतिहास-शिक्षण में योजना विधि का प्रयोग किया जा सकता है; उदाहरणार्थ—स्थानीय स्मारकों का पर्यटन द्वारा अध्ययन, ऐतिहासिक वस्तुओं का संग्रह, ऐतिहासिक मानचित्र, मॉडल, समय-रेखाओं, समय-ग्राफों आदि का निर्माण करना, विभिन्न नगरों के इतिहास का अध्ययन सामयिक घटनाओं का शिक्षण आदि। परन्तु फिर भी इतिहास में इस पद्धति का

1. "A project is a whole-hearted purposeful activity proceeding in a social environment". —Kilpatrick
2. "A project is a problematic act carried to completion in its natural setting." —Stevenson
3. "A project is a bit of real life that has been imparted into the school." —Ballard

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रयोग अन्य सामाजिक विज्ञानों की भाँति बहुतायत से नहीं हो सकता। इसके प्रयो[ग] में निम्नलिखित स्तरों को पार करना पड़ता है—

1. परिस्थिति उत्पन्न करना, 2. योजना का चयन, 3. उद्देश्य-निरूपण, 4. योजना पूर्ण करने का कार्यक्रम, 5. कार्यक्रम को क्रियान्वित करना, 6. कार्य का निर्णय, 7. कार्य का लेखा।

8. व्याख्यान विधि
Lecture Method

जेम्स एम० ली ने लिखा है—"व्याख्यान एक शिक्षण-शास्त्रीय विधि है जिसमें शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण या समस्या पर भाषण देता है।"[1] रिस्क के विचारानुसार—"व्याख्यान तथ्यों, सिद्धान्तों या अन्य सम्बन्धों का प्रतिपादन है जिनको शिक्षक अपने सुनने वालों को समझाना चाहता है।"[2] एक विधि के रूप में यह विधि यह मानकर चलती है कि सीखने वाला भाषण तथा इंगित किये सम्बन्धों को समझने की योग्यता रखता है। जेम्स एम० ली का कथन है कि व्याख्यान विधि को निर्देश या कथन (Telling) प्रविधि (Technique) से नहीं मिलाना चाहिए। निर्देश द्वारा शिक्षक किसी मुख्य सूचना को प्रदान करता है जो छात्रों को अपने शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक होती है। कथन अपने रूप में संक्षिप्त होता है जबकि व्याख्यान काफी बड़ा। व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य तथ्यों तथा धारणाओं को क्रमबद्ध रूप में प्रतिपादित करना है।

व्याख्यान विधि के गुण एवं दोष : Merits & Demerits of Lecture Method

गुण—1. इसके द्वारा विषय-वस्तु को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप से प्रस्तुत किया जाता है जिससे छात्र सरलता से समझ सकें।

2. यह कम से कम समय में विषय-वस्तु को पूरा करने में सहायक है। साथ ही यह शैक्षिक कुशलता को उत्पन्न करती है।
3. यह छात्रों को सुनने की कला में प्रशिक्षित करती है।
4. इसके द्वारा विषय-वस्तु में निहित सम्बन्धों पर छात्रों के ध्यान को आकृष्ट किया जाता है।
5. यह असंगत तथ्यों की अवहेलना करके छात्रों को संगत तथ्यों को ग्रहण कराने में सहायक है।

---

1. "The lecture is a pedagogical method whereby the teacher formally delivers a carefully planned expository address on some particular topic or problem." —James M. Lee
2. "The lecture is an exposition of facts, principles or other relationships that the teacher wishes his hearers to understand." —Thomas M. Risk

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दोष—1. यह छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में निष्क्रिय श्रोता बनाती है।
2. यह शिक्षक-केन्द्रित विधि है जबकि आधुनिक शिक्षा बाल-केन्द्रित शिक्षा पर बल दे रही है।
3. इसमें समय का अपव्यय होता है क्योंकि बालक निष्क्रिय श्रोता के रूप में बहुत कम ग्रहण कर पाता है। शिक्षक की तैयारी भी व्यर्थ हो जाती है।
4. यह इस बात की कोई गारण्टी नहीं देता है कि छात्र व्याख्यान द्वारा दी गई विषय-वस्तु को समझ लेंगे।
5. छात्रों में लापरवाही उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करती है।

सुझाव : Suggestions—व्याख्यान-विधि को छात्रोपयोगी बनाने के लिए निम्नांकित सुझावों पर ध्यान देना आवश्यक है—

1. व्याख्यान नियोजित होना चाहिए।
2. यह किसी एक केन्द्रीय विचार या समस्या या प्रकरण पर आधारित होना चाहिए।
3. शिक्षक को रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए।
4. यह हाव-भाव युक्त ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
5. इसमें मौखिक उदाहरणों तथा शाब्दिक चित्रों का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाय।
6. यह मध्यम गति से प्रस्तुत किया जाय।

9. वाद-विवाद विधि
Discussion Method

आधुनिक शैक्षिक विचारधारा के अनुसार बालक को निष्क्रिय श्रोता नहीं माना जाता है वरन् उसको सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय बनाये रखने पर बल दिया जाता है। बालक जिस ज्ञान को क्रिया करके प्राप्त करता है वह स्थायी रहता है। बालक को सक्रिय बनाये रखने के दृष्टिकोण से विभिन्न क्रियात्मक शिक्षण-विधियों का प्रयोग किया जाता है। उनमें से एक वाद-विवाद विधि है। यह शिक्षण की वह विधि है जिसमें शिक्षक और छात्र मिल-जुलकर किसी प्रकरण, प्रश्न या समस्या के सम्बन्ध में स्वतन्त्रतापूर्वक सामूहिक वातावरण में विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इसके अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दे रहे हैं—

1. जेम्स एम० ली—"वाद-विवाद एक शैक्षिक सामूहिक क्रिया है जिसमें शिक्षक तथा छात्र सहयोगी रूप से किसी समस्या या प्रकरण पर बातचीत करते हैं।"

   "Discussion is an educational group activity in which teacher and the students talk over some problem or topic."

   —James M. Lee

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. रिस्क—"वाद-विवाद का अर्थ है—अध्ययन की जाने वाली समस्या या प्रकरण में निहित सम्बन्धों का विचारशील विवेचन ।"

"Discussion means thoughtful consideration of the relationships involved in the topic under study."

—Thomas M. Risk

3. सिम्पसन व योकम—"वाद-विवाद बातचीत का एक विशिष्ट स्वरूप है। इसमें सामान्य बातचीत की अपेक्षा अधिक विस्तृत एवं विवेकयुक्त विचारों का आदान-प्रदान होता है। सामान्यतः वाद-विवाद में महत्त्वपूर्ण विचारों एवं समस्याओं को सम्मिलित किया जाता है।"

"Discussion is a special form of conversation. It is an exchange of ideas of a more reasoned detailed kind, than that found in ordinary conversation and generally involves the conversation of important ideas and issues."

—Yoakam & Simpson

वाद-विवाद के रूप—वाद-विवाद औपचारिक (Formal) तथा अनौपचारिक (Informal) दोनों ही रूप में हो सकता है। औपचारिक वाद-विवाद में प्रत्येक कार्य विधिवत् ढंग से किया जाता है। इसमें निश्चित नियमों के अनुसार कार्य होता है। ऐसे वाद-विवाद के लिए कक्षा के छात्र स्वयं में से सभापति, मन्त्री तथा अन्य पदाधिकारी चुनते हैं। छात्रगण इनके निर्देशन में समस्त कार्यों को निर्धारित नियमों के अनुसार करते हैं।

अनौपचारिक वाद-विवाद के संचालन के लिए किन्हीं निर्धारित नियमों का अनुसरण नहीं किया जाता है। इस प्रकार के वाद-विवाद में छात्र किसी विषय या प्रश्न या समस्या पर शिक्षक के निर्देशन में स्वतन्त्रतापूर्वक विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

वाद-विवाद विधि का स्वरूप—वाद-विवाद विधि के संचालन के लिए नेता, भाग लेने वालों, समस्या या प्रश्न तथा सामग्री की आवश्यकता है। वाद-विवाद के लिए छात्रगण स्वयं या शिक्षक समस्या प्रस्तुत कर सकता है। समस्या के प्रस्तुत होने के उपरान्त शिक्षक उद्देश्यों पर प्रकाश डालेगा तथा उससे सम्बन्धित सामग्री के स्रोतों को बतलायेगा। छात्रगण इन विभिन्न स्रोतों से निर्धारित विषय या प्रकरण या समस्या से सम्बन्धित सामग्री का अध्ययन करेंगे। वे इस प्रकार समस्या के किसी पक्ष पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए तैयार करेंगे। छात्रों के विभिन्न समूह-सदस्य सम्बन्धित सामग्री, आँकड़ों एवं सूचनाओं को एकत्रित एवं आत्मसात् करके निश्चित तिथि पर वाद-विवाद का कार्य प्रारम्भ करेंगे। निर्वाचित नेता या शिक्षक के द्वारा वाद-विवाद का संचालन किया जायेगा। उसके निर्देशों के अनुसार वाद-विवाद का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्य चलेगा। शिक्षक का कार्य छात्रों के संदेहों को दूर करना होगा। वह एक साधारण सदस्य के रूप में कार्य करेगा। छात्रों के विचार-विमर्श के पश्चात् निर्वाचित नेता विषय से सम्बन्धित अपनी संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करेगा। इसके उपरान्त वाद-विवाद कार्य की समाप्ति हो जायगी। इस सम्पूर्ण कार्यवाही को छात्र मन्त्री द्वारा नोट किया जायगा।

वाद-विवाद विधि के गुण एवं दोष : Merits & Demerits of Discussion Method

गुण—1. इसके द्वारा छात्रों में सहयोग एवं सहिष्णुता की भावना का विकास किया जाता है।
2. यह छात्रों को सहयोगी रूप से कार्य करने का प्रशिक्षण प्रदान करती है।
3. इसके द्वारा छात्रों में किसी वस्तु के सम्बन्ध में चिन्तन करने की शक्ति का विकास किया जाता है।
4. इसके प्रयोग से छात्र अपने भावों एवं विचारों को सुव्यवस्थित रूप में अभिव्यक्त करना सीख जाते हैं।
5. यह छात्रों में स्वतन्त्र अध्ययन करने की आदत का विकास करती है।
6. इसके द्वारा छात्र सामूहिक रूप से निर्णय करना सीख जाते हैं।
7. यह छात्रों को विषय-सामग्री का चयन एवं संगठन करना सिखाती है।

दोष—1. इस पद्धति के विपक्ष में यह कहा जाता है कि इसके द्वारा छात्र निरर्थक वाद-विवाद में पड़कर समय नष्ट करते हैं।
2. वाद-विवाद में कक्षा के कुछ ही छात्र प्रमुख रूप से क्रियाशील रहकर अन्य छात्रों को अवसर प्राप्त करने नहीं दे पाते हैं।
3. इससे शर्मीले तथा मन्द बुद्धि बालक समुचित लाभ नहीं उठा पाते हैं।
4. इसका समुचित संचालन उच्च कक्षाओं में ही सम्भव हो सकता है।

सुझाव : Suggestions—1. समस्या का चयन सहयोगी रूप से किया जाय।
2. समस्या शैक्षिक महत्त्व की हो। साथ ही कक्षा के लिए अर्थपूर्ण या उपयोगी हो।
3. सभी छात्रों को वाद-विवाद में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान किए जायें। इसके द्वारा अनौपचारिक वाद-विवाद नामक रूप का प्रयोग किया जाय।
4. विचारों की अभिव्यक्ति एवं उनके संगठन में छात्रों को सहायता प्रदान की जाय।
5. स्मृति की अपेक्षा तर्कों तथा निर्णयों पर बल दिया जाय।
6. छात्रों को निष्कर्षों एवं स्वतन्त्र निर्णयों के निर्माण में सहायता प्रदान की जाय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

10. समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि
Socialized Recitation Method

आधुनिक युग में कक्षा-कक्ष में समाजीकृत प्रक्रियाओं के प्रयोग की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है जिसके फलस्वरूप शिक्षण-शास्त्र में एक नवीन एवं गत्यात्मक विधि को स्थान मिला जो समाजीकृत अभिव्यक्ति के नाम से प्रसिद्ध है। वेस्ले का मत है कि समाजीकृत अभिव्यक्ति एक आदर्श है जो शिक्षण में ऐसे प्रयोग की कल्पना करता है जिसे कक्ष के सभी बालक सहयोग तथा सद्भावना से ज्ञानार्जन कर सकें। इसके द्वारा कक्षा के पर्यावरण की औपचारिकता को समाप्त किया जाता है और उसके स्थान पर स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है, जिसमें बालक अपनी प्रकृति, रुचि तथा सहयोग के साथ ज्ञानोपार्जन करता है।

बाइनिंग तथा बाइनिंग ने लिखा है—"समाजीकृत अभिव्यक्ति को सामाजिक विचार-विमर्श कहा जा सकता है।" समाजीकृत अभिव्यक्ति की शुद्ध परिभाषा के सम्बन्ध में मतभेद है। कुछ इसको संकुचित रूप में परिभाषित करते हैं। उनका विचार है समाजीकृत अभिव्यक्ति वह प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपना भार सम्पूर्ण कक्षा या छात्रों की समिति को सौंपकर स्वयं को कक्षा की कार्यवाही से भार-मुक्त कर लेता है। कुछ विद्वान् इसको उदार दृष्टिकोण से देखते हैं। उनके दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करते हुए बाइनिंग तथा बाइनिंग ने लिखा है—"कोई भी कक्षा-सत्र जो एक वर्ग के रूप में सामूहिक चेतना तथा वैयक्तिक उत्तरदायित्व का प्रदर्शन करे, समाजीकृत अभिव्यक्ति है।"[1]

समाजीकृत अभिव्यक्ति विधि का प्रयोग—बाइनिंग तथा बाइनिंग ने इस विधि के प्रयोग के अधोलिखित रूप बतलाये हैं—

(1) **औपचारिक वर्ग-योजना : Formal Group Plan**—इसके अन्तर्गत छात्र अपने को व्यवस्थित करके कार्य आरम्भ करते हैं। जिस प्रकार वयस्क अपने क्लब, कौंसिल तथा सीनेट बनाकर किसी समस्या को व्यवस्थित ढंग से हल करते हैं, उसी प्रकार छात्र भी अपने को संगठित करके निर्धारित समस्याओं पर विचार-विमर्श करते हैं। इस रूप में छात्र निर्धारित नियमों के अनुसार अपनी कार्यवाही चलाते हैं। इसमें छात्र अध्यक्ष की आज्ञा प्राप्त किए बिना अपने प्रस्ताव, विचार तथा सुझाव नहीं रखते हैं। साथ ही वे उसी को सम्बोधित करके बोलते हैं।

(2) **अनौपचारिक वर्ग-योजना : Informal Group Plan**—इसके अन्तर्गत कोई व्यवस्थित योजना नहीं होती है। छात्र तथा शिक्षक स्वच्छन्द रूप से किसी भी समस्या पर विचार-विमर्श कर सकते हैं।

---

1. "Any class session that exhibits group consciousness and feeling of individual responsibility towards one group is a socialized recitation"—**Bining and Bining** : *Teaching the Social Studies in Secondary School*, pp. 130-31.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) आत्मनिर्देश वर्ग-योजना : Self-directing Group Plan—यह उच्च कक्षाओं के लिए ही उपयोगी है। इसमें शिक्षक का स्थान गौण है। इसमें छात्र ही समस्या चयन एवं उसके समाधान के लिए विचार-विमर्श करते हैं। शिक्षक केवल मार्ग-प्रदर्शक के रूप में कार्य करता है।

(4) सेमिनार वर्ग-योजना : Seminar Group Plan—इसके अन्तर्गत कक्षा को विभिन्न वर्गों में बाँट दिया जाता है और वे समस्या के विभिन्न पक्षों पर विचार करते हैं। ये वर्ग सम्पूर्ण कक्षा के समक्ष समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित रिपोर्टों पर विचार करते हैं और विचार-विमर्श के उपरान्त अन्तिम निर्णय लेते हैं। अन्त में सामूहिक रूप से रिपोर्ट तैयार की जाती है।

समाजीकृत अभिव्यक्ति-विधि के गुण एवं दोष : Merits & Demerits of Socialized Recitation Method

गुण—1. छात्र वर्ग-योजना बनाना सीख जाते हैं।
2. छात्र वाद-विवाद में भाग लेना सीख जाते हैं।
3. यह विधि छात्रों को नेतृत्व तथा पहलकदमी में प्रशिक्षण प्रदान करती है।
4. छात्र आत्म-निर्णय करना सीख जाते हैं।
5. इसके द्वारा छात्रों में सहयोग की भावना का विकास किया जाता है।
6. यह छात्रों की आत्मभिव्यक्ति के लिए अवसर प्रदान करती है।
7. यह छात्रों को चिन्तन करने के लिए तत्पर बनाती है।
8. इसके द्वारा आत्म-निर्देशन पर बल दिया जाता है।
9. छात्र सभा-संचालन, नियोजन तथा अपने विचारों एवं निर्णयों को क्रमबद्ध एवं लिखित रूप में प्रस्तुत करने की कला को सीख जाते हैं।
10. इसके प्रयोग से छात्र सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेते हैं।

दोष—1. यह विषय-वस्तु पर समुचित अधिकार (Adequate mastery) करने के लिए उपयुक्त नहीं है। —Bining & Bining
2. इसके प्रयोग से छात्र व्यर्थ के वाद-विवाद में समय नष्ट करते हैं।
3. इसके विपक्ष में कहा जाता है कि कुछ छात्र ही सम्पूर्ण कार्य को संचालित करते हैं। अन्य छात्रों को कोई लाभ नहीं होता।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What is the Source-Method in the teaching of history? How would you utilize it in teaching a lesson in history? Give examples. —(A. U., 1965)

इतिहास-शिक्षण में सूत्र-पद्धति क्या है? आप इतिहास के किसी पाठ को पढ़ाने में इसका किस प्रकार प्रयोग करेंगे? उदाहरण सहित समझाइये।

2. Discuss the possibilities and limitations of the Source-Method of teaching history at the Higher Secondary School Stage. Give examples. —(A. U.; 1961. P. U., 1970)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उच्चतर-माध्यमिक स्तर पर सूत्र-पद्धति के प्रयोग की सम्भावनाओं एवं सीमाओं की उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

3. What are the various methods of teaching history employed at the Higher Secondary Stage ? Discuss the merits and demerits of any two methods. —(A. U., 1962)

उच्चतर-माध्यमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण की किन-किन विधियों का प्रयोग किया जाता है ? किन्हीं दो विधियों के गुण एवं दोषों की विवेचना कीजिए।

4. What method would you employ for the teaching of history at the Higher Secondary Stage ? In what respects will the method differ from that used at the Junior High School Stage ? —(A. U., 1964)

उच्चतर-माध्यमिक स्तर पर आप इतिहास के अध्ययन के लिए किस विधि का प्रयोग करेंगे ? यह विधि जूनियर हाईस्कूल स्तर पर प्रयुक्त की जाने वाली विधि से किन क्षेत्रों में भिन्न होगी ?

5. Make a case for the biographical approach to the teaching of history at Junior Basic Stage. Also, discuss the criteria that should govern the selection of biographies. —(Raj. B. Ed., 1964)

जूनियर बेसिक स्तर पर इतिहास के अध्यापन के लिये जीवन-गाथा पद्धति की उपयुक्तता को स्पष्ट कीजिए। इसके साथ ही यह भी बताइये कि जीवन-गाथाओं के चयन में आप किन बातों को ध्यान में रखेंगे ?

6. What is Story-Telling Method ? At what stage of school instruction will you use it and how ? Give illustrations. —(Udaipur, B. Ed., 1967)

कहानी पद्धति क्या है ? किन कक्षाओं को पढ़ाने में आप इस विधि का उपयोग करेंगे तथा किस प्रकार ? स्पष्ट कीजिए।

7. Name the different methods of teaching history and discuss in detail one of the methods used by you in teaching history. —(A. U., 1969, '71, '73, '76)

इतिहास-शिक्षण की विभिन्न विधियों के नाम लिखिए। इनमें से किसी एक विधि का, जिसका प्रयोग आपने किया हो, विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

8. What is the difference between method and technique ? Discuss any one of the methods of teaching history which may be suitable for High School Classes ? —(A. U., 1974, '77)

विधि तथा प्रविधि में क्या अन्तर होता है ? इतिहास-शिक्षण में किसी एक विधि का वर्णन कीजिए, जो हाईस्कूल कक्षाओं के लिए उपयुक्त हो।

9. Write short note on 'Source Method'. —(A. U., 1980, '82)

'स्रोत विधि' पर संक्षिप्त नोट लिखिये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में जो सत्य हों उनके समक्ष 'हाँ' तथा असत्य के समक्ष 'नहीं' लिखिये—

(i) विधि की एक सामान्य संरचना होती है।........

(ii) कथा विधि में समस्याओं को सुलझाया जाता है।........

(iii) कथावाचक को निजत्व की भावना से ग्रसित होना अनिवार्य है।....

(iv) कथावाचक ऐतिहासिक कहानियों को कालक्रमानुसार सुनाये।........

(v) स्रोत भूतकालीन घटनाओं द्वारा छोड़े गये शेषचिन्ह हैं।........

(vi) स्मारक सम्बन्धी स्रोतों के अन्तर्गत स्तम्भों, चट्टानों, ताम्रपत्रों आदि के लेख एवं मूर्तियाँ आती हैं।........

(vii) साहित्यिक स्रोतों के अन्तर्गत भवन, बर्तन आदि आते हैं।........

(viii) मौलिक स्रोतों में फरमान, सिक्के, स्मारक आदि आते हैं।........

(ix) स्रोत मौखिक पाठों की पूर्ति में सहायक होते हैं।........

(x) पाठ्य-पुस्तक विधि द्वारा छात्रों को विषय-वस्तु का ज्ञान व्यवस्थित रूप से प्रदान किया जाता है।........

(xi) प्रयोगशाला विधि के प्रयोग में शिक्षक कार्यों का निर्धारण करता है।........

(xii) समस्या विधि विमर्शी चिन्तन की प्रक्रिया है।........

(xiii) योजना विधि का प्रतिपादन ड्यूवी द्वारा किया गया है।........

(xiv) योजना-विधि में छात्रों की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं को स्थान प्राप्त है।........

(xv) व्याख्यान-विधि में शिक्षक छात्रों के समक्ष ऐसी परिस्थितियों को प्रस्तुत करता है जिससे छात्र अपनी योजना का चयन कर सके।........

(xvi) व्याख्यान विधि में शिक्षक औपचारिक रूप से नियोजित रूप में किसी प्रकरण पर भाषण देता है।........

(xvii) वाद-विवाद विधि में विचार-विमर्श के लिए समस्या का प्रस्तुतीकरण छात्रों द्वारा किया जाता है।........

(xviii) समाजीकृत अभिव्यक्ति को सामाजिक विचार-विमर्श कहा जा सकता है।........

(xix) इतिहास शिक्षण में सूत्र विधि का महत्त्व है।........

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उनके समक्ष कोष्ठकों में लिखे शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर कीजिए—

(i) खण्ड विधि का प्रतिपादन....ने किया। (मेरिया मॉण्टेसरी पार्क-हर्स्ट, मिस एम० रीवस)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ii) योजना विधि.........के सिद्धान्तों पर आधारित है। (आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रयोजनवाद, प्रकृतिवाद)

(iii) योजना विधि का प्रतिपादन.........ने किया। (जॉन ड्यूवी, डब्ल्यू० एच० किलपैट्रिक, विलियम जेम्स, चार्ल्स पीयर्स)

(iv) समस्या विधि में.........निष्कर्ष निकलवाये जाते हैं। (सामाजिक, नैतिक, मानसिक, सौन्दर्यात्मक)

(v) वाद-विवाद एक शैक्षिक.........क्रिया है। (वैयक्तिक, सामूहिक)

निर्देश—सही विकल्प को छाँटिये—

1. स्रोत पद्धति द्वारा

(i) भावी वातावरण

(ii) वर्तमानकालीन वातावरण

(iii) अतीतकालीन वातावरण

(iv) तत्कालीन वातावरण का निर्माण किया जाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11

इतिहास-शिक्षण की प्रविधियाँ

TECHNIQUES OF TEACHING HISTORY

"All techniques should be in line with the democratic process and relate to the goals desired in the study of a topic. Techniques are employed for getting the learning under way with guidance from the teacher. They should be selected as a means of serving the best purpose of a particular time with the resultant of growth for the individual." —*M. P. Moffatt.*

विषय-प्रवेश

गत अध्याय में उन विधियों का वर्णन किया गया है जो इतिहास-शिक्षण के लिए प्रयोग में लायी जाती हैं। इन विधियों के अन्तर्गत कुछ विशिष्ट प्रविधियों का प्रयोग इतिहास के अध्ययन में किया जाता है। ये प्रविधियाँ शिक्षण में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती हैं। विभिन्न प्रविधियाँ विभिन्न उद्देश्यों के लिए भिन्न-भिन्न अवसरों पर प्रयोग में लायी जाती हैं। वस्तुत: इन सबका अभिप्राय ज्ञानार्जन को प्रभावशाली, ग्राह्य, बोधगम्य, सरल एवं रोचक बनाना होता है।

इतिहास-शिक्षण की प्रविधियाँ

इतिहास-शिक्षण में अधोलिखित प्रविधियाँ प्रयोग में लायी जाती हैं—

(1) प्रश्न प्रविधि (Questioning Technique)
(2) कथन प्रविधि (Narration Technique)
(3) अभ्यास प्रविधि (Drill Technique)
(4) परीक्षा प्रविधि (Examination Technique)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(5) उदाहरण प्रविधि (Illustration Technique)
(6) नाटकीय प्रविधि (Demonstration Technique)
(7) कार्य-निर्धारण प्रविधि (Assignment Technique)

1. प्रश्न प्रविधि

इतिहास-शिक्षण में प्रश्न-प्रविधि का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। परन्तु कुछ विद्वान् इसको एक स्वतन्त्र विधि के रूप में ग्रहण करते हैं। परन्तु यह साधन के रूप में सभी विधियों में प्रयुक्त की जाती है। इस कारण इसको एक प्रविधि के रूप में स्वीकार करना अधिक उचित है। इसके द्वारा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावोत्पादक बनाया जाता है। प्रश्नों का परम्परागत ध्येय—बालक के ज्ञान को जाँचना था, परन्तु आधुनिक शैक्षिक प्रक्रिया में प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं तथा इस प्रविधि के द्वारा बहुत-से प्रयोजनों की पूर्ति होती है। प्रश्नों के मुख्य प्रयोजनों को नीचे दिया जा रहा है—

1. छात्रों में कार्य के प्रति कौतूहल एवं रुचि जाग्रत करना।
2. सीखने की प्रक्रिया में इनके द्वारा पथ-प्रदर्शन करना।
3. अन्वेषण तथा अनुसन्धान के लिए प्रोत्साहित करना।
4. कार्य के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालना।
5. छात्रों के अर्जित ज्ञान तथा उन्नति को मापना।
6. समस्याओं को समझने के लिए बालकों के मस्तिष्क को तत्पर बनाना।
7. मौखिक रूप में अभिव्यंजना-शक्ति का विकास करना।
8. छात्रों के दोषों तथा कठिनाइयों का पता लगाना।
9. वैयक्तिक शिक्षा प्रदान करना।
10. विचार-प्रक्रिया को प्रोत्साहित एवं उद्दीप्त करना।
11. छात्रों के ज्ञान को पुनर्विलोकन तथा प्रयोग के लिए अवसर प्रदान करना।
12. निर्धारित कार्य के लिए प्रेरणा प्रदान करना।
13. छात्रों की आवश्यकताओं, अभिरुचियों तथा तत्कालीन समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करना।

प्रश्नों का वर्गीकरण

सामान्यतः प्रश्नों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है—
(क) मानसिक प्रक्रिया, और (ख) शिक्षण प्रक्रिया।

(क) मानसिक प्रक्रिया—इसके आधार पर हम प्रश्नों का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में कर सकते हैं। इनके द्वारा मानसिक प्रक्रियाएँ उत्तर देते समय उत्तेजित एवं प्रखर होती हैं—

1. स्मृत्यात्मक प्रश्न; 2. तर्कपूर्ण प्रश्न; 3. सूचनात्मक प्रश्न; 4. परीक्षात्मक प्रश्न; 5 तुलनात्मक प्रश्न; 6. व्याख्यात्मक प्रश्न; 7. निर्णयात्मक प्रश्न; 8. विश्लेषणात्मक प्रश्न।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ब) शिक्षण-प्रक्रिया—इसके आधार पर हम प्रश्नों का वर्गीकरण इस प्रकार से कर सकते हैं—(1) प्रस्तावनात्मक प्रश्न; (2) विकासात्मक प्रश्न; (3) पुनरावृत्ति प्रश्न।

इतिहास-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रश्नों के प्रकार एवं लक्षण

(अ) प्रस्तावनात्मक प्रश्न—ये प्रश्न छात्रों के नवीन ज्ञान को पूर्व-ज्ञान से सम्बन्धित करने की दृष्टि से पूछे जाते हैं। दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि इनका मुख्य ध्येय छात्रों के पूर्व ज्ञान की परीक्षा लेना होता है; उदाहरणार्थ—

'पानीपत के तृतीय युद्ध' नामक प्रकरण में प्रस्तावनात्मक प्रश्न इस प्रकार पूछे जा सकते हैं—

1. पानीपत का प्रथम युद्ध' किन-किन शक्तियों में हुआ था ? (बाबर तथा इब्राहीम)
2. इस युद्ध का क्या परिणाम हुआ था ? (मुगल साम्राज्य की स्थापना)
3. इस मैदान में दूसरा युद्ध किन-किन के बीच हुआ था ? (अकबर तथा हेमू)
4. इस युद्ध का क्या परिणाम निकला ? (मुगल साम्राज्य की नींव को दृढ़ किया)

इसके पश्चात् शिक्षक अपने उद्देश्य को छात्रों के समक्ष स्पष्ट करेगा—

"आज हम इसी मैदान में हुए तीसरे युद्ध के विषय में पढ़ेंगे, जिसके द्वारा मुगल साम्राज्य की नींव हिल गई।"

(ब) विकासात्मक प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्नों की सहायता से प्रस्तावित पाठ को विकसित किया जाता है। उपर्युक्त प्रस्तावित प्रकरण में इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा पाठ को विकसित किया जा सकता है; यथा—

1. समुद्रगुप्त दिग्विजय करने के लिए किस दिशा से किस दिशा की ओर गया ? (उत्तर से दक्षिण को)
2. अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति मलिक काफूर द्वार समुद्र तक जीतने के लिए किस दिशा से किस दिशा की ओर गया ? (उत्तर से दक्षिण को)
3. औरंगजेब मराठा शक्ति को समाप्त करने के लिए किस दिशा से किस दिशा की ओर गया ? (उत्तर से दक्षिण को)
4. इन उदाहरणों से आप क्या निष्कर्ष निकालते हो ? (उत्तर के निवासी दक्षिणवासियों पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे।)

इन प्रश्नों के पश्चात् अध्यापक अपने कथन द्वारा यह बतायेगा कि पानीपत के तृतीय युद्ध के कुछ समय पूर्व से दक्षिण निवासियों ने उत्तरी भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए प्रयास करना प्रारम्भ किया।

5. उस समय दक्षिण में कौन-सी शक्ति सबसे अधिक प्रबल थी ?
6. मराठा शक्ति का संचालन किसके नेतृत्व में हो रहा था ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(स) विचारात्मक प्रश्न—इन प्रश्नों के द्वारा छात्रों के मस्तिष्क को वि
के लिए क्रियाशील बनाया जाता है। उपर्युक्त प्रस्तावित प्रकरण में अधोलिखित
पूछा जा सकता है—

1. इस दशा में नजीब खाँ तथा मराठों में कैसे सम्बन्ध हो सकते थे?

(द) पुनरावृत्ति प्रश्न—ऐसे प्रश्न पाठ की आवृत्ति में सहायक सिद्ध होते
ऐसे प्रश्नों को पाठ की प्रत्येक अन्विति के पश्चात् पूछा जाता है। इनके द्वारा
के प्रमुख तथ्यों को दोहराया जाता है। दूसरे, इनके द्वारा छात्रों को पाठ की
बातों को समझने एवं आत्मसात् करने का अवसर प्रदान किया जाता है। उदा
के लिए, पानीपत के तृतीय युद्ध की विवेचना के उपरान्त अधोलिखित प्रश्न दि
सकते हैं—

1. अब्दाली को भारत पर आक्रमण करने के लिए किसने बुलाया था?
2. नजीब खाँ ने अब्दाली को क्यों बुलाया था ?
3. राजपूतों ने मराठों का साथ क्यों नहीं दिया था ?
4. शुजाउद्दौला ने भाऊ का साथ क्यों नहीं दिया था ?
5. इस युद्ध का मराठा शक्ति पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(य) परीक्षात्मक प्रश्न—इसके द्वारा छात्रों के अर्जित ज्ञान की परीक्षा
जाती है। इनका ध्येय यह जानना होता है कि बालकों ने पठित वस्तु को किस
तक आत्मसात् कर लिया है; उदाहरण के लिए—उपर्युक्त प्रस्तावित प्रकरण
विवेचना के उपरान्त इस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं—

1. पानीपत का तृतीय युद्ध किन-किन शक्तियों में हुआ था ?
2. इस युद्ध के क्या कारण थे ?
3. इस युद्ध के क्या परिणाम निकले ?

(र) समस्यात्मक प्रश्न—इस प्रकार के प्रश्न पाठ के प्रारम्भ या मध्य में
जा सकते हैं। प्रारम्भ में इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा छात्रों के समक्ष एक
उत्पन्न कर दी जाती है, जिससे बालकों का मस्तिष्क उसके समाधान के लिए उ
हो जाता है; उदाहरणार्थ—

1. गुप्तकाल को स्वर्णकाल क्यों कहा जाता है ?
2. अकबर को महान् क्यों कहा जाता है ?
3. सन् 1857 का सिपाही विद्रोह प्रथम स्वतन्त्रता संगाम के नाम से
   पुकारा जाता है ?

प्रश्न-विधि में ध्यान देने योग्य बातें

(1) प्रश्न निश्चित, सरल एवं संक्षिप्त होने चाहिए। दूसरे शब्दों में
सकते हैं कि प्रश्नों की शब्दावली निश्चित एवं सरल होनी चाहिए। शब्दाव
बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए; उदाहरणार्थ—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बाबर की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर कौन बैठा ? परन्तु इसको इस प्रकार न पूछा जाना चाहिए—जब बाबर मर गया तो क्या तुम जानते हो कि गद्दी पर कौन बैठा, शीघ्र बताओ ?

(2) प्रश्नों की भाषा बालक के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

(3) प्रश्न बालकों की आयु एवं योग्यता के अनुकूल होने चाहिए।

(4) प्रश्न का एक मुख्य अभिप्राय हो।

(5) प्रश्न समस्त छात्रों को चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहन दे, चाहे वह एक से ही पूछा जाय।

(6) प्रश्न एक-दूसरे से सम्बन्धित होने चाहिए।

(7) प्रश्न एक विचार के सम्बन्ध में ही हों, उदाहरणार्थ—गुप्तकाल एवं शाहजहाँ के काल को स्वर्णयुग क्यों कहा गया है ? ऐसे प्रश्न नहीं पूछे जाने चाहिए क्योंकि इसमें दो विचारों को एक साथ पूछा गया है। इन विचारों पर इस प्रकार प्रश्न किए जाने चाहिए --गुप्तकाल स्वर्णयुग क्यों कहा जाता है ? शाहजहाँ का काल मुगल वंश का स्वर्णयुग क्यों कहलाता है ?

(8) प्रश्न को इस प्रकार का रूप न प्रदान किया जाय जिससे उसका उत्तर निर्देशित हो जाय, उदाहरणार्थ—शिवाजी औरंगजेब की कैद से भाग गए थे, क्यों ठीक है न ?

(9) प्रश्नों में पाठ्य-पुस्तक की शब्दावली का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

(10) इतिहास-शिक्षण में निम्नलिखित प्रकार के प्रश्नों का प्रयोग नहीं करना चाहिए—

(अ) ऐसे प्रश्न, जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में आता हो, विकासात्मक स्तर पर नहीं पूछे जाने चाहिए क्योंकि इनके द्वारा छात्रों की मानसिक शक्तियों को सक्रिय नहीं बनाया जाता है। छात्र इनके उत्तर देने में अनुमान का अधिक प्रयोग करते हैं; उदाहरणार्थ—क्या अकबर हुमायूँ का बेटा था ? क्या फिरोज तुगलक ने जनता की भलाई के लिए नहरें, कुयें आदि खुदवाये थे ? क्या मुहम्मद-बिन-तुगलक ने ताँबे के सिक्के चलाये थे ?

(ब) प्रतिध्वन्यात्मक प्रश्न; उदाहरणार्थ—मुहम्मद-बिन-तुगलक ने दोआब में कर बढ़ाया था और जिन लोगों ने उसको देने में अपनी असमर्थता प्रकट की, उनको मौत के घाट उतार दिया गया। मुहम्मद-बिन-तुगलक ने किस क्षेत्र के लोगों पर अधिक कर लगाया ? उसने कर देने वालों के साथ कैसा व्यवहार किया ? उपर्युक्त बातों के पढ़ाने के तुरन्त बाद ही यदि उक्त प्रश्न पूछे गये तो वे 'प्रतिध्वन्यात्मक प्रश्न' कहलाते हैं।

(11) शिक्षक का प्रश्न करने का ढंग ऐसा होना चाहिए कि वह परिणामों की प्रभावोत्पादकता पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकाश डाले।

(12) प्रश्न पूरी कक्षा को सम्बोधित करके पूछे जाने चाहिए। प्रश्न करने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के उपरान्त किसी एक बालक को उत्तर देने के लिए नाम द्वारा सम्बोधित करना चाहिए। ऐसा नहीं होना चाहिए—अतुल तुम बताओ, अर्थात् उसको खड़ा करके तब प्रश्न नहीं करना चाहिए। दूसरे शब्दों में, अतुल तुम बताओ, "बाबर ने भारत पर कब आक्रमण किया ?" राम तुम बताओ, 'अशोक ने कलिंग युद्ध के उपरान्त किस बात की प्रतिज्ञा की ?" श्याम तुम बताओ, "तैमूर ने दिल्ली में कौन-कौन से अत्याचार किए ?"

(13) प्रश्नों का वितरण समस्त कक्षा में किया जाय जिससे छात्रों का व्यक्तिगत रूप से सहयोग प्राप्त किया जा सके। शिक्षक इस बात का भी ध्यान रखे कि उस छात्र से भी प्रश्न पूछे जायें जो कार्य में अरुचि दिखा रहा है। यह ठीक नहीं होगा प्रश्न केवल कुछ ही बालकों या आगे की पंक्ति में बैठने वाले छात्रों से ही पूछे जायें।

(14) प्रश्न पर्याप्त आत्म-विश्वास के साथ पूछे जाने चाहिए।

(15) प्रश्नों को दोहराना दोषपूर्ण है।

(16) प्रश्नों को स्वाभाविक ढंग से पूछना चाहिए।

(17) प्रश्न करने के उपरान्त बालकों को सोचने के लिए समय देना चाहिए।

(18) बालकों द्वारा दिए गए उत्तरों को शिक्षक द्वारा दोहराना दोषपूर्ण है।

2. कथन-प्रविधि

कथन के द्वारा बालक पर्याप्त मात्रा में ज्ञान अर्जित करता है। बालकों की रुचियों एवं उनकी सीखने की प्रक्रिया को इस प्रविधि के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। कथन का मुख्य लक्ष्य—छात्रों को किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का ज्ञान प्रदान करना है। इस प्रविधि के द्वारा वर्णित वस्तु या सामग्री को सरल, सुगम, स्पष्ट तथा सुबोध बनाया जा सकता है। प्रत्येक बात या तथ्य को प्रश्नों द्वारा बालकों से नहीं निकलवाया जा सकता है। अतः प्रश्नोत्तर प्रविधि की पूर्ति 'कथन' द्वारा की जाती है। जब न प्रश्न पूछने से तथा न व्याख्या करने से हमारा मन्तव्य सफल होता है, उस समय कथन हमारी सहायता करता है। सामाजिक विषय के शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग बहुत लाभप्रद होता है। इतिहास शिक्षक को इस प्रविधि का प्रयोग बड़ी सतर्कता एवं कुशलता के साथ करना चाहिए। शिक्षक को इस प्रविधि का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) कथन बालकों की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार होने चाहिए तथा शिक्षक कथन करते समय उनके अवधान विस्तार का ध्यान रखे।

(2) कथन अधिक लम्बे न हों तथा शिक्षक को उनके बाहुल्य पर भी रोक लगानी चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) कथन की भाषा तथा शैली छात्रों के मानसिक स्तर तथा आयु के अनुकूल होनी चाहिए।

(4) कथन करते समय शिक्षक को प्रश्नोत्तर प्रविधि तथा सहायक सामग्री का भी उपयोग करना चाहिए।

3. अभ्यास प्रविधि

यह प्रविधि थॉर्नडाइक (Thorndike) 'अभ्यास के नियम' पर आधारित है। इस नियम के अनुसार बालक किसी तथ्य की जितनी बार आवृत्ति करेगा, वह तथ्य उतना ही उसके मस्तिष्क में स्थायी बनेगा। इस प्रकार 'अभ्यास' शब्द का तात्पर्य पुनरावृत्यात्मक या आवृत्तिमूलक कार्यों से है जिसमें बिना किसी प्रयास के बालक अभिव्यक्ति करता है। एम० पी० मुफात का कहना है कि अभ्यास द्वारा बालकों में आदतों का निर्माण, कुशलताओं की प्राप्ति तथा उसको किसी परीक्षा के के लिए तत्पर बनाया जा सकता है। इतिहास-शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग बहुत लाभप्रद है। इतिहास-शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग किसी प्रकरण की रूपरेखा को ग्रहण करने, किसी प्रश्न के उत्तर को स्मरण करने, मानचित्र, समय-रेखा, समय-ग्राफ आदि का निर्माण करने के लिए कर सकते हैं। तिथियों को स्मरण करने हेतु इस प्रविधि का प्रयोग सरलता से किया जा सकता है।

4. परीक्षा प्रविधि

यह प्रविधि पाठ्यक्रम के समस्त विषयों के शिक्षण में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके द्वारा बालकों के अर्जित ज्ञान की परीक्षा ली जाती है कि उसने सामग्री को किस सीमा तक आत्मसात् कर लिया है। इतिहास-शिक्षक इसके प्रयोग में लिखित तथा मौखिक प्रश्नों की सहायता लेता है इसका सबसे प्रमुख लाभ यह होता है कि शिक्षक को अपने पाठ की सफलता का ज्ञान हो जाता है, तथा छात्र भी अपनी कमियों की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इस प्रविधि को प्रयोग में लाते समय इतिहास-शिक्षक को अधोलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए—

(1) प्रश्नों में अधिकाधिक वस्तुनिष्ठता लायी जाय।

(2) प्रश्न सरल भाषा में प्रस्तुत किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रश्न संक्षिप्त नपे-तुले एवं स्पष्ट हों।

(3) छात्रों की कठिनाइयों एवं अशुद्धियों को दूर करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को उनकी पुस्तिकाओं में टिप्पणी लिख देनी चाहिए।

(4) प्रश्न प्रस्तावित पाठों के अधिकाधिक क्षेत्र पर आधारित होने चाहिए, अर्थात् कुछ मुख्य पाठों पर आधारित नहीं हों, वरन् उनका क्षेत्रफल विस्तृत हो।

(5) प्रश्नों का अंकन निष्पक्ष भाव से किया जाना चाहिए, अर्थात् उसमें पक्षपात के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

5. उदाहरण-प्रविधि

मौखिक शिक्षण में इस प्रविधि का विशेष महत्त्व है। उदाहरणों के द्वारा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षक पाठ को रोचक तथा ग्राह्य बनाने में समर्थ होता है। आधुनिक शिक्षा में उदाहरणों पर अधिक बल दिया जा रहा है। इनके द्वारा छात्रों की रुचि एवं ध्यान को आकृष्ट करने में सहायता मिलती है। इनके प्रयोग से छात्रों का मानसिक विकास किया जा सकता है, इस कारण हमारी सरकार इनके ऊपर बहुत ध्यान दे रही है। हमारा केन्द्रीय शिक्षा-विभाग शिक्षालयों को विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनात्मक उदाहरण प्रदान कर रहा है, जिसके द्वारा पाठ्य-वस्तु को सरल एवं सुबोध बनाया जाता है। इतिहास-शिक्षण में उदाहरणों का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(क) **मौखिक उदाहरण**—इन उदाहरणों का उपयोग सूक्ष्म तथा सामान्य सिद्धान्तों की व्याख्या करने के लिए होता है। इतिहास-शिक्षण को इनका उपयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे सरल एवं ग्राह्य हों तथा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से सम्बन्धित हों।

(ख) **प्रदर्शनात्मक उदाहरण**—इनका उपयोग बालकों की कल्पना-शक्ति को विकसित करने के लिए किया जाता है। इतिहास-शिक्षण में इनका बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि ये बालकों के अवधान को प्रत्यक्ष रूप से आकर्षित करते हैं। इन उदाहरणों द्वारा विषय-वस्तु को स्थूल रूप प्रदान किया जाता है। इनके प्रयोग से इतिहास को सजीव बनाया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि उदाहरण अतीत को वास्तविक बनाने में बहुत सहायक हैं। इनके द्वारा इतिहास की प्रयोगशाला या विशेष कक्ष में प्रभावोत्पादक एवं उपयुक्त वातावरण स्थापित किया जा सकता है। इतिहास-शिक्षण में अधोलिखित प्रदर्शनात्मक उदाहरण प्रयोग में लाये जा सकते हैं :

(1) चित्र;	(2) प्रतिरूप;
(3) मानचित्र;	(4) चार्ट;
(5) रेखाचित्र;	(6) समय-रेखाएँ, समय-ग्राफ आदि।

(ग) **लाक्षणिक उदाहरण**—इनके अन्तर्गत वे उदाहरण आते हैं, जो ऐतिहासिक घटनाओं को समझने के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न ढाँचों के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, ये सांकेतिक होते हैं, क्योंकि इनके द्वारा तथ्यों के सम्बन्धों को प्रदर्शित किया जाता है।

उपर्युक्त उदाहरणों का विस्तृत विवेचन पृथक् रूप से अध्याय 13 में किया जायेगा।

6. नाटकीय प्रविधि

इस प्रविधि के प्रयोग से छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षण में इस प्रविधि का प्रयोग आधुनिकतम है। इतिहास-शिक्षण में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रविधि के उपयोग के लिए बहुत-से अवसर प्राप्त हैं। इस प्रविधि के प्रयोग से पाठ की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचना हो जाती है। इसमें छात्र क्रियाशील रहते हैं। इसके द्वारा बालकों की इन्द्रियों को शिक्षित एवं प्रफुल्लित बनाया जाता है। इसके द्वारा कर्णेन्द्रिय, नेत्रों तथा हाथों को शिक्षित किया जाता है। इस प्रकार इसमें हाथ तथा मस्तिष्क की शिक्षा के समन्वय के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त इसके द्वारा छात्रों में विषयग्राह्य, आत्मविश्वास तथा अभिव्यंजना-शक्ति विकसित की जाती है। इसके द्वारा उनकी लज्जाशील प्रवृत्ति एवं झिझक का निवारण हो जाता है तथा बालक बोलने की कला भी सीख लेते हैं। इसका विस्तृत विवेचन एक पृथक् अध्याय में किया जायगा।

7. कार्य-निर्धारण प्रविधि

शिक्षण-कला में कार्य-निर्धारण एक प्रयोगात्मक प्रविधि है। सामान्यतः इसका प्रयोग पाठ की समाप्ति के उपरान्त किया जाता है परन्तु इसका प्रयोग पाठ के प्रारम्भ, विकास तथा पुनरावृत्ति के समय भी किया जा सकता है। इतिहास-शिक्षण में कार्य-निर्धारण प्रविधि का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा छात्रों के सीखने के लिये विभिन्न प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किए जाते हैं। साथ ही यह शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है।

इतिहास में कार्य-निर्धारण—इतिहास में पाठ के तीनों स्तरों—प्रस्तावना, विकास तथा मूल्यांकन—पर कार्य-निर्धारण किया जा सकता है। प्रारम्भिक स्तर पर कार्य-निर्धारण द्वारा इकाई को प्रस्तावित किया जा सकता है और अर्जित ज्ञान तथा नवीन सम्बन्धों या ज्ञान की खाई को पाटा जा सकता है। विकासात्मक स्तर पर कार्य-निर्धारण का प्रमुख अभिप्राय है—छात्रों को नवीन तथ्यों को खोजने के लिए प्रेरित करना या किसी समस्या या विवाद को, जो उनके समक्ष आती है, सुलझाना। इस स्तर पर सामाजिक जीवन, आर्थिक समस्याओं तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों को इसके माध्यम से प्रभावशाली ढंग से पढ़ाया जा सकता है। मूल्यांकन के स्तर पर उन क्रियाओं को इसके अन्तर्गत रखा जाता है जिनसे उनकी ज्ञानोपलब्धि की जाँच के साथ-साथ विभिन्न कुशलताओं का विकास किया जा सके; उदाहरणार्थ—मानचित्र, चार्ट तथा कार्टूनों का निर्माण, समय-रेखाएँ, समय-ग्राफ आदि का निर्माण, अभिनय कराना, ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण आदि।

उत्तम कार्य-निर्धारण की विशेषताएँ : Characteristics of a Good Assignment

1. कार्य चुनौतीपूर्ण होना चाहिए।
2. विचार प्रक्रिया को उद्दीप्त करने वाला होना चाहिए।
3. कार्य रोचक हो अर्थात् छात्रों की रुचियों पर आधारित हो।
4. कार्य त्रिविध रूपों—लिखित कार्य, मौखिक कार्य, अभिव्यक्तिकरण से सम्बन्धित कार्य, रचनात्मक कार्य—में होना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

छात्राध्यापकों की सुविधा के लिए 'सिन्धु घाटी की सभ्यता' नामक पाठ से सम्बन्धित विविध कार्यों को नीचे दिया जा रहा है—

1. मानचित्र का निर्माण—सिन्धु नदी तथा खुदाई के स्थानों—हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो को प्रदर्शित कराना।
2. अजायबघर दिखाने के लिए ले जाना वहाँ खुदाई से प्राप्त ईंटों, मुहरों, बर्तनों, मूर्तियों आदि को दिखाना।
3. सिन्धु घाटी की सभ्यता से सम्बन्धित चित्रों, खिलौनों, मुहरों आदि का संग्रह करना।
4. सिन्धु घाटी की सभ्यता की मेसोपोटामिक सभ्यता से तुलना कराना।
5. हड़प्पा में बच्चों के सुखद जीवन तथा व्यापारी की समृद्धि के विषय में काल्पनिक लेख लिखना।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What are special techniques to be used in the teaching of History ? Illustrate.

   इतिहास-शिक्षण में किन विशेष प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सही विकल्प छाँटो—

   नाटकीय प्रविधि का सबसे बड़ा लाभ है—

   (अ) अध्यापक के समय की बचत।

   (ब) विचारों को संगठित करने में सहायक।

   (स) छात्रों की लज्जाशील प्रवृत्ति एवं झिझक को दूर करना।

   (द) छात्रों को चुनौतीपूर्ण कार्य प्रदान करना।

2. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की उपयुक्त शब्दों द्वारा पूर्ति कीजिए।

1. कार्यनिर्धारण एक········प्रविधि है।
2. नाटकीय प्रविधि द्वारा छात्रों की········शक्तियों का विकास किया जाता है।
3. प्रदर्शनात्मक उदाहरणों का प्रयोग बालकों की········शक्ति को विकसित करने के लिए किया जाता है।
4. प्रश्नों की भाषा········के मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए।
5. अभ्यास प्रविधि········के अभ्यास नियम पर आधारित है।
6. प्रश्नों को दोहराना········है।
7. प्रश्न········को सम्बोधित करके पूछे जाने चाहिए।
8. प्रश्नों की शब्दावली········एवं सरल होनी चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

12

विवादास्पद मामलों का शिक्षण

TEACHING OF CONTROVERSIAL ISSUES

विषय-प्रवेश

ज्ञान की अन्य शाखाओं की भाँति इतिहास भी विभिन्न विवादास्पद प्रश्नों से पूर्ण है। परन्तु इतिहास के विवादास्पद प्रश्न अपने ढंग के अनोखे हैं। क्योंकि सामाजिक विज्ञानों की अन्य शाखाओं की अपेक्षा इतिहास में तथ्यों के चयन, विश्लेषण एवं उनकी स्वीकृति की प्रक्रिया में आत्मगत तत्त्व (Subjective element) अधिक महत्त्वपूर्ण भाग लेता है।

विवादास्पद प्रश्न क्यों ?—प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति इतिहास में कोई भी व्यक्ति किसी परिकल्पना (Hypothesis) को पूर्णतः स्वीकृत या अस्वीकृत नहीं कर सकता है क्योंकि अतीत के विषय में हमारा ज्ञान सीमित है। इस सीमित एवं अनिश्चित सामग्री पर इतिहासकार अपने भवन का निर्माण करता है इसके अतिरिक्त अतीत के विषय में जो स्रोत प्राप्त हैं, वे कम हैं। साथ ही इतिहासकारों में इस बात पर मतभेद रहता है कि किस स्रोत पर विश्वास किया जाय और किस पर नहीं। इसके अतिरिक्त सभी इतिहासकार किसी निश्चित सूचना या स्रोत पर समान रूप से अपनी आस्था प्रकट नहीं करते हैं। इसलिए प्रत्येक इतिहासकार अपने दृष्टिकोण से स्रोतों का चयन एवं उनको अस्वीकृत करता है। अतः इन परिस्थितियों के फलस्वरूप विवादास्पद प्रश्नों को जन्म मिलता है।

विवादास्पद प्रश्नों के रूप—इतिहास में पाये जाने वाले विवादास्पद प्रश्नों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है—

(अ) तथ्यों से सम्बन्धित विवादास्पद प्रश्न।

(ब) तथ्यों के विश्लेषण के कारण उत्पन्न विवादास्पद प्रश्न।

(स) तथ्यों की प्रासंगिकता एवं महत्त्व से सम्बन्धित प्रश्न।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तीसरे प्रकार के विवादास्पद प्रश्न दूसरी श्रेणी के अन्तर्गत आ सकते हैं क्योंकि तथ्यों की उपयोगिता को आधार बनाकर इतिहासकार उनका विश्लेषण करता है।

(अ) तथ्यों से सम्बन्धित विवादास्पद प्रश्न—प्रथम प्रकार के विवादास्पद प्रश्नों को प्रकट करने के लिए भारतीय इतिहास से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

(i) आर्यों का आदि-स्थल।

(ii) महाभारत और रामायण का काल।

(iii) वेदों का रचना-काल।

(ब) तथ्यों के विश्लेषण के कारण उत्पन्न विवादास्पद प्रश्न—इस श्रेणी के अन्तर्गत अधोलिखित प्रकार के प्रश्न आते हैं—

(i) अकबर : एक राष्ट्रीय शासक।

(ii) 1857 का विद्रोह।

(iii) ब्रिटिश शासन का प्रभाव।

(iv) भारत के विभाजन का दायित्व।

विवादास्पद प्रश्नों की शिक्षण-पद्धति—विवादास्पद प्रश्नों के शिक्षण के लिए शिक्षक वाद-विवाद पद्धति का प्रयोग कर सकता है। क्रमबद्ध रूप से पढ़ाने के लिए शिक्षक को अधोलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है—

(क) विवाद—विवादास्पद प्रश्न क्या है? उसको स्पष्ट करना है।

(ख) विभिन्न मत—प्रश्न से सम्बन्धित विभिन्न मतों को बताना। वह छात्रों को इन विभिन्न मतों का अध्ययन करने के लिए तत्पर बनाये।

(ग) अधिकृत अभिलेखों, पुस्तकों, स्रोतों का अध्ययन—विवादपूर्ण प्रश्न तथा इसके सम्बन्ध में प्रचलित विभिन्न मतों को बताने के उपरान्त शिक्षक छात्रों को उन स्रोतों, पुस्तकों तथा लेखों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करें जिनमें विवादपूर्ण प्रश्न से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त होगी। इसी स्तर पर वह छात्रों को समकालीन इतिहासकारों द्वारा रचित ग्रन्थों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है।

(घ) सामूहिक क्रियायें—इस स्तर पर शिक्षक छात्रों को विद्यालय तथा उसके बाहर कुछ सामूहिक क्रियाओं को करने के लिए प्रोत्साहित करे। वह विद्यालय में विवादपूर्ण प्रश्नों पर सामूहिक (Panel) विचार-विमर्श या वाद-विवाद प्रतियोगिता करा सकता है। विद्यालय के बाहर वह छात्रों के समूहों से मौलिक स्रोतों, जहाँ कहीं वे उपलब्ध हैं, से सामग्री एकत्रित करा सकता है। विवादपूर्ण प्रश्न से सम्बन्धित विभिन्न अधिकृत विचारों को एकत्रित करा सकता है।

(च) निष्कर्ष—इस स्तर पर शिक्षक छात्रों को निष्कर्षों को निकालने या निर्णयों के निर्माण में सहायता देगा। वस्तुतः यह पद सबसे कठिन है क्योंकि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्तर पर छात्र तथ्यों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालेंगे। निष्कर्ष निकालना वस्तुतः तार्किक कौशल है। इस स्तर पर उसे छात्रों से ऐसे प्रश्न—विवाद क्या है? यह तथ्य विवादास्पद क्यों बन गया है? इसके सम्बन्ध में कौन-कौन से विरोधी प्रमाण हैं? इसमें कौन-सा अधिक निष्पक्ष एवं प्रामाणिक है? क्या विवादास्पद प्रश्न का समाधान हो चुका है? करने चाहिए। इस प्रकार के प्रश्नों से वह छात्रों को स्वयं निष्कर्ष निकालने के लिए तत्पर बना सकता है।

उदाहरण

विवादपूर्ण प्रकरण—"आर्यों का आदि-स्थान तथा उनका भारत आगमन।"

(अ) **अवबोध : Understanding**—इस प्रकरण द्वारा छात्रों को अधोलिखित बातों का ज्ञान कराया जाना चाहिए—

(क) विवादपूर्ण प्रश्न के शिक्षण में छात्रों को निम्नलिखित बातों से अवगत कराया जायगा—

(i) आर्य कौन थे?

(ii) उनका आदि-स्थान कहाँ था?

(iii) यदि वे भारत में बाहर से आये तो कब और कहाँ से आये?

(ख) छात्रों को उक्त प्रश्नों से सम्बन्धित तर्कों तथा सूचना-स्रोतों से अवगत कराया जायेगा।

(ग) छात्रों को स्वतन्त्रतापूर्वक अपने निष्कर्ष निकालने में सहायता देना।

(ब) **विषय-वस्तु तथा शिक्षण बिन्दु**—इसके अन्तर्गत अधोलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए—

(i) उक्त तीनों प्रश्नों के सम्बन्ध में प्रचलित सिद्धान्त तर्क एवं प्राप्त प्रमाणों का अध्ययन; उदाहरणार्थ—आर्यों के मूल निवास सम्बन्धी सिद्धान्त—(1) भारत के मूल निवासी, (2) ध्रुव प्रदेश के निवासी, (3) मध्य एशिया और योरोप के निवासी। इन सिद्धान्तों के प्रतिपादकों ने अपने-अपने मत के सम्बन्ध में जो तर्क एवं प्रमाण दिये हैं उनका अध्ययन। आर्यों के आगमन से सम्बन्धित तर्कों का अध्ययन।

(ii) पुरातत्व सम्बन्धी प्रमाण।

(iii) साहित्यिक प्रमाण।

(iv) भाषा विज्ञान सम्बन्धी प्रमाण।

(स) **अन्य क्रियायें**—शिक्षक छात्रों से इस पाठ से सम्बन्धित निम्नांकित क्रियायें करा सकता है—

(i) इस विवादपूर्ण प्रश्न के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित इतिहासकारों के मतों का संग्रह।

(ii) भाषा सम्बन्धी समानता को स्पष्ट करने वाले कुछ शब्दों का संग्रह।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iii) मानचित्र-निर्माण जिसमें आर्यों के मार्ग का प्रदर्शन हो।
(iv) वैदिक आर्यों के देवताओं की सूची तैयार करना।
(v) विवादपूर्ण प्रश्न के विभिन्न पक्षों पर कक्षा-कक्ष में वाद-विवाद करा[ना]

(द) मूल्यांकन—अध्ययन की गई सामग्री को छात्रों ने ग्रहण कर लिया या नहीं, इसको परखने के लिए शिक्षक निम्न प्रकार के प्रश्न कर सकता है—

(i) 'आर्य' शब्द का क्या अर्थ है?
(ii) 'आर्यों' के आदि-स्थान के सम्बन्ध में सबसे उचित सिद्धान्त कौन-[सा] है?
(iii) '2000 ई० पू० भारत में आर्यों का आगमन हुआ' इस सम्बन्ध [में] कौन-कौन से तर्क दिये जा सकते हैं?

विवादास्पद प्रश्नों का शिक्षण उच्चतर-माध्यमिक स्तर पर किया जा[ना] चाहिए क्योंकि इस स्तर के छात्रों का मानसिक विकास पर्याप्त मात्रा में [हो] चुकता है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What do you understand by Controversial Issues' in History? Give some examples of Controversial Issues' relating to India[n] History. How would the history teacher teach them in the class?
—(P. U., 1967)

आप विवादास्पद मामलों से क्या समझते हैं? भारतीय इतिहास से विवादास्[पद] प्रश्नों के कुछ उदाहरण दीजिए। इतिहास-शिक्षक इनको कक्षा में किस प्रका[र] पढ़ायेगा?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. सही विकल्प लिखिये—

तथ्यों से सम्बन्धित विवादास्पद प्रश्न हैं—
(i) 1857 का विद्रोह।
(ii) भारत छोड़ो आन्दोलन।
(iii) आर्यों का आदि स्थल।
(iv) मुहम्मद बिन तुगलक : एक पागल बादशाह।

2. विवादास्पद मामलों के शिक्षण के लिए सबसे उपयुक्त शिक्षण-विधि है।
(i) जीवनगाथा-विधि,
(ii) वाद-विवाद विधि,
(iii) कहानी विधि,
(iv) व्याख्या विधि।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

13

इतिहास-शिक्षण के उपकरण
AIDS OF TEACHING HISTORY

"Audio-visual materials play a significant part in the teaching of History. These aids include use of maps, chart, historical films, graphs, time-friezes, chronological and geneological tables, pictures of historical scenes, battle plans and exhibits of contemporary social and cultural life of the people."

—*T. S. Mehta*

विषय-प्रवेश

इतिहास-शिक्षण में शिक्षा के उपकरणों का बहुत अधिक महत्त्व है, क्योंकि इतिहास भूतकाल से सम्बन्धित है। अतीत प्रायः अस्पष्ट, अमूर्त तथा धूमिल होता है। इस कारण उसको स्पष्ट एवं सजीव बनाने के लिए उपयुक्त उपकरणों की आवश्यकता होती है। जानसन ने इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"इतिहास के सम्बन्ध में चाहे जो धारणा रहे तथा उसके शिक्षण के उद्देश्यों को चाहे जिस रूप में निर्धारित किया जाय, कक्षा-कक्ष में इतिहास को प्रभावशाली बनाने के लिए अतीत का वास्तविक रूप में प्रस्तुतीकरण ही मूलतः एक विकल्प है।" अतः इतिहास-शिक्षण को सजीव, गतिशील एवं रोचक बनाने के लिए शिक्षा के उपकरणों की नितान्त आवश्यकता है।

इतिहास-शिक्षण के उपकरण
Aids of Teaching History

इतिहास-शिक्षण को जिन उपकरणों के माध्यम से सजीव, रोचक, सरल तथा गतिशील बनाया जा सकता है, उनको अग्रलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(अ) स्रोत (Sources)
(ब) श्रव्य-दृश्य सामग्री (Audio-visual Aids)
(स) पाठ्य-पुस्तकें (Text-books)

(अ) स्रोत : Sources—इतिहास-शिक्षण के उपकरण के रूप में स्रोतों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जार्विस (Jarvis) का कथन है—"ऐतिहासिक स्रोत वह कच्चा माल है जिससे इतिहासकार अतीत की पुनर्रचना करता है।" इनके माध्यम से छात्रों को उस मौलिक सामग्री से परिचित कराया जाता है जो ऐतिहासिक विवरण का आधार होती है। यह परिचय छात्रों में ऐतिहासिक अभिवृत्ति का विकास करता है। इनके प्रयोग से छात्र ऐतिहासिक तथ्यों को अन्धविश्वास के कारण स्वीकार न करके तर्क एवं प्रमाणों पर आधारित करके स्वीकार करने लगते हैं। स्रोतों के आलोचनात्मक अध्ययन से छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क, निर्णय आदि मानसिक शक्तियों का विकास होता है। इनके प्रयोग से छात्र यथार्थता तथा सजीवता की अनुभूति करते हैं। स्रोत अनुकूल वातावरण का निर्माण करके छात्रों के लिए अतीत को सजीव बनाते हैं। इस सम्बन्ध में के० डी० घोष (K D. Ghosh) का कथन है—"अतीत के वातावरण तथा उसके तादात्म्य में सहायता देकर स्रोत इतिहास को छात्रों के लिए सजीव बनाते हैं।"

स्रोत छात्रों को ऐतिहासिक विधि से भी अवगत कराते हैं। इसके प्रयोग से छात्र तथ्यों की तुलना, समीक्षा, वर्गीकरण, विश्लेषण, सत्य निर्धारण, व्याख्या आदि करना सीख जाते हैं। इस प्रकार वे ऐतिहासिक प्रक्रिया से अवगत होकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में समर्थ होते हैं। स्रोतों को इतिहास-शिक्षण के उपकरण के रूप में प्रयुक्त करके किसी महत्त्वपूर्ण तथ्य की समुचित व्याख्या की जा सकती है। अतः हम कह सकते हैं कि इतिहास-शिक्षण में स्रोतों का उपकरण के रूप में विशेष महत्त्व है।

(ब) श्रव्य-दृश्य सामग्री : Audio-visual Aids—श्रव्य-दृश्य सामग्री मुद्रित अथवा लिखित शब्द के अतिरिक्त वे साधन हैं जो वस्तु विशेष या बिन्दु विशेष की स्पष्ट धारणा बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। वस्तुतः किसी वस्तु की स्पष्ट धारणा के निर्माण में उसकी प्रत्यक्ष अनुभूति महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। उदाहरणार्थ—हम सेव को देखकर, छूकर, सूँघकर तथा चखकर सबसे अच्छी तरह समझ सकते हैं परन्तु इस विशाल एवं जटिल संसार की प्रत्येक वस्तु का ज्ञान इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस प्रकार हमें उसे समझने के लिए प्रतिरूपों की सहायता लेनी पड़ती है। श्रव्य-दृश्य सामग्री द्वारा ही हमें इन प्रतिरूपों को प्रदान किया जाता है। इनको 'श्रव्य-दृश्य' इस कारण कहा जाता है, क्योंकि ये श्रवण तथा दर्शन की दो इन्द्रियों द्वारा ही प्रभावी होते हैं। श्रव्य-दृश्य सामग्री का सम्बन्ध केवल फिल्मों या फिल्म-पट्टियों (Films strips) से नहीं है वरन् इनमें श्यामपट या चाकबोर्ड, फ्लैनेल बोर्ड, बुलेटिन बोर्ड, चित्र, मानचित्र, मॉडल, टेपरिकार्डर, रेडियो प्रसारण, टेलीविजन, ग्रामोफोन रेकार्ड, नाटक, कठपुतलियों के तमाशे आदि आते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण : Classification of Audio-visual Aids—विभिन्न विद्वानों ने श्रव्य-दृश्य सामग्री को विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया है। इनमें से कुछ विद्वानों का वर्गीकरण नीचे दिया जा रहा है—

1. जार्विस (Jarvis) के अनुसार—जार्विस ने श्रव्य-दृश्य सामग्री का वर्गीकरण निम्नलिखित ढंग से किया है—

(i) मौखिक (Verbal)—कहानी, उदाहरण या दृष्टान्त आदि।

(ii) चित्र, रेखाचित्र, मॉडल आदि।

(iii) भौतिक अवशेष। (iv) स्थानीय इतिहास।

(v) प्रतीकात्मक सामग्री—मानचित्र, समय-रेखा; वंशवृक्ष, समय लेखा-चित्र आदि।

2. एडगर डेल (Edgar Dale) के अनुसार—डेल ने सम्पूर्ण श्रव्य-दृश्य सामग्री को अनुभव-शंकु (Cone of Experience) के रूप में प्रस्तुत किया है—

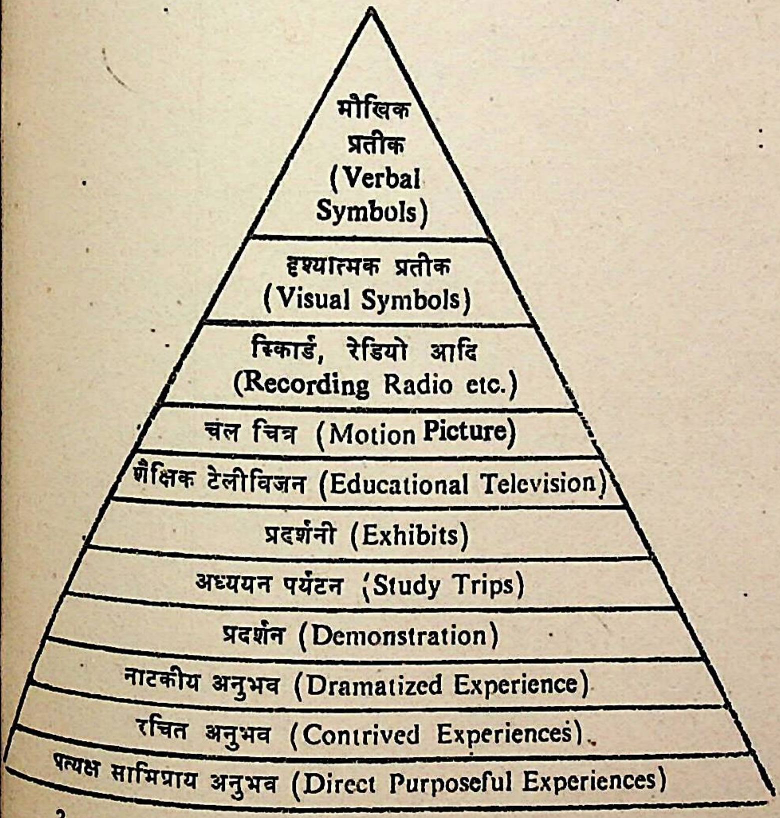

3. आहलूवालिया के अनुसार—एस० एल० आहलूवालिया ने श्रव्य-दृश्य सामग्री को अग्रलिखित रूप से वर्गीकृत किया है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1—त्रि-आयामात्मक उपकरण : Three Dimensional Aids—

(i) मॉडल्स (Models) (ii) रेखाचित्र (Diagrams)
(iii) अवशेष (Relics) (iv) कठपुतली (Puppets)

2—श्रव्य उपकरण : Audial Aids—

(i) ग्रामोफोन (ii) टेपरिकार्डर
(iii) रेडियो प्रसारण।

3—क्रियात्मक उपकरण : Activity Aids—

(i) ऐतिहासिक पर्यटन (ii) नाटकीकरण।

4—लेखाचित्रात्मक उपकरण : Graphic Aids—

(i) चित्र (ii) चार्ट एवं मानचित्र
(iii) युद्ध-योजनाएँ (iv) समय-रेखा एवं समय-लेखाचित्र

5—प्रदर्शन बोर्ड : Display Boards—

(i) श्यामपट (ii) फ्लैनेल वोर्ड
(iii) बुलेटिन वोर्ड।

6—प्रक्षेपी उपकरण : Projected Aids—

(i) फिल्म (ii) फिल्म पट्टियाँ
(iii) स्लाइड्स (iv) एपिडायस्कोप।

इतिहास-शिक्षण में सामान्यतः प्रयुक्त होने वाले उपकरणों का पृथक्-पृथक् विवेचन इस प्रकार है—

1. **श्यामपट : Blackboard**—श्यामपट शिक्षकों को उपलब्ध सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधनों में से एक है। दुर्भाग्यवश भारत में वह सर्वाधिक उपेक्षित विद्यालय उपकरण है। विद्यालय भवनों का निर्माण कराते समय कक्षाओं में श्यामपट के लिए पर्याप्त एवं उपयुक्त स्थान रखने की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। विद्यालयों में श्यामपट न तो उपयुक्त स्थान पर रखे जाते हैं और न उसकी दशा ही ठीक रहती हैं। सामान्यतः श्यामपट साफ करने वाले उपकरण अर्थात् डस्टर का उपयोग भी नहीं किया जाता। वस्तुतः यह खेदजनक स्थिति है कि आज भारत में श्यामपट का उतना प्रयोग नहीं किया जाता जितना तीस-चालीस वर्ष पूर्व किया जाता था। जब तक हमारे देश के प्रशिक्षण महाविद्यालय इस ओर ध्यान नहीं देते, तब तक इस महत्त्वपूर्ण साधन का ठीक-ठीक उपयोग नहीं किया जायेगा।

वस्तुतः श्यामपट कोई आकर्षक वस्तु नहीं है, क्योंकि यह मुख्यतः काले रंग का होता है जो कि आकर्षणहीन होता है। परन्तु जब उसका ठीक-ठीक उपयोग किया जाता है तब वह बहुत ही प्रेरणादायक बन जाता है। स्वच्छता, शुद्धता तथा तीव्रता या तेजी के मानक (Standard) स्थापित करने में इसका महत्त्व बहुत अधिक है। वर्तनी को समझने में यह बालकों की बहुत सहायता करता है। किसी पाठ के दौरान श्यामपट पर बनाया गया कोई चित्र समूची कक्षा के ध्यान को पाठ की ओर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आकृष्ट कर लेता है। साथ ही श्यामपट पर लिखकर तथा रेखाचित्र बनाकर शिक्षक पाठ की सारपूर्ण बातों पर बल दे सकता है। श्यामपट एक ऐसा साधन है जो कक्षा में सदैव उपलब्ध रहता है। उसके उपयोग के लिए न किसी तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता है और न उच्च कोटि के कलात्मक कौशल की। इसके उपयोग के लिए शिक्षक को निम्नलिखित बातों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए—

(i) श्यामपट को डस्टर या कपड़े से साफ करें। उसको हाथ या अंगुलियों से साफ नहीं करना चाहिए।

(ii) ऊपर के बाएँ कोने से लिखना प्रारम्भ करना चाहिए।

(iii) श्यामपट पर सीधी पंक्तियों में लिखा जाना चाहिए।

(iv) श्यामपट पर केवल महत्त्वपूर्ण बातें ही लिखी जाएँ।

(v) श्यामपट पर बड़े अक्षरों में तथा साफ-साफ लिखा जाय जिससे पीछे बैठे हुए छात्र भी आसानी से देख तथा पढ़ सकें।

(vi) पहले से योजना बना लेनी चाहिए कि श्यामपट पर क्या-क्या लिखना है। कभी भी कोई नक्शा पहले से श्यामपट पर न बनाकर रखें और न किसी पुस्तक का लगातार सहारा लेकर बनाएँ।

(vii) नक्शा या रेखाचित्र बना लेने के बाद छात्रों का ध्यान केन्द्रित करने के लिए संकेतक का प्रयोग अवश्य करें।

(viii) श्यामपट के एक ही ओर खड़े हों।

इतिहास-शिक्षक इसका उपयोग रेखाचित्र, मानचित्र, युद्ध-योजना बनाने एवं उनको समझाने, वंश-वृक्ष, प्रमुख तथ्यों एवं घटनाओं को लिखने, सारांश एवं गृहकार्य देने, पाठ का विवरण प्रदान करने आदि के लिए कर सकता है। वह इसका उपयोग छात्रों द्वारा भी करा सकता है। वह फर्मे या स्टेंसिल की सहायता से इस पर छात्रों से रेखाचित्र या मानचित्र बनवा सकता है। वह उनसे इस पर लिखने का अभ्यास करा सकता है। परन्तु इस कार्य के लिए श्यामपट पर सीधी रेखाएँ खिचवा दें।

2. **फैल्ट या फ्लैनेल बोर्ड : Felt or Flannel Board**—इसको फ्लेनेलोग्राफ (Flanelograph) भी कहते हैं। यह लकड़ी का बोर्ड है, जिस पर फैल्ट (नम्दा) या फलालैन चढ़ा रहता है। इस पर चित्रों को केवल थोड़ा-सा दबाकर चिपकाया जा सकता है। श्यामपट पर हमें चित्र, रेखाचित्र आदि खींचने पड़ते हैं, शब्द लिखने पड़ते हैं। जबकि इस बोर्ड पर हम तैयार की हुई वस्तुओं को लगाकर दिखाते हैं और आवश्यकता पड़ने पर हटा लेते हैं। मानचित्र तथा कहानियाँ इस बोर्ड पर नाटकीय ढंग से प्रदर्शित की जा सकती हैं। चित्रों को एक क्रम में प्रदर्शित करने तथा उनमें अंकित व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करने के लिए यह उपकरण बहुत उपयोगी है। फ्लैनेल बोर्ड का उपयोग प्रदर्शित सामग्री के विकास पक्षों को समझाने के लिए भी किया जा सकता है। इतिहास में इसके उपयोग से युद्ध-योजना, सेना-संचालन, युद्ध की परिवर्तित-व्यूह-रचना आदि को सरलता से समझाया जा सकता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. **विज्ञप्ति पट : Bulletin Board**—दृश्य-श्रव्य साधन के रूप में इस पट का शैक्षिक महत्त्व बहुत अधिक है। परन्तु हमारे देश में ऐसे ही कम आधुनिक स्कूल हैं जिनमें कक्षा में विज्ञप्ति पट हों। जिन विद्यालयों में हैं भी, उनमें आयोजित व व्यवस्थित ढंग से इनका उपयोग सामान्यतः नहीं किया जाता है। हमारे देश में शायद ही कोई ऐसा प्रशिक्षण महाविद्यालय हो जो इस साधन को वैसा महत्त्व देता हो जैसा वस्तुतः देना चाहिए। दृव्य-श्रव्य शिक्षा के सम्बन्ध में जुलाई 1956 में अखिल भारतीय शिक्षा सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन ने सुझाव दिया था कि छात्रों द्वारा विज्ञप्ति पट के उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षकों को निम्नलिखित तीन सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए—

1. विज्ञप्ति पट विद्यालय की सर्वकालीन पत्रिका है। अतः इसको छात्रों को प्रत्यक्ष जानकारी देना तथा ज्ञान के प्रति उनकी जिज्ञासा तथा इच्छा को प्रेरित करना चाहिए।
2. विज्ञप्ति पट की समस्त सामग्री छात्रों के रचनात्मक प्रयासों का परिणाम होनी चाहिए। भले ही ये प्रयास शिक्षक द्वारा पथ-प्रदर्शित किये जायें। यह कार्य सब छात्रों द्वारा छात्रों के लिए किया गया तथा छात्रों का होना चाहिए।
3. विज्ञप्ति पट के विषय तत्त्वों के विन्यास तथा निदर्शन (Illustration) में एक संगति एवं समरसता सदैव रहनी चाहिए।

विज्ञप्ति पट का उपयोग करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

(i) केवल विषय से सम्बन्धित और उपयुक्त सामग्री प्रदर्शित की जानी चाहिए।

(ii) प्रदर्शित सामग्री को सुव्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए।

(iii) प्रदर्शित सामग्री का आकार ऐसा अवश्य हो कि सामान्य दूरी से उसे साफ देखा जा सके।

(iv) सामग्री बदलने की अवधि बहुत लम्बी नहीं होनी चाहिए।

(v) प्रत्येक सामग्री का उपयुक्त शीर्षक होना आवश्यक है।

(vi) विशिष्ट पाठों के सम्बन्ध में उपयुक्त सामग्री के संकलन तथा प्रदर्शन का दायित्व प्रायः छात्रों को सौंपना चाहिए।

4. **लपेट फलक : Roller Board**—इतिहास-शिक्षक लपेट-फलक का प्रयोग उद्धरण, स्रोत-सन्दर्भ, रेखाचित्र, मानचित्र, युद्ध-योजना आदि बनाने के लिए कर सकता है।

5. **मॉडल्स : Models**—किसी पदार्थ का मॉडल उसकी एक अभिज्ञेय त्रि-आयामात्मक (Three Dimensional) अनुकृति होता है। यह सम्बन्धित पदार्थ के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समान आकार का अथवा उससे छोटा या बड़ा हो सकता है। उसे पकड़ा और संभाला जा सकता है। इसलिए एक चित्र या चार्ट की अपेक्षा, जो केवल द्वि-आयामात्मक अनुकृति होता है, मॉडल सामान्यतः अधिक शिक्षाप्रद एवं मनोरंजक होता है। इतिहास को जीवन्त बनाने के लिए मॉडलों का उपयोग बहुत महत्त्वपूर्ण है। इनका इतिहास-शिक्षण में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इनके द्वारा छात्रों की दृश्य काल्पनिकता (visual imagery) को निश्चितता प्रदान की जाती है। इनके द्वारा छात्रों में निरीक्षणात्मक प्रवृत्ति को विकसित किया जा सकता है। इतिहास-शिक्षक को प्रतिरूपों का निर्माण करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना चाहिए। इनको दो प्रकार से बनाया जा सकता है—(1) मौलिक वस्तुओं के आधार पर, तथा (2) ऐतिहासिक साहित्य के वर्णन के आधार पर।

निम्नलिखित के प्रतिरूप सरलतापूर्वक बनाये जा सकते हैं—

(अ) महान् व्यक्ति, (ब) अस्त्र-शस्त्र, (स) महान् शासक, (द) किला, या गढ़, स्तम्भ, बर्तन, आभूषण आदि, (य) मुहरें, सिक्के, शिलालेख आदि।

प्रतिरूप के गुण : Essentials of Model—इतिहास के प्रतिरूपों में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

(1) सरलता : Simplicity—इतिहास का प्रतिरूप जटिल नहीं होना चाहिए, वरन् उसमें सरलता का गुण होना आवश्यक है, जिसकी बालक स्वयं मरम्मत कर सकें और सरलता से उसको समझ सकें।

(2) उपयोगिता : Utility—प्रतिरूप में यदि उपयोगिता का गुण नहीं होगा तो वह वस्तु संग्रहालय में रखने मात्र की वस्तु रह जायगी। वह किसी न किसी ऐतिहासिक तथ्य का स्पष्टीकरण करे, तभी इतिहास-शिक्षण में उसकी उपयोगिता हो सकती है।

(3) शुद्धता : Accuracy—इतिहास के प्रतिरूप का मुख्य उद्देश्य बालक के विचारों की व्याख्या करना नहीं है, वरन् इतिहास की व्याख्या करना है। इसकी आकृति कक्षा के अनुसार होनी चाहिए और इसके जो विभाग हों; उनकी आकृति भी दृष्टि के अनुसार शुद्ध तथा ठीक होनी चाहिए। उसके अतिरिक्त प्रतिरूप में ठोसपन होना चाहिए।

6. रेखाकृति : Diagram—ग्राफों के द्वारा केवल संख्यात्मक आँकड़ों का प्रतिनिधित्व किया जाता है। परन्तु रेखाकृति का क्षेत्र उनकी अपेक्षा व्यापक है। इनके द्वारा प्रत्येक प्रकार से ऐतिहासिक सामग्री को प्रस्तुत किया जा सकता है। इनमें विषय-वस्तु का दृश्य चिह्नों द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। इतिहास-शिक्षण में इनके प्रयोग के लिए पर्याप्त अवसर है; उदाहरणार्थ—भारतीय इतिहास के स्रोत नामक प्रकरण में हम रेखाकृति का प्रयोग अग्रलिखित प्रकार से कर सकते हैं—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इन स्रोतों को चित्र द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। साहित्यिक स्रोतों का प्रतिनिधित्व किसी पुस्तक के चित्र जैसे अकबरनामा या बाबरनामा, या आइने अकबरी आदि द्वारा स्थापत्य-कला के प्रतिनिधित्व के लिए ताज या लालकिले के चित्र, सिक्कों, लेखों, विदेशी यात्रियों आदि का प्रतिनिधित्व उनके चित्रों द्वारा किया जा सकता है। ये चित्र कागज पर क्रमानुसार बनाकर प्रदर्शित किये जा सकते हैं। शासन-प्रबन्ध, युद्ध-सम्बन्ध, तुलना आदि के लिए भी इनका प्रयोग किया जा सकता है।

7. कठपुतलियाँ : Puppets—इतिहास-शिक्षण को सजीव बनाने के लिए कठपुतलियों का प्रयोग किया जा सकता है। प्राचीन भारत के ग्रामीण समाज में यह कला बहुत लोकप्रिय थी। सामान्यतः कठपुतलियों का खेल रामायण और महाभारत पर आधारित होते थे परन्तु थिएटर और सिनेमा के प्रचलन से इनका प्रयोग अब भारत में कम हो गया। फिर भी बंगाल और राजस्थान में विशिष्ट अवसरों पर आज भी इसके स्वाँग आयोजित किए जाते हैं।

8. चित्र : Pictures—प्रत्येक वस्तु का प्रतिरूप नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि एक तो यह सरल कार्य भी नहीं है, दूसरे, इसके बनाने में समय बहुत लगता है, इसलिए इनके स्थान पर चित्रों का उपयोग किया जाता है। जार्विस (Jarvis) के शब्दों में कह सकते हैं कि छोटी कक्षाओं के शिक्षण को रोचक बनाने के लिए शिक्षण-सामग्री में अभिनयात्मक दृश्यों तथा नायकों के चरित्रों को रखना चाहिए। इसको रोचक बनाने के लिए अध्यापक को ऐतिहासिक चित्रों का उपयोग करना चाहिए। जार्विस (Jarvis) का विचार है कि चित्रों के द्वारा वास्तविकता से सुन्दर स्वप्नों को प्रदर्शित किया जाय। इनमें स्थूल वस्तुओं की प्रधानता होनी चाहिए। इसके प्रदर्शन से छात्रों में यह भावना विकसित की जाय कि इतिहास वास्तविक घटनाओं तथा व्यक्तियों से ही सम्बन्ध रखता है। इसके अतिरिक्त चित्र, आकर्षक तथा निर्देशात्मक—दोनों ही होने चाहिए। अध्यापकों को मुख्यतया चित्रों का उपयोग छोटी कक्षाओं में ही करना चाहिए। 'चित्र' प्रदर्शन के लिए सबसे उपयुक्त सामग्री है। इनका उपयोग शिक्षक विभिन्न उद्देश्यों तथा अभिप्रायों से करते हैं। उनके उपयोग के लाभ निम्नलिखित हैं—

(1) चित्रों के द्वारा विद्यार्थियों की कल्पना शक्ति विकसित होती है।
(2) इनके द्वारा निरीक्षण-शक्ति का भी विकास होता है।
(3) इनके द्वारा इतिहास-शिक्षण को सजीव बनाया जाता है, अन्यथा वह मृतप्राय हो जाता है।
(4) चित्रों से छात्रों में विश्लेषण करने की प्रवृत्ति उत्पन्न की जाती है।
(5) चित्रों के द्वारा ऐतिहासिक तथा वास्तविक वातावरण उत्पन्न किया जाता है, जो कि विषय में छात्रों की रुचि स्थिर रखने में बहुत ही सहायक है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(6) इनके द्वारा छात्रों में कलात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न की जाती है।
(7) प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि छात्र मौखिक व्याख्या की अपेक्षा चित्र देखकर किसी भी वस्तु को शीघ्र ग्रहण कर लेता है।

ऐतिहासिक चित्र के आवश्यक गुण : Essentials of a Historical Picture—

(1) चित्र पूर्णतया शुद्ध होना चाहिए, अर्थात् उसके द्वारा स्पष्ट किये गये विभिन्न अंगों को उपयुक्त स्थान दिया जाना चाहिए।

(2) चित्र अधिक खर्चीला नहीं हो, अर्थात् उसके क्रय या निर्माण करने में अधिक व्यय न करना पड़े।

(3) चित्र सरल तथा आकर्षक होना चाहिए।

(4) इनके द्वारा ऐतिहासिक विचार प्रदान किये जायें।

(5) चित्र प्रकरण के अनुसार होना चाहिए।

(6) कक्षा के अनुसार चित्र का आकार हो। उनका न्यूनतम आकार 13 इंच×9 इंच होना चाहिए।

(7) चित्र क्रियाशीलता से परिपूर्ण होने चाहिए।

(8) गहरे रंगों का प्रयोग कम किया जाय।

(9) चित्र अर्थपूर्ण होने चाहिए; अर्थात् स्वाभाविक रूप से व्याख्यात्मक तथा निर्वचनात्मक होना चाहिए। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि इनकी व्याख्या करने के लिए शिक्षक को कुछ नहीं कहना पड़े, बल्कि छात्र उसके प्रश्नों का उत्तर उसको देखकर ही देते रहें।

(10) चित्र प्रामाणिक होना चाहिए।

(11) चित्र द्वारा बालकों की कल्पना-शक्ति, विचार-प्रक्रिया, तर्क तथा निर्णय-शक्ति को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(12) चित्र में कलात्मक सौन्दर्य की झलक होनी चाहिए।

जिन विद्यालयों में इतिहास-कक्ष की पृथक् व्यवस्था है, उस कक्ष में दीवार के चित्रों (Wall pictures) की भी व्यवस्था होनी चाहिए। इतिहास-कक्ष की दीवारों पर विभिन्न चित्रों को चित्रित कराया जाय, परन्तु ये चित्र कालक्रम के अनुसार हों। दीवारों पर चित्रित किए हुए चित्र निम्नलिखित उद्देश्यों से अत्यन्त लाभप्रद हैं—

(1) दीवारों के चित्र भली-भाँति देखे जा सकते हैं, क्योंकि वे सदैव कक्ष में छात्रों के सम्मुख रहते हैं।

(2) ये चित्र विद्यार्थियों में इतिहास-कक्ष की भावना उत्पन्न करते हैं। वे उस कक्ष में वैसी ही प्रतीति प्रदान करते हैं जैसाकि वे विज्ञान की प्रयोगशाला में करते हैं।

(3) ये चित्र विषय के प्रतिपादन के लिए प्रभावशाली वातावरण उत्पन्न करने में सहायक हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास-शिक्षक चित्रों का प्रयोग अधोलिखित बातों के लिए कर सकता है—

(1) अपने नये पाठ की प्रस्तावना को स्पष्ट करने के लिए कर सकता है। इसके अतिरिक्त किसी इकाई या प्रकरण को प्रारम्भ करने के लिए भी कर सकता है।

(2) किसी कठिन या मुख्य बिन्दु अथवा तथ्य को स्पष्ट करने के लिए उपयोग में ला सकता है।

(3) भूतकाल की सामाजिक दशाओं को स्पष्ट करने के लिए भी उपयोग में ला सकता है।

(4) अपने पाठ का विकास करने के लिए भी प्रयोग कर सकता है।

(5) अन्त में हम कह सकते हैं कि वह छात्रों की उपलब्धि की भी जाँच चित्रों द्वारा कर सकता है, अर्थात् वह ऐसे चित्र उपयोग में ला सकता है जिनके द्वारा पठित ज्ञान की जाँच की जा सके।

इतिहास-शिक्षण में चित्रों का उपयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(1) चित्र टाँगते समय खड़खड़ाने का शब्द न हो।

(2) चित्र कक्षा में उपयुक्त स्थान पर ही टाँगे जायँ, जहाँ से प्रत्येक छात्र उनको भली प्रकार देख सके, अर्थात् छात्रों की आँखों पर उन्हें देखने में जोर न पड़े।

(3) चित्र जादूगर के समान प्रदर्शित न किये जायँ, बल्कि शिक्षक उन चित्रों पर प्रश्न करे उन्हें देखने का अवसर प्रदान करे।

(4) पुनरावृत्ति की अवस्था पर विकासात्मक चित्र नहीं रहने चाहिए।

(5) चित्रों का उपयोग उपयुक्त स्थान तथा समय पर ही होना चाहिए। चित्र को प्रदर्शित करने के पश्चात् उनको उचित प्रकार से उतारकर उचित स्थान पर रखें, वह सदैव कक्षा में न टँगा रहे।

9. **मानचित्र : Maps**—इतिहास में समय-ज्ञान की भाँति स्थान-ज्ञान का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण है। इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य यह भी है कि छात्रों को घटनाओं से सम्बन्धित स्थलों द्वारा सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से परिचित कराया जाय। इस उद्देश्य को तभी प्राप्त किया जा सकता है, जब मानचित्र का प्रयोग किया जाय। इसीलिए इतिहास-शिक्षण में मानचित्र का उपयोग अत्यन्त आवश्यक है। यद्यपि मानचित्र का सम्बन्ध मुख्यतः भूगोल से है किन्तु इतिहास में भी इसकी आवश्यकता पड़ती है अन्यथा साम्राज्य का विस्तार, राजधानियों के स्थान, युद्ध के मैदान तथा राज्यों की सीमाओं आदि का ज्ञान विद्यार्थियों को नहीं हो सकेगा। इतिहास के लिए तत्कालीन राजनीतिक मानचित्र होने चाहिए। अध्यापक को मानचित्र में आवश्यक बातों को उचित स्थानों पर प्रदर्शित करके छात्रों को दिखाना चाहिए। उसको मुद्रित मानचित्रों का उपयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि उनमें अनेक बातें दी रहती हैं, जिनका इतिहास के पाठ से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। इसीलिए उसे

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हस्त निर्मित मानचित्र का उपयोग करना चाहिए। उसमें पाठ से सम्बन्धित बातों को प्रदर्शित करके छात्रों को उनका ज्ञान दिया जाय।

इंगलैण्ड के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के समुदाय ने इनके महत्त्व के विषय में इस प्रकार विचार प्रकट किये हैं—

"मानचित्र इतिहास-शिक्षण के लिए एकमात्र आवश्यक उपकरण ही नहीं है, वरन् यह हमारे कार्य में एक आवश्यक आधार भी माना जाता है। केवल मानचित्रों के प्रयोग से ही क्षेत्र तथा राजनीतिक इकाइयों की सापेक्षिक स्थिति को देखा जा सकता है और मानचित्र ही राज्यों के विकास, सैनिक अभियानों या धर्मों तथा भाषाओं के सामान्य वितरण को इंगित करना सम्भव बना सकते हैं।"[1]

उद्देश्य—मानचित्र के उपयोग के अधोलिखित उद्देश्य हैं—

(1) मानचित्र का उपयोग वाद-विवाद के उद्देश्य से भी किया जा सकता है।

(2) उसके उपयोग का मुख्य ध्येय—छात्रों के मस्तिष्क में स्थानों के सम्बन्धों को अंकित करना है।

(3) इसके प्रयोग से इतिहास का पृथ्वी पर स्थानीयकरण किया जाता है। यदि इसका उपयोग न किया जाय तो इतिहास की घटनाएँ हवा में रहती हैं, जो बालक को बोधगम्य नहीं हो सकतीं।

(4) यदि मानचित्र का अध्ययन ठीक प्रकार से कराया जाय तो उससे कक्षा में क्रियाशीलता उत्पन्न की जा सकती है।

(5) इसके प्रयोग से इतिहास तथा भूगोल के सम्बन्ध का ज्ञान दिया जाता है। भौगोलिक परिस्थितियों ने किस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं को प्रभावित किया है—इन सब का ज्ञान मानचित्र के उपयोग से छात्रों को कराया जा सकता है।

ऐतिहासिक मानचित्र के गुण : Essentials of a Historical Map—

(1) मानचित्र सरल होना चाहिए, अर्थात् कलात्मक व जटिल न हो जाय। इसके अतिरिक्त वह व्ययी भी न हो।

(2) इनमें प्राचीनकाल के नगरों के नामों के साथ-साथ उनके वर्तमान काल के नाम भी दिये जायँ।

---

1. "The map is not merely an aid to history teaching, it is an essential if much that is fundamental in our work is to be understood. Only through the use of maps can the area and relative positions of political units be visualized, and make it possible to indicate the development of states, the progress of military campaigns or of exploration or the general distribution of religions and languages."—*Teaching of History*, Issued by Incorporated Association of Assistant Masters in Secondary Schools, p. 150.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) मानचित्र में, जो कक्षा के उपयोग में लाये जायँ, व्यापारिक मार्गों तथा युद्ध-स्थल और अन्य मार्गों के अंकित करने में सदैव शुद्धता बरती जानी चाहिए। स्पष्टतः इन मार्गों को प्रदर्शित करें। इसके अतिरिक्त स्थानों के स्थापन में पूर्ण सतर्कता रखनी चाहिए।

(4) मानचित्र में निरर्थक स्थानों, मार्गों तथा राज्यों की सीमाओं का प्रदर्शन न हो वरन् वे ही वस्तुएँ प्रदर्शित की जायँ, जिनकी उस पाठ के शिक्षण में आवश्यकता है।

मानचित्र के प्रयोग में कठिनाइयाँ : Difficulties in the Use of Map—

(1) हमारे यहाँ उन मानचित्रों का अभाव है जो पूर्णतया शुद्ध तथा पूर्ण हैं। बाजार में जो मानचित्र प्राप्त होते हैं, वे किसी न किसी क्षेत्र में हीन पाये जाते हैं। उनके द्वारा ठीक प्रकार से स्थापन तथा दूरी में सम्बन्ध स्थापित नहीं हो पाता।

(2) कभी-कभी मानचित्र उन देशों के विषय में ठीक विवरण नहीं दे पाते हैं, जो क्षेत्र में बड़े हैं।

(3) मानचित्रों में विभिन्न पैमानों के प्रयोग से भी कठिनाई उत्पन्न होती है। विश्व के विभिन्न भागों को प्रदर्शित करने के लिए विभिन्न पैमानों का प्रयोग किया गया है, जिससे छात्रों को समझने में बाधाएँ पैदा होती हैं।

(4) कठिनाई का दूसरा स्रोत मानचित्रों की प्रबलताएँ (Projections) हैं। वे विभिन्न ऊँचाई से खींचे जाते हैं।

(5) मानचित्र के परिवर्तन से भी बहुत-सी कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं, जो शिक्षक को कक्षा में सुलझानी पड़ती हैं; उदाहरणार्थ—हमारे देश का मानचित्र राज्यों की सीमाओं के बदलने से परिवर्तित हो गया है, जिसको समझने में बालक की कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

शिक्षक को इन कठिनाइयों का सामना सतर्कता तथा धैर्य के साथ करना चाहिए और उनको सुलझाकर छात्रों को पूर्ण ज्ञान प्रदान करना चाहिए। इन कठिनाइयों से हमको मानचित्रों का उपयोग नहीं छोड़ देना चाहिए।

अन्त में प्रो० जॉनसन (Johnson) के शब्दों में कहा जा सकता है— **"इतिहास मानचित्रों के द्वारा बनाया गया है और उनमें ही वह लिखित है।"**

(10) ग्राफ : Graph—ग्राफ संख्यात्मक आँकड़ों को प्रस्तुत करने का एक प्रभावशाली साधन है। इसके द्वारा सम्बन्धों एवं विकास के प्रदर्शन के साथ-साथ तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जा सकता है। ग्राफों के भेद निम्नांकित हैं—

(अ) रेखाग्राफ : Line Graph—इतिहास-शिक्षण में इस प्रकार के ग्राफ का समय-रेखा (Time Line) बनाने में प्रयोग किया जा सकता है।

(ब) चित्रात्मक ग्राफ : Pictorial Graph—इस प्रकार के ग्राफ में चित्रों के द्वारा विचारों को व्यक्त किया जाता है; उदाहरणार्थ—चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना की संख्या एवं विभागों को चित्रात्मक ग्राफ से प्रस्तुत किया जा सकता है। रथ सेना

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हाथी, घुड़सवार, पैदल तथा नौ सेना को रथ, हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव के चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है।

11. चार्ट : Chart—चार्ट शब्द विभिन्न प्रकार के लाक्षणिक प्रदर्शनों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इतिहास-शिक्षण में निम्नलिखित तीन प्रकार के चार्टों का प्रयोग किया जाता है :

(अ) तालिका चार्ट : Table Chart—इसके द्वारा सूचनाओं या तथ्यों को तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। यह तुलनात्मक अध्ययन के लिए बहुत उपयोगी है। इसके द्वारा समानताओं और असमानताओं को बड़ी सरलता से प्रदर्शित किया जा सकता है।

(ब) आनुवंशिक चार्ट : Geneological Chart—इस प्रकार के चार्ट मुख्यतः विकास तथा अभिवृद्धि को प्रदर्शित करने के लिए प्रयोग में लाये जाते हैं। इसके अन्तर्गत वृक्ष का तना किसी भी संकेत से प्रदर्शित किया जा सकता है। परिवर्तन या विभिन्न प्रकार के विकास को उसकी शाखाओं द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। किसी विशेष शाखा में भी उससे सम्बन्धित विकास या परिवर्तनों को उसकी अन्य छोटी-छोटी शाखाओं के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। सिपाही-विद्रोह के कारण, अकबर का शासन, भूगोल के प्रभाव आदि प्रकरणों के शिक्षण में इस प्रकार के चार्टों का सुविधा से प्रयोग किया जा सकता है।

(स) धारावाहिक चार्ट : Flow Chart—इस प्रकार के चार्टों द्वारा संगठनात्मक तत्त्वों तथा उनके क्रियात्मक सम्बन्धों को प्रदर्शित किया जाता है। इतिहास-शिक्षण में इनके प्रयोग के लिए बहुत अवसर हैं; उदाहरणार्थ—शिवाजी का शासन, चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन, स्थायी बन्दोबस्त, काँग्रेस का संविधान आदि प्रकरणों के शिक्षण में इनका प्रयोग उपयोगी होगा।

12. युद्ध योजनाएँ : Battle Plans—इतिहास-शिक्षण में इनके प्रयोग से छात्रों को विरोधी-पक्ष की सेनाओं की स्थिति, उनकी व्यूह रचना, सैन्य संचालन, रणकौशलों की विभिन्न शैलियों, सेना के विभिन्न भागों तथा उनकी हार-जीत के कारणों से अवगत करा सकता है। शिक्षक को भारतीय इतिहास के निर्णायक युद्धों—सिकन्दर और पोरस, खानवा का युद्ध, पानीपत के तीनों युद्ध, बक्सर तथा प्लासी का युद्ध—की युद्ध-योजनाओं से छात्रों को अवश्य अवगत कराना चाहिए।

13. ग्रामोफोन : Gramophone—इसका प्रयोग मुख्यतया स्थानीय इतिहास के शिक्षण के लिए किया जाता है। प्राचीन कक्षाओं तथा विरुदावलियों के रिकार्डों के द्वारा राष्ट्रीय इतिहास के शिक्षण को भी रोचक बनाया जा सकता है। विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गये ऐतिहासिक व्याख्यानों के रिकार्डों को बनाकर छात्रों को इसके माध्यम से लाभान्वित किया जा सकता है।

14. रेडियो प्रसारण : Radio Broadcast—रेडियो शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपकरण है। पाश्चात्य देशों के प्रायः सभी शिक्षा संस्थानों में शिक्षा के सभी स्तरों पर रेडियो का नियमित रूप से उपयोग किया जाता है। परन्तु भारत में ऐसे विद्यालयों की संख्या बहुत कम है जिसमें रेडियो का उपयोग कक्षाओं में किया जाता है जबकि आकाशवाणी के प्रायः सभी केन्द्रों से विद्यालयों के लिए नियमित कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं। तृतीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत देश में श्रव्य-दृश्य शिक्षा के विकास की योजनाओं में प्रस्तावित किया गया था कि देश के सभी हाईस्कूलों तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में रेडियो-सेट लगाये जायँ।

केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय ने 'शिक्षा में रेडियो का उपयोग' पर एक अध्ययन दल की स्थापना की। इसकी रिपोर्ट के आधार पर शैक्षिक रेडियो प्रसारण के लिए एक विस्तृत परियोजना प्रतिपादित की जायेगी। शिक्षा के लिए रेडियो प्रसारण के उपयोग में तुरन्त सुधार लाने के लिए राज्य शिक्षा विभागों तथा आकाशवाणी को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् के अजमेर, भुवनेश्वर, भोपाल तथा मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के साथ समन्वित करके शामिल करने का प्रस्ताव है। शिक्षा के लिए रेडियो प्रसारण के उपयोग के लिए क्षेत्रीय कॉलेजों के लिए एन० सी० ई० आर० टी० मार्गदर्शन तैयार कर रही है। साथ ही एन० सी० ई० आर० टी० रेडियो पाठ्यक्रम भी तैयार कर रही है। रेडियो प्रसारणों के उचित उपयोग और योजनाओं में राज्य शिक्षा विभागों को सम्मिलित करने के लिए एक संगठित प्रयास किया जा रहा है।

शिक्षा में रेडियो का योग : Contribution of Radio in Education—सामान्यतः रेडियो दो प्रकार के—ज्ञानवर्धन पाठ तथा प्रत्यक्ष शिक्षण-पाठ—प्रदान करता है। ज्ञानवर्धन पाठों में उन प्रसारणों को सम्मिलित किया जाता है जिनका पाठ्यक्रम के विशिष्ट प्रकरणों से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता, फिर भी इन प्रकरणों की पृष्ठभूमि के रूप में पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है; उदाहरणार्थ—अयोध्या या बद्रीनाथ की यात्रा से सम्बन्धित किसी वार्ता को अयोध्या या बद्रीनाथ के विषय में इतिहास का पाठ नहीं माना जा सकता, फिर भी ऐसी वार्ता इतिहास के पाठ की उपयोगी भूमिका हो सकती है। विश्व के प्रायः प्रत्येक प्रसारण-केन्द्र में ऐसे कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं जिनका विद्यालयों के पाठ्यक्रम से प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है; उदाहरणार्थ—बी० बी० सी० से अंग्रेजी पाठों का प्रसारण। विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत ये कार्यक्रम अत्यन्त उपयोगी होते हैं क्योंकि उनके अध्ययन और तैयारी में पर्याप्त समय दिया जाता है। कक्षा में शिक्षण करने वाले शिक्षकों को अध्ययन एवं तैयारी के लिए उतना समय नहीं मिल पाता।

रेडियो की सहायता से कक्षा में रोचकता तथा विविधता प्राप्त होती है। बालक रेडियो सुनना पसन्द करते हैं और अन्य लोगों की मौलिकता एवं नवीनता तथा पहलकदमी (Initiative) के नवीन ढंग का आनन्द लेते हैं। रेडियो के द्वारा नाटक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के ऐसे उत्कृष्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं जो विद्यालयों में सामान्यतः नहीं देखे और सुने जाते हैं। नाटकीयकरण द्वारा रेडियो बालकों की अभिरुचि तथा कल्पना-शीलता को जाग्रत करता है। इस तरह इतिहास, भूगोल, साहित्य, प्रकृति निरीक्षण आदि विषयों के प्रकरण उन्हें सरलता से हृदयंगम हो जाते हैं। ऐसा अन्य किसी भी उपकरण से सम्भव नहीं है। यद्यपि अनेक विद्वान् टेलीविजन को रेडियो की अपेक्षा अधिक पसन्द करते हैं। परन्तु रेडियो मानव-स्तर और आवाजों को प्रस्तुत करके घटना के मानचित्र की कल्पना का कार्य सुनने वाले छात्रों को छोड़ देता है। इस तरह रेडियो बालकों की कल्पना-शक्ति को तीव्र बनाता है। रेडियो शिक्षकों की सहायता के लिए विविध विषयों के विशेषज्ञों को कक्षा में प्रस्तुत करता है।

15. **टेप रिकार्डर : Tape Recorder**—टेप रेकार्डर शिक्षण का एक सहायक साधन है। यह शिक्षक का स्थान नहीं ले सकता है। इसका उपयोग तभी किया जाना चाहिए जब इसकी सहायता से बालक किसी तथ्य या घटना को अधिक अच्छी तरह समझ सकते हों। टेप दो प्रकार के होते हैं—प्लास्टिक के और कागज के। प्लास्टिक का टेप कागज के टेप की अपेक्षा अधिक व्ययी होता है। परन्तु यह अधिक स्थायी होता है। साथ ही प्लास्टिक के टेप में आलेखन मिटाना अधिक सुगम होता है। टेप रेकार्डर की सहायता से बालकों के बोलने के ढंग में सुधार किया जा सकता है। साथ ही यह साधन रेडियो की अक्षमता को दूर कर सकता है। पाश्चात्य देशों में इसकी सहायता से रेडियो के पाठों का कक्षा में उपयुक्त ढंग से उपयोग किया जा सका है। संगीत एवं विदेशी भाषाओं के शिक्षण में इसका उपयोग महत्त्वपूर्ण माना गया है। इतिहास, नागरिकशास्त्र आदि सामाजिक विषयों के शिक्षण में टेप-रिकार्डर को सहायक उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया गया है।

16. **मैजिक लैन्टर्न : Magic Lantern**—इसका प्रयोग पर्याप्त समय से शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहा है। यह आज भी इतिहास-शिक्षण के लिए पर्याप्त उपयोगी है। यदि अध्यापक किसी वस्तु को लपेटना जानता है तो वह इसका प्रयोग कर सकता है। इसके लिए अध्यापक स्लाइडों को एकत्रित करे जो कि ऐतिहासिक प्रकरणों से सम्बन्धित हों; जैसे—ऐतिहासिक भवनों के चित्रों की स्लाइड, सिक्कों, पोशाकों के चित्र आदि की स्लाइड। इसके द्वारा वह भूतकालीन वस्तुओं को वास्तविक बना सकता है तथा पाठ को रोचक, प्रभावशाली तथा कक्षा में ऐतिहासिक वातावरण प्रस्तुत कर सकता है।

17. **पारचित्रदर्शी : Epidiascope** इसको अमेरिका में ओपेक प्रोजेक्टर (Opaque projector) भी कहा जाता है। इस यन्त्र के द्वारा छोटे चित्रों, फोटोचित्रों, मानचित्रों, रेखाचित्रों, सिक्कों, मुद्रित सामग्री आदि को बड़ा करके पर्दे पर दिखाया जाता है। इस यन्त्र का उपयोग शिक्षा के सभी स्तरों पर किया जा सकता है। साथ ही शिक्षण की प्रायः सभी स्थितियों में इसका उपयोग

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

किया जा सकता है। क्योंकि इसके लिए किसी फिल्म या स्लाइड की आवश्यक नहीं होती है।

18. फिल्म : Films—शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि फिल्म नवयुवकों शिक्षित करने के लिए बहुत ही लाभप्रद साधन है। हमारे देश में शैक्षिक फिल्मों निर्माण करने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा है। केन्द्रीय फिल्म-लाइब्रेरी (Central Film Library) इतिहास अध्यापकों आवश्यकता को पूर्ण करने में संलग्न है। विभिन्न विद्वानों का मत है कि इन उपयोग इतिहास-शिक्षण में निम्नलिखित वस्तुओं के प्रतिपादन के लिए किया सकता है—

(1) फिल्मों का उपयोग भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के मनुष्य जीवन की दशाओं का तुलनात्मक ज्ञान देने के लिए किया जा सकता है।

(2) इनका उपयोग इतिहास के कुछ प्रकरणों में छात्रों की रुचि उत्पन्न के लिए भी किया जा सकता है; उदाहरणार्थ—विभिन्न कालों की स्थापत्य-क चित्रकला आदि का ज्ञान देने के लिए अध्यापक इनका प्रयोग करके छात्रों में इ प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है।

(3) इनके द्वारा अध्यापक विभिन्न व्यवसायों की उत्पत्ति के क्रम का ज्ञा सकता है।

(4) इतिहास का शिक्षक जटिल प्रकरणों को सरल एवं रोचक बनाने लिए इनका उपयोग कर सकता है।

फिल्मों का उपयोग कब करना चाहिए?—(1) कक्षा में फिल्मों का उप उस समय करना चाहिए, जिस समय मौखिक शिक्षण किसी बात को पूर्ण स्पष्ट करने में असफल रहे या इनके द्वारा मौखिक शिक्षण को अधिक प्रभावश बनाया जाय।

(2) अध्यापक छात्रों को शहर के चलचित्रों में ऐतिहासिक फिल्म देखने लिए भी प्रोत्साहित कर सकता है। परन्तु वह उन फिल्मों में दी हुई कल्पना को करने के लिए बाद में उन ऐतिहासिक तथ्यों की व्याख्या करके वैज्ञानिक दृष्टि उत्पन्न करेगा, तभी उन फिल्मों के लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

फिल्मों के लाभ : Advantages of films—

(1) इनके द्वारा छात्रों को सीखने के हेतु प्रेरणा दी जाती है।
(2) छात्रों को अनुभव करने के लिए स्थितियाँ प्रस्तुत की जाती हैं।
(3) छात्रों की ग्राह्यशक्ति को विस्तृत या विकसित किया जाता है।
(4) इनके द्वारा वाद-विवाद के लिए अवसर प्रदान किये जाते हैं।
(5) छात्रों को स्वाध्याय करने के लिए प्रोत्साहन मिलता है।
(6) नवीन पाठ को प्रारम्भ करने के लिए बहुत ही लाभदायक है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(7) इनके द्वारा छात्रों की समझने की शक्ति तथा विचारधारा को विकसि किया जाता है।

(8) मन्द-बुद्धि बालकों की शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है।

(9) इनके द्वारा इतिहास को सजीव एवं वास्तविक बनाया जाता है।

इतिहास-शिक्षक को अपने शिक्षण में फिल्म प्रयोग करने से पूर्व एक अच्छी फिल्म में अधोलिखित गुण देखने चाहिए—

(1) फिल्म ऐतिहासिकता को प्रकट करने में सहायक सिद्ध होनी चाहिए।

(2) फिल्म की फोटोग्राफी स्पष्ट तथा कलात्मक होनी चाहिए।

(3) आवाज स्पष्ट तथा समझने योग्य होनी चाहिए।

(4) फिल्म प्रामाणिक होनी चाहिए; अर्थात् उसके द्वारा जो ऐतिहासिक तथ्य प्रदर्शित किये जायें, वे प्रमाणित हों।

(5) फिल्म छात्रों की अवस्था, रुचि तथा योग्यता के अनुकूल हो।

(6) फिल्म में प्रयुक्त भाषा छात्रों के स्तर के अनुकूल हो।

(7) फिल्म की कथावस्तु मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद होनी चाहिए। उसमें किया गया अभिनय भी आकर्षक एवं सुन्दर होना चाहिए।

उपरिवर्णित लाभों की प्राप्ति तभी की जा सकती है, जब शिक्षक छात्रों से फिल्म देखने के उपरान्त तत्सम्बन्धी प्रश्न करे—'जिससे उसे यह मालूम हो जाय कि छात्रों ने क्या ग्रहण' किया है। इसके अतिरिक्त वह अपने कथन द्वारा फिल्म में आई हुई काल्पनिकता को दूर करके ऐतिहासिक तथ्य प्रदान करे और उनके ज्ञान को विकसित एवं रिक्त स्थानों की पूर्ति करके तारतम्य स्थापित कर दे। शिक्षक उस अर्जित ज्ञान पर एक छोटा-सा वाद-विवाद आयोजित करे जिससे छात्र अपने अर्जित ज्ञान को अभिव्यक्त कर सकें। इसके उपरान्त उस पर लेख लिखने के लिए आदेश दे।

19. टेलीविजन : Television—टेलीविजन नवीनतम दृश्य-श्रव्य उपकरण है। शिक्षा देने के लिए इसका प्रयोग प्रारम्भ हो गया है। भारत में इसका प्रयोग केवल इण्सेट सुविधाओं वाले राज्यों में हो रहा है। टेलीविजन में बालक अपनी देखने और सुनने की—दोनों इन्द्रियों का प्रयोग करने के कारण किसी भी तथ्य को शीघ्रता से सीख जाता है। टेलीविजन के महत्त्व का उल्लेख करते हुए थट व गेरेबेरिच (Thut & Gereberich) ने लिखा है—"यह सबसे अधिक आशापूर्ण श्रव्य-दृश्य उपकरण है क्योंकि सन्देशवाहन के इस एक यन्त्र में रेडियो और चलचित्र के सभी गुणों का सम्मिश्रण है।"

भारत में टेलीविजन : Television in India—भारत में विद्यालयी टेलीविजन का प्रारम्भ आकाशवाणी से 1961 में फोर्ड फाउन्डेशन (Ford Foundation) तथा दिल्ली के शिक्षा-निदेशालय (Directorate of Education Delhi)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

के सहयोग से किया गया। कक्षा-शिक्षण तथा टेलीविजन-पाठों में उपयुक्त समन्वय स्थापित करने के लिए शिक्षकों तथा प्रधानाध्यापकों की एक वर्कशॉप की व्यवस्था की गई। इसकी सिफारिश पर 145 विद्यालयों में टेलीविजन सेट लगाये गये और नवीं कक्षा के छात्रों के लिए सप्ताह में तीन बार भौतिकी (Physics) तथा रसायन शास्त्र के पाठ पढ़ाये जाने की व्यवस्था को गई। 1962 में इस योजना को बढ़ाकर 10वीं कक्षा के लिए भी लागू कर दिया। 1963-64 में ब्रिटिश कौंसिल के सहयोग से कक्षा 6 के लिए प्रति सप्ताह अंग्रेजी के दो पाठ प्रारम्भ किये गये। 1964-65 में कक्षा 7 तथा 1965-66 में कक्षा 8 के लिए अंग्रेजी और कक्षा 9 व 10 के लिए विज्ञान के शिक्षण की व्यवस्था की गई। 1966-67 से इस व्यवस्था को सुगठित किया गया।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने फरवरी, 1980 में इंसैट दूरदर्शन के उपयोग हेतु विस्तृत नीति तैयार करने के लिये कार्य दल का गठन किया। कार्यदल ने विचार-विमर्श करके इस बात पर बल दिया कि सुसंगत, अर्थपूर्ण तथा प्रभावी कार्यक्रम तैयार करने के उद्देश्य से विकेन्द्रित स्तर पर उत्पादन क्षमताओं का विकास करना आवश्यक है। अतः शिक्षा मंत्रालय ने यह निर्णय लिया कि शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम उत्पादन की जिम्मेदारी दूरदर्शन से लेकर अब धीरे-धीरे शिक्षा-विशेषज्ञों के अधिकार में दी जाय।

इस मुख्य निर्णय को ध्यान में रखकर शिक्षा-मंत्रालय ने मई, 1980 में इंसैट दूरदर्शन के शैक्षिक अवयवों के उपयोग की योजना बनाने के लिए कार्यदल की स्थापना की। इस कार्यदल ने आन्ध्रप्रदेश, उड़ीसा, गुजरात, महाराष्ट्र, बिहार और उत्तरप्रदेश आदि इंसैट की सुविधाओं वाले राज्यों में उत्पादन केन्द्रों की स्थापना व्यवस्थित ढंग से करने का सुझाव दिया। कार्यान्वयन हेतु चार प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया।

(1) इंसैट की सुविधाओं वाले राज्यों में शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम के उत्पादन में समन्वय और उन्नति के लिये केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना;

(2) छः इंसैट राज्यों में स्थानीय आधार पर शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम उत्पादन में वृद्धि करने के लिये राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान की स्थापना;

(3) अन्य राज्यों में उत्पादन क्षमताओं का सृजन शुरू करने के लिये विस्तृत प्रौद्योगिकी कार्यक्रम का कार्यान्वयन जारी रखा जाये, जिससे यथा समय वे इंसैट कार्यक्रमों में भाग लेने के लिये आवश्यक अनुभव और सम्भावनाओं के विकास हेतु तैयार रहें; और

(4) त्रिपुरा तथा संघ शासित प्रदेशों में विस्तृत शैक्षिक प्रौद्योगिकी कार्यक्रम प्रारम्भ करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षा मंत्रालय ने दिसम्बर, 1980 में आकाशवाणी, दूरदर्शन, एन० सी० ई० आर० टी० और अन्य सम्बन्धित संगठनों के सहयोग से शैक्षिक प्रसारण पर राष्ट्रीय कार्यशाला (National workshop) आयोजित की। इस कार्यशाला की मुख्य उपलब्धि शैक्षिक प्रसारण हेतु मार्गदर्शक प्रारूप तैयार करना था। ये मार्गदर्शक टीकाओं के लिये राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों के पास भेज गये।

टेलीविजन का सबसे महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि वह 'जीवन्त' होता है अर्थात् वह किसी भी बात का सदैव विकारमुक्त रूप में उसी क्षण पर्दे पर प्रस्तुत कर देता है जब वह घटित होती है। जीवन्त होने के कारण यह अत्यधिक वास्तविक होता है। छात्रों को इसके प्रतिबिम्बों की यथार्थता पर सहज विश्वास हो जाता है और यह विश्वास शिक्षण को प्रभावित करता है। इसके अतिरिक्त यह उपकरण योग्यतम शिक्षकों को देश की शिक्षा-संस्थाओं तक पहुँचा देता है और शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होता है। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि इसमें मानचित्र, मॉडल, फोटोचित्र, श्यामपट, फिल्म आदि विविध प्रकार की श्रव्य-दृश्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है ताकि शिक्षण प्रभावशाली बन सके।

20. **क्रियात्मक उपकरण : Activity**—आहलूवालिया ने इसके अन्तर्गत ऐतिहासिक पर्यटन तथा नाटकीकरण या अभिनय को रखा है। नियोजित ऐतिहासिक स्थलों के पर्यटन द्वारा छात्रों को अतीत के अवशेषों को निकट से देखने का अवसर प्राप्त होता है। नाटकीकरण के उपयोग से इतिहास-शिक्षण को प्रभावशाली एवं रोचक बनाया जाता है। इन दोनों उपकरणों का विस्तृत विवेचन पृथक्-पृथक् अध्याय 14 तथा 16 में किया गया है।

(स) पाठ्य-पुस्तकें Text-Books—परम्परागत इतिहास-शिक्षण पाठ्य-पुस्तकों पर आधारित था। छात्र इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों का वाचन करते तथा शिक्षक उनकी व्याख्या करता चलता था। परन्तु आधुनिक शिक्षा में नवीन दृष्टिकोण को स्थान मिला। आज शिक्षा पाठ्य-पुस्तक तथा शिक्षण-केन्द्रित न होकर बाल-केन्द्रित हो गई। इस दृष्टि से पाठ्य-पुस्तक को इतिहास-शिक्षण का एकमात्र आधार न मानकर एक प्रभावशाली शिक्षण-उपकरण के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। इतिहास-शिक्षण के इस उपकरण का विस्तृत विवेचन पृथक् रूप से अध्याय 15 में किया गया है।

अतीत को वास्तविक बनाना
To Make the Past Real

इतिहास को कक्षा-कक्ष में प्रभावशाली बनाने के लिए अतीत को वास्तविकता प्रदान करना परमावश्यक है। आज इस तथ्य पर बल दिया जाता है कि इतिहास को '... ... सजीव' बनाया जाना चाहिए। इसके लिए अतीत को वास्तविक बनाना आवश्यक है। हेनरी जॉनसन ने लिखा है—"अतीत को वास्तविक बनाने का अर्थ है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कि भौतिक दशाओं तथा घटनाओं को कल्पना प्रदान करना तथा स्वयं में उन मान-सिक स्थितियों की समानता को पुनः उत्पन्न करना जो इन भौतिक दशाओं व घटनाओं द्वारा निर्धारित की जाती हैं या उनके द्वारा निर्धारित की गई थीं।"[1]

जॉनसन ने आगे लिखा है—"विद्यालय इतिहास को वास्तविक बनाने के लिए वास्तविकताओं से प्रारम्भ करना चाहिए, जो कि प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षित की जा सकती है या जिसका प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधित्व किया जा सकता है और इसे वास्तविक बनाये रखने के लिए सम्पूर्ण विद्यालय-काल में अवसर प्रदान किये जाने चाहिए।"[2] यहाँ स्वतः प्रश्न उठता है कि इतिहास को वास्तविक बनाने के लिए किन साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए अधोलिखित साधनों का उपयोग किया जा सकता है—

(1) **वास्तविक पदार्थ : Real objects**—इसके अन्तर्गत ऐतिहासिक अवशेष, भवन, ताम्रपत्र, शिलालेख, सिक्के, वर्तन, औजार, हथियार, पोशाक आदि हैं। जहाँ भी ये प्राप्त हैं, छात्रों को वहाँ इन्हें दिखाने के लिए ले जाना चाहिए। यह कार्य ऐतिहासिक पर्यटनों (Historical Excursions) के माध्यम से किया जा सकता है। यदि इनमें से बहुत-से पदार्थों को कक्षा-कक्ष के लिए उपलब्ध किया जा सके तो बहुत ही उत्तम होगा। वास्तविक वस्तुओं का प्रत्यक्ष रूप से निरीक्षण इतिहास को रोचक एवं सजीव बनाता है। परन्तु कक्षा-कक्ष में इतिहास की समस्त सामग्री को उपलब्ध नहीं किया जा सकता है और न उन्हें उनके उपलब्ध स्थानों पर दिखाना भी पूर्णतः सम्भव है। अतः इतिहास-शिक्षक इतिहास को वास्तविक बनाने के लिए विभिन्न वास्तविक पदार्थों को उनके प्रतिरूपों के माध्यम से उनके विषय में ज्ञान प्रदान कर सकता है। अतः इस ढंग से उनका प्रत्यक्ष रूप से प्रतिनिधित्व किया जा सकता है।

(2) **प्रतिरूप : Model**—वास्तविक वस्तुओं के प्रतिरूप या नमूने मौलिकता को स्पष्ट करने के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। इस साधन द्वारा बहुत-सी छोटी-छोटी

---

1. "To make the past real is to image material conditions and events and to reproduce in ourselves some resemblance of the mental states that determines these conditions or events were determined by them."—Henry Johnson : *Teaching of History*, p. 163.
2. "School history, to be made real and kept real, should begin with realities which can either be observed directly or which can be represented directly, and should continue throughout the school course to provide frequent opportunities for appeal to such materials."—Henry Johnson, *op. cit.*, p. 176.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुओं को पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है; उदाहरणार्थ—प्राचीन काल के विभिन्न शासकों के सिक्के, औजारों, बर्तनों, मुहरों आदि के नमूनों के माध्यम से पुनः प्रस्तुत किया जा सकता है।

(3) **चित्र : Pictures** --यह साधन प्रतिरूपों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म साधन है, क्योंकि प्रतिरूपों के द्वारा किसी वस्तु के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट किया जा सकता है। परन्तु किसी व्यक्ति या वस्तु का चित्र आवश्यक रूप से एक ही पक्ष का स्पष्टीकरण करता है। इस कारण यह साधन किसी वस्तु का अपूर्ण स्पष्टीकरण है।

(4) **फिल्म्स तथा स्लाइड्स : Films and Slides**—इतिहास को वास्तविक बनाने में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा इतिहास को विभिन्न चित्रों की लड़ी के माध्यम से सजीव एवं विशद् बनाया जाता है।

(5) **चलचित्र : Cinema**—यह साधन भी इतिहास को वास्तविक बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग देता है।

(6) **पोस्टरों और पुस्तकों, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं के चित्र : Posters and Pictures of Books, Newspapers and Magazines**—इनके माध्यम से भी कक्षा-कक्ष में इतिहास को वास्तविक बनाने में पर्याप्त सहायता मिलती है। छात्रों को ऐतिहासिक एलबम बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाय तथा इनको बुलेटिन बोर्ड (Bulletin Board) पर काट-काटकर चिपकाया जाय और आवश्यकता पड़ने पर इतिहास के अध्ययन में इनका उपयोग किया जाना चाहिए।

(7) **मानचित्र चार्ट तथा रेखाचित्र : Maps, Charts and Diagrams**—प्रो० जॉनसन का मत है कि ये वस्तुएँ प्रतिरूपों तथा चित्रों की भाँति प्रत्यक्ष रूप से वास्तविकता का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं, वरन् इनके द्वारा सम्बन्धों को स्पष्ट किया जाता है।

(8) **फोनोग्राफ तथा रेडियो कार्यक्रम : Phonograph and Radio Programmes**—इन साधनों के द्वारा इतिहास को सजीव बनाने में सहायता मिलती है।

प्रो० जॉनसन का मत है कि समस्त साधनों के होते हुए भी सत्यता यह है कि बहुत-सी वास्तविकताओं को मौखिक वर्णन के द्वारा प्रदान किया जा सकता है। मौखिक वर्णन छात्रों के मस्तिष्क पर शिक्षक के व्यक्तित्व के साथ महत्त्वपूर्ण प्रभावों को डालता है। इस साधन को कभी भी हेय दृष्टि से नहीं देखा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त इतिहास-शिक्षक अतीत को वास्तविक बनाने के लिए अजायबघर (Museum) का उपयोग कर सकता है।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Discuss the value of the following in the teaching of History
(a) Pictures. (b) Models. —(A. U., 1957)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास-शिक्षण में अधोलिखित के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए—
(अ) चित्र, (ब) प्रतिरूप।

2. Prepare a list of teaching-aids which you consider absolutely essentials for successful teaching of History. Give reasons as well. —(A. U., 1963)

इतिहास के सफल अध्यापन के लिए जिन उपकरणों को आवश्यक समझते हैं उनकी कारणों सहित एक सूची तैयार कीजिए।

3. Mention in detail the devices you would employ in the teaching of History in order to make the past 'real'. —(A. U. 1964, 65, 69, 74)

अतीत को वास्तविक बनाने के लिए इतिहास-शिक्षण में आप जिन युक्तियों का प्रयोग में लायेंगे, उनकी विवेचना कीजिए।

4. What use would you make of maps, time-lines, charts and black-board devices in teaching History to senior Basic school pupils ? Select a suitable topic from Indian History to illustrate your procedure. —(A. U., 1966)

सीनियर बेसिक स्कूल के छात्रों को इतिहास पढ़ाने में आप मानचित्रों, समय रेखाओं, चार्टों तथा श्यामपट का किस प्रकार प्रयोग करेंगे ? भारतीय इतिहास से एक उपयुक्त प्रकरण छाँटकर अपनी प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

5. What is the place of visual-aids in the teaching of History ? Illustrate the use of two simple visual-aids which you have used in your practice teaching. —(Udaipur, 1967)

दृश्य सहायक सामग्री का इतिहास-अध्यापन में क्या स्थान है ? किन्हीं दो सरल दृश्य उपकरणों के उपयोग का उल्लेख कीजिए जिनका आपने अपने शिक्षण अभ्यास में उपयोग किया है।

6. "Audio-visual aids are very important in teaching History". Name some of the aids which are effective in our Junior High schools. —(A. U., 1977, 82)

"इतिहास-शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का विशेष महत्त्व होता है।" व्याख्या कीजिए। जूनियर हाई स्कूलों के लिए कुछ उपयुक्त सामग्री के नाम बताइये।

7. Write short note on 'Importance of Audio-visual aids in teaching of History'. —(A. U., 1977, 82)

'इतिहास-शिक्षण में दृश्य-श्रव्य सामग्री का महत्त्व' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8. What use would you make of maps, charts and pictures in the teaching of History to High school pupils ? Select a suitable topic from Indian History to illustrate your procedure.

—(A. U., 1978)

हाईस्कूल के छात्रों को इतिहास पढ़ाने में आप मानचित्रों, चार्टों तथा चित्रों का किस प्रकार प्रयोग करेंगे ? भारतीय इतिहास से एक उपयुक्त प्रकरण छाँटकर अपनी प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ एवं लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. शिक्षा में रेडियो के प्रयोग के तीन लाभ लिखिये।
2. प्रतिरूप के तीन गुणों को लिखिये।
3. 'इतिहास-शिक्षण' में फिल्मों के प्रयोग के तीन लाभ बताइये।
4. ऐतिहासिक मानचित्रों के प्रयोग के तीन लाभ लिखिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में लिखे शब्दों में से उपयुक्त शब्द छाँटकर कीजिये।

(i) इतिहास········के द्वारा बनाया जाता और उनमें ही वह लिखित है। (चित्रों, मानचित्रों)

(ii) ऐतिहासिक चित्र········होने चाहिए। (रंगीन/प्रामाणिक)

(iii) को सजीव बनाने के लिए········का प्रयोग करना चाहिए। (कठपुतलियों, कैलकुलेटर, कार्बोरेटर)

(iv) मैजिक लैन्टर्न की सहायता से इतिहास के पाठों को········बनाया जा सकता है। (कठिन, रोचक, प्रयोगात्मक)

(v) अतीत को वास्तविक बनाने का अर्थ है—भौतिक दशाओं तथा घटनाओं को········प्रदान करना है। (चित्रित, कल्पना)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

14

इतिहास-शिक्षण में पर्यटन की उपादेयता

IMPORTANCE OF EXCURSION IN HISTORY TEACHING

"The school excursion as developed by Professor Rein was prized for the reality which it imparted to geography, nature study, history and other subjects. It was also prized for the open air exercise which it brought, for the initiative and freedom it made possible, for the opportunity it created for social training."

—*Henry Johnson*

विषय-प्रवेश

19वीं शताब्दी के पूर्व तक इतिहास को एक शुष्क विषय समझा जाता था। परन्तु शिक्षा की प्रगतिशील विचारधारा ने इसकी महत्ता का अनुभव किया और उसको विशद्, सजीव, रोचक एवं वास्तविक बनाने लिए पर्याप्त प्रयास किया। इतिहास-शिक्षण को रोचक एवं वास्तविक बनाने के लिए इसके शिक्षण में विभिन्न प्रकार के साधनों तथा युक्तियों का सहारा लिया जाने लगा तथा उसे विशद्, सरल, सजीव एवं रोचक बनाने के लिए पर्यटन को भी महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया। इतिहास एक ऐसा विषय माना गया, जिसका शिक्षण विद्यालय की प्राचीरों के भीतर सफलतापूर्वक प्रदान नहीं किया जा सकता, वरन् इसके लिए शिक्षा-सम्बन्धी पर्यटनों को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया, क्योंकि विद्यार्थी को इसमें प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन करने के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं। इतिहास में अधोलिखित ऐतिहासिक सामग्री का प्रत्यक्ष रूप से अध्ययन किया जा सकता है।

(1) प्राचीन दुर्ग, युद्ध-क्षेत्र, भवन आदि।

(2) अजायबघर जिनमें ऐतिहासिक अवशेष—हथियार, बर्तन, पोशाक, चित्र-कला, स्थापत्य-कला आदि के नमूने, प्राचीन पाण्डुलिपियाँ, सिक्के, मुहरें आदि हों।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(3) राजधानी तथा शिक्षा-केन्द्रों के खण्डहर; उदाहरणार्थ—इन्द्रप्रस्थ; फतहपुरसीकरी, तक्षशिला, नालन्दा आदि।

(4) ऐतिहासिक खुदाई के स्थान; उदाहरणार्थ—मोहनजोदड़ो, हड़प्पा आदि।

(5) मकबरे, गुफाएँ, स्तूप; उदाहरणार्थ—सिकन्दरा में अकबर का मकबरा, आगरा में ताजमहल, अजन्ता-ऐलोरा की गुफाएँ, मौर्यकालीन एवं गुप्तकालीन स्तूप आदि।

(6) स्थानीय ऐतिहासिक वस्तुएँ।

इतिहास-शिक्षण में पर्यटन का महत्त्व
Importance of Excursion in History Teaching

1. कक्षा-शिक्षण को रोचक बनाना : To Make the Class Teaching Interesting—पर्यटन कक्षा-शिक्षण की नीरसता को समाप्त करने में सहायक होता है। यह प्रत्यक्ष अनुभव तथा धारणाओं को स्थूल बनाने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। बालक किसी वस्तु के विषय में सुनी हुई बातों से देखी हुई बातों में अधिक रुचि लेता है और वह उनको सरलता से ग्रहण कर लेता है। पर्यटन द्वारा कक्षा-शिक्षण की अध्यापन-विधियों में परिवर्तन लाया जा सकता है और परिवर्तन ही रुचि को जन्म देने में सहायक होता है। अतः पर्यटन कक्षा-शिक्षण की परम्परागत विधियों में परिवर्तन लाकर इतिहास को रोचक एवं बोधगम्य बनता है।

2. पूर्वजों की उपलब्धियों के लिए प्रेम : Love for the Achievements of the Forefathers—छात्रों में पर्यटन के द्वारा पूर्वजों की उपलब्धियों के प्रति प्रेम एवं गर्व की भावना विकसित की जा सकती है। छात्रों को ऐतिहासिक खण्डहरों, प्रसिद्ध स्मारकों, मकबरों, किलों, स्तूपों आदि को दिखाना चाहिए और बताया जाय कि ये उन लोगों की सभ्यता एवं उन्नति के प्रतीक हैं, जो इतना समय व्यतीत होने पर भी उसी या किसी अंश तक गिरी हुई दशा में आज भी खड़े हुए हैं। जब छात्र इन ऐतिहासिक स्मारकों का अवलोकन करेंगे तो वे अपने पूर्वजों की उपलब्धियों की महत्ता को समझने में समर्थ होंगे और वे उनके प्रति आदर एवं सम्मान की भावना रखने लगेंगे। इस प्रकार छात्रों को पूर्वजों की उपलब्धियों पर गर्वान्वित होने का अवसर प्राप्त होगा। इसके साथ ही बालकों को उस समय की सभ्यता एवं संस्कृति का भी ज्ञान प्राप्त हो जायगा।

3. स्थानीय इतिहास का ज्ञान : Knowledge of Local History—पर्यटन के माध्यम से स्थानीय इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। बालक इसके माध्यम से अपने भौतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक तथ्यों का परिचय प्राप्त करने के साथ-साथ उनके पारस्परिक सम्बन्धों को समझने में भी समर्थ होते हैं। इसके द्वारा उनको दैनिक जीवनोपयोगी ज्ञान भी प्राप्त होता है।

4. मानसिक शक्तियों का विकास : Development of Mental Powers—पर्यटन द्वारा छात्रों की निरीक्षण, कल्पना, अन्वेषण, निर्णय आदि शक्तियों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का विकास होता है। इसके साथ ही पर्यटन उनमें सौन्दर्यानुभूति का विकास करता है। जब बालक विभिन्न प्रकार के कलात्मक नमूनों का निरीक्षण करते हैं तो सौन्दर्यानुभूति का विकास होता है।

ऐतिहासिक पर्यटन की योजना बनाने में ध्यान रखने योग्य बातें
Considerations for Planning a Historical Excursion

ऐतिहासिक पर्यटन की योजना बनाने तथा उसकी सफलता के लिए इतिहास-शिक्षक को अधोलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

1. इतिहास-शिक्षक को पर्यटन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व स्थानीय वातावरण की ऐतिहासिक सामग्री का पर्यवेक्षण कर लेना चाहिए। इसके पश्चात् ही उसकी योजना बनाने के लिए तत्पर हो।

2. यदि किसी सुदूर ऐतिहासिक स्थान को दिखाने के लिए ले जाना है तो भी शिक्षक को उस स्थान के विषय में पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

3. स्थान निर्धारित करने के पश्चात् योजना का निर्माण किया जाय और योजना बनाने में अधोलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दिया जाय।

(i) उस स्थान पर किस उद्देश्य से जा रहे हैं अर्थात् पर्यटन का उद्देश्य निर्धारित करना परमावश्यक है। इसके निर्धारण में वह बालकों का सहयोग प्राप्त करे।

(ii) किस मार्ग से उस स्थान पर सुविधापूर्वक पहुँचा जा सकता है और मार्ग कौन-कौन-से शैक्षिक अनुभव प्रदान कर सकता है, इसका भी ध्यान रखना चाहिए।

(iii) बालकों को अपने साथ किन-किन वस्तुओं को ले जाना चाहिए, उदाहरणार्थ—नोट-बुक, पैन या पेंसिल, कैमरा, बिस्तर, नाश्ता तथा खाने का सामान आदि।

(iv) विभिन्न वस्तुओं के प्रबन्ध का भार किन-किन छात्रों को दिया जाय। इसके लिए शिक्षक बालकों को विभिन्न समूहों में विभाजित कर सकता है और प्रत्येक समूह का एक नायक नियुक्त कर सकता है। इन समूहों का प्रबन्ध की दृष्टि से भी महत्त्व है तथा इनको पृथक्-पृथक् प्रकरणों के अध्ययन का भार भी सौंपा जा सकता है।

4. पर्यटन की सफलता के लिए छात्रों का सहयोग लेना परमावश्यक है।

5. जब छात्र उस स्थान-विशेष का निरीक्षण करें तब उनका उपयुक्त ढंग से पथ-प्रदर्शन किया जाना चाहिए। उनको प्रश्नों के माध्यम से प्रत्येक वस्तु का सूक्ष्मातिसूक्ष्म ज्ञान प्रदान कराने का प्रयास किया जाय।

6. जिस स्थान को देखने के लिए जायें, वहाँ की ऐतिहासिक वस्तुओं का ही अवलोकन न किया जाय वरन् वहाँ के निवासियों से भी सम्पर्क स्थापित किया जाय, क्योंकि उनसे बहुत-सी ऐतिहासिक बातों का पता लग सकता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. छात्रों को ऐतिहासिक तथ्यों को नोट करने का आदेश देना चाहिए जिससे वे बाद में उनका उपयोग कर सकें, क्योंकि प्रत्येक घटना या वस्तु को याद रखना सम्भव नहीं है।

8. छात्रों को ऐतिहासिक दुर्ग, मकबरा, स्मारक, मस्जिद, स्तूप आदि को दिखाते समय उनके सम्बन्ध में सभी बातों पर प्रकाश डालना चाहिए; उदाहरणार्थ—आगरा के किले को दिखाते समय उसकी खाई की लम्बाई, चौड़ाई तथा गहराई और उसकी बनावट पर ध्यान देने के लिए कहा जाय। उनको यह भी बताया जाय कि इसमें यमुना नदी से पानी भरा जाता था, इस खाई का अभिप्राय यह है कि इससे शत्रु को किले पर आक्रमण करने में कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त किले के द्वारों के विषय में बताया जाय। किले का मुख्य द्वार अन्य द्वारों की अपेक्षा दृढ़ है। ये द्वार एक पंक्ति में नहीं होते, वरन् चक्करदार निर्मित किए गए हैं। क्योंकि इससे शत्रु को भीतर पहुँचने में कठिनाई उत्पन्न हो, इसी कारण भीतर का मार्ग भी चढ़ाई का तैयार किया गया है। इन बातों के अतिरिक्त छात्रों को किले की अन्य इमारतों—शीशमहल, दीवाने-आम, दीवाने-खास, मोती मस्जिद आदि को दिखाया जाय और उनके इतिहास को ब्यौरेवार स्पष्ट किया जाय। तदुपरान्त किले की दीवारों एवं उनका युद्ध की दृष्टि से महत्त्व भी स्पष्ट किया जाय। इस अवलोकन में छात्र अपनी-अपनी नोट-बुकों में मुख्य-मुख्य बातों को लेखबद्ध करते रहेंगे।

यदि ताजमहल, जो कि मुमताज बेगम का मकबरा है, को दिखाया जाय तो उसकी बनावट, उद्यानों, पत्थर की किस्म, लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई, स्थापत्य-कला का सूक्ष्म विवेचन आदि बातों का ज्ञान कराया जाय तथा उसकी तुलना अकबर के मकबरे या अन्य किसी मकबरे से की जाय और दोनों के कलात्मक तथा स्थापत्य सम्बन्धी अन्तर को स्पष्ट किया जाय। इन स्थानों का अवलोकन प्रश्नों की सहायता से किया जाना चाहिए क्योंकि इससे उनकी छानबीन या अन्वेषण करने की शक्ति का विकास होगा और उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनाने में सहायता मिलेगी।

9. यदि पर्यटन स्थान पर रात्रि को रुकना पड़े तो रात को दिन-भर देखी गई वस्तुओं के विषय में चर्चा करवा देनी चाहिए, जिससे उनकी सम्भ्रान्तियाँ दूर हो सकें तथा उनकी शंकाओं का समाधान भी करना चाहिए।

10. पर्यटन के कार्यक्रम के समाप्त होने पर यदि दूसरे मार्ग से वापस आ सकें तो अच्छा रहेगा, क्योंकि इससे उनको और अन्य नई बातों का ज्ञान हो जायगा।

11. पर्यटन से वापस आ जाने पर उनके अनुभवों को क्रमबद्ध एवं इतिहास के पाठ से सम्बन्धित किया जाय। शिक्षक इस कार्य को विभिन्न ढंगों—स्पष्टीकरण, वर्णन एवं समाचार-पत्रों के लिए तैयार किये प्रतिवेदनों द्वारा, प्रतिरूपों का निर्माण करवाकर, चित्रकला तथा स्थापत्य-कला के नमूने बनवाकर, मित्रों को पत्र लिखवाकर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आदि से पूर्ण करा सकता है। इसके पश्चात् उनसे उस पर्यटन का पूर्ण वर्णन लेख कराया जाय। इसके अतिरिक्त छात्रों, से उन स्थानों के चित्र-निर्मित कराये तथा चित्रकला के नमूनों को आर्ट-पेपर पर बनाया जाय। इस प्रकार के नमूने आदि कक्षा में ऐतिहासिक वातावरण उत्पन्न करने में सहायक होंगे और इतिहास-कक्ष भी सुसज्जित होगा।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Discuss the value of excursions in the teaching of History.
—(P. U., 196

इतिहास-शिक्षण में पर्यटन के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

2. Discuss the importance of excursions of historical places.
—(P. U., 1956, 61, 62, 6

ऐतिहासिक स्थानों के पर्यटनों के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

3. Discuss the uses and limitations of excursions for teachi history to students of secondary classes. What considerati will you keep in mind for planning a historical excursion?
—(Raj. B. Ed., 196

माध्यमिक कक्षाओं के छात्रों को पर्यटन द्वारा इतिहास की शिक्षा प्रदान के लाभों तथा सीमाओं की विवेचना कीजिए। आप ऐतिहासिक पर्यटन योजना को बनाते समय किन-किन बातों को ध्यान में रखेंगे?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठकों में लिखे शब्दों छाँटकर कीजिए—
   (i) पर्यटन द्वारा इतिहास-शिक्षण को.........बनाया जाता है।
   (सजीव, कठि
   (ii) पर्यटन द्वारा छात्रों में पूर्वजों की उपलब्धियों के लिए.........एवं की भावना विकसित की जाती है। (प्रेम, घृणा, ई
   (iii) पर्यटन द्वारा छात्रों को.........अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्र किये जाते हैं। (प्रत्यक्ष, अन्वेषण, निरी

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

(i) पर्यटन के चार लाभ बताइये।
(ii) पर्यटन की योजना बनाने के लिए छात्रों का सहयोग क्यों लिया जा (50 शब्दों में उत्तर दीजिए।)
(iii) चार प्रमुख ऐतिहासिक स्थानों के नाम बताइये जहाँ छात्रों को प के लिए ले जाया जा सकता है?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

15

इतिहास की पाठ्य-पुस्तक
HISTORY TEXT-BOOK

"The modern text-book is an instructional asset that has a valuable place in today's classroom. The text-book may be used effectively in different ways." —*Thomas M. Risk*

विषय-प्रवेश

रेमाण्ट का कथन है—"पिछले समय में छात्र अपने पाठ को याद करते थे और शिक्षक को सुनाते थे। आज शिक्षक पाठ को याद करता है और छात्रों को सुनाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि पाठ्य-पुस्तकों का स्थान मौखिक पाठों ने ले लिया है। परन्तु यह सर्वथा अनुचित है, क्योंकि शिक्षक के पथ-प्रदर्शन के अभाव में सर्वोत्तम पाठ्य-पुस्तक भी छात्रों के लिए शिक्षा की अधूरी और अपूर्ण सामग्री रह जाती है। अतः छात्रों को उचित प्रकार की शिक्षा देने के लिए शिक्षक तथा पाठ्य-पुस्तक दोनों की आवश्यकता है।" क्रो व क्रो ने ठीक ही लिखा है—"न तो केवल पाठ्य-पुस्तक और न केवल अध्यापक शिक्षा का सर्वोत्तम साधन है। यदि तरुण व्यक्तियों को अपने उत्तरदायित्व को वहन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना है, तो भली-भाँति चुनी हुई पाठ्य-पुस्तकों और भली-भाँति प्रशिक्षित अध्यापक के संयोग की आवश्यकता है।"[1]

पाठ्य-पुस्तक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि : Historical Back ground of Text-Book—लेखन-कला के उद्गम से पूर्व, शिक्षा व्याख्यान-प्रणाली से प्रदान की

1. "Neither the text-book nor the teacher alone constitutes the best medium for education. A combination of well-chosen text-books and a well trained teacher is needed if young people are to be trained to meet their responsibility." —Crow & Crow

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाती थी। अध्यापक अपने मुख से बालकों के कानों तक ज्ञान पहुँचाता था। ज लेखन-कला का उद्गम हुआ तब से पुस्तकों का रचना-कार्य प्रारम्भ हुआ। पु पुस्तकों का सर्वाधिक प्रयोग मुद्रण-यन्त्र के आविष्कार के पश्चात् हुआ। कॉमेनि पहला व्यक्ति था जिसने भाषा की पाठ्य-पुस्तक की रचना की। साथ ही उ प्रत्येक स्तर पर पाठ्य-पुस्तकों के प्रयोग पर बल दिया। फ्रांस की क्रान्ति ने इतिह को पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया। तत्पश्चात् इतिहास में पाठ्य-पुस्त का राष्ट्रीयकरण हुआ।

इतिहास शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक का स्थान : Place of text-book in t Teaching of History—परम्परागत इतिहास-शिक्षण पाठ्य-पुस्तकों का छा द्वारा वाचन तथा शिक्षक द्वारा उसकी व्याख्या पर आधारित था। प पाठ्य-पुस्तकों का यह उपयोग अमनोवैज्ञानिक एवं रूढ़िवादी है। न दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित न होकर बाल-केन्द्रित गयी है। इतिहास-शिक्षण में अब पाठ्य-पुस्तक को एकमात्र आधार न माना अब उसे एक प्रभावी शिक्षण-साधन के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है। प दुर्भाग्य से आज भी बहुत-से इतिहास-शिक्षक पाठ्य-पुस्तक का उपयोग परम्परा ढंग से ही करते दिखाई पड़ते हैं जिससे इतिहास एक नीरस एवं रटने मात्र का वि बनकर रह गया है। इसी कारण इतिहास के प्रति निम्नलिखित धारणा आज देखने को मिलती है—

हिस्ट्री जॉगरफी बड़ी बेवफा।
रात को याद करो दिन को सफा।।

इतिहास-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक का स्थान अभी तक एक विवादपूर्ण प्रश्न है इस सम्बन्ध में हमें दो विरोधी वर्गों के मत देखने को मिलते हैं, यथा—

(अ) पहले वर्ग के मतानुसार इतिहास-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तकों को स्थान प्रदान नहीं किया जाना चाहिए। वे अपने पक्ष में निम्नलिखित तर्क प्रस्तु करते हैं—

(1) पाठ्य-पुस्तकें शिक्षण-क्रम में उलझन उत्पन्न करती हैं।

(2) पाठ्य-पुस्तकें स्रोत-पद्धति की आत्मा का हनन करती हैं। स्रोत-पद्धति छात्रों को ऐतिहासिक अन्वेषण के लिए प्रोत्साहित करती हैं, परन्तु उनको पाठ्य-पुस्तकें प्रदान की जायेंगी तब वे स्रोतों का उपयोग न करेंगे और इन्हीं पाठ्य-पुस्तकों की विषय-वस्तु से ही अपने को संकु एवं सीमित कर लेंगे।

(3) पाठ्य-पुस्तकें छात्रों में तथ्यों को रटने की बुरी आदत डालती हैं साथ ही वे उनको अन्धानुकरण के लिए प्रेरित करती हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ब) दूसरे वर्ग के मतानुसार पाठ्य-पुस्तकें ही शिक्षण का आधार होना चाहिए। वे अपने पक्ष में अग्रांकित तर्क प्रस्तुत करते हैं—

(1) पाठ्य-पुस्तकों का कक्षा में वाचन ऐतिहासिक तथ्यों को याद करने में सहायक होता है।

(2) पाठ्य-पुस्तकों के उपयोग से पाठ की पूर्व तैयारी एवं उसकी पुनरावृत्ति सरलता से की जा सकती है।

(3) पाठ्य-पुस्तकें ज्ञान की मितव्ययी ढंग से प्रदान करने के लिए आवश्यक हैं।

(4) इसके उपयोग से स्वाध्याय तथा आत्म-विश्वास की वृद्धि की जाती है।

(5) ये शिक्षण-विधि के संचालन तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया में शिक्षक का मार्गदर्शन करती हैं।

उपर्युक्त दोनों मतों पर दृष्टिपात करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि इन दोनों मतों के मध्य का मार्ग ग्रहण करना चाहिए। इसे एक प्रभावी शिक्षण साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इसे अध्यापक का अनुपूरक माना जाए। डॉ० जॉनसन ने इसे एक महत्त्वपूर्ण शिक्षण-साधन माना है। किसी कक्षा के लिए बहुपाठ्य पुस्तकों को निर्धारित किया जाना चाहिए जिससे शिक्षक को पाठ्य-वस्तु एवं शिक्षण-विधियों के चयन में सहायता मिल सके। साथ ही छात्रों को स्वक्रिया एवं स्वाध्याय के लिए सुअवसर प्राप्त हो सकें। परन्तु किसी भी स्थिति में पाठ्य-पुस्तक को अध्यापक का स्थान ग्रहण नहीं करने देना चाहिए, क्योंकि इतिहास-शिक्षक एक सजीव व्यक्ति है, जब कि इतिहास की पाठ्य-पुस्तक एक जड़ पदार्थ मात्र है।[1] पाठ्य-पुस्तक के उपयोग के सम्बन्ध में हमको सी० पी० हिल का परामर्श ध्यान में रखना चाहिए। उन्होंने लिखा है—"पाठ्य-पुस्तकें तथ्यों के संकलन के रूप में प्रयुक्त नहीं की जानी चाहिए, जिनको छात्र हृदयंगम कर सकें, वरन् वे मौलिक सूचनाओं के भण्डार के रूप में प्रयुक्त की जायें जिनको छात्र विभिन्न सक्रिय ढंगों से प्रयोग में ला सकें।"[2]

इतिहास की पाठ्य-पुस्तक के प्रकार : Types of History Text-books—जॉनसन (Johnson) ने इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों को निम्नलिखित तीन वर्गों में विभक्त किया है—

1. संक्षिप्त पाठ्य-पुस्तकें : Precis Text-book—इनमें विषय-वस्तु को

1. घाटे वी० डी० : 'इतिहास-शिक्षण', पृ० 81.
2. A text-book ought not to be used as a collection of facts to be learnt by heart but rather as a storehouse of basic information which the pupils can use in a variety of active ways."

—C. P. Hill

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सारांश या संक्षिप्त रूपरेखा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। ये पुस्तकें अध्ययन के लिए आधार-बिन्दु प्रस्तुत करती हैं।

2. **व्याख्यात्मक पाठ्य-पुस्तकें : Manuals**—इनमें पाठ्य-वस्तु की रूपरेखा की विस्तृत व्याख्या की जाती है, परन्तु उनके और अधिक विकास करने की सम्भावना रहती है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि रूपरेखाओं को और अधिक विकसित करने की सम्भावना रहती है।

3. **आत्मनिर्भर, अतिव्याख्यात्मक पाठ्य-पुस्तकें : Course Books**—इनमें विषय-वस्तु की पूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की जाती है जिससे वे आत्मनिर्भर बन जाती हैं। इनमें विषय-वस्तु के अतिरिक्त विकास के लिए कोई स्थान नहीं होता है। अतः पुस्तकें स्वयं में पूर्ण होती हैं।

पाठ्य-पुस्तकों के गुण या विशेषताएँ : Characteristics or Qualities of Text-books—इतिहास की पाठ्य-पुस्तक कैसी होनी चाहिए ? इस प्रश्न का उत्तर एक और प्रश्न के उत्तर पर निर्भर करता है। वह यह है—पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग कौन करेगा—शिक्षक या छात्र ? पाठ्य-पुस्तक स्पष्टतः छात्रों के लिए होती है। उन्हें ही इसे कक्षा में तथा घर पर पढ़ना है और इससे अधिकाधिक लाभ उठाना है तो स्वतः ही प्रश्न उठता है कि जब पाठ्य-पुस्तक छात्र के लिए है तो यह किस प्रकार की होनी चाहिए ? अर्थात् इसमें कौन से गुण या विशेषताएँ होनी चाहिए ? इस सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख नीचे किया जा रहा है—

1. अच्छी पाठ्य-पुस्तक का एक आवश्यक गुण यह है कि वह शिक्षण उद्देश्यों के आधार पर लिखी हुई हो। ये शिक्षण-उद्देश्य कक्षा और आयु वर्ग के छात्रों के मानसिक विकास से सम्बन्धित होने चाहिए।
2. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक की प्रमुख विशेषता है—तथ्यों का शुद्ध प्रस्तुतीकरण। अतः पाठ्य-पुस्तक लेखक को अपने विषय का विशेषज्ञ होना आवश्यक है। साथ ही उसे उस कक्षा को पढ़ाने का अनुभव हो जिसके लिए पाठ्य-पुस्तक लिख रहा है। इसलिए जॉनसन (Johnson) ने कहा है—"शुद्धता की प्रथम कसौटी स्वयं लेखक है।"
3. इतिहास की पाठ्य-पुस्तकें अत्यधिक तथ्यों का संक्षिप्त सार न हों। दुर्भाग्य से हमारी अनेक पाठ्य-पुस्तकें इस श्रेणी में आती हैं। ऐसा इसलिए होता है कि हमारे प्रकाशक लेखकों को भारतीय इतिहास 200 या 250 पृष्ठों में लिखने के लिए बाध्य करते हैं। लेखक पाँच हजार वर्षों में हुई प्रत्येक छोटी से छोटी घटना के प्रति आस्था रखता है। इस कारण वह सोचता है कि उसका बड़प्पन पाठ्य-पुस्तक के लेखक के रूप में गुणात्मक है और इस बात पर निर्भर करता है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसकी पुस्तक में तथ्यों की संख्या कितनी है। इसलिए वह सभी तथ्यों को दो-ढाई सौ पृष्ठों की 'कालकोठरी' में खचाखच भर देता है।

4. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक अनिवार्य रूप से चयनात्मक हो। सभी घटनाओं तथा तथ्यों का वर्णन करना आवश्यक नहीं है। इसमें उन सभी तथ्यों तथा घटनाओं का पूर्ण विवरण होना चाहिए, जिन्होंने समाज के जीवन को किसी न किसी रूप में प्रभावित किया है।

5. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में अत्यावश्यक तथ्यों को पूर्णता के सिद्धान्त के अनुसार निरूपित किया जाय। ये तथ्य स्पष्ट एवं सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किये जायँ जिससे इतिहास यथार्थ एवं सजीव प्रतीत हो।

6. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु तथा उसका प्रस्तुतीकरण देश-काल के अनुरूप अभिवृत्तियों को विकसित करे। साथ ही विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रों की आवश्यकताओं तथा योग्यताओं एवं क्षमताओं के अनुकूल हो। विषय-वस्तु एवं उसके प्रस्तुतीकरण के माध्यम से छात्रों में लोकतांत्रिक भावना, धार्मिक सहिष्णुता, भावात्मक एवं राष्ट्रीय भावनात्मक एकता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना आदि अभिवृत्तियों का विकास किया जाना चाहिए। वे छात्रों में संकीर्ण विघटनकारी प्रवृत्तियों के विकास को अवरुद्ध करें।

7. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु कालक्रमानुसार व्यवस्थित की जाय, क्योंकि समय-ज्ञान का विकास करना इतिहास-शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य है। समय-ज्ञान से ही घटनाओं तथा व्यक्तियों के परस्पर कार्य-कारण सम्बन्ध स्पष्ट होते हैं।

8. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में भाषा-शैली सरल एवं प्रभावोत्पादक हो। इसमें भाषा-शैली न तो इतनी कठिन हो कि तथ्य समझ में ही न आ सकें और न वह इतनी निम्नकोटि की हो कि उससे तथ्य प्रभावी न बन पायें। अतः कक्षा-स्तर के अनुकूल सरल भाषा तथा साहित्यिक शैली में तथ्यों का यथार्थ एवं प्रभावोत्पादक प्रस्तुतीकरण इतिहास की पाठ्य-पुस्तक की एक वांछनीय विशेषता है।

9. पाठ्य-पुस्तक निरूपण में सरल तथा मूर्त हो। जहाँ तक सम्भव हो, इसमें सामान्यीकरण तथा अमूर्त धारणाएँ न हों। प्रो० बी० डी० घाटे ने लिखा है—"अध्याय का प्रारम्भ किसी सामान्यीकरण की ओर निर्देश करने के स्थान पर किसी सिद्धान्त का स्पष्टीकरण करने वाले मूर्त उदाहरण से करना चाहिए।"

10. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक की एक प्रमुख विशेषता है—स्वक्रिया की उत्प्रेरक। यह छात्रों की स्वक्रिया को प्रेरित करके उन्हें ज्ञानार्जन में

12

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहायता दे। इसमें स्वाध्याय, सन्दर्भ ग्रन्थों के अवलोकन, मान
समय-रेखा, मॉडल आदि बनाने तथा ऐतिहासिक पर्यटन, अभिनय
स्वक्रियाओं को क्रियान्वित करने की प्रेरणा हेतु छात्रों के लिए
होने चाहिए।

11. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक रोचक हो। इसमें तथ्यों को रोचक बना
लिए मानचित्र, चित्र, चार्ट, समय-रेखा, वंश-वृक्ष, युद्ध योजना,
संदर्भ, चित्रकारी के नमूने आदि को आवश्यकतानुसार एवं कक्षा
के अनुकूल यथास्थान प्रदान किया जाना चाहिए।
12. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक आकर्षक हो। पाठ्य-पुस्तक का मुद्रण,
जिल्द, मुखपृष्ठ आदि शुद्ध एवं आकर्षक हों।
13. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक के अध्यायों के अन्त में अभ्यास
(Exercises) हों।
14. पाठ्य-पुस्तक में मूल्यांकन के लिए वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघुउत्तरात्मक
तथा निबन्धात्मक प्रश्न हों।
15. प्रत्येक अध्याय या अध्यायों के प्रत्येक वर्ग के अन्त में अतिरिक्त सम
अध्ययन (Collateral Reading) के लिए निर्देश हों।
16. पाठ्य-पुस्तक में अनुक्रमणिका, संदर्भ-ग्रन्थ की सूची आदि हो जि
प्रयोग करना छात्रों को सिखाया जा सके।
17. पाठ्य-पुस्तक का मूल्य यथोचित कम हो जिससे प्रत्येक बालक उसे
कर सके।

पाठ्य-पुस्तकों के मूल्यांकन के लिए मापदण्ड[1]
Scale for Evaluating Text Books

पाठ्य-पुस्तकों का वस्तुपरक मूल्यांकन करके उनका समुचित चयन कर
लिए आर्थर बाइनिंग तथा डेविड बाइनिंग (Arthur Bining & David Bini
द्वारा निर्धारित मापदण्ड को कुछ परिवर्तनों के साथ इतिहास की पाठ्य-पुस्त
लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है। पाठ्य-पुस्तकों की निम्नलिखित विशेषताओं
उनके समक्ष अंकित पक्षों के आधार पर संख्यात्मक वर्गक्रम से मूल्यांकन किया
सकता है।

संख्यात्मक वर्गक्रम—	1	2	3	4	5
	अत्यन्त निकृष्ट	निकृष्ट	सामान्य	अच्छा	बहुत अ

1. साज-सज्जा

(1) पुस्तक का आकार

1. On the lines of a suggested 'Scale for Evaluating Text-Books the Social Studies.'—A. C. Bining & D. C. Bining : *Teach the Social Studies in Secondary School*, p. 80-81.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	(2) जिल्द की सुदृढ़ता
	(3) कागज
	(4) छपाई
	(5) मारजिन की चौड़ाई
2. पाठ्य-वस्तु की व्यवस्था	(1) पाठों का संगठन
	(2) पाठों का तर्कसम्मत विभाजन
	(3) पाठों की सुसम्बद्धता
	(4) क्रमबद्धता
	(5) सारांश
	(6) अन्तर्निहित एकता
3. प्रस्तुतीकरण	(1) भाषा
	(2) विस्तार
	(3) शैली
	(4) वस्तुनिष्ठता या निष्पक्षता
	(5) ऐतिहासिक शब्दावली
	(6) आधुनिकतम ज्ञान का समावेश
4. स्रोत, संदर्भ, मानचित्र, चार्ट, वंश-वृक्ष आदि	(1) शुद्धता
	(2) विस्तार
	(3) संख्या
	(4) आकार
	(5) सुसंगतता या उपयुक्तता
	(6) अनुपात
	(7) महत्त्व
5. उदाहरण	(1) शुद्धता
	(2) वस्तुनिष्ठता
	(3) गुणात्मकता
	(4) उपयुक्तता
	(5) जीवन से सम्बद्धता
	(6) अनुपात
	(7) स्पष्टता
6. मूल्यांकन प्रश्न	(1) उद्देश्याधारित उपयुक्तता
	(2) पाठ्य-वस्तु आधारित उपयुक्तता
	(3) प्रश्नों की व्यापकता
	(4) छात्रों की दृष्टि से प्रश्नों की उपयोगिता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(5) प्रश्नों की विश्वसनीयता
(6) प्रश्नों की वैधता
(7) प्रश्नों की वस्तुनिष्ठता
(8) प्रश्नों की प्रयोगात्मकता
(9) प्रश्नों की प्रेरणात्मक शक्ति

7. निर्देशन एवं विशेष अध्ययन योग्य पुस्तकें
(1) व्यावहारिकता
(2) छात्रों की दृष्टि से महत्त्व
(3) आधुनिकतम

8. परिशिष्ट एवं अनुक्रमणिका
(1) व्यावहारिकता
(2) व्यवस्थापन
(3) पूर्णता
(4) महत्त्व

कुल योग..........

इतिहास की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन
Critical Estimate of Present Text-books of History

पाश्चात्य देशों में प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों के सुधार एवं उनके अच्छे निर्मा कार्य से सम्बन्धित बहुत-से अनुसन्धान कार्य हुए हैं और हो रहे हैं। इन अनुसन्धा कार्यों के फलस्वरूप वहाँ उत्तम पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध हो सकी हैं। परन्तु हमारे दे में अभी पाठ्य-पुस्तकों का रूप परम्परागत बना हुआ है। यद्यपि इस क्षेत्र में राष्ट्री शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N. C. E. R. T.) ने कुछ कार्य किया जिसकी प्रशंसा की जा सकती है। फिर भी अधिकांश पाठ्य-पुस्तकें आलोचना विषय बनी हुई हैं। इतिहास की प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों पर दृष्टिपात करने से उन निम्नलिखित दोष पाये जाते हैं—

1. पाठ्य-पुस्तकों में विषय-वस्तु तथा उनकी व्यवस्था, कक्षा-स्तर त पाठ्यक्रम के अनुसार नहीं पायी जाती।
2. इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों में तथ्यों की पुनरावृत्ति तथा अनावश्य तथ्यों का समावेश आदि दोष पाये जाते हैं।
3. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में राजनीतिक पक्ष का विस्तृत विवरण प्रस्तु किया जाता है। इनमें जनसाधारण के जीवन के सामाजिक, आर्थि सांस्कृतिक, धार्मिक आदि पक्षों की उपेक्षा पायी जाती है जिसके कार ये पुस्तकें छात्रों में सामाजिक एकता की भावना का विकास करने असमर्थ रहती हैं।
4. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में तथ्यों का प्रस्तुतीकरण ऐसे ढंग से किया ज

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

है कि कभी-कभी वे साम्प्रदायिक एवं संकीर्ण भावना जाग्रत करने में अधिक सफल हुई हैं। जबकि उनको राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने वाला साधन होना चाहिए।

5. इनमें स्रोत सन्दर्भों का अभाव पाया जाता है। इस कारण भी उनका स्तर गिरा हुआ है।
6. बाह्य साज-सज्जा के दृष्टिकोण से भी प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें निम्न श्रेणी की हैं।
7. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में उपयुक्त सहायक सामग्री—चित्र, मानचित्र, समय-रेखा, युद्ध-योजना आदि का अभाव पाया जाता है।
8. प्राय: प्रचलित पाठ्य-पुस्तकें उन लेखकों द्वारा लिखी गई हैं जो कॉलेज या विश्वविद्यालय के शिक्षक हैं जिनको सम्बन्धित कक्षा के शिक्षण का कोई अनुभव नहीं होता है। फलत: ऐसी पाठ्य-पुस्तकें कक्षा-स्तर के अनुकूल नहीं होतीं और न वे एक प्रभावकारी शिक्षण-उपकरण के रूप में कार्य करती हैं।
9. इतिहास की प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में तिथियों को अधिक महत्त्व प्रदान किया गया है जिसको छात्र असम्बद्ध रूप से रटते हैं। फलत: इतिहास एक नीरस विषय बन गया है।
10. इनमें मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियाँ भी पायी जाती हैं।
11. प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में मूल्यांकन की नवीन विधि के अनुसार प्रश्नों को स्थान प्रदान नहीं किया गया है।
12. वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों में भाषा तथा शैली का भी दोष पाया जाता है।

पाठ्य-पुस्तकों के सुधार हेतु शिक्षा-आयोग के विचार

Views of Education Commission about the Improvement of the Standard of Text-books

शिक्षा आयोग ने लिखा है—"एक ऐसी पाठ्य-पुस्तक जो एक सुशिक्षित एवं सुयोग्य विषय-विशेषज्ञों द्वारा लिखी गई हो और जिसके निर्माण में मुद्रण स्तर, चित्र एवं सामान्य-सज्जा के प्रति समुचित सावधानी बरती गई हो, छात्रों की रुचि को जगायेगी और अध्यापक के कार्य में पर्याप्त सहायक सिद्ध होगी।" इस प्रकार उच्च कोटि की पाठ्य-पुस्तकों की व्यवस्था स्तर-उन्नयन करने में प्रभावी सिद्ध होगी। दुर्भाग्यवश हमारे देश में पाठ्य-पुस्तक लेखन तथा उत्पादन की ओर उसकी महत्ता के अनुरूप ध्यान नहीं दिया गया है। अधिकांश विद्यालय विषयों में विशेषकर भाषाओं में ऐसी पुस्तकों की प्रचुरता है जिनका स्वरूप एवं स्तर निम्न कोटि का है तथा जिन का उत्पादन बड़ी उपेक्षा से किया गया। इनके सुधार के लिए शिक्षा-आयोग के अग्रांकित सुझाव उल्लेखनीय हैं—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. देश में उपलब्ध विद्वानों की सहायता से राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT) द्वारा पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाय।
2. भारत सरकार पाठ्य-पुस्तक उत्पादन के लिए सरकारी क्षेत्र में व्यापारिक ढंग पर कार्य करने वाले स्वायत्त संगठन की स्थापना करे।
3. पाठ्य-पुस्तकों के उत्पादन के लिए राज्य शिक्षा विभाग के निकट सम्पर्क से काम करने वाले एक पृथक् अभिकरण (Agency) की स्थापना की जाय। यह अभिकरण राज्य स्तर पर स्वायत्त एवं व्यापारिक आधार पर कार्य करे।
4. विद्वानों को पुस्तक लेखन के लिए आकर्षित करने हेतु यह अभिकरण पारिश्रमिक देने में प्रकाशकों से अधिक उदार नीति अपनाये।
5. यह अभिकरण पाठ्य-पुस्तकों का उत्पादन न लाभ न हानि (No Profit no Loss) के आधार पर कार्य करे।
6. पुस्तक लेखन के कार्य के लिए प्रत्येक सम्भव क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जाय।
7. शिक्षकों को पाठ्य-पुस्तकें लिखने के लिए विशेषतः प्रोत्साहित करना चाहिए।
8. प्रत्येक पाठ्य-पुस्तक में निरन्तर संशोधन करना, उसका आधुनिकतम स्वरूप बनाये रखना तथा यदि अधिक नहीं तो कम से कम पाँच वर्षों में उसका पूर्णतया संशोधन करना कार्यनीति का एक निश्चित उद्देश्य होना चाहिए।

इतिहास की पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग
Use of History Text-book

शिक्षा आयोग का विचार है—"प्रत्येक विषय में प्रत्येक कक्षा के लिए कम से कम 3-4 पुस्तकें हों और एक विद्यालय के लिए उनमें से सबसे अधिक उपयुक्त पुस्तक का चयन शिक्षक पर छोड़ देना चाहिए।" प्रश्न यह है कि जो भी पुस्तक चयन कर ली जाय, उसका प्रयोग कक्षा में किस ढंग से किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में कुछ महत्त्वपूर्ण सुझाव निम्नलिखित हैं—

(1) शिक्षक छात्रों से किसी निश्चित तथ्य या सूचना की खोज करने के लिए कह सकता है। इस प्रकार बालक पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग उस तथ्य की खोज के लिए करेगा। परन्तु पाठ्य-पुस्तक में बहुत-से तथ्य या सूचनाएँ होती हैं। ऐसा न हो कि छात्र उनमें वह जाय और अपने मन्तव्य को प्राप्त न कर सके। अतः शिक्षक को उस तथ्य या सूचना से सम्बन्धित पृष्ठों को बता देना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) शिक्षक छात्रों से पाठ्य-पुस्तक में से किसी पाठ या इकाई को घर पर पढ़ने के लिए कह सकता है और कक्षा में उस पाठ या इकाई पर वाद-विवाद करा सकता है। इस प्रकार पाठ्य-पुस्तक कार्य (Assignment) के आधार के रूप में प्रयुक्त की जाती है।

(3) शिक्षक पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग पाठ के अन्त में करवा सकता है। शिक्षक स्वयं पाठ का विकास विभिन्न ढंगों से करके उनको पाठ की रूपरेखा वता देगा। अन्त में, वह पाठ्य-पुस्तक की सहायता से इस रूपरेखा को छात्रों से विकसित करायेगा।

अन्त में हम कह सकते हैं कि इतिहास-शिक्षक को इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के प्रयोग में कट्टरवादी तथा दृढ़ नहीं होना चाहिए। वह अपने ढंगों में नम्य हो। वह चाहे किसी भी ढंग को प्रयुक्त करे, उसका प्रमुख ध्येय ऐतिहासिक चिन्तन का विकास—उसके समक्ष वना रहना चाहिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Discuss the value of text-book in the teaching of History.
—(P. U., B. T., 1957 & A. U., 1957)

इतिहास-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तक के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

2. Discuss the place of text-book in the teaching of History to Higher Secondary Classes. What things will you keep in mind in choosing a book for those classes.
—(Raj. B. Ed., 1964)

उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं के लिए इतिहास-शिक्षण में पाठ्य-पुस्तकों के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए। इन कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय आप किन वातों को ध्यान में रखेंगे ?

3. "History text-book has unfortunately become more important than the History teacher and the History syllabus." Comment on the statement. Mention the criteria that should be kept in mind while selecting a text-book.
—(A. U., 1971)

"दुर्भाग्य से भारतवर्ष में इतिहास की पाठ्य-पुस्तक को इतिहास-शिक्षक व इतिहास के पाठ्यक्रम से अधिक महत्त्व दिया जाता है।" इस कथन की विवेचना कीजिए और बताइये कि इतिहास की पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय आप किन-किन बातों को ध्यान में रखेंगे ?

4. What are the qualities of good text-book in History for Middle School Classes ? Critically examine any text-book in History that you may have used during your teaching practice.
—(P. U., 1970)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मिडिल स्कूल की कक्षाओं के लिए इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में क्या गुण हो चाहिए ? आपने अपने शिक्षण-अभ्यास में जिस पाठ्य-पुस्तक का प्रयोग कि है, उसका मूल्यांकन कीजिए।

5. Discuss the importance of History text-books.

—(A. U., 197

इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों के महत्त्व की विवेचना कीजिए।

6. Write short notes on 'Need of History text-books.'

—(A. U., 1978,

'इतिहास की पाठ्य-पुस्तकों की आवश्यकता' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—सबसे सही विकल्प को छाँटिए—

1. जूनियर हाईस्कूल की इतिहास की पाठ्य-पुस्तक
   (i) अति संक्षिप्त
   (ii) चयनात्मक तथा कालक्रमानुसार
   (iii) 500 पृष्ठों से अधिक
   (iv) 200 पृष्ठों से अधिक नहीं होनी चाहिए।
2. इतिहास की प्रचलित पाठ्य-पुस्तकों में
   (i) तथ्यों का अभाव
   (ii) तिथियों का अभाव
   (iii) स्रोत सन्दर्भों का अभाव
   (iv) व्यावहारिकता का अभाव पाया जाता है।
3. इतिहास की पाठ्य-पुस्तक में अभ्यासार्थ प्रश्न
   (i) विशेषज्ञों की दृष्टि से
   (ii) छात्रों के दृष्टिकोण से
   (iii) सरकार के दृष्टिकोण से
   (iv) शिक्षक के दृष्टिकोण से होने चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

16

इतिहास में अभिनय

DRAMATIZATION IN HISTORY

'When a pupil learns by doing, he is re-living both—mentally and physically, some experience which has proved important to the human race." —*John Dewey*

विषय-प्रवेश

यहाँ अभिनय से मन्तव्य है कि छात्र किसी ऐतिहासिक व्यक्ति; जैसे—गौतम बुद्ध, सिकन्दर, पोरस, अकबर, राणा प्रताप, शिवाजी इत्यादि के जीवन-चरित्र से सम्बन्धित किसी प्रसंग का एक छोटा नाटक (Drama) खेलें। इस साधन के उचित प्रयोग से इतिहास का अध्ययन विशेष रुचिकर होकर छात्रों के सम्मुख अतीतकाल का चित्र उपस्थित कर देता है।

अभिनय-कला का महत्त्व
Importance of Dramatization

बालकों में एक बड़ी विशेषता यह है कि वे सदैव कुछ न कुछ कार्य करते रहने के अभ्यस्त होते हैं। जो बालक साफ-सुथरे और स्वस्थ होते हैं, वे कभी शान्त तथा स्थिर नहीं रह सकते, कुछ न कुछ अवश्य करते रहते हैं। जब वे अपने बड़े-बूढ़ों और पशुओं को काम करते देखते हैं तो उसी भाँति वे उनका अनुकरण करते हैं। उनको उसमें एक प्रकार का आनन्द एवं मनोरंजन प्राप्त होता है। बालकों में अनुकरण और अभिनय की कला स्वभावतः जन्म से ही होती है, परन्तु जारविस का विचार है कि बच्चे की अभिनय की प्रवृत्ति अनुकरणात्मक ही है, वह कोई अभिनय स्वयं नहीं करता, वरन् वह दूसरों के कार्यों का अनुकरण ही करता है।[1] बच्चे कभी

1. "It is sometimes assumed that children are born 'actors' and have a 'dramatic instinct', their attempts to dramatize stories (Contd.)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राजा, सिपाही, चोर, अध्यापक, किसान, फेरी वाले, ताँगे वाले, रिक्शा वाले इत्यादि बनकर उनके कार्यों की अनुकृति करते हैं। इस प्रकार के कार्यों को करने से, जिनमें अपने अवयवों को काम में लाना पड़ता है और जिनमें दूसरों की अनुकृति करनी पड़ती है तथा दूसरों से बढ़कर चतुरता प्रदर्शित करने की आवश्यकता पड़ती है, बालकों को हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होती है, क्योंकि उनको अपनी अनुकरण करने की शक्ति को काम में लाने का अवसर प्राप्त होता है। अनुकरण एवं क्रियाशीलता की प्रवृत्तियाँ बालकों की विशेषताएँ हैं। शिक्षण का यह परम कर्त्तव्य है कि वह बालक की इन शक्तियों को विकसित करने में पूर्ण सहायता प्रदान करे। इसके लिए इतिहास से बढ़कर कोई अन्य विषय न मिलेगा, जिसमें इन शक्तियों को विकसित करने का अवसर प्राप्त हो सके क्योंकि इतिहास घटनाओं का भण्डार है।

इस नाटकीय ढंग की शिक्षा से केवल इन्हीं शक्तियों का विकास नहीं होता, वरन् सृजनात्मक शक्तियों का भी विकास होता है जो कि मनोविज्ञान के अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ कही जाती हैं। शिक्षा के दृष्टिकोण से इन शक्तियों की ओर ध्यान देना नितान्त आवश्यक है। फ्रॉबेल ने जो बच्चों का प्रेमी था, इन शक्तियों के विकास पर बल दिया है। उसके अनुसार बालक के विकास के लिए 'खेल' प्रमुख आधार है। खेल के द्वारा उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास किया जा सकता है। इसी प्रकार डीवी ने भी इन्हीं स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विकास के लिए क्रिया पर बल दिया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अभिनय के द्वारा बच्चे की इन प्राकृतिक शक्तियों का विकास किया जा सकता है इसीलिए शिक्षण के लिए अभिनय एक महत्त्वपूर्ण साधन है, जिसके द्वारा बालक का विकास किया जा सकता है। अब तक ऐतिहासिक घटनाएँ तथा भाषा की कहानियाँ नीरस समझी जाती थीं, परन्तु इनको अभिनय-कला ने सरस तथा सजीव बना दिया। इसके द्वारा बालकों के सम्मुख अशोक, अकबर तथा राणा प्रताप का केवल चित्र ही नहीं आता वरन् वे सजीव होकर उनके सम्मुख आ जाते हैं और वे लोग उसके विचारों तथा भावनाओं का अनुकरण करके अपने समाज को लाभ पहुँचाते हैं तथा श्रेष्ठ नागरिक बनने का प्रयत्न करते हैं।

अभिनय-कला के लाभ : Advantages of Dramatization

अभिनय-कला का महत्त्व देखने के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि हम इतिहास-शिक्षण में अभिनय का उपयोग क्यों करते हैं? इसका उत्तर यह है कि उससे हमें अनेक लाभ प्राप्त होते हैं, जिनको प्राप्त करने के लिए हम इसका प्रयोग इतिहास-शिक्षण में करते हैं। ये लाभ अग्रलिखित हैं—

---

must naturally be successful and have an educational value. But a child's dramatic instinct is essentially imitative. A very young child will often do something quite spontaneously in imitation of another's action."—Jarvis, C. H. : *Teaching of History*, p. 168.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. स्मरण-शक्ति का विकास : Development of Memory—मनोवैज्ञानिक रूप से अभिनय मानसिक अभ्यास के लिए बालकों को अवसर प्रदान करता है तथा इसके द्वारा स्मरण-शक्ति का विकास होता है, क्योंकि बालकों को बहुत-से संवादों को स्मरण करना पड़ता है जिससे उनको स्मरण करने की आदत पड़ जाती है।

2. रुचि उत्पन्न करने में सहायक : Helpful in Developing Interests—यदि बालक सदैव पुस्तक ही पढ़ते रहें अथवा प्रश्नों के उत्तर लिखते रहें तो इतिहास की शिक्षा में रोचकता न रहेगी। अतः परिवर्तन की दृष्टि से यह पद्धति लाभदायक है, क्योंकि परिवर्तन के द्वारा रुचि उत्पन्न की जा सकती है तथा बच्चे की थकान को दूर किया जा सकता है। इसके द्वारा अनुशासनहीनता की समस्या को ही सुलझाया जा सकता है. क्योंकि रुचि ही इसकी आधारशिला है। यदि पाठ में रोचकता नहीं है तो बालक अनुशासित नहीं हो पायेगा। परिवर्तन से उसकी रुचि को पाठ में लगाया जा सकता है और कक्षा में अनुशासन भी स्थापित किया जा सकता है।

3. शैक्षिक उपयोगिता : Educative Value—फ्रॉबेल के अनुसार समस्त क्रियायें शिक्षाप्रद होती हैं। अभिनय-कला के द्वारा जो क्रियायें उत्पन्न की जाती हैं, वे भी शिक्षाप्रद हैं। इसके द्वारा तथ्यों की सूक्ष्मता को दूर करने में सहायता मिलती है। इन तथ्यों को स्थूलता प्रदान की जाती है।

4. क्रिया द्वारा सीखने के लिए अवसर प्रदान करना : To provide Opportunities for Learning by Doing—अभिनय स्वक्रिया द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक अवसर प्रदान करता है जिससे इतिहास रोचक तथा सजीव बनता है।

5. कल्पना-शक्ति एवं सहानुभूति का विकास : Development of Imagination & Sympathy—छात्रों में सहानुभूति तथा कल्पना-शक्ति का अभाव होता है। इसके द्वारा बालकों की कल्पना-शक्ति को विकसित किया जा सकता है। इस साधन से यह भी लाभ है कि बालकों को अन्य देशों तथा अन्य प्रान्तों की जनता के आचार-विचार ज्ञात हो जाते हैं, जिनके द्वारा उनमें उनके प्रति सहानुभूति का अनुभव होता है। इसके साथ-साथ उनका दृष्टिकोण भी विस्तृत किया जा सकता है।

6. इन्द्रियों का प्रशिक्षण : Sensory Training—अभिनय-कला बालकों की इन्द्रियों को शिक्षित तथा प्रफुल्लित करती है। इसके द्वारा कर्णेन्द्रिय, नेत्रों तथा हाथों को शिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह हमारी बुद्धि तथा संवेगों को भी आकर्षित करता है।

7. मनोरंजन प्रदान करने में सहायक : Helpful in Providing Recreation—नाटक देखना सभी को रुचिकर होता है। इससे मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा भी मिलती है। अभिनय द्वारा इतिहास की शिक्षा देने से ज्ञान की प्राप्ति के साथ मनोरंजन भी होता है। छात्रों को प्रत्यक्ष अभिनय करने का अवसर मिलता है, जिससे उन्हें बहुत-सी ऐतिहासिक घटनाओं के प्रसंग स्मरण हो जाते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8. व्यक्तिगत एवं नागरिक गुणों का विकास : Development of Personal & Civic Virtues—अभिनय के द्वारा बालकों में विषयग्राह्यता, आत्म-विश्वास तथा आत्माभिव्यंजना-शक्ति विकसित की जाती है। इसके द्वारा उनकी झिझक तथा लज्जाशील प्रवृत्ति को कम किया जाता है। इसके अतिरिक्त बालक बोलने की कला (Art of Speaking) भी सीख लेते हैं। इसमें उसमें योग्य नागरिक के गुणों को उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाता है।

9. नैतिक विकास : Moral Development—इसके द्वारा छात्रों को नैतिक शिक्षा प्रदान की जाती है। बालकों में अनुकरण की प्रवृत्ति स्वाभाविक होती है। वे जिस व्यक्ति का अभिनय करते हैं, उसके अनुसार अपने को बनाने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार उनसे विभिन्न नैतिक पुरुषों के कार्यों के नाटक करवाये जा सकते हैं जो कि उनमें नैतिक गुणों का विकास करने में विशेष सहायता प्रदान करेंगे।

10. कलात्मक रुचि का विकास : Development of Artistic Interest—इसके द्वारा बालकों में कलात्मक रुचि उत्पन्न की जा सकती है। परन्तु यह रुचि सत्यता तथा वास्तविकता के मूल्य पर विकसित नहीं की जानी चाहिए, वरन् सत्यता के साथ-साथ कलात्मक रुचि उत्पन्न की जानी चाहिए।

11. छोटी कक्षाओं के लिए शिक्षण का अधिक उपयोगी साधन : Useful Means of Teaching for Lower Classes—अभिनय के द्वारा छोटी कक्षाओं में इतिहास-शिक्षण बड़ी सरलता से किया जा सकता है, क्योंकि इस स्तर पर छात्र गूढ़ विचारों को नहीं समझ पाते हैं। परन्तु इसके द्वारा उन्हें क्रिया करके सीखने का अवसर प्राप्त होता है। यह इस स्तर पर अधिक सुगमता से प्रयोग में लायी जा सकती हैं, क्योंकि इन कक्षाओं के बालक विशेषतः क्रियाशील होते हैं और इस समय उनमें अभिनय-कला द्वारा सिखाकर भविष्य के लिए उनमें स्थायी विचार उत्पन्न कर सकते हैं।

अभिनय-कला की सीमायें : Limitations of Dramatization

1. अभिनय-कला के ज्ञान का अभाव—अभिनय-कला सुगम नहीं है। इसका प्रयोग भारतीय विद्यालयों में बहुत कम होता है, क्योंकि न तो अध्यापकगण ही इससे पूर्णतया परिचित होते हैं, और न छात्र ही। बालकों में अभिनय करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है; किन्तु इस प्रवृत्ति में अनुकरण की मात्रा ही अधिक होती है। किसी अभिनय को देखकर वे उसकी अनुकृति कर सकते हैं, अर्थात् छात्रों के समक्ष नाटक का एक आदर्श प्रस्तुत किया जाय, तभी वे उसका अनुकरण कर सकते हैं। किन्तु यह सम्भव नहीं कि कक्षा में किया जाने वाला प्रत्येक नाटक उन्होंने अन्यत्र कहीं देखा हो। अतः सम्भव है कि अध्यापक को बालकों का अभिनय अपूर्ण प्रतीत हो, किन्तु स्वयं छात्रों को उसकी अपूर्णता नहीं खटकेगी। इस आपत्ति के उत्तर में यह कहा जा सकता है कि अध्यापक बालकों की निरन्तर सहायता करे और उनकी अशुद्धियों को सुधारने का प्रयत्न करे। अध्यापक स्वयं नाटकों में भाग लेते रहे, जिससे उनकी अनभिज्ञता दूर हो जायेगी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. अनुशासनहीनता—इसके विरुद्ध दूसरा तर्क यह दिया जाता है कि इससे कक्षा में अनुशासन नहीं रह पाता, क्योंकि अनुभव के लिए स्वतन्त्र क्रिया की आवश्यकता है, परन्तु इसके उत्तर में हम कह सकते हैं कि अनुशासन का भंग होना या न होना तो विशेषत: अध्यापक के व्यक्तित्व पर निर्भर होता है। यदि अध्यापक सजग तथा सतर्क रहेगा तो इस समस्या के उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं आयेगा।

3. ऐतिहासिक प्रसंगों की न्यूनता—इसके प्रयोग करने में एक विशेष कठिनाई ऐतिहासिक स्वप्नों; अर्थात्—नाटकों तथा उपन्यासों में प्रसंग (Theme) की न्यूनता है। भारत में ऐतिहासिक नाटकों तथा एकांकी नाटकों की बहुत न्यूनता है, इसीलिएं इसका उपयोग साधारण रूप से नहीं हो पाता है। यदि हमारे यहाँ कुछ ऐतिहासिक नाटक हैं भी, तो उनके खेलने में भाषा की कठिनाई सबसे प्रबल है। श्री जयशंकर प्रसाद तथा श्री वृन्दावनलाल वर्मा के क्रमश: 'स्कन्दगुप्त' तथा 'हंस मयूर' नाटक हिन्दी साहित्य की सौन्दर्यपूर्ण कृतियाँ हैं, परन्तु उनकी भाषा इतनी क्लिष्ट है, जो छोटे बच्चों के स्तर के लिए उपयुक्त नहीं है। इसके साथ ही ये ऐतिहासिक नाटक दूसरी कठिनाई लम्बे सम्वादों को उत्पन्न करते हैं। ये सम्वाद इतने लम्बे तथा बड़े हैं जो कि बालकों के द्वारा स्मरण नहीं किये जा सकते हैं, जिसके कारण अभिनय का सफल प्रयोग नहीं हो पाता।

4. आर्थिक अभाव—इसके प्रयोग में आर्थिक अभाव बाधा उपस्थित करता है। हमारे शिक्षालयों में अनिवार्य वस्तुओं की अत्यन्त कमी है। अभिनय के उपयोग के लिए अधिक धन की आवश्यकता है। शिक्षालय इसके लिए धन प्रदान नहीं कर सकते, क्योंकि वे अपने अध्यापकों को ही समय पर वेतन नहीं दे पाते। इसके लिए उपयुक्त पोशाकों की अत्यन्त आवश्यकता होती है। इसके बिना ठीक प्रकार का वातावरण उत्पन्न नहीं किया जा सकता। इसके लिए धन जुटाना शिक्षालयों की आर्थिक दशा के सामर्थ्य के बाहर है।

5. युद्धों का अभिनय कठिन—इतिहास राजाओं तथा महापुरुषों का ही वर्णन नहीं करता, वरन् युद्धों का भी विवेचन करता है। युद्धों का अभिनय सम्भव नहीं है।

6. संवादों की समस्या—इसके विरुद्ध एक आपत्ति यह की जाती है कि इस प्रकार के सम्वाद-लेखन के लिए शिक्षक के पास समय नहीं है अथवा इन्हें बालकों से लिखवाने के लिए बहुत-से शिक्षकों में आवश्यक मनोवृत्ति का अभाव होता है। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है। यदि शिक्षक अभिनय को उचित समझता है तो वह अवश्य उसकी सामग्री तैयार कर लेगा। वस्तुत: अभी हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तकें प्राप्त नहीं हैं। किन्तु यदि शिक्षक-वर्ग इस कमी को दूर करने का प्रयत्न करे तो लेखक भी इस प्रकार की पुस्तकें लिखने लगेंगे और शनैः-शनैः यह असुविधा मिट जायेगी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. **अभिनयात्मक गुणों का अभाव**—अभिनय के लिए नेतृत्व, मौलिक कार्य-शक्ति आदि गुणों की आवश्यकता होती है। परन्तु ये गुण हमारे इतिहास अध्यापकों में नहीं पाये जाते। ऐसा देखा गया है कि बहुत-से अध्यापक तो इतिहास के ज्ञान में भी परिपक्व नहीं होते। इनका यह अर्थ नहीं है कि हम इस कारण अभि-नय का उपयोग न करें; वरन् उनका सुधार किया जाय और अभिनय जब कभी सम्भव हो, तब अवश्य किया जाय।

8. **समय का अभाव**—अन्त में हम कह सकते हैं कि समय का अभाव इसके प्रयोग में बाधा डालता है। कुछ व्यक्तियों का मत है कि अभिनय-कला में इतना अधिक समय लग जाता है कि वास्तविक पाठ्य-वस्तु निर्धारित समय में पूर्ण नहीं हो सकती है। इसके अतिरिक्त यदि इनका प्रयोग अर्थात् नाटक की तैयारी तथा उसको ठीक प्रकार से प्रदर्शित करने का ढंग—सब कक्षा में किया जाय तो यह कला चिथड़ों के समान हो जायगा। इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि शिक्षण के अन्य साधनों के समान अभिनय भी एक साधन है। हमें इसका प्रयोग प्रतिदिन नहीं करना है। यदि वर्ष में चार या पाँच बार भी इसका प्रयोग हो जाय तो पर्याप्त है और इतना समय हम सुगमता से इसके लिए निकाल भी सकते हैं।

अभिनय के प्रकार : Types of Dramatization

अभिनय का वर्गीकरण दो भागों में किया गया है, जो इस प्रकार हैं—

1. **आशुक अभिनय : Extempore Dramatization**—इस प्रकार का अभिनय अत्यन्त शिक्षाप्रद और सूचनात्मक होता है तथा बालकों की मानसिक क्रिया को प्रोत्साहित करता है। इसके द्वारा विचार-शक्ति का विकास किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षण के लिए बहुत लाभप्रद होता है।

2. **तैयार किया हुआ अभिनय : Prepared Dramatization**—इस प्रकार के अभिनय में बालकों को पहले से ही सब बातों को तैयार करना पड़ता है। इसमें संवादों को पूर्णतया स्मरण करके बोला जाता है। इसके द्वारा बालकों की भाषा में तो सुधार किया जा सकता है; परन्तु बालकों के मानसिक स्तर के विस्तृत होने के लिए कम अवसर प्राप्त होते हैं।

अभिनय करने से पूर्व निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

1. सर्वप्रथम अध्यापक उस प्रसंग का चयन करे, जो बालकों को कक्षा में पढ़ाया जाना है। इसके पश्चात् वह इसके सम्बन्ध में प्राप्त सभी स्रोतों की सूचना छात्रों को दे और कक्षा में उस प्रसंग की विवेचना कर दे, और साथ ही छात्रों को संवाद लिखने के लिए कहे। इस प्रकार का अभ्यास बालकों के लिए विशेष हितकारी होता है।

---

1. Jarvis, C. H. : *Teaching of History*, p. 167.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. प्रसंग की पूर्ण विवेचना के पश्चात् अध्यापक पुस्तक के संवादों को बालकों से कक्षा में कहलवाये या उनके द्वारा लिखे संवादों को शुद्ध करके तैयार करवाये।

3. अध्यापक इन संवादों में प्राप्त ऐतिहासिक तथ्यों को बालकों से अपनी पुस्तिका में लिखवाये। परन्तु इन ऐतिहासिक तथ्यों को वर्णनात्मक ढंग से नहीं लिखवाया जाना चाहिए, वरन् उनको संक्षेप में लिखवाया जाय और कभी-कभी इन पर अध्यापक द्वारा प्रश्न किये जायँ, इससे छात्रों को यह लाभ होगा कि वे ऐतिहासिक तथ्यों की वास्तविकता को जान जायेंगे। इन क्रियाओं के पश्चात् बालकों से अभिनय कराया जाना चाहिए।

भारतीय इतिहास में अभिनय के लिए उपयुक्त प्रकरण निम्नलिखित हैं—

(1) आर्यों तथा द्रविड़ों का प्रथम मिलन।
(2) बुद्ध के जीवन-चरित्र की कुछ घटनाएँ (गृह-त्याग, सारथी तथा बुद्ध का वार्तालाप)।
(3) सिकन्दर तथा राजा पुरु की भेंट।
(4) सिकन्दर तथा चन्द्रगुप्त मौर्य।
(5) चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य।
(6) अशोक की युद्ध न करने की प्रतिज्ञा।
(7) पृथ्वीराज तथा संयोगिता।
(8) सोमनाथ की लूट।
(9) बाबर के जीवन की कुछ घटनाएँ।
(10) अकबर और उसके नवरत्न।
(11) राणा प्रताप के जीवन की घटनाएँ।
(12) शिवाजी के जीवन की घटनाएं।
(13) क्लाइव तथा अमीरचन्द।
(14) झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के जीवन की कुछ घटनाएँ।
(15) सुभाषचन्द्र बोस के जीवन की कुछ घटनाएँ।
(16) गाँधीजी।
(17) सरदार पटेल—एक सफल संगठनकर्त्ता।
(18) पं० नेहरू—विश्वशान्ति के अग्रदूत।
(19) लालबहादुर शास्त्री—एक सुदृढ़ राष्ट्रीय स्तम्भ।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. How far is dramatization an effective aid to the teaching of History ? Illustrate with reference to any period of Indian History. —(A. U., 1958)

इतिहास-शिक्षण में अभिनय किस सीमा तक एक प्रभावशाली साधन है ? भारतीय इतिहास के किसी काल के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. What is the importance of dramatization in History ? Give five suitable topics for dramatization from Indian History.
इतिहास में अभिनय का क्या महत्त्व है ? भारतीय इतिहास से अभिनय के लिए किन्हीं पाँच उपयुक्त प्रकरणों के नाम लिखिए।
3. How is dramatization useful in teaching History ? When and how should it be used in the Higher Secondary Classes ?
—(Raj. B. Ed., 1962)
इतिहास-शिक्षण में अभिनय किस प्रकार उपयोगी है ? उच्चतर-माध्यमिक कक्षाओं में इसको कब और किस प्रकार प्रयोग में लाया जाना चाहिए ?
4. Discuss the usefulness of Dramatization for a history teacher.
—(A. U., 1966)
इतिहास-शिक्षक के लिए अभिनय की उपादेयता को स्पष्ट कीजिए।
5. Discuss the place of dramatization in the teaching of History. Give some examples from your experience.—(A. U., 1974, 82)
इतिहास-शिक्षण में अभिनय कला का क्या स्थान है ? अपने अनुभव के आधार पर उदाहरण दीजिए।
6. Write short note on 'Importance of Dramatization in History teaching'. —(A. U., 1977, 78, 80)
'इतिहास-शिक्षण में अभिनय का महत्त्व' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथन यदि सत्य है तो 'हाँ', यदि असत्य है तो 'नहीं' को रेखांकित कीजिए—

(i) बालकों में अभिनय की प्रवृत्ति अनुकरणात्मक होती है। (हाँ/नहीं)
(ii) अभिनय-कला शिक्षाप्रद होती है। (हाँ/नहीं)
(iii) अभिनय द्वारा बालकों की इन्द्रियों को प्रशिक्षित किया जाता है। (हाँ/नहीं)
(iv) अभिनय बालकों में अनुशासनहीनता उत्पन्न करने में सहायक है। (हाँ/नहीं)
(v) भारतीय इतिहास में अभिनय के लिए उपयुक्त प्रकरणों का अभाव है। (हाँ/नहीं)
(vi) आशुक अभिनय सूचनात्मक तथा शिक्षाप्रद होता है। (हाँ/नहीं)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

17

इतिहास-कक्ष एवं पुस्तकालय

HISTORY ROOM AND LIBRARY

"Every subject which is recognized as deserving of study in a school should have a room of its own." —*Ghate*

...षय-प्रवेश

इतिहास-शिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए अब अधिकांश इतिहास-...क इस बात का अनुभव करने लगे हैं कि विद्यालय में एक पृथक् इतिहास-कक्ष ...ना चाहिए। कुछ शिक्षक इसकी आवश्यकता नहीं समझते हैं। उन लोगों का ...के पक्ष में यह तर्क है कि इससे विषयों के समन्वय में बाधा उत्पन्न होगी। परन्तु ...तर्क में कोई सार नहीं दिखाई देता, क्योंकि जहाँ एक ओर इतिहास-कक्ष विभिन्न ...करणों एवं स्रोत पुस्तकों को सहज सुलभकर उपयुक्त वातावरण के माध्यम से ...क्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाता है, वहाँ दूसरी ओर वह इतिहास का ...ालय के अन्य विषयों से समन्वय स्थापित करने में भी सहायता प्रदान करता है। ...हास की नवीन धारणा (वैज्ञानक दृष्टिकोण पर आधारित) तथा उसकी विकसित ...विशेष शिक्षण-विधियों ने उसकी आवश्यकता को सबसे समक्ष स्पष्ट कर दिया है।

...तिहास-कक्ष की आवश्यकता : Need of History Room

'इतिहास-कक्ष की क्यों आवश्यकता है ?' ऐसा प्रश्न बहुत-से प्रधानाचार्यों के ...ा पूछा जाता है। वे लोग बड़े आश्चर्य में पड़ जाते हैं, जब उनसे ऐसा ही प्रश्न ...या जाता है—'विज्ञान के लिए प्रयोगशाला की क्यों आवश्यकता है ?' इतिहास ...की आवश्यकता को स्पष्ट करने के लिए अग्रलिखित तर्क प्रस्तुत किये जा ...ते हैं—

13

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(1) इतिहास एक विज्ञान है। वह सत्य की खोज करता है तथा सत्य को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। इस प्रकार इतिहास कला होने के साथ विज्ञान भी है। जिस प्रकार अन्य विज्ञानों के लिए प्रयोगशाला की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार इतिहास के लिए भी इतिहास-प्रयोगशाला की आवश्यकता जिसमें छात्र स्रोत संदर्भों तथा अन्य सामग्री का प्रयोग करके अन्वेषण करते हैं। सम्बन्ध में प्रो० बी० डी० घाटे ने लिखा है—"इतिहास-कक्ष वस्तुतः इतिहास एक प्रयोगशाला या कार्यशाला है जहाँ छात्र प्रतिदिन ज्ञानार्जन तथा अपनी जि को शान्त करने के लिए कार्य करेंगे।"[1]

(2) विशेष-कक्ष या प्रयोगशाला अपना विशिष्ट महत्त्व रखती है। द्वारा एक विशेष प्रकार का वातावरण प्रस्तुत किया जाता है जो प्रभावी तथा शिक्षण के लिए नितान्त आवश्यक है। आज का इतिहास-शिक्षण विभिन्न नवीन विशेष विधियों एवं प्रविधियों—खण्ड-विधि तथा स्रोत-विधि और टेलीविजन, खण्डों, रेडियो आदि के प्रयोग से किया जाता है जिसके लिए इतिहास-कक्ष की आवश्यकता है।

(3) इतिहाक्ष-कक्ष इतिहास-शिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण पैदा है और छात्रों की कल्पना-शक्ति को उद्दीप्त करता है। साथ ही यह छात्रों में के प्रति आदर की भावना विकसित करता है। इस सम्बन्ध में प्रो० बी० डी० ने लिखा है—"मैं चाहता हूँ कि इतिहास के छात्र अपने विषय का आदर करें वे और उनके शिक्षक उसका गम्भीरता से अध्ययन करें। एक सुसज्जित इति कक्ष छात्रों में ऐतिहासिक अभिवृत्ति को विकसित करने में सहायक होगा।"[2]

(4) विशेष-कक्ष में उपकरणों के बनाने, संग्रहालय के लिए अवशेषों, मॉडलों, सिक्कों आदि के संग्रह करने, फिल्मों को देखने, इतिहास-परिषद् के का आयोजित करने, स्रोत एवं संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन करने, ऐतिहासिक प्रसं अभिनय आदि को सम्पन्न करने के लिए अवसर एवं सुविधा उपलब्ध होती है।

(5) विशेष-कक्ष के अभाव में शिक्षक के लिए उपकरणों के लाने अथ

---

1. "A history room is essentially a historical laboratory or w shop where boys will work from day to day to gather kn ledge and to satisfy their curiosity."—Ghate, '*The Teaching History*, p. 113.
2. "I want the history pupils to respect their subject. I want th and their teacher to take history seriously. A well-equi history room will help to foster an historical attitude of mi —Ghate : *op. cit.*, p. 1

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाने में समय व शक्ति का अपव्यय होता है। साथ ही उपकरणों के टूटने या नष्ट-भ्रष्ट होने की सम्भावना रहती है। इतिहास-कक्ष में इस अपव्यय एवं नष्ट-भ्रष्ट होने की सम्भावना को समाप्त किया जा सकता है। यहाँ पाठ के पूर्व सभी आवश्यक सामग्री व्यवस्थित रूप में शिक्षक को उपलब्ध हो जाती हैं। अतः उसे उनको प्राप्त करने के लिए कोई विशेष तैयारी नहीं करनी पड़ती। यदि शिक्षक या छात्र को अतिरिक्त समय में कोई कार्य करना होता है तो वह इस विशेष-कक्ष में सरलता से कर सकता है। अतः समय व शक्ति के अपव्यय को रोककर तथा उपकरणों को सुरक्षित एवं व्यवस्थित रखकर शिक्षण को रोचक एवं प्रभावी बनाने में इतिहास-कक्ष सहायक होता है।

इतिहास-कक्ष की सामग्री तथा उसकी व्यवस्था : History Room's Equipment and Its Arrangement

इतिहास-कक्ष के आकार का निर्धारण अंशतः छात्रों की संख्या से, जो उसमें एक साथ बैठकर पढ़ते हैं और अंशतः स्थान द्वारा, जो विभिन्न प्रकार की ऐतिहासिक सामग्री को यथा-स्थान रखने के लिए आवश्यक होता है, किया जाता है। कक्ष के स्वरूप का निर्धारण प्रमुखतः उस ढंग से किया जाता है जिनमें छात्रों की निश्चित संख्या सर्वोत्तम रीति से कक्षा-सम्बन्धी तथा व्यावहारिक कार्य के लिए बिठाई जा सकती है। वस्तुतः यह कक्ष बड़े आकार का होना चाहिये। इसमें न केवल फर्श का क्षेत्रफल ही अधिक होना चाहिये वरन् इसकी ऊँचाई भी पर्याप्त होनी चाहिए।

1. **फर्नीचर : Furniture**—इतिहास-कक्ष के लिए निम्नलिखित प्रकार का फर्नीचर परमावश्यक है—

(i) प्रायोगिक कार्य के लिए मेजें
(ii) बैठने के लिए मेज-कुर्सियाँ
(iii) बुलेटिन बोर्ड
(iv) मानचित्र लटकाने का स्टैण्ड
(v) दीवारों पर क्लस्टर डिस्प्ले बोर्ड
(vi) मॉडल बनाने की सामग्री एवं उपकरण
(vii) ड्राइंग बोर्ड
(viii) मानचित्र-स्तम्भ
(ix) अलमारियाँ
(x) शो-केस
(xi) अभिनय के लिए लकड़ी का प्लेटफार्म
(xii) रोलर बोर्ड।

2. **श्यामपट : Black-board**—इतिहास-कक्ष में बड़े आकार का श्यामपट होना चाहिए। इसको दो-तीन भागों में विभाजित किया जाना चाहिए। एक भाग में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत के मानचित्र की रूपरेखा अंकित होनी चाहिए। श्यामपट के ऊपरी भाग में राष्ट्रीय इतिहास की समय-रेखा होनी चाहिए जिसमें प्रमुख तिथियों एवं घटनाओं को अंकित किया जाना चाहिए। एक भाग को प्रमुख बिन्दु, सारांश आदि लिखने के लिए रखा जाना चाहिए।

3. **मानचित्र : Maps**—इतिहास-कक्ष की महत्त्वपूर्ण सामग्री मानचित्र है। मानचित्र के अभाव में इतिहास के तथ्य हवा में रहते हैं। इसके प्रयोग से ऐतिहासिक तथ्यों का स्थानीयकरण सम्भव है। इतिहास-कक्ष में विभिन्न समयों से सम्बन्धित मानचित्र होने चाहिए। प्रो० हस्लक (Hasluck) ने दीवार के मानचित्रों पर अधिक बल दिया है। उनके अनुसार इतिहास-कक्ष की दीवारों पर विभिन्न समयों के मानचित्रों को अंकित कराना चाहिए।

4. **चित्र : Pictures**—ऐतिहासिक व्यक्तियों, भवनों, अवशेषों आदि के चित्रों को इतिहास-कक्ष में स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। सुन्दर एवं महत्त्वपूर्ण चित्रों को मढ़वाकर कक्ष में टाँगा जाना चाहिए। एक दीवार पर ऐतिहासिक व्यक्तियों और दूसरी दीवार पर मूर्तियों, भवनों आदि के चित्र टाँगे जाने चाहिए। परन्तु ये समस्त काल-क्रमानुसार ही टाँगे जाने चाहिए।

5. **चार्ट एवं रेखा-चित्र : Charts and Diagrams**—इतिहास-कक्ष में युद्ध योजना, वंश-वृक्ष, अवशेषों, युद्ध मार्गों आदि के चार्ट एवं रेखाचित्रों को स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। चार्टों एवं रेखाचित्रों को इतिहास-कक्ष में दीवारों पर चित्रों के नीचे टाँगा जाना चाहिए।

6. **मॉडल : Model**—अतीत को सजीव बनाने में मॉडलों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इतिहास-कक्ष में ऐतिहासिक व्यक्तियों, भवनों, सिक्कों, दुर्गों, स्तम्भों आदि के मॉडलों को स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। इनको कक्ष में दीवारों में लगे शो-केस में रखा जाय।

7. **समय-रेखाएँ : Time Lines**—इतिहास-कक्ष में विभिन्न ऐतिहासिक व्यक्तियों, साम्राज्यों, घटनाओं आदि से सम्बन्धित समय-रेखाओं एवं समय-ग्राफों को स्थान मिलना चाहिए। इनको भी कक्ष में दीवारों पर स्थान प्रदान किया जाय। इनके प्रयोग से इतिहास-शिक्षक विभिन्न कालों के महापुरुषों के समय का अन्तर, विभिन्न देशों की सभ्यता, आर्थिक उन्नति एवं अवनति का स्पष्टीकरण कर सकता है।

8. **ऐतिहासिक ग्रन्थ : Historical Books**—इतिहास-कक्ष में ऐतिहासिक ग्रन्थों को भी स्थान प्रदान किया जाना चाहिए। इन पुस्तकों को खुली अलमारियों में रखा जाय जिससे छात्र आवश्यकतानुसार प्रयोग करने में समर्थ हो सकें। इतिहास-कक्ष में कुछ स्रोत-सन्दर्भ ग्रन्थों—कौटिल्य का अर्थशास्त्र, मैगस्थनीज का भारत विवरण, फाह्यान का यात्रा-विवरण, बाबरनामा, अकबरनामा आदि—ऐतिहासिक साहित्यिक ग्रन्थों—पुनर्मिलन नामक नाटक, वृन्दावन लाल द्वारा रचित झाँसी की रानी, मृगनयनी, गढ़कुण्डार, वैशाली की नगरवधू, 'हर्ष', 'नाना फड़नवीस' नामक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नाटक, 'रामायण', 'महाभारत', 'हल्दी घाटी', 'पृथ्वीराज रासो', 'शिवा-बावनी' आदि—को स्थान प्रदान किया जाय। इनके अतिरिक्त कुछ आत्मकथाओं एवं जीवनियों को भी स्थान दिया जाय।

इतिहास-कक्ष में रेडियो के लिए भी स्थान होना चाहिए। साथ ही उसमें चित्र-प्रसारक यन्त्र एवं पर्दे (Screen) के लिए भी व्यवस्था हो। कमरे के सभी दरवाजों एवं खिड़कियों पर काले रंग या गहरे नीले रंग के पर्दों की व्यवस्था हो। इनके अतिरिक्त कक्ष में ग्लोब, पुराने समय की नकल के नमूने, मुहरों, पोशाकों आदि को भी स्थान मिलना चाहिए।

उपरोक्त वस्तुओं को एकत्रित करना कोई सरल कार्य नहीं है। इसके लिए समय, धन एवं शिक्षक के उत्साह की परम आवश्यकता है। यह कार्य एक या दो वर्ष में पूर्ण नहीं किया जा सकता है। इतिहास के शिक्षक को अपने कक्ष को उपयोगी बनाने के लिए निरन्तर कार्य करना पड़ेगा। इतिहास के शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह कक्ष के लिए उन्हीं वस्तुओं का संग्रह करे जितना छात्र उपयोग कर सकें और उनकी क्रियाशीलता में सहायक हो सकें। इतिहास-कक्ष छात्रों की जिज्ञासा-पूर्ति तथा ज्ञान-वृद्धि के लिए प्रयोगशाला है। अतः वहाँ उनको समस्त वस्तुओं के प्रयोग करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

इतिहास-पुस्तकालय
Histoy Library

महत्त्व : Importance

विद्यालय में पुस्तकालय का भी महत्त्व है। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है, जहाँ पर बैठकर पुस्तकों व पत्रिकाओं का अध्ययन कर बालक उन प्रवृत्तियों को ग्रहण करते हैं जिनके द्वारा कक्षा के बाहर के शिक्षालय-जीवन में उन्हें प्रेरणा मिलती है। पुस्तकालय केवल शिक्षण-कार्य की पूर्ति नहीं करता है, वरन् बालकों को पुस्तकों का उचित उपयोग करना, स्वाध्ययन करना, अपने मस्तिष्क को अधिक विकसित करना तथा अपने सामान्य ज्ञान के भण्डार में वृद्धि करना सिखाता है। पुस्तकालय सामूहिक शिक्षण के दोषों का निवारण करता है।

भारतीय विद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति—भारतीय शिक्षालयों के पुस्तकालयों की दशा अति शोचनीय है। 'मुदालियर आयोग' का विचार है कि ऐसे अनेक शिक्षालय हैं, जहाँ पुस्तकालयों की कोई व्यवस्था ही नहीं है और जहाँ कहीं पर इनकी व्यवस्था है वहाँ अधिकतर पुस्तकें ऐसी हैं, जिन्हें पुस्तकालय से निकाल देना अधिक अच्छा होगा, बजाय इसके कि पुस्तकालय की अलमारियों के स्थान घेरे रहें और धूल इकट्ठी करती रहें। एक विद्वान् ने तो यहाँ तक कहा है कि भारतीय माध्यमिक शिक्षालयों के पुस्तकालयों का एक बहुत बड़ा भाग होलिका के योग्य है; अर्थात् उसे प्रसन्नता के साथ अग्नि को समर्पित किया जा सकता है।

इतिहास-पुस्तकालय—इतिहास का एक अलग पुस्तकालय होना आवश्यक है,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिससे कि छात्रों में स्वतन्त्र रूप से ऐतिहासिक साहित्य पढ़ने की आदत पड़े। इतिहास को ठीक प्रकार से समझने के लिए तथा उसमें रुचि उत्पन्न करने के लिए छात्रों में पाठ्य-पुस्तक के अतिरिक्त, सहायक पुस्तकों की पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। पुस्तकालय इतिहास-कक्ष में रखा जा सकता है। परन्तु हमारे विचार में इतिहास की पुस्तकों को इतिहास-कक्ष में रखा जाना चाहिए वरन् इसके लिए एक कक्ष अलग हो। इसका कारण है कि इतिहास का अपना एक साहित्य है जो प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। इस साहित्य को इस प्रकार रखना चाहिए, जिससे छात्र इससे अधिकाधिक लाभ उठा सकें। इतिहास की पुस्तकें, मानचित्र, पत्र-पत्रिकाएँ, जरनल (Journals)—ऐसी वस्तुएँ हैं जो बालकों को सरलता से उपलब्ध हो सकें जिससे उनमें पढ़ने की रुचि उत्पन्न हो। इसके अतिरिक्त इतिहास के शिक्षक को इतिहास के पुस्तकालय को विभागों में विभाजित करना चाहिए। एक विभाग में वे पुस्तकें होनी चाहिए जो शिक्षक के लिए उपयोगी तथा आवश्यक हैं; दूसरे विभाग में बालकों की रुचि, आवश्यकता तथा योग्यता के अनुसार पुस्तकें होनी चाहिए।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि इतिहास-पुस्तकालय अच्छी ऐतिहासिक रचनाओं को रखे। परन्तु कक्षा-शिक्षण के लिए समस्त ऐतिहासिक रचनाएँ आवश्यक नहीं हैं। शिक्षण के पुस्तकालय में उन समस्त रचनाओं का संग्रह होना चाहिए जिनको जानना शिक्षक के लिए आवश्यक है। ये सब रचनाएँ प्रसिद्ध लेखकों, जैसे—सर जदुनाथ सरकार, डॉ० भण्डारकर, डॉ० ईश्वरी प्रसाद, डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव आदि के द्वारा लिखी होनी चाहिए, जिन्होंने ऐतिहासिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किये हैं। शिक्षक अपने पुस्तकालय में स्रोतों तथा निर्देश-पुस्तकों (Reference Books) को अवश्य रखे। इसके अतिरिक्त इसमें इतिहास-शिक्षण पर भी पुस्तकें होनी चाहिए।

छात्रों का पुस्तकालय उनकी रुचि तथा योग्यतानुसार पुस्तकों का संकलन करे। पाठ्य-पुस्तकों के अतिरिक्त सामान्य अध्ययन के लिए भी पुस्तकें होनी चाहिए। उच्च कक्षा तथा योग्य छात्रों के लिए कुछ स्रोतों का होना आवश्यक है। पाठ्य-पुस्तकें तथा सामान्य पुस्तकें प्रादेशिक या मातृभाषा में लिखी हुई होनी चाहिए। इस पुस्तकालय में अभिनयात्मक ढंग से लिखी हुई कुछ पुस्तकें भारतीय इतिहास तथा विश्व-इतिहास के कुछ प्रकरणों पर होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त कुछ पुस्तकें आत्म-कथा सम्बन्धी भी होनी चाहिए।

वस्तु-संग्रहालय
Museum

पाश्चात्य देशों में शिक्षा की उन्नतशील पाठन-विधियों में वस्तु-संग्रहालय को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यह 20वीं शताब्दी की देन है। 'मुदालियर आयोग' ने भी भारतीय शिक्षालयों के लिए वस्तु-संग्रहालय स्थापित करने के लिए संस्तुति की हैं। उनके अनुसार प्रत्येक राज्य में राज्य द्वारा एक वस्तु-संग्रहालय स्थापित किया जाय और विभिन्न जिलों में छोटे-छोटे वस्तु-संग्रहालय स्थापित किये जायें। उ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

माध्यमिक विद्यालयों को भी इनकी स्थापना करने के लिए कहा है परन्तु उसने इनकी स्थापना के लिए एक सुझाव यह दिया है कि प्रत्येक विद्यालय के लिए इसकी स्थापना करना सम्भव नहीं है, इसीलिए कई विद्यालय मिलकर इसकी स्थापना कर सकते हैं। वस्तु-संग्रहालय इतिहास-शिक्षण के लिए अति उपयोगी होता है। इसमें विभिन्न सम्राटों के सिक्के, मुहर, हथियार, औजार, खोजों के द्वारा प्राप्त हुई वस्तुएँ संग्रह करके रखी जायँ। इसके अतिरिक्त उनमें एक चित्र प्रसारण यन्त्र भी होना चाहिए और केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों से ऐतिहासिक फिल्म लेकर विद्यार्थियों को दिखाई जायें। इतिहास के शिक्षण में वस्तु-संग्रहालय अपना एक विशेष महत्त्व रखता है। प्रत्येक विद्यालय को एक छोटा-सा वस्तु संग्रहालय स्थापित करना चाहिए, जिससे इतिहास के शिक्षण को सफल बनाया जा सके तथा छात्रों के सम्मुख भूत को वर्तमान में प्रस्तुत किया जा सके।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. "Historical laboratory give added charm and dignity to historical study." Explain how you would equip such a laboratory ? —(A. U., 1959, 71)

   "ऐतिहासिक प्रयोगशाला ऐतिहासिक अध्ययन को अधिक सौन्दर्य एवं महत्त्व प्रदान करती है।" स्पष्ट कीजिए कि आप इस प्रकार की प्रयोगशाला को किस प्रकार सुसज्जित करेंगे ?

2. How would you equip the History-room and Museum of a higher secondary school ? —(A. U., 1960)

   उच्चतर-माध्यमिक स्कूल में आप इतिहास-कक्ष तथा संग्रहालय को किस प्रकार सुसज्जित करेंगे ?

3. Write a shortnote on History-room. —(A. U. & P. U., 1962, 70)

   इतिहास कक्ष पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

4. Discuss the usefulness of the History-room for a history teacher. —(A. U., 1969)

   इतिहास-शिक्षक के लिए इतिहास-कक्ष की उपादेयता को स्पष्ट कीजिए।

5. Discuss the need of History-room in a higher secondary school. How would you equip and arrange it. —(A. U., 1969, 74)

   उच्चतर-माध्यमिक विद्यालय में इतिहास-कक्ष की आवश्यकता बताइए। आप इसको किस प्रकार व्यवस्थित एवं सुसज्जित करेंगे ?

6. Write short note on 'Importance of History-room.' —(A. U., 1976)

   'इतिहास-कक्ष का महत्त्व' पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. Discuss the importance of a History-room in Higher Se[condary school.] dary school. How would you equip the history-room?

—(A. U., 19

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में इतिहास-कक्ष के महत्त्व को बताइए। इसको किस प्रकार व्यवस्थित तथा सुसज्जित करेंगे ?

8. Discuss the importance of History-room at secondary st[age.] How would you equip the history-room in a school?

—(A. U., 19

माध्यमिक स्तर पर इतिहास-कक्ष के महत्त्व का विवेचन कीजिए। वि[द्यालय] में इतिहास-कक्ष की साज-सज्जा आप कैसे करेंगे ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में सत्य के समक्ष 'हाँ' और असत्य के [समक्ष] 'नहीं' लिखिए—

(i) इतिहास-कक्ष इतिहास की प्रयोगशाला है।........

(ii) इतिहास-कक्ष इतिहास-शिक्षण के लिए उपयुक्त वातावरण नि[र्मित] करता है।........

(iii) इतिहास-कक्ष में श्यामपट का होना आवश्यक है।........

(iv) इतिहास-पुस्तकालय में उपयुक्त ऐतिहासिक रचनाओं का संग्रह [होना] चाहिए।........

(v) वस्तु-संग्रहालय इतिहास-शिक्षण के लिए अनुपयोगी है।........

(vi) इतिहास-कक्ष ऐतिहासिक अध्ययन को अधिक प्रभावी एवं महत्त्व[पूर्ण] बनाता है।........

(vii) इतिहास-कक्ष में वैज्ञानिक यन्त्रों तथा रासायनिकों के चित्रों को [स्थान] प्रदान किया जाना चाहिए।

(viii) इतिहास-पुस्तकालय में स्रोतों तथा सन्दर्भ पुस्तकों को स्थान [दिया] जाना चाहिए।........

(ix) इतिहास-पुस्तकालय का महत्त्व छात्रों द्वारा उसके उपयोग में नि[हित] है।........

(x) इतिहास-संग्रहालय में विभिन्न कालों के सिक्कों, मुहरों, हथि[यारों] आदि का संग्रह होता है।........

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

18

इतिहास में समय-ज्ञान

TIME-SENSE IN HISTORY

"The main use of the time-chart is to provide a chronological framework within which events and developments may be recorded, and to guard against the vagueness of time sense which may result from teaching arranged, often necessarily by 'topics' rather than by reigns."

—*Incorporated Association of Assistant Masters in Secondary School.*

विषय-प्रवेश

किसी समय इतिहास-शिक्षण का उद्देश्य यह था कि बालकों को सन् तथा तिथियाँ मौखिक रूप से स्मरण करा दी जायें। इससे इतिहास एक नीरस तथा निष्प्राण विषय बन गया था। इसलिए छात्रों को इसमें कोई रुचि न थी और प्रथम अध्याय में इतिहास की जिन धाराओं का वर्णन किया गया है, उनका आविर्भाव इन्हीं कारणों के फलस्वरूप हुआ। ऐसी ही एक धारणा इस प्रकार है—

"हिस्ट्री जॉगरफी बड़ी बेवफा;
रात को याद करो दिन को सफा।"

इसके पश्चात् इतिहासकारों ने विचार किया कि सन् तथा तिथियाँ छोड़ दी जायें। इसका यह फल निकला कि छात्र ऐतिहासिक घटनाओं तथा सनों में कोई सम्बन्ध और तारतम्य स्थापित न कर सके। उनके मस्तिष्क से यह बात निकल गई कि मुहम्मद तुगलक ने आज से कितने वर्ष पहले दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाया था; अकबर तथा शाहजहाँ का स्वर्णयुग आज से कितने वर्ष पूर्व हुआ था;

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

गौतम बुद्ध ने किस शताब्दी में निर्वाण प्राप्त किया और अपने धर्म की स्थापना की तथा किन-किन राजाओं ने किस-किस काल में इस धर्म को फैलाने में भाग लिया इस काल से पहले या पश्चात् कौन-कौन से अन्य आन्दोलन प्रारम्भ हुए, जिन्होंने विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक क्रान्ति उत्पन्न कर दी। यदि हम इन विभिन्न घटनाओं की तिथियों को, जो देश और जाति की संस्कृति तथा समाज की उन्नति का कारण हुईं; अपने मस्तिष्क में न रखें तो हम यह न समझ सकेंगे कि एक घटना से दूसरी घटना और दूसरी से तीसरी में समय के विचार से कितना भेद है। यही नहीं वरन् उस काल में अन्य राष्ट्रों में जो घटनाएँ घटित हुईं, उनको भी नहीं समझ सकेंगे। दूसरे, घटनाविहीन तथा जीवनविहीन समय से हमारा कोई अभिप्राय नहीं है। इतिहास की दृष्टि से ऐसे काल का अथवा समय का कोई महत्त्व नहीं है जिसमें कोई विशेष घटना नहीं घटी हो। इतिहास की दृष्टि से उस काल का ही महत्त्व है, जिस काल में सृष्टि के जीव क्रियाशील और सजीव रहे हैं। क्रियाशील और जीवन-युक्त समय का इतिहास ही हमारे लिए उपयोगी है। इसके साथ ही इतिहास को पूर्णतया समझने के लिए समय का ज्ञान अत्यन्त अनिवार्य है।

समय एक भावनात्मक वस्तु है, जो समझने और अनुभव के योग्य है परन्तु वह दृश्यमान नहीं है। समय अपनी प्रकृति के अनुसार जटिल तथा कठिन वस्तु है क्योंकि वह अपने में पूर्ण नहीं है। इसके विषय में हम दूसरी घटनाओं के सम्बन्ध के अभाव में कुछ नहीं कह सकते हैं। भावपरक वस्तुओं में बालकों की रुचि कम होती है। उनके सम्मुख क्रियाशील तथा जीवित पदार्थों और दृश्यमान वस्तुओं के रूप में ज्ञान उपस्थित किया जाना चाहिए, तभी वे उनमें रुचि लेंगे। शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य है कि वह समय के ज्ञान को छात्रों के समक्ष स्थूल रूप में प्रस्तुत करे, जिससे वे उसका ज्ञान सरलता से प्राप्त कर सकें और उस भाव युक्त विचार को दृश्यमान रूप में ग्रहण कर सकें। समय ज्ञान को किस प्रकार छात्रों के समक्ष मूर्त रूप में रखा जाय? इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व यह जानना अति आवश्यक है कि समय-ज्ञान का क्या अर्थ है?

समय-ज्ञान का अर्थ : Meaning of Time-Sense

प्रायः छात्र समय-ज्ञान को समझने में भूल कर जाते हैं। वे तिथियों, सन् संवतों को स्मरण करना ही समय-ज्ञान मान लेते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। प्रो० घाटे ने कहा कि समय-ज्ञान वह शक्ति है जिसकी सहायता से हम जीवन और क्रियाशीलता का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु यह तभी सम्भव हो सकता है जबकि जीवन तथा क्रियाशीलता का सम्बन्ध घटनाओं से हो। दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि समय की तिथियाँ, सन् एवं संवतों का भी महत्त्व है जब वे महा-पुरुषों, घटनाओं तथा आन्दोलनों को समझने, क्रम स्थापित करने तथा उनकी प्राचीनता का आभास कराने में हमें सहायता प्रदान करें। उनका सम्बन्ध हमारे समक्ष इस प्रकार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

का दूसरा पक्ष प्रस्तुत करता है, वह यह कि समय-ज्ञान के बनाने वाले मुख्य तत्त्व कौन-कौन-से हैं ? इस प्रश्न का उत्तर निम्न शब्दों में दिया जायेगा—

समय-ज्ञान के तत्त्व : Elements of Time-Sense

इतिहास-शिक्षण का एक उद्देश्य यह है कि वह छात्रों से समय-ज्ञान विकसित करे। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि छात्र शिक्षालय में प्रवेश करने से पूर्व समय का सम्बन्ध वस्तुओं के साथ स्थापित करना जान जाता है; उदाहरणार्थ—"कल चार बजे हमने हॉकी का मैच देखा था और हमारे यहाँ आज दो बजे सोशलिस्ट पार्टी के नेता का भाषण है।" परन्तु यह विचार तथा ज्ञान पूर्णतया संगठित नहीं हो पाता है। अतः इतिहास के अध्यापक का परम कर्त्तव्य है कि वह उनके समय-ज्ञान को विकसित करके संगठित करे, जिससे उसका इतिहास-शिक्षण उपयोगी, रोचक तथा सजीव बन जाये। इस कार्य के लिए उसे चार बातों का जानना अति आवश्यक है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि समय स्वयं में सत्ता नहीं है—यह सम्बन्धात्मक है जो कि विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं तथा महापुरुषों से सम्बन्धित हैं। इस सम्बन्ध को समझने के लिए उसके तत्त्वों का ज्ञान आवश्यक है वे इस प्रकार हैं—

1. स्थिति (Location), 2. समय की दूरी (Distance),
3. समय की अवधि (Duration),
4. समय का सम्बन्ध (Relation of time)।

(1) स्थिति—समय अनन्त है जो बिना किसी अवरोध के अनादि काल से चला आ रहा है। जब तक इन तथ्यों का स्थापन समय तथा स्थान में नहीं करेंगे, तब तक समय की दूरी को नहीं नाप सकते हैं। इस प्रकार स्थानीयकरण का अर्थ यह है कि वस्तुओं तथा घटनाओं को रेखाओं या समय में चिह्नित किया जाय। एक बिन्दु या चिह्न दूसरे से सम्बन्धित होता है। साधारण भाषा में हम कह सकते हैं कि स्थिति का अर्थ—तिथियों को घटनाओं से स्थिर करना है। यह कार्य इतिहास की आवश्यकता के अनुसार प्रारम्भिक है। मानव तथा वस्तुओं का सम्बन्ध आकस्मिक है, और कोई भी घटना या व्यक्ति एकाकीपन में नहीं रह सकता है। इस प्रकार स्थिति समय-ज्ञान के विकास में महत्त्वपूर्ण वस्तु है, जिसको कार्यरूप में लाना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है।

(2) समय की दूरी—दूरी का अर्थ समय की लम्बाई है जो ऐतिहासिक व्यक्तियों, महापुरुषों और हमारे बीच में होती है। कल्पना कीजिए कि भूतकाल में कोई घटना घटित हुई। वह कब घटित हुई ? इसको जानने के लिए बालक उत्सुक रहते हैं। यदि इसे स्पष्ट करने के लिए सन्-संवतों का ही आश्रय लिया जाय तो समय का आभास छात्रों की समक्ष में नहीं आ सकता है। सन् 1630 में शिवाजी का जन्म हुआ। यदि छात्रों को बताया जाय कि आज से बहुत काल पहले उनका जन्म हुआ था तो इससे भी उन्हें सन्तोष न होगा। वे यह जानना चाहेंगे कि शिवाजी का जन्म

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आज से कितने वर्ष पूर्व हुआ था। यदि उनको स्पष्टतया यह बताया जाय कि ... से 353 वर्ष पूर्व शिवाजी का जन्म हुआ तो इसको वे सुगमता से ग्रहण कर ... इस समय के अन्तर या दूरी के ज्ञान को समय की दूरी कहेंगे।

(3) **समय की अवधि**—ऐतिहासिक दृष्टि से 'समय की अवधि' का ... महत्त्व है। यह अत्यन्त आवश्यक है कि छात्रों को ऐतिहासिक आन्दोलनों की ... का ज्ञान प्रदान किया जाय। युगों, वंशों तथा आन्दोलन का ज्ञान हमें ऐतिहासिक समझदारी प्रदान करता है। कोई भी घटना या आन्दोलन जब घटित होता है उसके पहले से कुछ कारण होते हैं। किसी घटना के घटित होने के लिए पहले ही कुछ वातावरण या भूमिका तैयार रहती है। घटना के घटित हो जाने के पश्चात् भी उस घटना का कुछ समय तक प्रभाव रहता है। जब तक वह विशेष घटना ... या राष्ट्र के वातावरण को प्रभावित करती रहती है, तब तक के समय को उसे ... या आन्दोलन की अवधि कहते हैं। सन् 1789 में फ्रेंच-क्रान्ति हुई, किन्तु उस ... की अग्नि पहले से ही धधक रही थी। इस तिथि के पश्चात् भी वर्षों तक ... प्रभाव विद्यमान रहा। जब तक इस क्रान्ति का पहले तथा पश्चात् तक प्रभाव ... उस काल को 'क्रान्ति-काल' कहेंगे। समय की अवधि की सहायता से हम अपने ... का संतुलन कर सकते हैं। इसके द्वारा छात्रों को यथार्थवादी तथा निर्णयात्मक ... जा सकता है। इसके अतिरिक्त अवधि की सहायता से हम सुगमतापूर्वक कह ... हैं कि अमुक काल में इतनी उन्नति या अवनति हुई।

(4) **समय का सम्बन्ध**—समय का ज्ञान कराते समय अध्यापक प्रायः ... को कुछ महान् व्यक्तियों तथा मुख्य घटनाओं की तिथियों का स्मरण करने ... कह देते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं कि तिथि एक संख्या है, आँकड़ा है, न ... स्वयं कोई महत्त्वपूर्ण पदार्थ है। असम्बद्ध तिथियों में छात्रों की रुचि नहीं होती ... उदाहरणार्थ—ईसा से 453 वर्ष पूर्व, सन् 1605; 1630, 1857, 1885, ... 1942 ई० आदि का केवल इसीलिए महत्त्व है कि इन तिथियों से महान् व्यक्ति ... अथवा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का सम्बन्ध है। इन तिथियों को समय-स्तम्भ मान ... इन घटनाओं को समझने में सुगमता होती है। केवल तिथियों का स्मरण कर ... समय का ज्ञान नहीं हो सकता। इन तिथियों का घटनाओं से क्या सम्बन्ध ... उदाहरणार्थ—हल्दीघाटी से पूर्व कौन-कौन-सी घटनाएँ घटीं ? कितने वर्ष पूर्व ... उसके पश्चात् कौन-कौन-सी घटनाएँ कब और कितने समय पश्चात् घटीं ? ... बातों का जानना तथा उनका सम्बन्ध समझना अत्यन्त आवश्यक है। इन बातों ... ध्यान में रखकर छात्रों को समय का ज्ञान कराना चाहिए।

समय-ज्ञान विकसित करने के लिए साधन
Means for the Development of Time-Sense

हर समय-ज्ञान तथा उसके मुख्य तत्त्वों के विषय में अध्ययन कर चुके ...

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रश्न यह उठता है कि समय-ज्ञान किन साधनों के द्वारा विकसित किया जा सकता है ? इतिहास के आधार 'काल' हैं अतः काल-सम्बन्ध को स्पष्ट करना बहुत ही आवश्यक है। इसके लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का प्रयोग किया जा सकता है।

(अ) **समय-चार्ट : Time Chart**—छोटी कक्षाओं में चित्रात्मक समय-चार्ट (Pictorial Time-Chart) तथा चित्रावली-चार्ट (Panorama Chart) का प्रयोग करना चाहिए। चित्रात्मक समय-चार्ट में जिस वंश की सूची बनायी जाती है, उसमें उसके राजाओं या शासकों के चित्रों को प्रदर्शित किया जाता है; उदाहरणार्थ—यदि मुगल वंश का समय-चार्ट बनाना है तो हम इस प्रकार बनायेंगे—बाबर मुगल वंश का प्रथम शासक था। जब वह गद्दी पर बैठा, उस तिथि के सम्मुख उसका चित्र प्रदर्शित किया जायेगा, उसके पश्चात् उसके उत्तराधिकारी का। इस प्रकार क्रमशः हम समय-चार्ट तैयार करेंगे। चित्रावली-चार्ट में भी चित्रों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन इसमें हम 100 वर्ष को एक मुख्य घटना से प्रदर्शित करते हैं; उदाहरणार्थ—चौथी शताब्दी को प्रदर्शित करने के लिए समुद्रगुप्त के अश्वमेघ-यज्ञ के घोड़े का चित्र बनायेंगे, पाँचवीं शताब्दी के लिए स्कन्दगुप्त का चित्र, छठी शताब्दी के लिए अजन्ता की चित्रकला के नमूने आदि। इसको बनाने में छात्रों को आनन्द भी प्राप्त होगा तथा तिथियाँ याद रखने में सहायता मिलेगी। सम्पूर्ण राष्ट्रीय इतिहास का एक समय-चार्ट प्रत्येक विद्यार्थी को बनाना चाहिए। उच्च कक्षाओं में विभिन्न प्रकार के 'तुलनात्मक समय-चार्टों' (Comparative Time-Chart) का प्रयोग हो सकता है, जिसमें समय-रेखा के दोनों ओर दो प्रकार की अथवा दो देशों की घटनाओं का उल्लेख हो। भारत का अध्ययन करते समय शिक्षक उत्तरी तथा दक्षिणी भारत की घटनाओं की तुलना समय-चार्ट द्वारा करा सकता है। एक ही सूची में कई प्रकार की घटनाएँ भी पृथक्-पृथक् विभागों में दिखाई जा सकती हैं। इन्हें 'संयुक्त समय-चार्ट' (Composite Time-Chart) कहते हैं।

समय चार्ट बनाते समय अध्यापकों तथा छात्रों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

1. समय-चार्ट बनाने के लिए जो पैमाना (Scale) प्रयोग में लाया जाय, वह एक समान (Uniform) हो तथा उसके विभागों में स्थान की शुद्धता होनी चाहिए अर्थात् विभागों में कम या अधिक स्थान न दिया जाय वरन् उसमें एक-सा स्थान दिया जाय।
2. यह आकर्षक होनी चाहिए।
3. इसके द्वारा ऐतिहासिक ज्ञान की शुद्धता प्रदान की जाय।

(ब) **समय-रेखा : Time-Line**—समय-रेखा समय-ज्ञान विकसित करने के लिए सरल तथा प्रभावशाली साधन है। यदि हम छात्रों के सम्मुख तिथियों का ढेर बिना किसी क्रम के प्रस्तुत करें तो उनको समय का कुछ भी आभास नहीं होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह सत्य है कि एक तिथि दूसरी तिथि के पश्चात् आती है, इसलिए हमको तिथियों को क्रमानुसार प्रस्तुत करने के लिए समय-रेखा की सहायता लेनी चाहिए। इन पर तिथियों को कालक्रमानुसार उपस्थित किया जाता है। तिथियों को प्र... करते समय पैमाना एक-सा ग्रहण करना चाहिए तथा विभागों में समानता हो... चाहिए। कक्षा में समय-रेखा बनाते समय अध्यापक को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(1) तिथियाँ बहुत थोड़ी तथा चुनी हुई हों। परन्तु अध्यापक को इनके ... में सतर्कता रखनी चाहिए। ये तिथियाँ पर्याप्त विस्तृत समय को ढकती हों। ... का विचार है कि इतिहास की मुख्य घटनाओं का चयन किया जाय, जैसे—1... 1556, 1657, 1707, 1757, 1761, 1857, 1885, 1919, 1... 1942, 1947 ई० आदि; अर्थात् वे तिथियाँ चुनी जायँ जो कि मुख्य घट... मानवीय कार्यों तथा आन्दोलनों से सम्बन्ध रखती हों।

(2) तिथियों के चयन में इस बात का ध्यान रखा जाय कि वे प्रभावपूर्ण ... और समाज में सामंजस्य स्थापित करने में उनका पूर्ण हाथ हो। इन तिथियों ... यह विशेषता हो कि उस अवधि के अन्तर्गत शासन-व्यवस्था, समाज का रहन-... कृषि-व्यापार तथा कला का स्तर एक समान रहा हो। इसके अतिरिक्त ... तिथियों को चुना जाय जो किसी काल-विशेष की उन्नति, अवनति तथा परिवर्तन ... प्रतिनिधित्व करती हों।

(3) समय-रेखा बहुत अधिक छोटी नहीं होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं ... समय-ज्ञान कराने के लिए कहानियों को कालानुक्रम के अनुसार एक रेखा पर प्र... किया जा सकता है। हम इनका उपयोग किसी वंश के उत्थान तथा पतन ... किसी विचारधारा के उत्कर्ष और अपकर्ष को प्रदर्शित करने के लिए भी कर ... हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न वंशों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए भी प्र... में ला सकते हैं।

(स) समय-ग्राफ : Time-Graph—साम्राज्यों अथवा विचारों के उ... पतन को ग्राफ-चार्ट (Graphic Chart) में दिखाया जा सकता है। इन चा... घटनाओं का काल-सम्बन्ध स्पष्ट होता है। इनका उपयोग उच्च कक्षाओं में ... जाना चाहिए। तुलनात्मक समय-चार्ट भी बनाये जा सकते हैं; जैसे—स्टुअर्ट... इङ्गलैण्ड तथा भारत के सल्तनत-काल की घटनाओं को प्रदर्शित किया जा सकता... तुलनात्मक समय-ग्राफ आधुनिक काल के इतिहास में पर्याप्त मात्रा में बनाये... सकते हैं। परिशिष्ट नं० 4 में कुछ समय-रेखाएँ नमूने के रूप में दी गई हैं, ... छात्रों को उपयोगी सिद्ध होंगी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What do you understand by Time-Sense in History ? What measures will you adopt for its development among students ? —(A. U., 1982)
समय-ज्ञान से आप क्या समझते हैं ? आप छात्रों में इसके विकास के लिए किन साधनों का उपयोग करेंगे ?
2. What are the constituents of Time-Sense ? Explain them with examples.
समय-ज्ञान के निर्धारक तत्त्व क्या हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
3. 'To develop time-sense is one of the accepted aim of teaching History.' Suggest ways and techniques to realize this objective. —(P. U., 1969)
'समय-ज्ञान का विकास करना इतिहास-शिक्षण का एक स्वीकृत उद्देश्य है।' इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपाय बताइये।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में यदि सत्य हों तो 'हाँ' को और यदि असत्य हों तो 'नहीं' को रेखांकित कीजिए :

(i) समय एक भावनात्मक वस्तु है। (हाँ/नहीं)
(ii) समय-ज्ञान से बालक जीवन और क्रियाशीलता का अनुभव प्राप्त करते हैं। (हाँ/नहीं)
(iii) स्थिति का अर्थ है तिथियों को घटनाओं से सम्बन्धित करना। (हाँ/नहीं)
(iv) चित्रावली चार्ट में किसी वंश के शासकों के चित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। (हाँ/नहीं)
(v) साम्राज्यों के उत्थान एवं पतन को तुलनात्मक चार्ट द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है। (हाँ/नहीं)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

19

इतिहास-शिक्षण में समन्वय

CORRELATION IN HISTORY-TEACHING

"Poetry paints what history describes." —*Firdausi*

× × ×

"I have learnt all my English History from Shakespeare's plays." —*Chatham.*

विषय-प्रवेश

बालक का मन (Mind) पृथक्-पृथक् विभागों (Faculties) का सम्मिश्र नहीं है, वरन् अविभाज्य इकाई है। साथ ही सम्पूर्ण ज्ञान भी एक अविभाज्य इकाई है। उसका विभिन्न विषयों में विभाजन मनुष्यों के द्वारा इसलिए किया गया है जिससे कि वे उनमें दक्षता प्राप्त कर सकें। परन्तु समस्त विषयों की सामग्री मन द्वारा ही ग्रहण की जाती है। अतः मन भिन्न-भिन्न अनुभवों का पारस्परिक सम्बन्ध, तुलना तथा मिश्रण आदि करके उन्हें ग्रहण करता है। अनुभव करने के साथ ही यह सम्बन्धीकरण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है और जो भी ज्ञान हमारे मन में संचित होता है, वह इन्हीं सम्बन्धों का ज्ञान है। हमारा मन कुछ ऐसे तत्त्वों से निर्मित है जो बिना इस सम्बन्ध-स्थापना के रह ही नहीं सकता। अतः मानव-मन स्वभावतः एक विषय के अनुभवों को दूसरे विषय के अनुभवों के साथ सम्बन्ध स्थापित करने में लगा रहता है। इस प्रकार मन की अविभाज्यता, ज्ञान की अखण्डता एवं सम्बन्धीकरण क्रिया को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक विषय का दूसरे विषयों से सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। हम अपने कथन की पुष्टि गुथाउ के शब्दों से कर सकते हैं— "घटनाओं तथा विचारों का मानस-पटल पर स्थायी एवं उपयोगी प्रभाव तभी पड़ता है, जब मन उन्हें नवीन घटनाओं एवं विचारों के साथ व्यवस्थित एवं सम्बद्ध करता है।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

समन्वय का अर्थ : Meaning of Correlation

यह बात निर्विवाद है कि सम्पूर्ण ज्ञान अखण्ड है। परन्तु पठन-पाठन की सुविधा के लिए मानव ने उसका वर्गीकरण कर लिया है और उसके प्रत्येक वर्ग को एक विषय कहा। विषय में दक्षता प्राप्त करके उसने अपना उद्देश्य निर्धारित किया। पर कुछ सुविख्यात शिक्षकों ने, जिनमें हरवर्ट (Herbart) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, यह सिद्ध कर दिया है कि बालकों को पढ़ाये जाने वाले विषयों में पृथकता की स्पष्ट रेखा खींचना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि इनको एक-दूसरे से सम्बन्धित करके ही शिक्षण को अधिक उपयोगी और लाभप्रद बनाया जा सकता है। हरबार्ट का विचार यह था कि पाठ्यक्रम में विषयों को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए जिससे एक विषय के शिक्षण में दूसरे विषयों का ज्ञान सहायक हो सके। इसको उसने 'सहसम्बन्ध या समन्वय के सिद्धान्त' के नाम से पुकारा। इस सिद्धान्त का आधार उसका 'पूर्वानुवर्ती ज्ञान का सिद्धान्त' (Doctrine of Mass of Apperception) था। इस सिद्धान्त के अनुसार समस्त नवीन विचार तभी ग्राह्य हो सकते हैं, जब उनका सम्बन्ध हमारी चेतना में विद्यमान विचारों से स्थापित किया जाता है। हम दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि जब हमारे पूर्वानुवर्ती विचारों को सम्बन्धित कर दिया जायगा तभी नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।

हरबार्ट के शिष्य ज़िलर (Ziller) ने इस सिद्धान्त को और अधिक विस्तृत करके 'केन्द्रीयकरण का सिद्धान्त' (Principle of Concentration) प्रतिपादित किया। उसने 'इतिहास' को शिक्षण का केन्द्रीय विषय बनाया। उसने यह भी बताया कि इतिहास को केन्द्रीय विषय बनाकर अन्य विषयों का शिक्षण किस प्रकार किया जा सकता है। उसने बताया कि भूगोल के शिक्षण में ऐतिहासिक स्थानों का उल्लेख किया जाय। साहित्य की शिक्षा देते समय नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता आदि में ऐतिहासिक रचनाओं को प्रयोग किया जाय। कला की शिक्षा देते समय ऐतिहासिक दुर्ग, ऐतिहासिक भवन, प्राचीन काल के वस्त्र, आभूषण आदि के चित्र बनवाये जायें। गणित और विज्ञान पढ़ाते समय ऐतिहासिक युद्धों, योजनाओं का ब्यौरा तथा सेनाओं का हिसाब-किताब चुना जाय।

समन्वय के प्रकार : Kinds of Correlation

थट व गेरबेरिच (Thut & Gerberich) के अनुसार, समन्वय के तीन प्रकार हैं, यथा—

(अ) एक ही विषय में समन्वय (Correlation within a subject)।
(ब) विद्यालय व विद्यालय से बाहर के अनुभवों का समन्वय (Correlation between school and non-school experiences)।
(स) विभिन्न विषयों में समन्वय (Correlation between difference subjects)।

14

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(अ) एक ही विषय में समन्वय—इस प्रकार के समन्वय में एक ही विषय विभिन्न भागों या तथ्यों में सम्बन्ध स्थापित किया जाता है, उदाहरणार्थ—इतिहास विभिन्न भागों, जैसे—आर्थिक इतिहास, सामाजिक इतिहास, धार्मिक इतिहास में सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इस प्रकार के समन्वय में एक कक्षा की विषय-वस्तु का उससे अगली कक्षा की विषय-वस्तु से सम्बन्ध भी स्थापित किया जाता है। इस समन्वय को "लम्बीय या शीर्षात्मक समन्वय" (Vertical Correlation) कहते हैं।

(ब) विद्यालय व विद्यालय के बाहर के अनुभवों का समन्वय—इस प्रकार समन्वय में कक्षा में अध्ययन किये जाने वाले विषयों का जीवन के दैनिक अनुभव से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस सम्बन्ध से दो लाभ होते हैं—(1) विभिन्न विषयों को वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करने से बालक उनको सुगमता से सम जाता है, और (2) बालक के सैद्धान्तिक ज्ञान का वास्तविक जीवन से सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। फलस्वरूप वह अपने भावी जीवन की समस्याओं का समाधान करने में सफल होता है।

(स) विभिन्न विषयों में समन्वय—इस समन्वय में दो या अधिक विषयों की सामग्री को सम्बन्धित किया जाता है, उदाहरणार्थ—भूगोल का इतिहास से, साहित्य का भूगोल और इतिहास से, और प्रकृति-अध्ययन का भूगोल, जीव-विज्ञान और वनस्पति-विज्ञान से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। प्रत्यक्ष रूप में इस समन्वय में एक विषय का शिक्षण करते समय अन्य विषयों को भी ज्ञान प्रदान किया जा सम्भव है। इस समन्वय को 'क्षैतिज या अनुप्रस्थीय समन्वय' (Horizontal Correlation) के नाम से पुकारा जाता है। क्षैतिज समन्वय को दो रीतियों से स्थापित किया जा सकता है। इनका विवेचन निम्नांकित है—

(क) आकस्मिक समन्वय : Incidental Correlation—इस प्रकार अन्य विषयों में पठित सामग्री का प्रयोग किया जाता है, जिससे पाठ को समझने में विशेष सहायता मिलती है और समस्त ज्ञान की एकता का बोध होता है। इसके लिए अध्यापक कोई पूर्व-व्यवस्था नहीं करता, वरन् पढ़ाते समय किसी बिन्दु अथवा प्रकरण को अधिक व्यापक दृष्टि से सरल बनाने के लिए दूसरे विषयों में अध्ययन की हुई सामग्री का प्रयोग कर लेता है। इतिहास पढ़ाते समय यदि भूगोल का आकस्मिक प्रसंग आ गया और आवश्यकता प्रतीत हुई कि भूगोल के उस अंश को पढ़ाये बिना इतिहास में उस अंश का ज्ञान नहीं कराया जा सकता तो भूगोल के उस अंश का ज्ञान कराना आकस्मिक समन्वय कहलायेगा, उदाहरणार्थ—जब हम शिवाजी की सफलता के विषय में पढ़ा रहे हैं तो वहाँ आपको यह आवश्यकता प्रतीत होगी कि आप बालकों को उन राज्य की भौगोलिक परिस्थिति का ज्ञान करायें, क्योंकि इस ज्ञान के बिना उसकी सफलता के कारणों को स्पष्टतया नहीं समझाया जा सकता है। इस प्रकार का सह-सम्बन्ध "आकस्मिक-समन्वय" होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ख) पूर्व-आयोजित समन्वय : Pre-planned Correlation—इसमें विभिन्न विषयों की सामग्री को ऐसे क्रम से चुना जाता है कि एक विषय के शिक्षण से अन्य विषयों का निकट सम्बन्ध रहे; जो सामग्री एक विषय में पढ़ाई जाती है उसी का न्यूनाधिक अन्य विषयों में प्रयोग हो, परन्तु दृष्टिकोण की भिन्नता के साथ। ऐसे समन्वय को 'पूर्व-आयोजित समन्वय' कहते हैं। जिस शिक्षालय में कक्षाध्यापक-प्रणाली (Class-teacher System) प्रचलित है, वहाँ इस प्रकार के समन्वय के स्थापित करने में कोई कठिनाई नहीं होती। परन्तु जहाँ विशेषज्ञ-शिक्षक प्रणाली (Specialist Teacher System) है, वहाँ इसके स्थापित करने में असुविधा उत्पन्न होती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए शिक्षा प्रारम्भ करने के समय सभी अध्यापकों को एकत्रित होकर आपस में विचार-विमर्श करना चाहिए और मिलकर ऐसा कार्यक्रम बनायें जिससे विषयों में सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

जब कभी हम शिक्षा में समन्वय की चर्चा करते हैं, तो हमारा संकेत समन्वय के तीसरे रूप के प्रथम प्रकार; अर्थात् आकस्मिक समन्वय से समझना चाहिए। इतिहास एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा अन्य विषयों से समन्वय करने के लिए सामग्री प्रदान की जाती है। परन्तु इतिहास का सम्बन्ध सामान्यतः साहित्य, भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा हस्तकार्य से स्थापित किया जाता है। ये विषय ऐसे हैं जिनका उपयोग इतिहास के साथ समन्वय स्थापित करने में बड़ी सुगमता से किया जा सकता है।

इतिहास का दूसरे विषयों से समन्वय
Correlation of History with Other Subjects

यहाँ हम प्रत्येक विषय का इतिहास से पृथक्-पृथक् क्या सम्बन्ध है, इस पर विचार करेंगे और यह देखेंगे कि अन्य विषय इतिहास के साथ किस प्रकार पढ़ाये जा सकते हैं अथवा अन्य विषयों के साथ इतिहास का किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

इतिहास तथा साहित्य : History and Literature

हम प्रथम अध्याय में देख चुके हैं कि प्राचीनकाल में इतिहास साहित्य का अंग था। सहस्रों वर्षों के इतिहास की शिक्षा हमें साहित्य के रूप में ही प्राप्त होती है। प्रारम्भिक अवस्था में इतिहास की शिक्षा भी साहित्य के रूप में ही देते हैं। यदि हम साहित्यिक रोचकता का उपयोग न करें तो प्रारम्भिक अवस्था में इतिहास की उपयोगिता ही नष्ट हो जाय। साहित्य के उपयोग से छात्रों में कल्पना का विकास किया जाता है। अतः इतिहासकारों का एक वर्ग ऐसा है जो साहित्य के उस अंग पर अत्यधिक बल देता है जिसमें ऐतिहासिक व्यक्तियों और घटनाओं का धारा-वाहिक वर्णन मिलता है। वे इतिहास को साहित्य के रूप में प्रदान करना चाहते हैं, परन्तु इस रूप में इतिहास का अपना अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। ऐसी स्थिति में इन दोनों विषयों के समन्वय का प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि इतिहास पूर्ण रूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से साहित्य हो जाता है। लेडी क्लेरिण्डा का मत है, "इतिहास स्वयं एक उबाऊ तथा क्लांति उत्पन्न करने वाला विषय है, परन्तु जब उसको कल्पना प्रदान की जाती है तो वह मानवीय एवं सरल हो जाता है।"[1]

वैज्ञानिक प्रवृत्ति ने इतिहास को वैज्ञानिकता प्रदान की और इतिहास को वैज्ञानिक विषय बना। इस दल के समर्थकों का कहना है कि इतिहास विज्ञान है और उसका सम्बन्ध साहित्य से नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिकता की पोशाक पहन कर इतिहास संक्षिप्त तथा निश्चयात्मक विषय हो गया और इसने काल्पनिकता और साहित्यिक रोचकता को तिलांजलि दे दी। इस स्थिति में इतिहास तथा साहित्य का समन्वय स्थापित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार कट्टर विचारों के समर्थक समन्वय-पद्धति में निरन्तर उलझन ही उत्पन्न करेंगे। यह पूर्णतया सत्य है कि विषयों का एकीकरण दोनों के लिए हानिकारक सिद्ध होगा।

इस प्रकार दोनों विचारों पर दृष्टिपात करने के पश्चात् यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि इन दोनों विषयों की वास्तविक स्थिति क्या होनी चाहिए जिससे छात्रों को इनके ज्ञान से लाभान्वित किया जा सके? जेकब ग्रिम (Jacob Grimm) का विचार है कि ज्ञान की इन दोनों शाखाओं के पृथक्करण ने इनमें अप्राकृतिकता उत्पन्न कर दी है। इनका समन्वय ज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए किया जाना चाहिए। प्रो० घाटे का विचार है कि इतिहास के शिक्षक को साहित्य का उपयोग ऐतिहासिक वातावरण उत्पन्न करने तथा विभिन्न कालों की सामाजिक दशा का ज्ञान प्रदान करने के लिए करना चाहिए। यदि इतिहास का सम्बन्ध साहित्य से स्थापित नहीं किया जायगा तो वह अत्यन्त सूक्ष्म तथा अवैयक्तिक हो जायगा। एक ओर इतिहास मानव के कार्यों तथा विचारों की व्याख्या करता है, दूसरी ओर साहित्य मानव के विचारों, संवेगों, कल्पनाओं तथा भावनाओं का लेखा-जोखा है, इसलिए इन दोनों में समन्वय स्थापित करना अति आवश्यक है। साहित्य इतिहास के लिए वैयक्तिकता, स्थूल परिस्थिति, सामाजिक दशाओं का विस्तृत वर्णन, रीति-रिवाज, संस्थाएँ तथा रहन-सहन के ढंग की सामग्री प्रदान करता है, इतिहास का शिक्षक इनको पढ़ाते समय साहित्य की सहायता ले सकता है। यदि इतिहास को वैज्ञानिक संकीर्णता की सीमा तक खींचा जायगा तो सम्भव है कि उसकी सरलता, यथार्थता तथा निजत्व समाप्त हो जायगा। साहित्य के योग से इतिहास को सरलता, यथार्थता तथा ठोस रूप प्राप्त होता है। साहित्य ऐतिहासिक बातों को सजीव रूप प्रदान करता है। जब तक इतिहास की ऐतिहासिकता में बाधा उत्पन्न नहीं होती तब तक साहित्य का उपयोग अनुचित नहीं है। राष्ट्र भाषा में अनेक ऐतिहासिक उपन्यास, कहानियाँ तथा कविताएँ हैं, जिनका संचय रूप में उपयोग लाभप्रद ही होगा।

1. "History is but a tiresome thing in itself, but becomes more agreeable when more romance is mixed up with it."

—Lady Clarinda

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास के अध्यापक को उसके शिक्षण में महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्यों का प्रयोग करना चाहिए। यदि वह महाकाव्य-काल का शिक्षण कर रहा है तो वह 'रामायण' का, जो कि उस काल की सामाजिक दशा के सम्बन्ध में पर्याप्त मात्रा में प्रकाश डालती है, उपयोग कर सकता है। इसके अतिरिक्त वह मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' का भी उपयोग कर सकता है। यदि वह राणा प्रताप के विषय में पढ़ा रहा है तो वह श्यामनारायण पाण्डेय द्वारा रचित पुस्तकों का उपयोग वास्तविकता को प्रदान करने के लिए कर सकता है। इसी प्रकार शिवाजी के विषय में भूषण के विचारों से परिचित कराना इतिहास के शिक्षक का परम कर्त्तव्य है। इतिहास की पुस्तकों में हमें यह लिखा हुआ मिलता है कि सिकन्दर लोदी ने ग्वालियर के राजा मानसिंह को पराजित कर दिया था, लेकिन यथार्थता कुछ और ही है। इतिहास शिक्षक को इस यथार्थता को छात्रों के सम्मुख स्पष्ट करने के लिए वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा रचित 'मृगनयनी' का उपयोग करना चाहिए। इसके अतिरिक्त अध्यापक छात्रों से ऐतिहासिक उपन्यासों, कविताओं तथा लेखों को पढ़ने के लिए कह सकता है। इनका उपयोग समुचित रूप से कक्षा में किया जाना चाहिए।

इतिहास तथा नागरिक-शास्त्र : History and Civics

नागरिक-शास्त्र विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि नागरिक-शास्त्र वर्तमान समय की शासन-व्यवस्था का वर्णन करता है। कुछ लोगों का विचार है कि यह देश की शासन-व्यवस्था के उद्‌गम तथा विकास का लेखा-जोखा है। नागरिक-शास्त्र यह प्रकट करता है कि आज की शासन-व्यवस्था किन-किन स्तरों को पार करके इस रूप में आयी है। परन्तु आधुनिक काल में इसका प्रयोग उदार अर्थ में किया गया है। इसके अध्ययन के द्वारा भावी युवकों को समाज तथा राष्ट्र के लिए उपयोगी नागरिक बनाया जाता है। उन्हें इसकी शिक्षा के द्वारा उन गुणों के विकास का अवसर प्रदान किया जाता है जिनके द्वारा वे आदर्श नागरिक बन सकें। कुछ विशेषज्ञों का विचार है कि नागरिक-शास्त्र में मनुष्य की वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं का वर्णन किया जाता है। परन्तु इतिहास हमें वर्तमान समय की शासन-व्यवस्था के विषय में नहीं बताता, वरन् वह प्राचीन काल का पूर्ण गवेषणात्मक, क्रमबद्ध तथा तर्कपूर्ण अध्ययन है। यह मानव के किसी एक पहलू को ही स्पष्ट नहीं करता, अपितु मानव समाज के पूर्ण विकास पर दृष्टि डालता है। इतिहास का सम्बन्ध मानव-समाज के आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, नैतिक, आध्यात्मिक, राजनीतिक, कलात्मक विचारों आदि के विकास से है। इतिहास हमको स्पष्ट करता है कि मानव-जाति ने किस प्रकार प्रगति करके वर्तमान सभ्यता को प्राप्त किया है; अर्थात् इतिहास भूतकाल की सहायता से वर्तमान को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार दोनों विषयों के क्षेत्रों पर विचार करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दोनों विषय शासन-व्यवस्था के अध्ययन का अपने में समावेश करते

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हैं। इतिहास तथा सरकार का सम्बन्ध उसी प्रकार है—जैसा कि वनस्पति-शास्त्र पौधों से या जन्तु-विज्ञान का जन्तुओं से है। इस सम्बन्ध के कारण ही प्रो॰ फ्री... इतिहास को अतीत की राजनीति कहा है। इसी प्रकार के विचार प्रो॰ जॉनसन... हैं। उनका कथन है कि "शिक्षालयों में इतिहास की शिक्षा सरकार के स्वरूपों, ... वर्तनों तथा कार्यों के सम्बन्ध में रही है।" 1920 ई॰ में यूरोप के राजनीति... शिक्षण को पृथक् करने के लिए बल दिया गया। तदुपरान्त इसको पाठ्यक्रम में ... स्थान दिया गया। लेकिन फिर भी दोनों विषयों में समन्वय के लिए बहुत ... स्थान है। यदि हम प्राचीनकाल के भारतीय गणतन्त्र के विषय में पढ़ा रहे हैं ... उसको स्पष्ट करने के लिए हम नागरिक-शास्त्र का आश्रय ले सकते हैं और आ... गणतन्त्र तथा प्राचीन गणतन्त्र की तुलना करके उसके गुण तथा अवगुणों की विवे... कर सकते हैं। नागरिक-शास्त्र इतिहास का एक अङ्ग है। परन्तु यह किसी दे... सरकार तथा जनता के राजनीतिक विचारों के विकास के लेखों के रूप में ही ... अङ्ग हो सकता है। नागरिक-शास्त्र का इतिहास से केवल उस सीमा तक सम्ब... जिस सीमा तक उस काल में उसका विकास हुआ है।

नागरिक-शास्त्र तथा इतिहास क्षेत्र, पाठ्य-सामग्री तथा पद्धति के दृष्टि... में भिन्न हैं। संक्षेप में इन दोनों के भेद निम्नलिखित हैं—

1. इतिहास तथ्यात्मक तथा निर्देशात्मक है, जबकि नागरिक-शास्त्र ... रणात्मक (Narrative) है।
2. इतिहास मानव के अतीत की व्याख्या करता है और नागरिक... वर्तमान तथा भूत—दोनों की गवेषणा करता है।
3. इतिहास का क्षेत्र व्यापक है। वह मानव की प्रत्येक क्रिया से ... न्धित है। जबकि नागरिक-शास्त्र का क्षेत्र उसकी अपेक्षा सीमि... वह केवल मानव के उन कार्यों से सम्बन्धित है, जो नागरिक-... क्षेत्र में आते हैं।
4. इतिहास के अध्ययन की विधियों से नागरिक-शास्त्र की वि... भिन्न हैं।

नागरिक-शास्त्र ने आजकल हमारे देश में एक पृथक् विषय का स्थान ... कर लिया है। जूनियर कक्षाओं तक तो इतिहास, भूगोल तथा नागरिक-शा... मिश्रित पाठ्यक्रम है, परन्तु हाईस्कूल कक्षाओं में नागरिक-शास्त्र को पृथक् ... बना दिया गया है।

इतिहास तथा भूगोल : History and Geography

इतिहास तथा भूगोल में इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि इतिहास का ... निःसन्देह भूगोल का अध्यापक भी होता है, किन्तु दोनों विषयों में यह सम्ब... सीमा तक स्थापित हो सकता है, यह सदैव स्पष्ट नहीं रहता। दोनों विषय...

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शास्त्र के अंग हैं। दोनों का ध्येय मानव समाज की गति का स्पष्टीकरण करना है। इतिहास अतीत से सम्बन्धित है और भूगोल वर्तमान से। मानव जिस-जिस स्थान पर गया तथा जहाँ-जहाँ उसने जीवन बिताया, उस सबका वर्णन इतिहास है और उनके वर्तमान रहन-सहन तथा जीवन के लिए सामग्री जुटाने का वर्णन भूगोल है। भूत तथा वर्तमान में अन्तर होते हुए भी दोनों अन्योन्याश्रित हैं। एक के ज्ञान के बिना दूसरे का ज्ञान असम्भव है। इतिहास स्थल तथा काल के आधार पर चलता है। स्थल का विस्तारपूर्वक अध्ययन भूगोल प्रदान करता है। अतः इतिहास का अर्द्ध आधार भूगोल को मानना चाहिए।

इन दोनों विषयों के सम्बन्ध को **इमैनुअल काण्ट** ने इन शब्दों में स्पष्ट किया है—

'काल के अनुसार वर्णन करना इतिहास है, स्थान के अनुसार वर्णन करना भूगोल है। इतिहास, भूगोल से केवल समय तथा क्षेत्र के दृष्टिकोण से भिन्न है। प्रथम (इतिहास) एक समय के बाद दूसरे समय या काल में घटनाएँ किस क्रम से घटित हुई उनका लेखा या प्रतिवेदन है। दूसरा, (भूगोल) उन घटनाओं का स्थान के दृष्टिकोण से एक लेखा है।"[1]

इन दोनों विषयों में समन्वय सुगमता के साथ किया जा सकता है। समन्वय पद्धति के समर्थकों का विचार है कि विभिन्न देशों में मनुष्यों ने जो कुछ किया है, वह उसके भौतिक अथवा प्राकृतिक वातावरण के कारण हुआ है। मानव पर उसकी बाह्य परिस्थितियों तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है; मानव ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन को पूर्णता प्रदान करने के लिए इस पृथ्वी का उपयोग किया है तथा उसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी किया है। कुछ भूगोलशास्त्रियों का विचार है कि मानव पूर्णतः अपने प्राकृतिक वातावरण का दास है। उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। उसके अनुसार राष्ट्र के धार्मिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक विकास का आधार भूगोल है। वे यहाँ तक कहते हैं कि जो भी धार्मिक तथा राजनीतिक आन्दोलन हुए, वे सब भौगोलिक कारणों के प्रतिफल थे। यदि इन विचारों का समर्थन किया जाय तो इतिहास एक स्वतन्त्र विषय नहीं रहेगा, वरन् वह भूगोल का एक अंग बन जायगा। वास्तविकता यह है कि इतिहास भूगोल का एक अंग नहीं है। जिस प्रकार भौगोलिक तत्त्व की महत्ता है, उस प्रकार मानव की इच्छा शक्ति की भी

1. "The description according to time is history, that according to space is geography. History differs from geography only in consideration of time and area. The former is a report of phenomena which follow one another and has reference to time. The latter is a report of phenomena beside each other in space."—**Immanuel Kant** : *'The Nature of Geography"*, p. 135.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उपेक्षा नहीं की जा सकती। सत्य है कि प्राचीन काल में मानव प्रकृति के अधीन थ लेकिन आज वैज्ञानिक खोजों की सहायता से मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त क ली है। वह नदियों से खेतों की सिंचाई कर सकता है, उनके पानी से बिजली ब सकता है। यहाँ तक कि रेगिस्तान को उर्वरा भूमि में परिवर्तित कर सकता है इसमें कोई सन्देह नहीं कि एक देश के इतिहास के निर्माण में भूगोल का महत्त्वपू हाथ है, लेकिन अध्यापकों को यह नहीं भूल जाना चाहिए कि जिस प्रकार इतिहा में भौगोलिक तत्त्व होता है, उसी प्रकार भूलोग में भी ऐतिहासिक तत्त्व होता है इतिहास के शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य है कि इन दोनों तत्त्वों को समुचित रूप ध्यान में रखकर अपना शिक्षण कार्य पूर्ण करे।

उदाहरणार्थ—यदि वह शिवाजी के विषय में पढ़ा रहा है तो उसे शिवा की सफलता के कारणों पर दृष्टिपात करते समय भौगोलिक कारणों पर प्रका डालना चाहिए। किस प्रकार महाराष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियों ने उनकी सफल में सहायता प्रदान की। परन्तु उसे इतना अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि शिवा की सफलता का मुख्य कारण भौगोलिक ही नहीं था; वरन् उनका प्रशिक्षण, उत्सा तथा चातुर्य भी था।

यदि अध्यापक जाति-प्रथा के विषय में पढ़ा रहा है तो उसे यह भी बता चाहिए कि भूगोल ने भारत में जातियों तथा उप-जातियों के बनाने में कितना यो दिया है। दूरी अथवा धरातल की बनावट अलग हो जाने के कारण तथा एक स्थान में संकुचित वातावरण में बहुत समय तक रहने के कारण भारत में बहुत जातियाँ बन गयीं। सरयूपारीण, कोंकणस्थ, देशस्थ, कान्यकुब्ज, मैथिल आदि निर्माण में भौगोलिक परिस्थितियों का महत्त्वपूर्ण हाथ है।

अध्यापक इतिहास पढ़ाते समय इन परिस्थितियों पर भी अवश्य प्रकाश डाले विन्ध्याचल पर्वत श्रेणी उत्तरी भारत को दक्षिणी भारत से अलग करती है, यह छोटी कक्षा का बालक भी जानता है। किन्तु इसने भारत के इतिहास को कैसे भागों में विभाजित कर दिया है, यह उच्च कक्षा के भी बहुत कम छात्र समझ पा हैं। इसका स्पष्टीकरण करना इतिहास के शिक्षक का परम कर्त्तव्य है।

जर्मनी के शिक्षालयों में भूगोल-शिक्षण का कार्य इतिहास के अध्यापक को सौंपा जाता था। इसका यही कारण था कि ये दोनों विषय अन्योन्याश्रित हैं। ज तक इन दोनों का उचित समन्वय नहीं किया जायेगा, तब तक दोनों का शिक्षण-का सफल नहीं हो सकता।

इतिहास तथा हस्तकार्य : History and Hand-work

इतिहास का हस्तकार्य से समुचित रूप से समन्वय स्थापित किया जा सकता है। प्रायः यह देखा गया है कि बालक शिक्षालयों में जो कार्य करते हैं, उनमें उनकी अधिक रुचि रहती है। रूसो (Rousseau) ने 'स्वक्रिया द्वारा सीखने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(Learning by Doing) की पद्धति पर बल दिया। इस पद्धति के अनुसार जो कुछ बालक करता है, उसका अनुभव अधिक होता है क्योंकि उस कार्य में उसका निजत्व अधिक होता है तथा वे उसे अपना बनाया हुआ समझते हैं और देर तक उसकी स्मृति उनके मस्तिष्क में बनी रहती है तथा उसमें उनकी इन्द्रियाँ शिक्षित होती हैं। हस्तकार्य एक ऐसा विषय है जिसमें छात्रों को हाथ तथा नेत्रों की शिक्षा प्रदान की जाती है। इनके अतिरिक्त इसमें बच्चों की क्रियाओं के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। इतिहास-शिक्षक हस्तकार्य से इतिहास का समन्वय कर सकता है। वह अपने छात्रों से चित्र, प्रतिरूप तथा चार्ट बनवाने के लिए कह सकता है। इनके आधार पर दी गई शिक्षा जिज्ञासापूर्ण, रोचक तथा प्रभावपूर्ण होती है। यह अनुभव किया गया है कि बालक केवल कान से सुनकर जो ज्ञान प्राप्त करते हैं, वह शीघ्र स्मरण नहीं हो पाता तथा एक से अधिक इन्द्रियों के प्रयोग से प्राप्त किया गया ज्ञान शीघ्रता से स्मरण हो जाता है और अधिक समय तक मस्तिष्क में बना रहता है। इतिहास-शिक्षण चित्रों के बनवाने में उनको शिक्षित कर सकता है। यह कार्य जूनियर कक्षाओं के लिए विशेष लाभप्रद है। इन दोनों विषयों का समन्वय बालक के विकास के लिए उपयोगी है। इससे उसकी रचनात्मक प्रवृत्ति भी सन्तुष्ट की जा सकती है तथा सहयोग की भावना भी उत्पन्न की जा सकती है उच्च कक्षाओं में हस्तकार्य इतना प्रभावशाली नहीं होगा, जितना छोटी कक्षाओं में होता है। परन्तु हस्तकार्य से इस स्तर पर भी इतिहास का समन्वय कराया जा सकता है। उनको ऐतिहासिक चित्र, तथा युद्ध-योजना बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे उनमें कला के प्रति रुचि उत्पन्न की जा सकती है।

इतिहास तथा अर्थशास्त्र : History and Economics

इतिहास को मानव सभ्यता का कोष कहा जाता है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक उन्नति का विश्लेषण प्राप्त होता है। इतिहास अतीत का विश्लेषण करके वर्तमान को स्पष्ट करता है तथा साथ ही भविष्य के लिए मार्ग प्रदर्शित करता है। जोन्स के शब्दों में, "इतिहास जीवन के वास्तविक अनुभवों का भंडार है और आज का युवक इतिहास का अध्ययन इसलिए करता है, जिससे वह मानव-जाति के अनुभवों से लाभ प्राप्त कर सके।" दूसरी ओर अर्थशास्त्र मानव की आर्थिक क्रियाओं पर बल देता है। मार्शल के अनुसार, "जीवन की सामान्य क्रियाओं के बीच मानव का अध्ययन करना ही अर्थशास्त्र है। यह उन व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों की छानबीन करता है, जिनका भौतिक सुखों के साधन की प्राप्ति और उपयोग से अत्यन्त निकट सम्बन्ध है।"

इतिहास और अर्थशास्त्र के अर्थों को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि दोनों ही मानव का अध्ययन करते हैं। दोनों ही मनुष्य का सामाजिक प्राणी रूप में अध्ययन करते हैं। परन्तु इतिहास में मानव की आर्थिक क्षेत्र की गतिविधियों के

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों की गतिविधि का भी अध्ययन किया जाता है। अर्थशास्त्र केवल सामाजिक सदस्य के रूप में उसकी आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। इस विवेचन से स्पष्ट है कि दोनों शास्त्र एक-दूसरे के निकट हैं। इतिहास का शिक्षक जबकि आर्थिक स्थितियों का अध्ययन करे तब उसे अर्थशास्त्र से उनका सम्बन्ध कायम करना चाहिए। वह मानव की आर्थिक क्रियाओं के स्वरूप को ऐतिहासिक तारतम्य में बतायें।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. How would you correlate the teaching of History with Hand work, Geography, Literature and Civics ? Explain with examples. —(A. U., 196

   आप इतिहास-शिक्षण का समन्वय हस्तकार्य, भूगलो, साहित्य तथा नागरिक शास्त्र से किस प्रकार स्थापित करेंगे ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

2. How can the teaching of History at Higher Secondary Stage of school instruction be correlated with Art and Literature? Support your answer with sufficient examples. —(Raj., B. Ed., 196

   आप उच्चतर माध्यमिक स्तर पर इतिहास का कला तथा साहित्य से किस प्रकार समन्वय स्थापित कर सकते हैं ? अपने उत्तर के पक्ष में कुछ उदाहरण दीजिए।

3. Show with examples how teaching of History can be correlated with the teaching of Economics, Art and Literature. —(P. U., 196

   उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए कि इतिहास-शिक्षण का अर्थशास्त्र, कला तथा साहित्य से किस प्रकार समन्वय स्थापित किया जा सकता है ?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति उनके समक्ष कोष्ठक में लिखे शब्दों में से उपयुक्त शब्द को छाँटकर कीजिए—

(i) काल के अनुसार वर्णन करना............है। (अर्थशास्त्र, इतिहास, नागरिकशास्त्र, समाजशास्त्र)

(ii) स्थान के अनुसार वर्णन करना............है। (इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, नागरिकशास्त्र)

(iii) केन्द्रीयकरण के सिद्धान्त का प्रतिपादन............ने किया। (इ... हरबार्ट, ज़िलर, फ्रोबेल)

(iv) सह-सम्बन्ध के सिद्धान्त का प्रतिपादन............ने क्रिया। (ज... ड्यूवी, हरबार्ट, महात्मा गाँधी, डी० गार्मो)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

20

इतिहास-शिक्षक

HISTORY-TEACHER

"The teacher of history must have the power of realizing the dead past in a living present in fact, have a touch of imagination as well as vastly larger amount of positive knowledge than he will attempt to pile upon the memory of his class."

—*Lord Bryce.*

विषय-प्रवेश

शिक्षा-प्रक्रिया के तीन केन्द्र-विन्दु हैं—शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम। शिक्षण की सफलता इन तीनों की सुसम्बद्धता पर ही निर्भर होती है। आधुनिक शताब्दी में प्रत्येक देश में शिक्षा-जगत् के विभिन्न क्षेत्रों में पर्याप्त विकास एवं परिवर्तन हुए हैं। परिवर्तन हमें विशेषतः पाठ्यक्रम, शिक्षण-विधि, सामग्री, साज-सज्जा तथा मूल्यांकन प्रविधियों के क्षेत्र में दिखाई पड़ते हैं। पर हमारा पाठ्यक्रम, पाठशाला-भवन, फर्नीचर, प्रयोगशाला, सहायक सामग्री, मूल्यांकन एवं निर्देशन-कार्यक्रम आदि कितने ही अच्छे क्यों न हों, तब तक वे निरर्थक हैं, जब तक एक अच्छे शिक्षक द्वारा उनमें जीवन संचार न किया जाय, शिक्षा-प्रक्रिया के संचालक के रूप में उसका बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। संचालक ही शिक्षा में गुणात्मक विकास के लिए उत्तरदायी है। यदि शिक्षक रूपी संचालक के ज्ञान, योग्यता एवं व्यवहार में विकास न किया गया तो शिक्षा का गुणात्मक पक्ष छिछला बना रहेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास-शिक्षक के गुण
Qualities of History-Teacher

इतिहास-शिक्षक में निम्नलिखित गुण होने चाहिए—

(1) **विषय एवं व्यवसाय में निष्ठा : Faith in the Subject and Vocation**—प्रत्येक विषय में अध्यापक को अपने विषय में निष्ठा रखना आवश्यक है। जो अध्यापक अपने विषय में निष्ठा नहीं रखता है, वह अध्यापक कहलाने योग्य नहीं है; अर्थात् उसको सफल शिक्षक नहीं कहा जा सकता। निष्ठा 'सीखने की प्रक्रिया' (Learning Process) को प्रोत्साहित करती है तथा विषय में सदैव के लिए रुचि उत्पन्न करती है। इतिहास का अध्यापक निष्ठा के बिना भूतकाल के महत्त्व को नहीं समझ सकता है। निष्ठा अन्धविश्वास से पूर्ण तथा तर्करहित नहीं होनी चाहिए। क्योंकि इससे वैज्ञानिक तथा विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का विकास नहीं होगा, जिसको उत्पन्न करना इतिहास के शिक्षक का मुख्य उद्देश्य है। भारतीय शिक्षकों में इसी निष्ठा की कमी है, तभी हमारी शिक्षा का स्तर प्रतिदिन गिरता जा रहा है। यह सत्य है कि हमारे शिक्षकों को पेट भरने योग्य वेतन भी नहीं मिलता, परन्तु फिर भी जब उन्होंने इस व्यवसाय को ग्रहण कर लिया है तब उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे सत्यनिष्ठ होकर अपने कार्य को रुचि, तत्परता तथा उत्साह के साथ करें, क्योंकि वे ही राष्ट्र के निर्माता हैं।

(2) **विषय का ज्ञान : Knowledge of the Subject**—इतिहास के शिक्षक से जिस बात की अपेक्षा की जाती है, वह है—इतिहास का ज्ञान। प्रत्येक शिक्षक को स्वस्थ शरीर, स्वस्थ चित्त तथा स्वस्थ व्यक्तित्व के साथ ही विषय का भी पूर्ण ज्ञान रखना चाहिए। विषय का अपूर्ण ज्ञान सदैव हानिकारक होता है। इतिहास-शिक्षक को प्रथम कोटि का विद्यार्थी होना चाहिए। अनेक बातों की केवल सूचना रखने वाला व्यक्ति इतिहास का शिक्षक नहीं हो सकता। ज्ञान को सूचना से स्पष्टतया भिन्न प्रदर्शित कर देना चाहिए। वेदों के अनुसार, 'ज्ञान तथा क्रिया का संयोग एक मनुष्य को प्रकाश प्रदान करता है।' ज्ञान सूचना से अधिक विस्तृत है। एक विद्वान् के अनुसार, "ज्ञान एक बहुत बड़ा संश्लेषण है।" ज्ञान के लिए सूचना तथा अन्य बातों की आवश्यकता होती है। सूचना (Information) ज्ञान का एक अंग है। इतिहास के ज्ञान से हमारा तात्पर्य यह है कि व्यक्ति को इतिहास का ज्ञान हो, वह उसके कालक्रम का भी ज्ञान रखता हो। उसे इतिहास के विषय में अनेक सूचनाएँ तो अवश्य ही प्राप्त हों, साथ में वह उनका महत्त्व, सीमाएँ तथा उपयोगिता भी जानता हो; अर्थात् वह कब, कैसे, क्यों तथा कहाँ का उत्तर देने की सामर्थ्य रखता हो। इतिहास एक घटना है, तो इतिहास के शिक्षक के लिए यह जानना अति आवश्यक है कि वह घटना कब, कैसे और क्यों घटित हुई। इसके अतिरिक्त उसे इन तथ्यों को प्रस्तुत करने का भी ज्ञान होना चाहिए। जैसा कि ऊपर कहा गया है कि शिक्षक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विश्व-कोष नहीं हो सकता, परन्तु वह मानव-इतिहास के किसी काल-विशेष का विशेषज्ञ अवश्य हो सकता है।

(3) विश्व-इतिहास का ज्ञान : Knowledge of World History—हमें इस बात की आवश्यकता नहीं कि वह विश्व-इतिहास का पारंगत पण्डित हो, वरन् उसको विश्व-इतिहास का सामान्य ज्ञान अवश्य हो, जिससे वह अपने कार्य को सुचारु रूप से चला सके। वह मानव-जाति के पूर्ण इतिहास का ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता है तो वह उसके एक काल का पूर्ण ज्ञान अवश्य प्राप्त करे, जिससे वह इतिहास के प्रति आकर्षण उत्पन्न करने के लिए बच्चों की बुद्धि को ठीक मार्ग पर लगा सके। भारत के राज्यों को शिक्षा-पद्धति में विश्व-इतिहास को पहले महत्त्व नहीं दिया गया था, परन्तु धीरे-धीरे सभी राज्य अपने पाठ्यक्रम में विश्व-इतिहास का प्रारम्भिक ज्ञान सम्मिलित कर रहे हैं। इसके लिए अति आवश्यक है कि इतिहास के अध्यापक को विश्व-इतिहास का ज्ञान अवश्य प्राप्त हो। किसी देश की संस्कृति का विकास स्वतन्त्र रूप से नहीं हो सकता है। बहुत-से मनुष्यों की धारणा है कि भारतीय संस्कृति का विकास स्वतन्त्र रूप से हुआ था, उस पर किसी देश की संस्कृति का 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना उत्पन्न करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इसके ज्ञान से अध्यापक छात्रों में विश्व-बन्धुत्व की भावना उत्पन्न करने में सफल हो सकेगा।

(4) निष्पक्षता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण : Impartiality and Scientific Outlook—इतिहास एक विज्ञान है। इसलिए इतिहास के शिक्षक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा निष्पक्षता ही उसको दूसरे सामाजिक विषयों के शिक्षकों से अलग करती है। एक वैज्ञानिक के रूप में इतिहास का शिक्षक सत्यासत्य की खोज से सम्बन्धित है। साथ ही उसको पक्षपात तथा हठधर्मी से पृथक् रहना चाहिए। उसमें संकुचित राष्ट्रीय भावनाओं का समावेश न होने पाये। उसका यह धर्म नहीं है कि वह अपने को इनसे पृथक् रखे, वरन् वह सदैव एक तीसरे व्यक्ति का-सा कार्य करे। किसी सिद्धान्त अथवा घटना के प्रतिपादन के अवसर पर उसे दोनों पक्षों पर शान्तिपूर्वक विचार करना चाहिए। इसके पश्चात् उनके महत्त्व तथा सीमाओं पर विचार करे। जिस समय अध्यापक अपनी जाति तथा धर्म के विषय में वर्णन कर रहा हो, उस समय उसे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह अन्य जातियों या धर्म वालों को हेय न समझे, क्योंकि प्रत्येक वस्तु में गुण-दोष हुआ करते हैं। अतः वह निष्पक्ष भाव से उनकी विवेचना करे और सत्य की खोज करके छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करे। कुछ विद्वानों का विचार है कि ऐसी परिस्थितियों में उसको सत्य का कथन भी संयत रूप में ही करना चाहिए और वह छात्रों तथा स्वयं अपने से तटस्थ रहने की प्रवृत्ति उत्पन्न करे। उसे तटस्थ व्यक्ति के समान अपना मत व्यक्त करना चाहिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(5) **प्रान्तीय इतिहास का ज्ञान : Knowledge of Provincial History**—इतिहास के योग्य शिक्षक के लिए यह अनिवार्य है कि वह प्रान्तीय इतिहास के तथ्यों को भली प्रकार जानता हो जिससे वह सतर्कता के साथ उनको अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सके। भारत के प्रत्येक प्रान्त का अपना-अपना इतिहास है, उदाहरणार्थ—गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल आदि। इतिहास का शिक्षक इनका पृथक्-पृथक् वर्णन न करे वरन् इनके इतिहास का वर्णन राष्ट्र के इतिहास के लिए उपयोगी बनाकर करे। इन्होंने राष्ट्र की उन्नति के लिए क्या-क्या देन प्रदान की है। संकुचित प्रान्तीय भावनायें राष्ट्र की उन्नति के लिए हानिकारक सिद्ध होंगी, इसलिए इतिहास के योग्य अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह इनके इतिहास को इस प्रकार छात्रों के सम्मुख रखे जिससे उनको अपने प्रान्त के इतिहास का ज्ञान हो जाय और राष्ट्रीय हित को क्षति न पहुँचे।

(6) **कथा-वाचक : Story-Teller**—इतिहास के अध्यापक को एक कुशल कथा-वाचक भी होना चाहिए। कहानी कहना भी एक कला है। ईश्वरीय देन है, लेकिन कुछ कलायें अभ्यास के द्वारा ग्रहण की जा सकती हैं। कहानी कहने की कला को ग्रहण करने के लिए अहं की भावना को दबाना चाहिए। इतिहास के अध्यापक को कहानी कहते समय अपने पद का ध्यान नहीं करना चाहिए, वरन् वह विद्यार्थियों के साथ मिलकर अपने पद का ध्यान किए बिना कहानी सुनाता रहे। इतिहास के अध्यापक को कुशल कथा-वाचक बनाने के लिए अधोलिखित गुणों को ग्रहण करना चाहिए—

(अ) नाटक के पात्र के गुण;
(ब) अच्छी तथा उपयुक्त कहानियों के चयन का अनुभव;
(स) प्रभावशाली वाणी;
(द) आत्मविश्वास;
(य) ऐतिहासिक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति; तथा
(र) कहानी की पाठ्य-वस्तु का पूर्ण ज्ञान।

(7) **इतिहास-शिक्षण का ज्ञान : Knowledge of Teaching History**—प्राचीनकाल में शिक्षकों के प्रशिक्षण को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता था। यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उस काल में भी बहुत-से प्रतिष्ठित शिक्षक उत्पन्न हुए। शिक्षण एक कला है। मध्यकालीन विश्वविद्यालयों ने इस कला के सामान्य सिद्धान्तों को निरूपित किया। अध्यापक के लिए इन सिद्धान्तों तथा विधियों को जानना आवश्यक है। विधियों, उसके साधन, जिनके द्वारा वह अपनी पाठ्य-वस्तु को रोचक तथा आकर्षक ढंग से अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर सकता है। जो जन्मजात शिक्षक नहीं हैं, उनके लिए पाठन-विधियों का प्रयोग विशेष लाभप्रद है। उनके द्वारा वे अपने शिक्षण को विकसित कर सकते हैं। इनके प्रयोग से शिक्षक अपने कार्य को सरल बना सकता है। पाठन-विधियों के ज्ञान से शिक्षक अपने ऐतिहासिक तथ्यों

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अपने छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करना सीख जायेगा कि ये तथ्य कब, कैसे और क्यों प्रदान किए जायें।

ये विधियाँ शिक्षक की पथ-प्रदर्शक तथा साधन होनी चाहिए। विधियाँ उसके लिए हैं, न कि वह उनके लिए। विधियाँ उसकी शासक या अधिकारी नहीं, वरन् उसकी सेवा करने वाली हैं। उसको इनका प्रयोग लोच के साथ करना चाहिए। बहुत-से शिक्षक इन विधियों को हेय दृष्टि से देखते हैं। उनका विचार है कि इनको प्रशिक्षण की समाप्ति के पश्चात् भूल जाना चाहिए। यह उनकी भूल है। ऐसा करना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण के विरुद्ध है, क्योंकि इन विधियों का आधार मनोवैज्ञानिक है। जब हम मनोवैज्ञानिक ढंग में अपने छात्रों को शिक्षा प्रदान करेंगे, तभी उनका विकास समुचित रूप से हो पायेगा। बहुत-से इतिहास के शिक्षक अधिक तिथियाँ देते हैं। उनको यह मनोवृत्ति समाप्त करनी चाहिए। इन स्तरों पर मुख्य तिथियाँ ही दी जानी चाहिए। मनोविज्ञान के विरुद्ध है। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि इतिहास के अध्यापक को शिक्षण की गतिशील विधियों तथा सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिससे वह तथ्यों का चयन तथा संगठन करके शिक्षण को रोचक बना सकें।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् उसको समय-समय पर अभिनय पाठ्यक्रम पूरा करते रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त वह व्यावसायिक साहित्य का सदैव विद्यार्थी बना रहे, जिससे वह अपने शिक्षण को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने में समर्थ हो सकेगा।

(8) **नागरिक-शास्त्र का ज्ञान : Knowledge of Civics**—इतिहास के अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह नागरिक-शास्त्र का ज्ञान रखे। इस ज्ञान द्वारा वह अपने छात्रों को समाज के आदर्श नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहन दे सकता है; अर्थात् उनको आदर्श नागरिक बनाने में सहायता प्रदान कर सकता है। नागरिक-शास्त्र राज्य तथा सरकार के संगठन से सम्बन्ध रखता है, परन्तु वह इनको सीमित रूप में ही बताता है। वर्तमान काल भूतकाल की देन है। यदि हम मौर्यकाल का स्वायत्त-शासन पढ़ा रहे हैं तो हमको वर्तमान-काल के स्वायत्त-शासन का ज्ञान होना आवश्यक है, तभी हम अपने छात्रों के साथ न्याय कर सकते हैं। इसलिए इतिहास के अध्यापक को नागरिक-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है।

(9) **सामयिक घटनाओं से सुपरिचित : Familiarity with the Current Events**—एक योग्य इतिहास-शिक्षक को सामयिक घटनाओं की जानकारी होनी चाहिए। इस जानकारी के निम्नलिखित कारण हैं—

(अ) इन घटनाओं की जानकारी से वह अपने शिक्षण को रोचक तथा प्रभावशाली बना सकता है।

(ब) वह अपने प्रकरण के शिक्षण के लिए प्रभावशाली वातावरण निर्मित कर सकता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(स) बहुत-सी वर्तमान घटनाएँ तत्कालीन भूतकाल की देन हैं। इसके
इतिहास का अध्यापक परावर्तन कर सकता है और दूर के अतीत
पता लगा सकता है। ये वर्तमान की घटनाएँ शिक्षक को प्रस्ताव
लिए पाठ्य-विषय का ज्ञान प्रदान करेंगी।

(द) इन घटनाओं की भिज्ञता से मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति में विशेष सहा
मिलती है, जिसको प्राप्त करना इतिहास-शिक्षक के लिए आवश्यक

(10) **शिक्षक का व्यक्तित्व : Personality of the Teacher**—प्रत्येक की शिक्षा पद्धति में शिक्षक का स्थान एक धुरी (Pivot) के समान है। एक वि का विचार है कि शिक्षक के गुण ही शिक्षा-पद्धति को सफल बनाते हैं, न कि पा क्रम। शिक्षक के गुण उसकी सफलता के लिए पर्याप्त सीमा तक उत्तरदायी हैं, प पाठ्यक्रम भी अपने क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। शिक्षक का स्वर उसका त्मक शास्त्र है। इसके द्वारा वह अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित कर सकता है। व्यक्तित्व आधा शिक्षण है। उसमें मानव के सभी गुण होने चाहिए, जिनके द्वार मानवता की भलाई के लिए कार्य कर सके। इतिहास के अध्यापक के लिए संवेगा रूप से संतुलित होना अति आवश्यक है। उसका व्यक्तित्व चुम्बक-शक्ति के हो जिसके द्वारा वह दूसरों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। अतः वह मानवीय गुणों का अपने में समावेश करे।

(11) **पर्यटन योग्यता**—वेकन (Bacon) का कथन है—देशाटन शि का एक श्रेष्ठ साधन है। पर्यटन (Excursion) से देश-विदेश के मनुष्यों और के विषय में गम्भीर एवं व्यापक ज्ञान प्राप्त होता है। इतिहास के शिक्षक को वि ऐतिहासिक स्थानों को देखना चाहिए, क्योंकि बहुत-से ऐसे स्थल हैं जहाँ पर को भ्रमण कराने के लिए नहीं ले जाया जा सकता है। यदि वह उन स्थानों भ्रमण करेगा तो वह उन स्थानों से सम्बन्धित जानकारी को छात्रों के सम्मुख तम रूप से रखने में सफल होगा तथा छात्रों को भ्रमण में पथ-प्रदर्शन करने में हो सकेगा। इसीलिए इतिहास के शिक्षक में पर्यटन योग्यता होनी चाहिए।

के० डी० घोष (K. D. Ghosh) के विचार के अनुसार हम अन्त में सकते हैं कि जब तक इतिहास का अध्यापक अपने में निम्नलिखित गुणों का सम नहीं करेगा, तब तक वह सफल अध्यापक नहीं कहा जा सकता—

(अ) उसमें सत्य की खोज के लिए सच्चा उत्साह होना चाहिए,

(ब) उसमें ऐतिहासिक व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति हो, तथा

(स) वह मानव-चरित्र तथा उसकी सर्वतोमुखी उन्नति को प्रोत्साहित के लिए सतर्क रहे और उसके आदर्श महान हों।

प्रो० हस्लक (E. L. Husluck) ने इतिहास-शिक्षक के विषय में लिखा है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

इतिहास पाठ्यक्रम का सबसे कठिन विषय है—जिसका शिक्षक सक्रिय, अनुसन्धानकर्ता एवं फौज के कमाण्डर की भाँति तत्पर होना चाहिए।[1]

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Write a short essay on an ideal History-Teacher?

—(A. U., B. T., 1958)

आदर्श इतिहास-शिक्षक पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए।

2. What should be the qualities of a History Teacher?

इतिहास-शिक्षक के क्या गुण होने चाहिए?

3. Write short note on 'Qualities of History-Teacher'.

—(A. U., 1976, 78)

'इतिहास-शिक्षक के गुणों' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों को पढ़ो और सत्य कथन के समक्ष 'R' तथा असत्य के समक्ष 'W' शब्द लिखिये—

(i) इतिहास-शिक्षक को नागरिकशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है।....

(ii) इतिहास-शिक्षक में देशप्रेम की भावना का होना आवश्यक है।........

(iii) इतिहास-शिक्षक में सत्य की खोज के लिए उत्साह का अभाव हो।....

(iv) इतिहास-शिक्षक में ऐतिहासिक व्यक्तियों के लिए सहानुभूति होनी चाहिए।........

(v) इतिहास-शिक्षक सामयिक घटनाओं के प्रति उदासीन हो।........

---

1. "History requires a teacher who is willing to be ever active, ever enquiring, ever on his guard against the numerous pitfalls which be set his path. He may well take as his motto that one of our ducal houses, Cavendo tuts."

—Husluck, E. L.: *The Teaching of History*, p. 115.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

21

इतिहास में सामयिक घटनाएँ

CURRENT EVENTS IN HISTORY

"In recent years, instruction in current affairs has been given increased emphasis. Among the many factors contributing to this emphasis are the growth and changes in communities... ....the impact of scientific and technological development on ways of living, the expansion of the mass media, and social and Cultural changes."

—***Johan U. Michaelis***

विषय-प्रवेश

संसार स्थिर नहीं है, वरन् गतिशील है। आज का संसार बड़ी तीव्र ग[ति से] बदल रहा है। विज्ञान ने इस परिवर्तन में महान योग दिया है। इसने तीव्र [...] साधन प्रदान करके विश्व को छोटा बना दिया है। साथ ही इसने विश्व के [...] में पारस्परिक निर्भरता को बढ़ा दिया है। आज कोई भी राष्ट्र एकाकी जीवन [...] नहीं कर सकता। इस परिवर्तित विश्व को स्पष्ट करने के लिए छात्रों को साम[यिक] घटनाओं से अवगत कराना परमावश्यक है। इनके ज्ञान के अभाव में आ[ज] नागरिक अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वाह नहीं कर सकता है। साथ ही स्वस्थ जनमत का निर्माण करना भी कठिन है।

सामयिक घटनाओं का अर्थ : Meaning of Current Events—समसा[यिक] घटनाओं (Contemporary Occurrences) के लिए पारस्परिक आदान-प्र[दान] दो पदों (Terms)—सामयिक समस्याएँ (Current Affairs) तथा सामयिक घ[टनाएँ] (Current Events)—का प्रयोग किया जाता है। सामयिक समस्याएँ सा[मयिक] घटनाओं की अपेक्षा अधिक व्यापक हैं, क्योंकि सामयिक घटनाएँ प्रायः घटि[त]

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वाली सूचनाओं तक सीमित रहती हैं, जबकि सामयिक समस्याओं में सामयिक घटनाएँ तो निहित हैं ही, पर इसके साथ ही इनमें वे विचार्य विषय भी सम्मिलित होते हैं जो कि इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में छिपे रहते हैं। सामयिक समस्याओं तथा सामयिक घटनाओं के अन्तर को स्पष्ट करते हुए जोरोलीमेक ने लिखा है—"सामयिक समस्याओं नामक पद के अन्तर्गत घटनाएँ तथा विचार्य विषय दोनों आते हैं और यह क्षेत्र में इन दोनों को एकाकी रूप में रखने पर अधिक व्यापक है।……सामयिक घटना वह है जो घटित हो चुकी है। वह महत्त्वपूर्ण भी हो सकती है और महत्त्वहीन भी।"[1]

इतिहास में सामयिक घटनाओं का महत्त्व
Value of Current Events in History

इतिहास स्वयं एक घटना है। इतिहास घटना होने के नाते यह बताता है कि वह घटना कब घटी ? क्यों घटी ? किस प्रकार घटी ? जब इतिहास घटनाओं का संकलन है तो स्वतः प्रश्न उठता है कि इसमें कौन-सी घटनाओं का संकलन है। इसके उत्तर में कह सकते हैं कि जो घटित हो चुकी है। इस दृष्टिकोण से सामयिक घटनाएँ कुछ नहीं हैं, बल्कि इतिहास है। परन्तु इतिहास और सामयिक घटना में अन्तर केवल व्यावहारिकता का है, न कि तार्किक। जो घटना अभी घटी है और उसे पाठ्यक्रम या पाठ्य-पुस्तकों में स्थान मिल गया तो वह इतिहास का रूप बन गयी। यदि उसे पाठ्यक्रम के अंग के रूप में ग्रहण न करके उसकी सहायता से आधुनिक विश्व को स्पष्ट किया गया तो उसे हम सामयिक घटना के रूप में ग्रहण करते हैं। इतिहास और सामयिक घटनाएँ दोनों ही आधुनिक विश्व को स्पष्ट करते हैं। परन्तु सामयिक घटनाओं का महत्त्व उसके बदलते हुए स्वरूप को स्पष्ट करने में निहित है। दूसरी ओर इतिहास अतीत की सहायता से आधुनिक विश्व को स्पष्ट करता है। इस प्रकार इन घटनाओं को इतिहास के साथ सम्मिलित करके समसामयिक परिस्थितियों को स्पष्ट किया जाता है।

इतिहास का राष्ट्रीय प्रेम और भक्ति की भावना के विकास के लिए बहुत महत्त्व है। परन्तु सामयिक घटनाओं के विवेचन से इतिहास के द्वारा राष्ट्रीय प्रेम एवं भक्ति की भावना को और अग्रसर बनाया जा सकता है; उदाहरणार्थ—आज हम चारों ओर यह सुनते हैं कि हम लोगों में राष्ट्रीय एकता का अभाव है। यह एक सामयिक समस्या है। इतिहास का शिक्षक अपने विषय का अध्यापन करते समय इस समस्या से विमुख नहीं हो सकता। वह समस्या का कक्षा में विवेचन करने के

1. "The term current affairs includes both events and issues and is broader in scope than either of the other terms taken singly.... ....A current event is simply something which has happened, it may be significant or it may be trivial." —Jorolimek.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लिए बाध्य है। उसको यह देखना होगा कि ऐसी कौन-सी प्रवृत्तियाँ हैं जो राष्ट्रीय एकता में बाधक हैं। इन प्रवृत्तियों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है? इतिहास को इनको दूर करने के लिए किस प्रकार प्रयोग में लाया जा सकता है? इस समस्या पर कक्षा में विचार-विमर्श करके इतिहास का शिक्षक अपने विषय को रोचक ही नहीं बनायेगा, वरन् अपने प्रमुख उद्देश्य—राष्ट्रीय प्रेम एवं भक्ति की भावना के विकास—को प्राप्त करने में समर्थ होगा। इसी प्रकार वह राजनीतिक एवं आर्थिक प्रश्नों या समस्याओं का विवेचन करके छात्रों को आधुनिक विश्व की समसामयिक परिस्थितियों को स्पष्ट कर सकेगा जिससे कि वे उस बदलते हुए संसार में अपने को व्यवस्थित करने में समर्थ हो सकें।

सामयिक घटनाएँ अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में भी सहायक हैं। इस दृष्टिकोण से भी इतिहास के लिए इनका अनूठा महत्त्व है, क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करना इतिहास-शिक्षण का एक प्रमुख उद्देश्य है। इनके विवेचन से इतिहास का शिक्षक अपने उद्देश्य की प्राप्ति करने में समर्थ होगा। छात्र इन घटनाओं के माध्यम से यह जानने में सफल होते हैं कि विश्व में क्या घटित हो रहा है? इन घटनाओं का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा है? यदि मानव इन घटनाओं के प्रति अपने को उदासीन रखता है तो वह अपने अस्तित्व को बनाये रखने में असफल सिद्ध होगा। इनके विवेचन से बालकों की एक-दूसरे के प्रति प्रेम, सहयोग, सहानुभूति आदि भावनाओं को रखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। बालक इन घटनाओं के ज्ञान से यह भी अनुभव कर सकेंगे कि हमारा उन देशों या मनुष्यों के प्रति क्या कर्त्तव्य है जो अमुक घटनाओं से प्रभावित हुए हैं। इस प्रकार इनका विवेचन विश्व नागरिकता के विकास में सहायक सिद्ध हो सकेगा। साथ ही इनके द्वारा स्वस्थ जनमत का निर्माण किया जा सकता है।

सामयिक घटनाओं के उद्देश्य
Objectives of Current Events

1. छात्रों के सामान्य ज्ञान का विस्तार करना।
2. सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की बातों को जानने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करना।
3. मनुष्यों तथा राष्ट्रों की अन्योन्याश्रितता को समझने एवं उनका मूल्यांकन करने की शक्ति विकसित करना।
4. एक-दूसरे के प्रति सहिष्णुता एवं सद्भावना रखने की शक्ति का विकास करना।
5. छात्रों को निष्पक्ष एवं अन्धविश्वास रहित विचारों को ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित करना।
6. विभिन्न विवादपूर्ण मामलों को सुलझाने की क्षमता का विकास करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. सशक्त नागरिकता का विकास करने में सहयोग देना।
8. लोकतन्त्रीय प्रक्रिया में आस्था बढ़ाना।

सामयिक घटनाओं के चयन में ध्यान रखने योग्य बातें
Considerations for the Selection of Current Events

शिक्षक को सामयिक घटनाओं के चयन में निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. विषय से सम्बन्धित घटनाएँ चुनी जायँ।
2. विश्वसनीय घटनाओं का चयन किया जाय।
3. सामयिक घटनाओं का सार नवीनता (Recency) में निहित है। अतः नवीनतम घटनाओं का चयन किया जाना चाहिए।
4. उपयोगी सामयिक घटनाओं को ही चुना जाय।
5. ऐसी घटनाओं का चयन किया जाय जिनमें भावी सम्भावनाएँ निहित हों।
6. घटनाओं के चयन में अनेक प्रभावों या परिणामों को भी आधार बनाया जा सकता है।

सामयिक घटनाओं का शिक्षण
Teaching of Current Events

इसके शिक्षण के लिए निम्नलिखित शिक्षण-विधियों एवं प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जा सकता है—

शिक्षण-विधियाँ : Methods of Teaching

(1) **समाजीकृत अभिव्यक्ति : Socialized Recitation**—सामयिक घटनाओं के शिक्षण में इस विधि का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस विधि के द्वारा सामूहिक योजना, विचार-विमर्श एवं सहयोगी अध्ययन के अवसर प्रदान किये जाते हैं।

(2) **प्रयोगशाला विधि : Laboratory Method**—इस विधि के माध्यम से हम सामयिक घटनाओं की छात्रों को जानकारी प्रदान कर सकते हैं। प्रयोगशाला से यहाँ तात्पर्य इतिहास के सुसज्जित एवं सुनियोजित कक्ष से है। इसमें सामयिक घटनाओं से सम्बन्धित सामग्री उपलब्ध होगी। छात्र यहाँ उनका अध्ययन व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों रूपों में कर सकते हैं। शिक्षक उनका मार्गप्रदर्शन करेगा। वे पत्र-पत्रिकाओं एवं साहित्य का अध्ययन करके इनके विषय में ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

(3) **वाद-विवाद : Discussion Method**—शिक्षक छात्रों को इनके विषय में वाद-विवाद विधि के माध्यम से भी परिचित करा सकता है। वह किसी सामयिक घटना पर औपचारिक या अनौपचारिक विचार-विमर्श कराकर उसके विषय में ज्ञान प्रदान कर सकता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(4) प्रकरण विधि (Topical Method)—इस विधि के अन्तर्गत घटनाओं का स्पष्ट विभाजन करके अध्ययन किया जाता है; उदाहरणार्थ—राष्ट्रीय घटनाएँ, प्रान्तीय घटनाएँ, स्थानीय घटनाएँ, सामाजिक घटनाएँ, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएँ, वैज्ञानिक समाचार, खेल-कूद से सम्बन्धित समाचार, व्यापारिक समाचार आदि। इन घटनाओं के पृथक्-पृथक् अध्ययन के लिए छात्रों को वर्गों में विभाजित किया जाता है। वर्ग निर्धारित घटनाओं का अध्ययन करेंगे। वे इनके विषय में विभिन्न उपलब्ध स्रोतों से सामग्री एकत्रित करेंगे। एकत्रित सामग्री का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकालेंगे और प्रतिवेदन तैयार करेंगे।

(5) योजना विधि (Project Method)—इसके शिक्षण के लिए योजना विधि का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसमें बालक सक्रिय होकर उनके बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसमें सामयिक घटनाओं से सम्वन्धित योजनाओं का चयन किया जायेगा। छात्र इन योजनाओं को वैयक्तिक एवं सामूहिक दोनों ही रूपों में क्रियान्वित कर सकते हैं।

(6) व्याख्यान विधि (Lecture Method)—सामयिक घटनाओं के विषय में उपयोगी ज्ञान प्रदान करने के लिए व्याख्यान विधि का भी प्रयोग किया जा सकता है। किसी विशेषज्ञ को आमन्त्रित करके विभिन्न सामयिक घटनाओं के विषय में भाषण या व्याख्यान दिलाये जा सकते हैं। इन भाषणों से छात्रों को विशेषीकृत ज्ञान की प्राप्ति हो सकेगी।

सामयिक घटनाओं के शिक्षण में निम्नलिखित प्रक्रियाओं (Procedures) का भी उपयोग किया जा सकता है—

(अ) नवीन प्रकरणों पर प्रतिदिन वाद-विवाद (Daily Discussions on New Topics)।

(ब) सूचनापट का प्रयोग (Use of Bulletin Board)।

(स) विविध क्रियाओं का प्रयोग (Use of Different Activities)।

इन क्रियाओं के अन्तर्गत वाद-विवाद प्रतियोगिता, गोलमेज सम्मेलन, वैचारिक विचार-विमर्श, तत्कालीन घटनाओं से सम्बन्धित चार्ट, मानचित्र, खाके, ग्राफ आदि का निर्माण, नवीन घटनाओं का अभिनय, घटनाओं के स्पष्टीकरण के लिए पोस्टर, कारटून आदि का उपयोग, स्क्रेप बुक का निर्माण, सामयिक घटनाओं पर टीकाएँ आदि आती हैं।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. Write short note on 'Teaching of Current Events.'
—(P. U., 196

'सामयिक घटनाओं के शिक्षण' पर संक्षिप्त नोट लिखिए।

2. Write short note on 'Value of Current Affairs.'
—(P. U., 19

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'सामयिक समस्याओं के महत्त्व' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये ।

3. Discuss the value of the teaching of current events in History.
—(A. U.,1978, R. U., 1982)

इतिहास-शिक्षण में वर्तमान घटनाओं के शिक्षण के महत्त्व की विवेचना कीजिए ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों को दो खण्डों (खण्ड 'अ' तथा 'ब') में विभक्त कर दिया है । खण्ड 'अ' के प्रत्येक भाग के पूरक कथन खण्ड 'ब' में दिये गए हैं जो क्रमशः व्यवस्थित नहीं हैं । खण्ड 'ब' का जो भाग खण्ड 'अ' के जिस भाग का पूरक है उसकी संख्या खण्ड 'अ' के उस भाग के बाईं ओर लिख दीजिए—

खण्ड 'अ'	खण्ड 'ब'
( ) (i) सामयिक घटनाओं का सार	(i) जो घटित हो चुकी हैं ।
( ) (ii) सामयिक घटना वह है	(ii) आधुनिक विश्व को स्पष्ट करती हैं ।
( ) (iii) सामयिक घटना	(iii) नवीनता में निहित है ।
( ) (iv) सामयिक घटनाएँ छात्रों के	(iv) समाजीकृत अभिव्यक्ति-पद्धति बहुत उपयोगी है ।
( ) (v) सामयिक घटनाओं के शिक्षण में	(v) लोकतंत्रीय प्रक्रिया में आस्था बढ़ाना है ।
( ) (vi) सामयिक घटनाओं के शिक्षण का उद्देश्य	(vi) सामान्य ज्ञान का विस्तार करती है ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

22

इतिहास में मूल्यांकन

EVALUATION IN HISTORY

"Evaluation should not consist only in testing knowledge but should take note of changes in pupil's understandings, skills, attitudes and interests."—*R. K. Kapur*, Director of DEPSE.

विषय-प्रवेश

मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। मूल्यांकन केवल शैक्षिक प्रक्रिया का ही नहीं वरन् जीवन की प्रत्येक क्रिया का महत्त्वपूर्ण अंग है। हमारे जीवन का प्रत्येक क्षेत्र मूल्यांकन की अपेक्षा करता है। जिस प्रकार, डॉक्टर अपनी दवा की उपयोगिता का मूल्यांकन रोगी में होने वाले परिवर्तन के अनुसार करता है उसी प्रकार शिक्षक अपने अध्यापन की उपयोगिता का मूल्यांकन बालकों के व्यवहार परिवर्तनों का मूल्यांकन करके करता है; मूल्यांकन के अभाव में हमारी समस्त क्रियाएँ मूल्यहीन बन सकती हैं; क्योंकि मूल्यांकन से सफलताओं, विफलताओं, कठिनाइयों आदि का यथेष्ट रूप से निर्धारण हो जाता है जिसके फलस्वरूप हम भविष्य के लिए सतर्क हो जाते हैं।

मूल्यांकन का अर्थ : Meaning of Evaluation

मूल्यांकन की आधुनिक संकल्पना (Concept), जो मुख्यत: हाल के दशकों में हुई है, यद्यपि यह विकास बहुत धीमी गति से हुआ है, शिक्षा के एक अपेक्षाकृत नवीन दर्शन से उद्भूत हुई है, जो छात्रों की वृद्धि और विकास के मूल्यांकन के लिए अधिक उपयुक्त प्रविधियों पर बल देता है। नवीन शिक्षा-दर्शन ने न केवल धारणाओं (Concepts), ज्ञान, योग्यताओं तथा आदतों के विकास के लिए, बल्कि अभिवृत्तियों, गुण-दोष विवेचन, रुचियों, चिन्तन की शक्तियों और वैयक्तिक सामाजिक व्यवस्थापन की दृष्टि से छात्र की वृद्धि के उद्दीपन के लिए शिक्षक के उत्तरदायि

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पर भी बल दिया है। ये उद्देश्य क्योंकि शैक्षिक कार्य-प्रणालियों में स्पष्ट और परिभाषित हुए हैं, इसलिए मूल्यांकन के उचित उपाय—औपचारिक तथा अनौपचारिक, दोनों विद्यालयों के कार्यक्रमों की पर्याप्तता तथा उपयुक्तता को आँकने के लिए निकाले गए हैं।

आधुनिक मूल्यांकन अनेक दृष्टियों से प्राचीन मूल्यांकन से निम्नलिखित बातों में भिन्न हैं :—

1. यह केवल विषय-वस्तु की निष्पत्ति (Achievement) को मापने के बजाय आधुनिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के उद्देश्यों के व्यापक क्षेत्र को मापने का प्रयास करता है।
2. यह मूल्यांकन की अनेक प्रविधियों का प्रयोग करता है। जैसे निष्पत्ति, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व तथा चरित्र के परीक्षण। इन्हीं में क्रम-निर्धारण, मान, प्रश्नावलियाँ, साक्षात्कार, नियन्त्रित परीक्षण (Controlled observation) की प्रविधियाँ, समाजमितिक प्रविधियाँ तथा घटनावृत्त भी शामिल हैं।
3. आधुनिक मूल्यांकन में व्यवहार के इन सूचकों का एकीकरण और व्याख्या कर उनसे एक व्यक्ति अथवा संस्था का एक सम्मिलित या समग्र चित्र तैयार करना भी शामिल है।

शिक्षा में मूल्यांकन का प्रयोग वर्तमान शताब्दी की घटना है। ग्रीन व अन्य के अनुसार, "शिक्षा में मूल्यांकन अभी तक एक नवीन धारणा है। इसका प्रयोग विद्यालय-कार्यक्रम, पाठ्यक्रम, शैक्षिक सामग्री, शिक्षक एवं बालकों की जाँच (Appraisal) के लिए किया जाता है।" इसके द्वारा शिक्षण-उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों तथा परीक्षणों में घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। शिक्षा-आयोग (1964-66) ने अपने प्रतिवेदन में मूल्यांकन की धारण को इन शब्दों में व्यक्त किया है—"मूल्यांकन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जो शिक्षा-प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। इससे छात्र की अध्ययन-आदतों तथा शिक्षक की शिक्षण-पद्धति पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। मूल्यांकन की प्रविधियाँ वांछित दिशाओं में छात्रों के विकास के विषय में प्रमाण संग्रहीत करने के साधन हैं।"

मूल्यांकन के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं—

1. मोफात—"मूल्यांकन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है और यह छात्रों की औपचारिक शैक्षिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक है। यह व्यक्ति के विकास में अधिक रुचि रखता है। यह व्यक्ति के विकास को उसकी भावनाओं, विचारों तथा क्रियाओं से सम्बन्धित वांछित व्यवहार-परिवर्तनों के रूप में व्यक्त करता है।"

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Evaluation is a continuous process and is concerned with more than the formal academic achievement of students It is interested in the development of individual in terms of desirable behaviour changes in relation to his feeling, thinking and actions."

—Moffat

2. वेस्ले—"मूल्यांकन में मापन निहित है, परन्तु उसका क्षेत्र उन क्षेत्रों से व्यापक है जिसमें वस्तुनिष्ठ मापनों का प्रयोग किया जा चुका है।"
"Evaluation includes measurement but it extends far beyond the areas to which objective measurement has been applied." —E. B. Wesley

3. टॉरगर्सन व एडम्स—"किसी प्रक्रिया या वस्तु के महत्त्व का निर्धारण ही मूल्यांकन करना है। अतः शिक्षण-प्रक्रिया या सीखने के अनुभव की उपादेयता की मात्रा के सम्बन्ध में निर्णय करना ही शैक्षिक मूल्यांकन है।"
"To evaluate is to ascertain the value of some process or thing. Thus educational evaluation is the passing judgement on the degree of worthwhileness of some teaching process or learning experience."

—Torgerson & Adams

4. क्विलिन व हन्ना—"छात्रों के व्यवहार में विद्यालय द्वारा लाये गये परिवर्तनों के विषय में प्रमाणों के संकलन तथा उसकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्यांकन है।"
"Evaluation is the process of gathering and interpreting evidences on changes in the behaviour of the students as they progress through school." —Quillen & Hanna

उपर्युक्त विवेचन से मूल्यांकन की निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती हैं :

1. मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जो निरन्तर चलती रहती है।
2. मूल्यांकन परीक्षण का एक व्यापक पद है जिसमें मापन (Measurement) तथा जाँच (appraisal) दोनों का समावेश है।
3. मूल्यांकन वर्णनात्मक होने के साथ-साथ संख्यात्मक भी होता है।
4. मूल्यांकन छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सम्बन्धित है।
5. मूल्यांकन में छात्रों के व्यवहार के विषय में सामग्री एकत्रित करने के समस्त साधन निहित रहते हैं।
6. मूल्यांकन केवल निर्देश (instruction) की उपलब्धि को ही नहीं आँकता वरन् उसको उन्नत भी बनाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. मूल्यांकन सम्पूर्ण शिक्षा-प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जो शिक्षा के उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्धित रहता है।

मूल्यांकन और मापन

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा छात्रों की उपलब्धियों के सम्बन्ध में निर्णय दिया जाता है। निर्णय देने के लिए हमें उपलब्धि का स्तर ज्ञात होना अनिवार्य है। उपलब्धि का स्तर मापन द्वारा ज्ञात किया जाता है। मापन का सम्बन्ध किसी योग्यता या गुण के सम्बन्ध में यह ज्ञात करने से है कि उस योग्यता या गुण की कितनी मात्रा मौजूद है। मूल्यांकन का सम्बन्ध किसी योग्यता या गुण की मात्रा ज्ञात करने के बाद यह तय करने से है कि योग्यता या गुण समुचित मात्रा में है या नहीं। अतः मूल्यांकन में मापन तथा मूल्य निर्धारण दोनों का समावेश होता है। मापन संख्यात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार का हो सकता है। ई० बी० वेस्ले के अनुसार, "मापन मूल्यांकन का वह भाग है जो प्रतिशत, मात्रा, अंकों, मध्यमान तथा औसत आदि के द्वारा व्यक्त किया जाता है।"

"Measurement is that subdivision of evaluation which is stated in terms of percentages, amounts, scores, medians and means etc.—E. B. Wesley.

मूल्यांकन और मापन में अन्तर : Difference between Evaluation and Measurement—मूल्यांकन तथा मापन के अन्तर को स्पष्ट करते हुए राइटस्टोन (Wrightstone) ने लिखा है—"मापन में पाठ्यवस्तु या विशेष कुशलताओं और योग्यताओं की उपलब्धि के एकाकी पक्षों पर बल दिया जाता है, जब कि मूल्यांकन में व्यक्तित्व सम्बन्धी परिवर्तन एवं शैक्षिक कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्यों पर बल दिया जाता है।"

इन दोनों के अन्तर को संक्षेप में निम्नांकित तालिक द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है :—

मापन	मूल्यांकन
1. मापन द्वारा किसी योग्यता या गुण की मात्रा ज्ञात की जाती है। यह संख्यात्मक तथा गुणात्मक दोनों हो सकती है।	1. मूल्यांकन द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किसी योग्यता या गुण की संख्यात्मक तथा गुणात्मक मात्रा उपयुक्त है या नहीं।
2. मापन यह ज्ञात करने से सम्बन्धित है—"कितनी मात्रा में है ?"	2. मूल्यांकन का सम्बन्ध इस प्रश्न के उत्तर देने से है—"कितना अच्छा है ?"
3. मापन एकांगी है।	3. मूल्यांकन बहुमुखी होता है।
4. मापन के अभाव में मूल्यांकन का कार्य वैज्ञानिक नहीं हो सकता।	4. मूल्यांकन के लिए मापन अनिवार्य है। परन्तु मापन का शैक्षिक लाभ मूल्यांकन द्वारा ही सम्भव है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

मूल्यांकन के प्रयोजन
Purposes of Evaluation

1. छात्रों की योग्यताओं, रुचियों, मनोवृत्तियों, समझदारी, कुशलताओं की जानकारी प्राप्त करना।
2. छात्रों की सफलताओं, विफलताओं, कठिनाइयों आदि का पता लगा
3. छात्रों को उचित शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करने सहायता देना।
4. शैक्षिक कार्यक्रम, शिक्षण-विधियों आदि की उपयुक्तता की जाँच कर
5. अध्यापन-कार्य की सफलता एवं विफलता का पता लगाना।
6. शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जाँच करना।
7. शिक्षण, पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तक आदि में सुधार लाना।

मूल्यांकन की प्रविधियाँ
Techniques of Evaluation

मूल्यांकन प्रविधि का अभिप्राय उस रीति से है, जिसके द्वारा हम बालक ज्ञान और व्यवहार में हुए परिवर्तनों तथा उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं का मूल्यां करते हैं। डॉ० बी० एस० ब्लूम (B. S. Bloom) का मत है—

"अच्छी मूल्यांकन प्रविधि या साधन या रीति वह है जिसमें व्यवहार वांछित परिवर्तन के वैध प्रमाणों का मापन करने की क्षमता है।"

हम समस्त व्यवहार-परिवर्तनों को किसी एक रीति के द्वारा नहीं जाँच हैं, वरन् विभिन्न व्यवहार-परिवर्तनों को जाँचने के लिए विभिन्न प्रविधियों का प्र करते हैं। अतः मूल्यांकन में विभिन्न प्रविधियों का समावेश है। इसकी पु राइटस्टोन के इस कथन से हो जाती है—"आधुनिक मूल्यांकन में जाँच की विवि प्रविधियों—उपलब्धि, अभिवृत्ति, व्यक्तित्व, चरित्र-सम्बन्धी परीक्षणों-क्रम, निर्धा मान, प्रश्नावली, प्रतिफलों के निर्णय मान, साक्षात्कार, नियन्त्रित-निरीक्षण प्रविधि समाजमितिक प्रविधियाँ तथा घटनावृत्तों का प्रयोग होता है।"[1]

इनमें से प्रमुख प्रविधियों का विवेचन नीचे दिया जा रहा है—

(1) **निरीक्षण-प्रविधि**—इसके द्वारा छात्रों के व्यवहार, क्रियाओं, संवेगा एवं बौद्धिक परिपक्वता के सम्बन्ध में प्रमाण प्रदान किये जाते हैं।

---

1. "Modern evaluation uses a variety of techniques of apprai such as achievement, attitude, personality, character tests, rati scales questionnaries, judgement scale of products, intervie controlled observation techniques, sociometric techniques a anecdotal records."

—J. W. Wrightsto

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(2) साक्षात्कार—इसके द्वारा रुचियों के विकास, दृष्टिकोणों में हुए परिवर्तनों तथा व्यक्तिगत विशेषताओं की जाँच की जाती है।

(3) प्रश्नावली—छात्रों से उनकी स्वयं की रुचियों एवं अभिवृत्तियों के विकास से सम्बन्धित सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए यह प्रविधि बहुत सरल एवं उपयोगी है।

(4) क्रम निर्धारण मान—इस प्रविधि का प्रयोग उन विभिन्न परिस्थितियों या विशेषताओं का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, जो विभिन्न मात्राओं में प्रस्तुत की जा सकती हैं। इसके द्वारा हम बालक को किसी विशेष क्षेत्र की कुशलताओं की जाँच उस क्षेत्र में उसके व्यवहार की प्रगति को देखकर भी कर सकते हैं।

(5) छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ—छात्रों द्वारा निर्मित वस्तुएँ (Pupil's Products) भी उनके व्यवहार एवं रुचि सम्बन्धी सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण साधन प्रदान करती हैं।

(6) पड़ताल-सूची—पड़ताल-सूची (Check list) प्रश्नावली की भाँति व्यक्तिगत सूचना एवं मत जानने का प्रमुख साधन है।

(7) अभिलेख—छात्रों की डायरियाँ, शिक्षकों द्वारा तैयार किए गए घटना-वृत्त (Anecdotal records) तथा संचित अभिलेख-पत्र भी मूल्यांकन की महत्त्वपूर्ण विधियाँ हैं।

(8) परीक्षा प्रविधि—इस प्रविधि के अन्तर्गत मौखिक परीक्षण, प्रायोगिक परीक्षाएँ तथा लिखित परीक्षाएँ आती हैं। लिखित परीक्षाओं में निबन्धात्मक तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षाएँ प्रमुख हैं।

(अ) मौखिक परीक्षा : Oral Examination—इस प्रविधि का प्रयोग बोलने की योग्यता, उच्चारण एवं सूचनाओं की जाँच तथा लिखित परीक्षाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है। यह प्रविधि चारित्रिक रूप से वैयक्तिक है। इसके द्वारा बालकों के व्यक्तिगत गुणों तथा अवगुणों से अवगत हो सकते हैं। इसमें छात्र परीक्षक के समक्ष उसके प्रश्नों का उत्तर देता है; जिससे कि परीक्षक उसके आत्म-विश्वास, अभिव्यक्ति आदि की जाँच करने में समर्थ होता है।

(ब) प्रायोगिक परीक्षा : Practical Examination—इसका प्रयोग प्रयोगात्मक विषयों—विज्ञान, हस्तकला, ड्राइंग, कृषि आदि में किया जाता है। इसमें बालक अपने कार्य का नमूना परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत करता है।

(स) लिखित परीक्षा : Written Examination—शिक्षा-आयोग ने लिखा है—"भारत में मूल्यांकन के लिए प्रचलित सामान्य पद्धति लिखित परीक्षा है।" वस्तुतः भारत में यही एकमात्र पद्धति प्रचलित है। इसमें भी दोषों का प्रचलन हो गया है। लिखित परीक्षा के अन्तर्गत—कार्य-समर्पण, प्रतिवेदन लिखना, प्रश्नों के उत्तर लिखना एवं कागज-पेंसिल परीक्षाएँ आती हैं। कागज-पेन्सिल परीक्षाएँ छात्रों की ज्ञान-प्राप्ति एवं पाठ्य-वस्तु को संगठित तथा व्याख्या करने की योग्यता आदि की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जाँच करने में बहुत उपयोगी हैं। लिखित परीक्षाओं के दो रूप—(क) निबन्धा (Essay Type), तथा (ख) वस्तुनिष्ठ (Objective Type) अधिक प्रचलित इनका पृथक्-पृथक् विवेचन आगे किया जा रहा है।

(क) निबन्धात्मक परीक्षा (Essay Test)

हमारे देश में इस परीक्षा का अधिक प्रचलन है। इसमें बालकों को प्रश्नों का उत्तर निर्धारित समय के अन्दर निबन्ध के रूप में लिखना पड़ता है। बालकों की अभिव्यंजना-शक्ति, सुलेख, शैली, भाषा आदि का अधिक प्रभाव है। इसके अतिरिक्त इसमें परीक्षक की मनोदशा (Mood) का भी प्रभाव रहता इसमें आत्मगत तत्त्व (Subjective element) की प्रधानता है।

प्रचलित परीक्षा-प्रणाली के दोष : Defects of the Existing Exami tion System)—इस प्रणाली में अधोलिखित दोष पाये जाते हैं—

1. परीक्षा शिक्षा का एक साधन होनी चाहिए, परन्तु आजकल वह का लक्ष्य बन गयी है। बालक पढ़ते हैं, शिक्षक पढ़ाते हैं किस किस उद्देश्य से ? केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने व कराने के लिए।
2. यह केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित रहती है। बालक की वा प्रगति की पूर्ण जाँच नहीं कर पाती है।
3. परीक्षा विद्यार्थियों के लिए भयानक स्वप्न बन गयी है। इसने छा नैतिक स्तर को भी गिरा दिया है, क्योंकि परीक्षा उत्तीर्ण करना कराना ही शिक्षा का मुख्य ध्येय हो गया है।
4. यह विद्यालय के कार्यों पर भी दूषित प्रभाव डालती है। सभी इसी की प्राप्ति के लिए न्यौछावर कर दिये जाते हैं। यहाँ त समय-तालिका, गृह-कार्य, पाठ्यक्रम आदि सभी उसी के द्वारा किए जाते हैं।
5. यह छात्रों के मस्तिष्क में ज्ञान तो भर देती है, परन्तु उसका नहीं सिखाती है।
6. विद्यार्थियों के स्वास्थ्य पर भी यह निकृष्ट प्रभाव डालती है। के दिनों में वे खेलना-कूदना, अपने मित्रों से मिलना, पर्याप्त करना, सोना आदि सबको तिलांजलि दे देते हैं।
7. परीक्षा में वैयक्तिक प्रभाव अधिक है। इसके अतिरिक्त छात्रों के विचार तथा लिखने के ढंग का भी प्रभाव पड़ता है। इसी कारण तथा अंकों में विशेष विस्तार रहता है।
8. यह स्मरण-शक्ति पर अधिक बल देती है।
9. इसके द्वारा विद्यार्थी के वास्तविक ज्ञान की जाँच नहीं हो पाती। अवसर की ही प्रधानता रहती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

10 यह कोई वैज्ञानिक विधि नहीं है। यह सिंह का पद एक चूहे या बिल्ली को प्रदान कर देता है और शृंगाल का पद एक सिंह को।

परीक्षा की आवश्यकता—इन समस्त दोषों का अवलोकन करने के पश्चात्, स्वतः ही यह प्रश्न उठता है कि इसको क्यों न समाप्त कर दिया जाय, तथापि यह परीक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

1. छात्रों की योग्यता तथा उनके द्वारा प्राप्त किए हुए ज्ञान की जाँच करने के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि माता-पिता यह देखना चाहते हैं कि उनका बालक अपने परिश्रम के अनुकूल लाभ प्राप्त कर रहा है या नहीं। इसकी सूचना परीक्षा के बिना प्राप्त नहीं हो सकती। समाज को भी इसी के द्वारा सन्तुष्ट किया जाता है।
2. पथ-प्रदर्शन के लिए परीक्षा परमावश्यक है।
3. सामाजिक तथा आर्थिक जीवन-स्तर स्थापित करने के लिए यह अनिवार्य है।
4. छात्रों में श्रेणी-विभाजन, चयन तथा उन्नति के लिए यह आवश्यक है।
5. सीखने की प्रक्रिया तथा शिक्षण को प्रोत्साहन देने के लिए भी इसकी आवश्यकता है।
6. शिक्षक, विधि, पुस्तक, पाठ्यक्रम तथा विषय-सूची की उपयोगिता की जाँच करने के लिए भी अत्यन्त अनिवार्य है।

सुधार के लिए सुझाव—इस प्रकार परीक्षा की आवश्यकता पर विचार करने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि इसको समाप्त नहीं किया जा सकता है, वरन् इसमें सुधार किए जाने चाहिए। विभिन्न विद्वानों ने इसके सुधार के लिए अपने विचार तथा सुझाव प्रकट किए हैं। वे निम्नलिखित हैं—

1. वैयक्तिक प्रभाव को कम किया जाय। इसको कम करने के लिए नवीन प्रणाली के प्रश्न प्रयोग में लाये जायें।
2. परीक्षकों का चयन सतर्कता से किया जाय। इनमें उन्हीं शिक्षकों को रखा जाय जो उस विषय को पढ़ाते हों।
3. बाह्य-परीक्षा कम की जायें।
4. विद्यार्थियों का आन्तरिक अभिलेख (Record) रखा जाय और उनको कक्षोन्नति का आधार बनाया जाय।
5. प्रश्न ऐसे दिए जायें जो बालकों के विषय-सम्बन्धी समस्त ज्ञान की वास्तविकता की जाँच करें।
6. शिक्षा तथा परीक्षा में सम्बन्ध हो। परीक्षा शिक्षण कार्य को अधिक सफल बनाने में सहायक हो।
7. परीक्षा छात्रों में किसी प्रकार का भय उत्पन्न न करे, वरन् वे परीक्षा को अपना सहायक तथा मित्र समझें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8. परीक्षाएं निष्पक्ष हों और उनके द्वारा बालक की पूरी-पूरी जाँच की जाय। उसके शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक—सभी प्रकार के विकास की जाँच हो। दो परीक्षकों से वही परीक्षा-पुस्तिका जँचवानी चाहिए। छात्रों के उत्तरों का अंकन निष्पक्षता से किया जाना चाहिए।

(ख) नई प्रणाली या वस्तुनिष्ठ परीक्षण

New Type Tests or Objective Type Tests

मनोविज्ञान ने शिक्षा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण देन प्रदान की है। मनोवैज्ञानिकों ने परीक्षा की कुछ नवीन विधियां निकाली हैं। इन विधियों का प्रयोग आजकल सभी विषयों में लोकप्रिय हो गया है। इन विधियों के अन्तर्गत परीक्षार्थी से छोटे-छोटे प्रश्न पूछे जाते हैं और उन्हें थोड़े ही समय में उनका उत्तर देना पड़ता है, ये परीक्षाएं कई प्रकार की हैं। इन परीक्षाओं द्वारा सत्यासत्य, तिथि-ज्ञान, तथ्य-ज्ञान और विचार-ज्ञान की जाँच छोटे-छोटे प्रश्नों द्वारा ली जाती है। इस प्रणाली में वे सब गुण विद्यमान हैं जो एक उत्तम परीक्षा में होने चाहिए। वस्तुनिष्ठ जाँच में उत्तम परीक्षा के गुण पाये जाते हैं। इन गुणों का विवेचन नीचे दिया जा रहा है :

(1) वस्तुनिष्ठता : Objectivity—नवीन प्रणाली की जाँचों में यह गुण पाया जाता है। वस्तुनिष्ठता का अभिप्राय वैयक्तिक तत्त्वों के निष्कासन से है। प्रश्न के उत्तर को चाहे एक ही परीक्षक जांचे अथवा अनेक, माप में भिन्नता न हो। प्रश्न ऐसे होने चाहिए, जिनके उत्तर एक ही हों, जिससे परीक्षक का व्यक्तिगत पक्षपात, उसकी मनोदशा, छात्रों की भाषा शैली आदि का प्रभाव उसके निर्णय पर न पड़ सके।

(2) वैधता : Validity—जिस वस्तु-विशेष की हम जाँच करना चाहते हैं यदि परीक्षण किसी अन्य वस्तु की जाँच न करके उसी की जाँच करता है तो हम उस परीक्षण को वैध मानते हैं। नवीन प्रणाली के परीक्षणों में यह गुण पाया जाता है।

(3) विश्वस्तता : Reliability—परीक्षण के द्वारा हम जिस वस्तु की जाँच करना चाहते हैं, वह किस सीमा तक शुद्ध एवं सम्यक रूप में जांची जा सकती है, जिससे हम उसके निर्णयों या परिणामों पर विश्वास कर सकें, उदाहरणार्थ—यदि विश्वसनीय परीक्षण के द्वारा किसी छात्र की जाँच की जाती है तो उससे प्राप्त अंकों में कोई वृद्धि या कमी नहीं होनी चाहिए, चाहे उसके प्रयोग में समय का अन्तर क्यों न हो। नवीन प्रणाली की जाँच मे यह गुण पाया जाता है।

(4) अंकन की सरलता : Easy in Scoring—उत्तम परीक्षणों में अंकन करना सुगम है। इनके प्रयोग से कम से कम समय में अधिकाधिक उत्तर-पुस्तिकाओं का अंकन किया जा सकता है। नवीन प्रणाली की जाँचों में यह गुण प्राप्त होता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ परीक्षण के प्रकार

वस्तुनिष्ठ जाँच निम्नलिखित दो प्रकार की होती है—

(1) प्रमापीकृत वस्तुनिष्ठ जाँच (Standardized Objective Tests)

(2) अध्यापक निर्मित-वस्तुनिष्ठ जाँच (Teacher-made Objective Tests)

प्रमापीकृत तथा अध्यापक निर्मित जाँचों या परीक्षणों में अन्तर केवल इतना है कि प्रथम को प्रमापीकृत करके दिया जाता है और इसका प्रयोग सामान्य रूप से किया जा सकता है। साथ ही इनका निर्माण विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है। परन्तु अध्यापक निर्मित परीक्षणों का प्रयोग सामान्य रूप से नहीं किया जाता। इनका प्रयोग विशेष स्थानों पर विशेष परिस्थितियों में हो सकता है, क्योंकि इनका निर्माण विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है।

नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रश्न

वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रश्नों के निम्नलिखित रूप हैं—

(अ) अभिज्ञान रूप (Recognition Type)

(ब) प्रत्यास्मरण (Recall Type)

(अ) अभिज्ञान रूप—इस प्रकार के प्रश्नों के द्वारा पहचानने की शक्ति की जाँच की जाती है। इस रूप के प्रश्नों के कई उपभेद हैं जो इस प्रकार हैं—

(1) सत्यासत्य या एकान्तर प्रत्युत्तर रूप (True-false or Alternate Response Type)

(2) बहुविकल्प या अपवर्त्य-चयन रूप (Multiple Choice Type)

(3) तुलनात्मक या मिलान या प्रतिद्वन्द्वात्मक रूप (Matching Type)

(4) वर्गीकरण रूप (Classification Type)

(ब) प्रत्यास्मरण रूप—इसके द्वारा छात्रों की स्मरण-शक्ति की जाँच की जाती है। इस प्रकार के प्रश्नों के दो उपभेद हैं—

(1) सरल प्रत्यास्मरण रूप (Simple Recall Type)

(2) रिक्त स्थान पूर्ति रूप (Completion Type)

इतिहास-शिक्षण में उक्त विभिन्न उपभेदों का प्रयोग किया जाता है। इन उपभेदों का उदाहरण सहित विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है—

(अ) अभिज्ञान रूप के प्रश्न

(1) सत्यासत्य—इनमें दो विकल्पों में से एक को चयन करने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों में 'सत्य' एवं 'असत्य' दोनों ही प्रकार के कथन दिये जाते हैं। बालकों को इनके समक्ष 'सत्य' या 'असत्य' अथवा 'R' या 'W' अथवा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'हाँ' या 'नहीं' आदि लिखने के लिए आदेश दिया जाता है। इतिहास में इस प्र... का प्रयोग विद्यालय के प्रत्येक स्तर के लिए किया जा सकता है।

उदाहरण

निर्देश—निम्नलिखित कथनों को पढ़ो और सत्य कथन के सम्मुख 'स... तथा असत्य के सामने 'असत्य' लिखिए—

1. महावीर स्वामी का जन्म महात्मा बुद्ध से पूर्व हुआ था।........
2. चाणक्य ने 'अर्थशास्त्र' नामक ग्रन्थ की रचना की।........
3. समुद्रगुप्त ने अश्वमेघ यज्ञ किया।........
4. पृथ्वीराज चौहान ने नादिरशाह को तराइन के मैदान में हरा... था।........
5. अलाउद्दीन खिलजी तुगलक वंश का प्रतापी सुल्तान था।........
6. अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरि को अपने साम्राज्य में मिला लि... था।........
7. मुहम्मद-बिन-तुगलक ने दौलताबाद को अपनी राजधानी बनाया।....
8. फिरोज तुगलक ने ताँबे का सिक्का चलाया था।........
9. अकबर ने मुगल वंश की नींव को दृढ़ बनाया।........
10. औरंगजेब ने शिवाजी के राज्याभिषेक पर अपना दूत भेंट देने के लि... भेजा था।........

प्रो० घाटे का विचार है कि इस प्रकार के प्रश्नों से तथ्य-ज्ञान तथा निर्ण... शक्ति दोनों को जाँचा जा सकता है। इन कथनों को बड़ी सतर्कता के साथ तै... किया जाय। इसको तैयार करते समय अध्यापक छात्रों की मानसिक आयु... योग्यता का ध्यान रखे।

(2) बहुविकल्प या अपवर्त्य चयन रूप—इस प्रकार के प्रश्नों में एक प्रश्न... उत्तर के रूप में कई विकल्प दिये रहते हैं जिनमें से छात्रों को अधिक उपयुक्त उ... को छाँटने के लिए कहा जाता है। ये प्रश्न बहुत से अभिप्रायों को पूर्ण करते हैं।

उदाहरण

(i) तिथियों के ज्ञान की परीक्षा : To Test the Knowledge of Dates...

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के साथ कई तिथियाँ दी गई हैं, उनमें से ... सत्य हों, उन पर √ का चिह्न लगाओ :

1. पानीपत का तृतीय युद्ध (1756, 1526, 1761, 1527 ई०) हुआ था।
2. शिवाजी का जन्म (1552, 1707, 1605, 1630, 1682 ई०) हुआ था।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. औरंगजेब की मृत्यु (1757, 1919, 1707, 1948, 1680 ई०) में हुई थी।
4. सिपाही विद्रोह (1757, 1805, 1885, 1857, 1905 ई०) में हुआ था।

(ii) वैयक्तिक चरित्र-ज्ञान की परीक्षा : To Judge the Individual Character—

1. शिवाजी (कमजोर, साहसी, उदार, विद्वान्) था।
2. अशोक (धार्मिक, साहसी, विद्वान्, निर्भय) था।
3. औरंगेब (शक्की, उदार, धार्मिक) मनुष्य था।

(iii) तथ्य-ज्ञान की परीक्षा : To Judge the Knowledge of Facts—

1. मुमताजमहल का पति (अकबर, जहाँगीर, औरंगजेब, शाहजहाँ) था।
2. शिवाजी ने अफजल खाँ का वध (पूना, प्रतापगढ़, दिल्ली) में किया था।
3. मुहम्मद तुगलक ने (चाँदी, सोने, ताँबे, कागज, पीतल, चमड़े) का सिक्का चलाया था।
4. शाहजहाँ ने (ग्वालियर का किला, सिकन्दरा का मकबरा, ताजमहल, चित्तौड़ का किला) बनवाया था।

(iv) निर्णय-शक्ति की जाँच : To Test Power of Judgement—

मराठे पानीपत के मैदान में हार गये थे, क्योंकि—

1. उनके पास रसद की कमी थी।
2. उनकी सेना कम थी।
3. उन्होंने छापामार रणनीति छोड़ दी थी।
4. उनके सेनापति अयोग्य थे।

(3) तुलनात्मक या प्रतिद्वन्द्वात्मक रूप—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को दो सूचियों के विषयों में समानता या सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कहा जाता है।

उदाहरण

निर्देश—बाईं ओर कुछ ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम दिये हुए हैं और दाहिनी ओर कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ बिना किसी क्रम के दी हुई हैं। प्रत्येक ऐतिहासिक घटना को उससे सम्बन्धित व्यक्ति के साथ लिखिए—

(i) लार्ड वेलेजली	(i) 'भारत छोड़ो' आन्दोलन
(ii) लार्ड कर्जन	(ii) ब्रह्म समाज
(iii) वारेन हेस्टिंग्स	(iii) बंगाल विभाजन
(iv) क्लाइव	(iv) सहायक सन्धि
(v) राजा राममोहन राय	(v) अवध की बेगमों के साथ दुर्व्यवहार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(vi) महात्मा गाँधी	(vi) इस्तमरारी बन्दोबस्त
(vii) लार्ड कार्नवालिस	(vii) बंगाल का दोहरा प्रबन्ध
(viii) लार्ड लिटन	(viii) बर्मा का तीसरा युद्ध
(ix) लार्ड डफरिन	(ix) द्वितीय अफगान युद्ध
(x) सरदार पटेल	(x) माउण्टबेटन योजना
(xi) जवाहरलाल नेहरू	(xi) देशीय राज्यों का संगठन
(xii) लार्ड माउण्टबेटन	(xii) भारत पर चीन का आक्रमण

निर्देश—बाईं ओर कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ दी हुई हैं और दाहिनी ओर अव्यवस्थित रूप में कुछ तिथियाँ दी हुई हैं। प्रत्येक तिथि को उससे सम्बन्धित घटना के साथ लिखिए—

(i) पानीपत का प्रथम युद्ध	(i) 1857 ई०
(ii) प्लासी का युद्ध	(ii) 1527 ई०
(iii) फतहपुरसीकरी का युद्ध	(iii) 1757 ई०
(iv) औरंगजेब की मृत्यु	(iv) 1526 ई०
(v) अकबर की मृत्यु	(v) 1192 ई०
(vi) गौतम बुद्ध की मृत्यु	(vi) 1800 ई०
(vii) पृथ्वीराज की मृत्यु	(vii) 1605 ई०
(viii) बाबर की मृत्यु	(viii) 433 ई० पू०
(ix) अशोक की मृत्यु	(ix) 1707 ई०
(x) नाना फड़नवीस की मृत्यु	(x) 1948 ई०
(xi) गाँधीजी की मृत्यु	(xi) 1530 ई०
(xii) सिपाही विद्रोह	(xii) 232 ई० पू०

नोट—उक्त तिथियों को सम्बन्धित घटनाओं के साथ कालक्रमानुसार लिखवाया जा सकता है। इस प्रकार लिखवाने से समय से अनुक्रम की भी जाँच की जा सकती है।

(4) **वर्गीकरण रूप**—यह तुलनात्मक प्रश्नों का एक अन्य रूप माना जा सकता है क्योंकि वर्गीकरण रूप के प्रश्नों के वही गुण एवं सीमाएँ हैं जो तुलनात्मक रूप के प्रश्नों के हैं। इनमें अन्तर केवल स्वरूप की दृष्टि से है। इस प्रकार के प्रश्नों के अन्तर्गत कुछ ऐसे शब्दों का समूह छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है जिनमें से एक शब्द बेमेल होता है। छात्रों से उसी शब्द को छाँटने के लिए कहा जाता है।

उदाहरण

निर्देश—प्रत्येक प्रश्न में चार शब्द दिए हुए हैं। प्रत्येक प्रश्न के इन

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में एक ऐसा शब्द है जो अन्य शब्दों की श्रेणी में नहीं आता है। प्रत्येक प्रश्न में ऐसे शब्द को रेखांकित कीजिए---

(1) प्लासी का युद्ध, धरमत का युद्ध, सहायक सन्धि, सामूगढ़ का युद्ध ।
(2) अशोक, समुद्रगुप्त, लार्ड वेलेजली, चन्द्रगुप्त मौर्य ।
(3) ग्वालियर, फतेहपुरसीकरी, कानपुर, दिल्ली।
(4) आइने-अकबरी, बाबरनामा, तुजुके-जहाँगीरी, सामवेद ।

(ब) प्रत्यास्मरण रूप के प्रश्न

(1) सरल प्रत्यास्मरण रूप—इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा छात्रों की प्रत्यास्मरण शक्ति की जाँच की जाती है। छात्र विषय से सम्बन्धित घटनाओं, तथ्यों आदि को किस प्रकार पुनः स्मरण कर सकते हैं, इसी को इस प्रकार के प्रश्नों द्वारा मालूम किया जाता है।

उदाहरण

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर उनके सम्मुख दिए गए स्थान पर लिखो—

1. भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम कब हुआ ?········
2. भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना कब हुई ?········
3. स्वतन्त्रता से पूर्व बंगाल का विभाजन किस व्यक्ति ने किया ?········
4. शेरशाह ने कितने वर्ष तक राज्य किया ?········
5. शिवाजी की मृत्यु कब हुई थी ?
6. अकबर ने कौन-कौन-सी इमारतों का निर्माण कराया ?········
7. द्वितीय महायुद्ध कब शुरू हुआ था ?········
8. ताजमहल का निर्माण किसने करवाया था ?········

(2) रिक्त स्थान की पूर्ति—इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को रिक्त स्थानों की उपयुक्त शब्दों द्वारा पूर्ति करनी पड़ती है।

उदाहरण

निर्देश—निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की उचित शब्दों द्वारा पूर्ति कीजिए—

1. सन् 1911 में········इंगलैण्ड के सम्राट दिल्ली आये।
2. हैदरअली ने सन्········में मद्रास पर हमला करके अंग्रेजों को सन्धि करने पर विवश किया।
3. अकबर और राणा प्रताप के बीच सन्········ई० में हल्दीघाटी के मैदान में भयंकर युद्ध हुआ।
4. शिवाजी ने········में अफजलखाँ का बध किया था।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. शाहजहाँ ने·······की यादगार में·········का निर्माण आगरा में करवा
6. अकबर ने········में बुलन्द दरवाजे का निर्माण कराया।
7. महात्मा गौतम बुद्ध की मृत्यु·········ई० पू० में हुई।
8. ब्रह्मसमाज के संस्थापक·········थे।
9. भारत········सन्·····को स्वतन्त्र हुआ।
10. भारत के प्रथम राष्ट्रपति·········थे।

उपर्युक्त वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के जिन दो रूपों का विवेचन किया गया है, प्रयुक्त सभी प्रकार के प्रश्नों को **विशिष्टोत्तरात्मक प्रश्नों** (Specific Respo Questions) के अन्तर्गत रखा जाता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के अन्तर्गत मुक्तोत्तर प्रश्न (Free Response Questions) भी आते हैं। इनमें छात्र अपने दृष्टिको उत्तर देने के लिए स्वतन्त्र होता है। इस प्रकार के प्रश्नों का रूप संक्षिप्त निश्चित होता है। इस कारण इनको लघु उत्तरात्मक प्रश्न (Short An Question) भी कहते हैं।

उदाहरणार्थ

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए। आपके उत्तर 50 शब्दों अधिक में न हों—

1. सिकन्दर को भारत से क्यों लौटना पड़ा ?
2. भारतीयों से यूनानियों ने कौन-कौन-सी बातें सीखीं ?
3. मौर्य साम्राज्य के पतन के तीन कारण बताइये।
4. कनवाह के युद्ध में राणा सांगा की पराजय के तीन प्रमुख कारणों उल्लेख कीजिए।
5. स्थायी बन्दोबस्त के किन्हीं तीन गुणों को बतलाइये।
6. 1853 के चार्टर एक्ट की तीन धाराओं को लिखिए।
7. मौर्यकालीन इतिहास को जानने के चार साधनों के नाम लिखिए।
8. भारत के प्राचीन इतिहास को जानने के चार प्रमुख स्रोतों का उ कीजिए।

नवीन प्रणाली के गुण : Qualities of New Type Tests

1. इस प्रणाली के द्वारा हम अल्प समय में अनेक तथ्यों की जाँच कर हैं। निबन्धात्मक परीक्षा में हमें इतना अवसर प्राप्त नहीं होता है, क्योंकि उ प्रकृति वर्णनात्मक है।

2. इसके द्वारा तथ्यों के ज्ञान की परीक्षा नहीं होती है वरन् कालानु तिथि-ज्ञान तथा निर्णय-शक्ति की जाँच भी की जाती है। यह परीक्षा निबन्धा परीक्षा की पर्याप्त मात्रा में पूरक है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. इसमें भाषा का कार्य भाग अधिक नहीं होता है, जो कि निबन्धात्मक परीक्षा में बहुत बड़ा भाग लेती है। भाषा निबन्धात्मक परीक्षा में परीक्षक को अत्यन्त प्रभावित करती है। निबन्धात्मक परीक्षा के इस दोष को यह परीक्षा दूर करती है।

4. इसमें वैयक्तिक प्रभाव को भी समाप्त किया गया है। निबन्धात्मक परीक्षा में परीक्षण का स्वभाव विशेष भाग लेता है, परन्तु उसको यहाँ समाप्त कर दिया गया है।

नवीन प्रणाली के दोष : Defects of New Type Tests

सामाजिक विषयों की जाँच के लिए जब इस प्रणाली का प्रयोग किया गया, तब इसके निम्नलिखित दोष दृष्टिगोचर हुए—

1. इन प्रश्नों के बनाने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सबसे अधिक कठिनाई अपवर्त्य चयन की परीक्षा में होती है क्योंकि सभी मनुष्यों की विचारधाराएँ एक समान नहीं होती हैं, उदाहरणार्थ—शिवाजी (बहादुर, राजनीतिज्ञ, साहसी, विद्वान्) थे। इसमें विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न विचारधाराएँ हो सकती हैं, क्योंकि मानव चरित्र जटिलता से पूर्ण है और ऐतिहासिक चरित्र तो विशेष रूप से जटिल होते हैं। उसके विषय में परीक्षक कैसे कह सकता है कि मेरा विचार ही सत्य है? परन्तु प्रो० घाटे का विचार है कि यदि इतिहास का शिक्षक अपने विद्यार्थियों को योग्यता तथा निष्पक्षता के साथ इनके चरित्र के विषय में ज्ञान देगा तो कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होगी। छात्रों में शिक्षक वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करे, जिससे वे निष्पक्ष निर्णय कर सकें।

2. यह परीक्षा अनुमान लगाने (Guess Work) के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करती है। यह केवल छात्रों को इधर-उधर चिह्न लगाने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं सिखाती है। छात्र कहानियों के विषय में कुछ नहीं लिख सकते हैं, क्योंकि उनको लिखने का कार्य कुछ नहीं दिया जाता है। इससे छात्रों को प्रश्नों के उत्तर लिखने का ढंग नहीं सिखाया जा सकता है।

3. इसके विरुद्ध तीसरा प्रबल आरोप यह है कि इनके प्रयोग द्वारा छात्रों की विचार, तर्क आदि शक्तियों का विकास नहीं होता। साधारण प्रश्नों तक ही इनका प्रयोग हो सकता है। इसके द्वारा किसी प्रकार की शृंखला अथवा क्रमबद्धता स्थापित नहीं की जा सकती। साधारण विचार तथा तर्क-शक्ति निबन्धात्मक परीक्षा से ही छात्रों में उत्पन्न की जा सकती है। यह परीक्षा निबन्धात्मक परीक्षा का स्थान ग्रहण नहीं कर सकती है और न यह उच्चतर कक्षाओं के लिए उपयुक्त है। इसके द्वारा केवल उसके तथ्य-ज्ञान, तिथि-ज्ञान तथा कालानुक्रम की जाँच की जा सकती है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ तथा निबन्धात्मक परीक्षणों की तुलना

इन दोनों परीक्षणों की तुलना विशेषताओं के आधार पर निम्न तालि[illegible] की जा रही है—

विशेषता	निबन्धात्मक परीक्षण	वस्तुनिष्ठ परीक्ष[illegible]
1. प्रश्नों की रचना	1. इसमें प्रश्नों की रचना अपेक्षाकृत सरल होती है।	1. इसमें प्रश्नों की र[illegible] एक कठिन कार्य है
2. विषय-वस्तु न्यादर्शीकरण (Sampling)	2. इसमें विषय-वस्तु का मूल्यांकन सीमित रूप में होता है।	2. इसमें विषय-वस्तु[illegible] व्यापक क्षेत्र[illegible] मूल्यांकन सम्भव[illegible]
3. ज्ञान तथा अवबोध का मापन	3. ज्ञान तथा अवबोध दोनों की जाँच हो सकती है परन्तु अवबोध की जाँच के लिये अधिक सक्षम है।	3. ज्ञाण तथा अवबोध[illegible] की जाँच सम्भव[illegible] परन्तु ज्ञान की[illegible] पर अधिक बल[illegible] जाता है।
4. छात्रों द्वारा तैयारी	4. विषय-वस्तु की बड़ी इकाइयों की तैयारी पर बल दिया जाता है।	4. पाठ्यवस्तु के तथ्या[illegible] पक्षों की तैयारी[illegible] विशेष बल दिया ज[illegible] है।
5. छात्र द्वारा दिये जाने वाले उत्तर	5. मौलिक ढंग के उत्तर देने की गुंजाइश रहती है। छात्र के उत्तर में कल्पना-शक्ति, निर्णय-शक्ति, स्मरण-शक्ति तथा व्यक्तित्व की झाँकी मिलती है।	5. प्रत्यास्मरण रू[illegible] प्रश्नों को छोड़कर[illegible] को दिये गये विक[illegible] में से ही उत्तर छ[illegible] पड़ता है। अतः[illegible] को अपनी मौलि[illegible] प्रदर्शित करने का[illegible] अवसर प्राप्त नहीं [illegible]
6. सही उत्तर का अनुमान लगाना	6. इसमें उत्तरों का अनुमान लगाने की कोई सम्भावना नहीं है।	6. इसमें अनुमान से उ[illegible] देने के बहुत अवसर[illegible]
7. अंकन की दृष्टि से	7. अंकन की दृष्टि से यह परीक्षा कठिन तथा समय-साध्य होती है। साथ ही यह अविश्वसनीय है।	7. इसमें अंकन [illegible] विश्वसनीय [illegible] शीघ्रतापूर्वक होता[illegible]

इतिहास-शिक्षक तथा मूल्याङ्कन कार्यक्रम : History Teacher and Eva[illegible]tion Programme

इतिहास में प्रभावकारी मूल्यांकन कार्यक्रम को विकसित करने के लिए [illegible]

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षक को निम्नलिखित बातों की जानकारी प्राप्त करना परमावश्यक है—

(i) इतिहास के उद्देश्यों की जानकारी (सम्पूर्ण विषय तथा विशेष इकाइयों के उद्देश्य)

(ii) शिक्षण-उद्देश्यों तथा मूल्यांकन के सम्बन्धों की जानकारी,

(iii) मूल्यांकन के विभिन्न अभिप्रायों का ज्ञान,

(iv) मापन के सिद्धान्तों तथा व्यवहार का प्रारम्भिक ज्ञान,

(v) मूल्यांकन की प्रविधियों (Techniques) तथा साधन—उनकी निर्माण प्रक्रिया तथा व्यवहार का ज्ञान,

(vi) अनुगमन (Follow-up) प्रक्रिया का ज्ञान।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास-शिक्षक को सर्वप्रथम विषय के उद्देश्यों की ओर ध्यान देना होगा। ये उद्देश्य शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पृथक्-पृथक् होंगे। इन उद्देश्यों का निर्धारण इस तथ्य को ध्यान में रखकर किया जायेगा कि वह (शिक्षक) निर्धारित स्तर पर अपने शिक्षण द्वारा छात्रों के व्यवहार में क्या परिवर्तन लाना चाहता है। अतः शिक्षक को अपने प्रमुख उद्देश्यों तथा शिक्षण-उद्देश्यों (Instructional Objectives) का निर्धारण करना होगा।

माध्यमिक स्तर पर इतिहास-शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य
Specific Aims of History Teaching at the Secondary Stage

(i) सफल जीवनयापन के लिए वर्तमान को समझने हेतु अतीत की व्याख्या करना।

(ii) सत्य देश-प्रेम की भावना विकसित करना।

(iii) राष्ट्रीय विरासत का क्रमबद्ध ज्ञान प्रदान करना। इसको प्रदान करते समय उसके गुण एवं दोषों का भी ज्ञान प्रदान किया जायेगा।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना विकसित करना।

(v) विभिन्नता में एकता के आन्दोलनों तथा प्रवृत्तियों को समझना।

(vi) मानव समाज के विकास में विविध शक्तियों तथा कारकों (Factors) की अन्तःक्रिया को समझना।

(vii) छात्रों को उचित अभिवृत्तियों के निर्माण में सहायता देना जिससे वे नागरिकता के दायित्वों का समुचित रूप से निर्वाह कर सकें।

(viii) छात्रों को उन साधनों से अवगत कराना जिनके द्वारा इतिहासकार कार्य करता है।

(ix) ऐतिहासिक तथ्यों के उचित विश्लेषण के लिए आलोचनात्मक चिन्तन करने की आदत का निर्माण करना।

(x) प्रमाणों की जाँच करके निष्कर्ष निकालने तथा ऐतिहासिक आँकड़ों का मूल्यांकन करने की भावना का विकास करना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(xi) ऐतिहासिक कल्पना विकसित करना।

(xii) ऐतिहासिक समय की भावना का विकास करना।

(xiii) सहायक साधनों के प्रयोग, विश्लेषण तथा निर्माण के कौशल (Ski... का विकास करना।

(xiv) छात्रों को सन्दर्भ सामग्री के प्रयोग तथा अध्ययन कौशल के विक... में सहायता देना है।

इतिहास-शिक्षक को विषय के प्रमुख उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् विशि... उद्देश्यों का निर्धारण करना होगा। वह ऐसा तब कर सकेगा जब वह प्रत्येक उद्दे... की विशिष्ट व्यवहार या इच्छित व्यवहारों (Desired Behaviours) के रू... व्याख्या करे।

माध्यमिक स्तर पर इतिहास के शिक्षण-उद्देश्य : Instructional Objecti... of History at Secondary Stage

1. **ज्ञानात्मक उद्देश्य : Knowledge Objective**—इतिहास के अध्ययन... सम्बन्धित धारणाओं, तथ्यों, घटनाओं, विचारों, समस्याओं, प्रवृत्तियों, आन्दोलन... व्यक्तित्वों, कालक्रम आदि का ज्ञान प्राप्त करना।

विशिष्टताएँ : Specifications

(i) छात्र तथ्यों, धारणाओं, घटनाओं आदि का प्रत्यास्मरण करेगा।
(ii) छात्र तथ्यों, धारणाओं आदि को पहचानेगा।
(iii) छात्र मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र आदि पर सूचनाओं को प्रदर्शित करे...
(iv) छात्र विभिन्न स्वरूपों में प्रस्तुत सूचनाओं को पढ़ेगा।

मूल्यांकन—इतिहास-शिक्षक इस शिक्षण-उद्देश्य का तीन प्रकार के—निबन्... त्मक, लघुउत्तरात्मक (Short Answer) तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों द्वारा मूल्यांकन... सकता है, उदाहरणार्थ—

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

पंजाब में निम्नलिखित में से कौन व्यक्ति भक्ति आन्दोलन का प्रवर्तक था...

(अ) कबीर
(ब) चैतन्य
(स) मीराबाई
(द) गुरु नानक।

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों में से प्रत्येक का 50 शब्दों में उत्तर दीजिए—

1. गुरु नानक ने जाति-पाँति को समाप्त करने के लिए क्या कदम उठाये...

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. अशोक के धर्माधिकारियों के नाम बताइए।

निबन्धात्मक प्रश्न

(i) गुरु नानक के जीवन तथा कार्यों के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं ?

(ii) वेलेजली ने ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए क्या कार्य किये ?

2. अवबोध या समझदारी : Understanding objective—छात्र इतिहास के अध्ययन से सम्बन्धित तथ्यों, प्रमुख घटनाओं, प्रवृत्तियों आदि की समझदारी प्राप्त करेगा।

विशिष्टताएँ : Specifications

(i) छात्र तथ्यों, घटनाओं तथा धारणाओं को वर्गीकृत करेगा।

(ii) छात्र उदाहरण देकर घटनाओं, प्रवृत्तियों आदि को स्पष्ट करेगा।

(iii) छात्र घटनाओं, धारणाओं, प्रवृत्तियों आदि की तुलना करेगा।

(iv) छात्र महत्त्वपूर्ण एवं महत्त्वहीन, प्रमुख तथा कम प्रमुख कारणों, प्रभावों, घटनाओं आदि में अन्तर करेगा।

(v) छात्र साध्य एवं साधनों, कारण एवं प्रभाव आदि के सम्बन्ध को पहचानेगा।

(vi) छात्र निर्धारित क्रम में तथ्यों, प्रवृत्तियों आदि को व्यवस्थित करेगा।

मूल्यांकन : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

भक्ति आन्दोलन के सूफी सन्तों तथा हिन्दू सन्तों का एक सिद्धान्त समान है—

(अ) मानवता के लिए सेवा-भावना,

(ब) शासक का संरक्षण प्राप्त करने की उत्कण्ठा,

(स) अपने धर्म की सर्वोच्चता को प्रदर्शित करने की इच्छा,

(द) धर्म-परिवर्तन सम्बन्धी क्रियाओं में सक्रिय भाग लेना।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न

हिन्दू सन्तों तथा सूफी सन्तों की तीन असमानताओं का उल्लेख कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

हिन्दू सन्तों तथा सूफी सन्तों के उपदेशों तथा कार्यों की तुलना करके यह बताइए कि उनमें से भारतीय जनता पर किनका प्रभाव अधिक पड़ा ?

3. आलोचनात्मक चिन्तन : Critical Thinking Objective—छात्र आलोचनात्मक चिन्तन का विकास करेगा।

विशिष्टताएँ

(i) छात्र समस्या को जानेगा।

(ii) छात्र समस्या का विश्लेषण करेगा।

(iii) छात्र प्रमाणों का संग्रह करेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iv) छात्र प्रमाण, तथ्यों तथा सम्मतियों के बीच अन्तर करेगा।
(v) छात्र प्रमाणों तथा तथ्यों का चयन करके उनको जाँचेगा।
(vi) छात्र निष्कर्षों को निकालेगा।
(vii) छात्र निष्कर्षों को सत्यापित करेगा।

मूल्यांकन : वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निम्नलिखित कथनों में से कौनसा कथन सबसे उपयुक्त है जो यह सि करता है कि अकबर ने सभी धर्मों को आदर की दृष्टि से देखा था।

(अ) अकबर ने राज्य के मामलों में उलेमाओं के हस्तक्षेप को रोक दिया।
(ब) अकबर ने दीनइलाही धर्म को चलाया।
(स) उसके दरबार में विभिन्न धर्मों के मानने वाले दरबारी थे।
(द) उसके शासन काल में धार्मिक अत्याचारों का अभाव था।

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

अकबर के दीनइलाही धर्म के तीन सिद्धान्तों को लिखिये।

निबन्धात्मक प्रश्न

अकबर की धार्मिक नीति की विवेचना कीजिए।

4. **कौशल : Skill Objective**—छात्र ऐतिहासिक तथ्यों को समझने त उनका अध्ययन करने के लिए व्यावहारिक कौशलों का विकास करेगा।

विशिष्टताएँ : Specifications

(i) छात्र ऐतिहासिक मानचित्र, चार्ट, रेखाचित्र आदि बनायेगा।
(ii) छात्र मॉडल तथा अन्य उपकरणों का निर्माण करेगा।

मूल्यांकन

1. भारत के मानचित्र में निम्नलिखित को दिखाओ—
   (i) सिकन्दर महान् का मार्ग
   (ii) अहमदशाह अब्दाली का मार्ग
   (iii) अकबर तथा औरंगजेब की राज्य-सीमाएँ
2. निम्नलिखित में से किसी एक की युद्ध-योजना बनाइए—
   (i) पानीपत का प्रथम युद्ध।
   (ii) प्लासी का युद्ध।
   (iii) खानवाह का युद्ध।
   (iv) पानीपत का तृतीय युद्ध।
3. निम्नलिखित घटनाओं को 1 सेमी=1 वर्ष की समय रेखा पर प्रदर्शित करो—
   (i) अकबर का गद्दी पर बैठना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ii) पानीपत का दूसरा युद्ध ।
(iii) अकबर द्वारा गुजरात पर अधिकार ।
(iv) हल्दीघाटी का युद्ध ।
(v) स्वयं को इमाम-ए-आदिल घोषित करना ।
(vi) दीनइलाही की स्थापना ।

प्रश्न-पत्र बनाते समय ध्यान रखने योग्य बातें—इतिहास शिक्षक को परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्र बनाते समय अग्रलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए—

जूनियर-कक्षाओं के स्तर के प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त : Principles for the Question Paper of Junior Stage

1. यह स्तर कहानी बताने का है। इसलिए इस स्तर पर हम ऐतिहासिक पाठ्य-वस्तु को कहानियों या आत्मकथाओं के रूप में रखते हैं। इसलिए हमको छात्रों से परीक्षा में कहानी या आत्मकथा लिखवानी चाहिए।
2. लघु-उत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाने चाहिए।
3. नवीन परीक्षा-प्रणाली का प्रयोग किया जाय।
4. शिक्षक छात्रों के समय-ज्ञान तथा तिथि-ज्ञान की जाँच करने के लिए कुछ प्रश्न रखें।
5. मौखिक परीक्षा भी होनी चाहिए, चाहे वह लिखित परीक्षा के पूर्व या पश्चात् ली जाय।

माध्यमिक स्तर के प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त : Principles for the Question Paper of Intermediate Stage

1. लघु-उत्तरात्मक प्रश्न पूछे जायँ।
2. कुछ प्रश्न निगमनीय प्रकृति (Deductive Nature) के हों। सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक दशा पर जो प्रश्न रखे जाएँ, वे स्पष्ट तथा मुख्य प्रकार के हों।
3. प्रश्न-पत्र में नवीन परीक्षा-प्रणाली के प्रश्न भी रखे जायँ।
4. कालानुक्रम की जाँच करने के लिए भी प्रश्न रखने चाहिए।
5. स्मरण-शक्ति तथा अभिव्यंजना-शक्ति की जाँच के लिए कुछ प्रश्न निबन्धात्मक प्रणाली के रखे जाएँ।
6. नियमानुसार एक प्रश्न मानचित्र के कार्य को दिया जाय।

उच्चस्तरीय प्रश्न-पत्र के लिए सिद्धान्त : Principles for the Question Paper of Senior Stage

इस स्तर पर निम्न प्रकार की प्रकृति के प्रश्न रखे जायँ—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. निबन्धात्मक;
2. कालानुक्रम की जाँच करने वाले प्रश्न;
3. वर्तमान काल की समस्याओं से सम्बन्धित प्रश्न;
4. निगमनीय प्रकृति वाले प्रश्न;
5. मानचित्र के कार्य में रुचि उत्पन्न करने वाले प्रश्न।

उच्च तथा माध्यमिक स्तर के इतिहास में प्रश्नपत्र में निम्न बातों को ध्यान में रखा जाय और उनमें अंकों का वितरण इस प्रकार हो :

1. तथ्य-ज्ञान के प्रश्न (आधुनिक परीक्षा-प्रणाली के अनुसार)
2. हस्तकार्य से सम्बन्धित प्रश्न (मानचित्र, युद्ध-योजना आदि)
3. साधारण योग्यता के प्रश्न (निबन्धात्मक प्रश्न)
4. स्रोतों से सम्बन्धित प्रश्न
5. लघु-उत्तरात्मक प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. What are the defects of present system of history examinati[on] and how can these be removed ? (A. U., 196[-])
   इतिहास की वर्तमान परीक्षा-प्रणाली में क्या दोष हैं और उनको किस प्र[कार] दूर किया जा सकता है ?
2. How should the outcomes of teaching History at middle st[age] be assessed ? Write your answer with reference of Essay ty[pe] (Versus) New Type Examinations. (Raj. B. Ed., 19[-])
   मिडिल स्तर पर इतिहास-शिक्षण की उपलब्धियों को किस प्रकार जाँचा जा[ना] चाहिए ? आप अपने उत्तर को निबन्धात्मक तथा नवीन प्रणाली के प्रश्नों [के] सन्दर्भ में दीजिए।
3. Critically examine the place of Examination in History a[nd] suggest improvement in the present pattern.
   —(Raj. B. Ed., 19[-])
   इतिहास में परीक्षा के स्थान को स्पष्ट कीजिए तथा वर्तमान परीक्षा-प्रणाली [में] सुधार लाने के लिए अपने सुझाव दीजिए।
4. "Present system of Examination in History fails to achieve [its] real object." Discuss this statement critically. Give suggesti[ons] for suitable tests in History. (P. U., 19[-])
   'इतिहास की वर्तमान परीक्षा-प्रणाली अपने वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त [करने] में असफल रहती है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। इतिहास में उ[पयुक्त] परीक्षणों के सुझाव दीजिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—कथनों की निम्नलिखित तालिका में कुछ कथन सत्य तथा कुछ असत्य हैं। आप जिस कथन को सत्य समझते हैं उसके समक्ष 'हाँ' तथा जिसे असत्य समझते हैं उसके सामने 'नहीं' लिख दीजिए—

(i) मूल्यांकन एक सकारात्मक प्रक्रिया है।........

(ii) मूल्यांकन में मापन का अभाव होता है।........

(iii) निरीक्षण-प्रविधि छात्रों के व्यवहार, क्रियाओं एवं बौद्धिक परिपक्वता के सम्बन्ध में प्रमाण प्रदान करती है।........

(iv) निबन्धात्मक परीक्षा में आत्मगत तत्त्व का अभाव पाया जाता है।........

(v) निबन्धात्मक परीक्षा वैध होती है।........

(vi) निबन्धात्मक परीक्षा विश्वसनीय एवं वस्तुनिष्ठ होती है।........

(vii) वस्तुनिष्ठ परीक्षा छात्रों को अनुमान के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है।........

(viii) वस्तुनिष्ठ परीक्षा वैध एवं विश्वसनीय होती है।........

(ix) वस्तुनिष्ठ परीक्षा के प्रश्नों का निर्माण सरलता से किया जा सकता है।........

(x) वस्तुनिष्ठ परीक्षा निबन्धात्मक परीक्षा की पूरक है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

23

उद्देश्यमुखी मूल्यांकन तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की रचना

OBJECTIVE BASED EVALUATION AND CONSTRUCTION OF OBJECTIVE TYPE TESTS

"The teacher should not regard item construction as a routine chore but rather as a challenging opportunity. Each item should present a new twist to the pupil in order to measure his real learning achievement." —*James M. Lee.*

विषय-प्रवेश

मूल्यांकन शिक्षण-प्रक्रिया का एक प्रमुख अंग है। यदि शिक्षण-प्रक्रिया (Teaching Process) का विश्लेषण किया जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षक सर्वप्रथम शिक्षण-उद्देश्य (Instructional Objectives) निर्धारित करता है। शिक्षण उद्देश्य के व्यवहारगत परिवर्तन (Behavioral Changes) हैं जिन्हें शिक्षण के द्वारा छात्रों में लाना चाहते हैं। ये व्यवहारगत परिवर्तन व्यक्तित्व के तीन पक्षों—ज्ञानात्मक (Cognitive) पक्ष, भावात्मक (Effective) पक्ष तथा क्रियात्मक (Conative) पक्ष से सम्बन्धित होते हैं। वस्तुतः शिक्षण-उद्देश्य वे दिशा निर्देश हैं जिनकी ओर शिक्षण की सम्पूर्ण प्रक्रिया प्रवाहित होती है।

शिक्षण-उद्देश्य निर्धारित करने के पश्चात् शिक्षक शिक्षण-परिस्थिति (Teaching Situation) का निर्माण करता है, जिन्हें हम अध्ययन-अध्यापन परिस्थिति भी कहते हैं। शिक्षण-परिस्थिति के लिए शिक्षक अवसरानुकूल शिक्षण-विधियों, शिक्षण-प्रविधियों (Teaching Techniques) का सहारा लेता है। परन्तु शिक्षण-परिस्थिति का निर्माण कर लेने से ही शिक्षण-प्रक्रिया पूर्ण नहीं होती। अन्त में यह ज्ञात करना पड़ता है कि छात्र किस सीमा तक शिक्षण-उद्देश्यों को अर्जित कर सके हैं या शिक्षण-परिस्थिति उद्देश्यों की प्राप्ति में कहाँ तक सफल रही है। यह अन्तिम पक्ष मूल्यांकन के क्षेत्राधिकार में आता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उद्देश्यमुखी (Objective Based) मूल्यांकन

वस्तुतः उद्देश्यमुखी शिक्षण तथा उद्देश्यमुखी मूल्यांकन शिक्षण-प्रक्रिया के मूलभूत स्तम्भ हैं। इनके अभाव में प्रभावी शिक्षण की बात करना व्यर्थ होगा। उद्देश्यमुखी शिक्षण का अर्थ है—उद्देश्य पर आधारित शिक्षण अर्थात् जो शिक्षण, शिक्षण-उद्देश्यों (instructional objectives) के अनुरूप होता है, उसे उद्देश्यमुखी शिक्षण कहा जाता है। शिक्षण-कार्य को वैज्ञानिक ढंग से आयोजित करने के लिए शिक्षण-उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।

उद्देश्यमुखी मूल्यांकन का अर्थ है—उद्देश्य के अनुरूप मूल्यांकन की प्रविधि का चयन या निर्माण करना तथा उससे मूल्यांकन करना। सभी उद्देश्यों की प्राप्ति किसी एक प्रकार की शिक्षण-परिस्थिति से नहीं हो सकती। इसी प्रकार सभी विभिन्न उद्देश्यों का मूल्यांकन भी एक प्रकार की मूल्यांकन प्रविधि से नहीं हो सकता। मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षा-विशेषज्ञों ने विभिन्न उद्देश्यों के मूल्यांकन के लिये विभिन्न प्रविधियों का निर्माण किया है। मूल्यांकन की प्रविधियों को अग्रांकित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है—

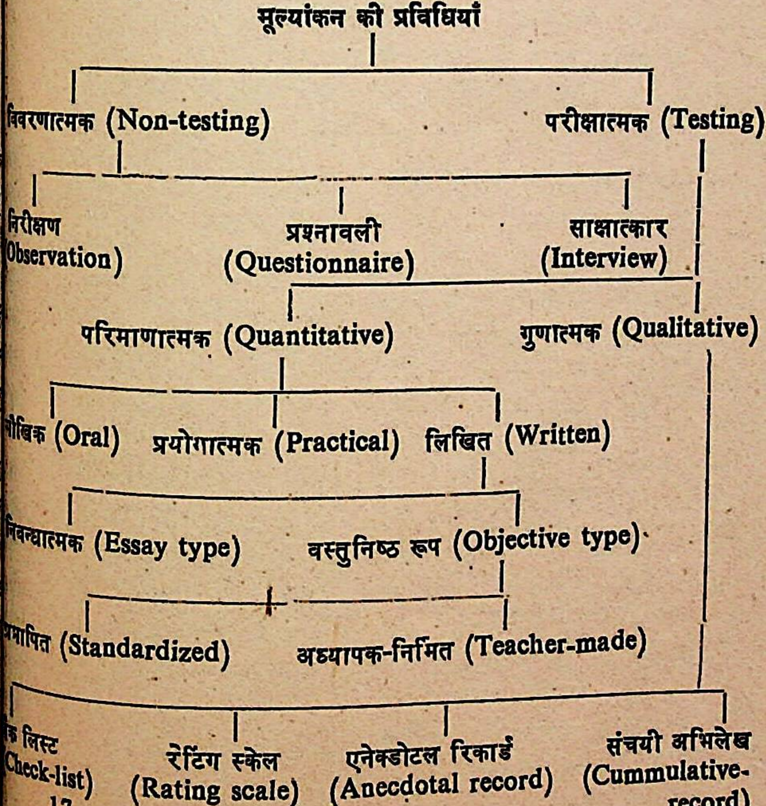

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परीक्षण (Test)—शिक्षा एवं मनोविज्ञान में अनेक प्रकार की मापन-प्रविधि या परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। इन परीक्षणों को विभिन्नों दृष्टिकोणों तथा विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है। ये वर्गीकरण अग्रांकित हैं—

1. **प्रश्न रचना के आधार पर**
   (i) निबन्धात्मक या मुक्त उत्तर प्रश्न
   (ii) वस्तुनिष्ठ या सीमित उत्तर पद
   (iii) क्रियात्मक या अशाब्दिक परीक्षण
2. **प्रशासन के आधार पर**
   (i) व्यक्तिगत और सामूहिक परीक्षण
   (ii) मौखिक और लिखित परीक्षण
   (iii) गति और शक्ति परीक्षण
3. **प्रमापीकरण के आधार पर**
   (i) अनौपचारिक, अप्रमापीकृत या अध्यापक-निर्मित परीक्षण
   (ii) औपचारिक या प्रमापीकृत परीक्षण
4. **फलांक-गणना (Scoring) के आधार पर**
   (i) स्टेन्सिल की गणना पर आश्रित
   (ii) मशीनों की गणना पर आश्रित
5. **मापित गुणों के आधार पर**

(क) बुद्धि परीक्षण
   (i) शाब्दिक एवं अशाब्दिक
   (ii) व्यक्तिगत एवं सामूहिक

(ख) विशिष्ट अभियोग्यता (Ability) परीक्षण
   (i) कलात्मक
   (ii) भाषात्मक
   (iii) यंत्रात्मक
   (iv) व्यवसायात्मक
   (v) लिपिकीय
   (vi) अन्य

(ग) निष्पत्ति परीक्षण :
   (i) सामान्य या सर्वेपरीक्षण
   (ii) नैदानिक परीक्षण
   (iii) व्यवसाय चयन परीक्षण

(घ) व्यक्तित्व एवं समायोजन परीक्षण
   (i) व्यक्तित्व तालिकाएँ (Personality Inventories)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ii) साक्षात्कार
(iii) प्रक्षेपण-विधियाँ (Projective)
(iv) परिस्थितिक परीक्षण
(v) रुचि-परीक्षण
(vi) अभिवृत्ति-परीक्षण

उद्देश्यमुखी परीक्षण तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण में अन्तर

उद्देश्यमुखी (Objective based) तथा वस्तुनिष्ठ रूप (Objective type) परीक्षणों के अन्तर को निम्न तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है—

उद्देश्यमुखी परीक्षण	वस्तुनिष्ठ परीक्षण
1. यह उद्देश्यों पर आधारित होता है।	1. यह वस्तुनिष्ठता पर आधारित होता है। परन्तु वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का निर्माण उद्देश्यों के अनुरूप किया जाता है।
2. इसमें वस्तुनिष्ठ पदों के साथ-साथ निबन्धात्मक तथा लघुउत्तरीय प्रश्न भी सम्मिलित होते हैं।	2. इसमें मात्र वस्तुनिष्ठ रूप प्रश्न या पद ही होते हैं।
3. इस प्रकार के परीक्षण में वस्तुनिष्ठ परीक्षण की अपेक्षा विश्वसनीयता कम रहती है।	3. ये परीक्षण अधिक विश्वसनीय होते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की निर्माण-प्रक्रिया

दिन-प्रतिदिन नवीन प्रकार या वस्तुनिष्ठ परीक्षणों (New type or Objective type test) का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। हमारे देश में निबन्धात्मक परीक्षण के लिये अब उतनी श्रद्धा नहीं रही क्योंकि इसमें बहुत-से दोष हैं। कुछ परिस्थितियों में निबन्धात्मक तथा नवीन प्रकार के परीक्षणों का मिला-जुला रूप प्रयुक्त होता है जिससे दोनों के आधार पर छात्रों की योग्यता का उचित मापन हो सके। यदि निबन्धात्मक प्रश्नों को उद्देश्यमुखी (Objective Based) बनाकर प्रयुक्त किया जाय तो उनसे भी अधिक लाभ उठाया जा सकता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में निबन्धात्मक परीक्षणों की अपेक्षा वस्तुनिष्ठता (Objectivity) अधिक होती है। परन्तु इनका भी उद्देश्यमुखी मूल्यांकन के लिए उद्देश्यनिष्ठ (Objective Based) होना आवश्यक है।

नवीन प्रकार या वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की रचना सरल नहीं है। इनके निर्माण की एक पूरी प्रक्रिया है और परीक्षणकर्त्ता या परीक्षण निर्माणकर्त्ता के लिए इससे परिचित होना एवं इसमें प्रशिक्षण प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परीक्षण-पद-निर्माण के सामान्य सिद्धान्त—जेम्स एम० ली (James Lee) के अनुसार परीक्षण-पदों का निर्माण करते समय परीक्षण-निर्माणकर्ता निम्नलिखित सामान्य सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए—

1. प्रत्येक पद का निर्माण ऐसे ढंग से किया जाय जिससे वह एक शिक्षण-उद्देश्य की जाँच कर सके। यदि किसी पद (Item) या प्रश्न में प्रश्न निहित हैं तो शुद्ध रूप से निदान करना असम्भव होगा।

2. परीक्षण में अस्पष्ट या महत्त्वहीन प्रश्नों को स्थान नहीं देना चाहिए।

3. प्रश्न में उस विषय-वस्तु को स्थान नहीं देना चाहिए जो उसके के लिए अनावश्यक है।

4. जब किसी प्रश्न द्वारा सिद्धान्त या सम्मति के विषय में पूछा जाय उसके लेखक का उल्लेख करना चाहिए।

5. प्रश्नों का निर्माण ऐसे ढंग से किया जाय जिससे सही उत्तर के अनुमान लगाने के अवसरों को कम किया जा सके।

6. प्रत्येक प्रश्न भाषा, रचना एवं व्याकरण की दृष्टि से उपयुक्त हो।

7. प्रश्न के प्रत्येक शब्द का निश्चित अर्थ होना चाहिए जिससे अस्पष्टता एवं अनिश्चितता को कम किया जा सके।

8. प्रश्नों में विशिष्ट निर्धारकों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उदाहरणार्थ प्रश्नों में 'सदैव' तथा 'केवल' या 'मात्र' नामक विशिष्ट निर्धारक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाय।

9. परीक्षण की वैधता को कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि में प्रचलित शब्दों या सूत्रों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

वस्तुनिष्ठ परीक्षणों की निर्माण-प्रक्रिया के सोपान

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के निर्माण में अग्रांकित सोपानों का अनुसरण पड़ता है—

1. उद्देश्य-निर्धारण (Determination of Objectives)
2. पदों या प्रश्नों का निर्माण तथा उनका मूल्यांकन (Preparation of test items and their evaluation)
3. निर्मित प्रश्नों या पदों को लागू करना (Trying out of the items)
4. पद या प्रश्न विश्लेषण (Item-analysis)
5. परीक्षण का अन्तिम प्रारूप (Final form of the test)
6. मान-निर्धारण (Determination of norms)
7. विश्वसनीयता-निर्धारण (Estimation of reliability)
8. वैधता-निर्धारण (Estimation of Validity)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सोपान 1—उद्देश्य-निर्धारण

वस्तुनिष्ठ परीक्षण की निर्माण-प्रक्रिया का पहला सोपान है—परीक्षण द्वारा [illegible]ये जाने वाले शिक्षण-उद्देश्यों (ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक) का [निर्धा]रण करना। उद्देश्यों के निर्धारण में इतिहास के शिक्षक को निम्नलिखित बातों [प]र ध्यान देना आवश्यक है—

1. निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
2. प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तकों का सर्वेक्षण करना।
3. विषय से सम्बन्धित अनुभवी विशेषज्ञों के मतों का संकलन करना।
4. विषय के अन्य शिक्षकों के विचारों का संग्रह करना।

इस सोपान के अन्तर्गत द्वि-भुजी चार्ट (Two-dimentional chart) का [प्रय]ोग आवश्यक है। इसके द्वारा परीक्षण-बिन्दुओं का निर्धारण सम्भव है।

[सो]पान 2—पदों या प्रश्नों का निर्माण तथा उनका मूल्यांकन

उद्देश्यों के निर्धारण के उपरान्त पदों का निर्माण किया जाता है। वस्तुनिष्ठ [परी]क्षण के पद दो प्रकार के होते हैं—(1) प्रत्यास्मरण रूप (Recall type); तथा [(2)] अभिज्ञान रूप (Recognition type)। प्रत्यास्मरण रूप में बालकों के प्रत्या-[स्मर]ण की जाँच होती है। अभिज्ञान रूप में बालकों की पहचानने की शक्ति की [जाँ]च होती है।

प्रत्यास्मरण रूप पद निम्नलिखित प्रकार के होते हैं—

(अ) साधारण प्रत्यास्मरण रूप (Simple recall type)

(ब) रिक्त स्थान पूर्ति रूप (Completion type)

अभिज्ञान रूप पदों के कई उपभेद होते हैं, जो इस प्रकार हैं—

(क) एकान्तर प्रत्युत्तर रूप (Alternate response type)

(ख) बहुनिर्वचन या बहुविकल्पीय रूप (Multiple choice type)

(ग) तुल्य या क्रमबद्धकरण रूप (Matching type)

(घ) वर्गीकरण रूप (Classification type).

उपर्युक्त प्रकार के पदों के निर्माण से सम्बन्धित बातों का विवेचन आगे की [पंक्ति]यों में किया जा रहा है—

(अ) साधारण प्रत्यास्मरण रूप—इस श्रेणी में आने वाले रूप मुख्यतः छात्रों [की] प्रत्यास्मरण शक्ति की जाँच करते हैं। इस प्रकार के पदों का प्रयोग मुख्यतः [तथ्या]त्मक ज्ञान की जाँच करने के लिए किया जाता है। छात्र इतिहास से सम्बन्धित [व्यक्तिय]ों, घटनाओं, तिथियों तथा सम्बन्धों को किस रूप में पुनः स्मरण कर सकते हैं, [यह] इन प्रश्नों द्वारा ज्ञात किया जाता है। इस प्रकार के पदों या प्रश्नों का निर्माण [कर]ते समय अग्रांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. सर्वप्रथम इन पदों द्वारा परीक्षित किये जाने वाले उद्देश्य का नि… कर लेना चाहिए। उदाहरणार्थ—यदि शिक्षक छात्रों के तथ्यात्मक ज्ञान की… करना चाहता है तो उसे तथ्यों पर आधारित प्रश्नों की रचना करनी चाहिए—

उदाहरणार्थ—

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर उनके सामने दिये कोष्ठक में लि…

(i) भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम संग्राम कब हुआ ? ( )

(ii) अकबर महान् की मृत्यु कब हुई ? ( )

(iii) पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ ? ( )

(iv) हल्दीघाटी का युद्ध किन-किन के बीच हुआ ? ( )

(v) ताजमहल का निर्माण किसने कराया था ? ( )

(vi) अकबर ने कौन-सा धर्म चलाया था ? ( )

(vii) स्वतन्त्रता से पूर्व बंगाल का विभाजन किस व्यक्ति ने किया था ? ( )

(viii) गुरु नानक ने किस धर्म को चलाया था ? ( )

(ix) कनवाह का युद्ध किन-किन के बीच हुआ था ? ( )

(x) प्लासी का युद्ध कब हुआ था ? ( )

2. प्रश्न निश्चित एवं स्पष्ट हों। उनमें अस्पष्टता एवं अनिश्चितता… होनी चाहिए।

3. प्रश्न भाषा, व्याकरण एवं क्रम के दृष्टिकोण से शुद्ध होने चाहिए।

4. प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर आना चाहिए।

(ब) रिक्त स्थान पूर्ति रूप—ये पद या प्रश्न अपूर्ण कथनों के रूप में… किये जाते हैं। छात्र अपूर्ण स्थानों की पूर्ति उपयुक्त शब्द या वाक्यांश से कर… इस प्रकार के पद सम्पूर्ण प्रत्यास्मरण की अपेक्षा करते हैं। इनके द्वारा भी त… ज्ञान की जाँच की जाती है। ये 'कौन', 'कब' तथा 'कहाँ' से सम्बन्धित विष… के बारे में पूछते हैं। जेम्स एम० ली के अनुसार इस प्रकार के प्रश्नों की रचना… समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(i) कथन में केवल एक ही रिक्त स्थान छोड़ा जाना चाहिए, उदाहरण…

1. महात्मा गौतम बुद्ध ने……ई० पू० में अपने शरीर को त्याग…
2. ब्रह्मसमाज के संस्थापक……थे।
3. शिवाजी ने……में अफजलखाँ का वध किया था।
4. अकबर ने……में बुलन्द दरवाजे का निर्माण कराया था।
5. मुहम्मद बिन तुगलक ने……का सिक्का चलाया।

(ii) इस प्रकार के प्रश्नों के कथनों में शब्दों का समावेश ऐसा हो कि… एक ही आये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(iii) कथन पाठ्य-पुस्तक में से सीधे ही ज्यों के त्यों न लिये जायें ।

(iv) रिक्त स्थान कथन के अन्त में छोड़ा जाय । इससे अंकन करने वाले तथा छात्र दोनों को सुविधा रहेगी ।

रिक्त स्थान पूर्ति पदों के गुण

(i) ऐसे प्रश्नों की रचना और अंकन सरल है ।

(ii) इसमें छात्र को एक निश्चित उत्तर देना पड़ता है । इसमें अनुमान नहीं चलता ।

(iii) इन प्रश्नों में छात्रों की रटने की प्रवृत्ति के लिए कोई स्थान नहीं है ।

(iv) ज्ञान विषयों (Knowledge Subjects) के परीक्षण के लिए ये प्रश्न अत्यन्त उपयुक्त हैं ।

(v) इनके द्वारा छात्रों की अध्ययन प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है ।

पहचान रूप

(क) एकान्तर प्रत्युत्तर रूप—एकान्तर प्रत्युत्तर रूप पद वह होता है जिसमें एक कथन होता है और वह सत्य या असत्य होता है । जैसा 'एकान्तर प्रत्युत्तर' नाम से स्पष्ट है कि इसमें छात्र से दो विकल्पों में से एक को छाँटने के लिए कहा जाता है । यह रूप सत्य-असत्य (True-false type) के नाम से भी प्रसिद्ध है । ग्रीनस्टोन ने लिखा है—"सत्य-असत्य वाले प्रश्नों के उत्तर पर अंक देना सरल तथा वस्तुनिष्ठ होता है । इस प्रकार के पदों का निर्माण करना भी सरल है । परन्तु यह बात वास्तविक नहीं है । व्यवहार में इस तरह के प्रश्न बनाने में बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है ताकि जिस योग्यता को मापना है, उसका वास्तव में ही पता लग सके ।" इन प्रश्नों का कभी-कभी 'हाँ' (Yes) या 'नहीं' (No) में उत्तर देना होता है । इस कारण इन्हें 'हाँ' या 'नहीं' वाले प्रश्न भी कहा जाता है ।

उदाहरण

निर्देश—निम्नलिखित कथन सही हों तो 'सत्य' और गलत हों तो 'असत्य' रेखांकित कीजिए—

(i) महावीर स्वामीजी का जन्म गोतम बुद्ध से पूर्व हुआ था । (सत्य/असत्य)

(ii) बलवन ने पृथ्वीराज चौहान को तराइन के मैदान में हराया था । (सत्य/असत्य)

(iii) अलाउद्दीन खिलजी ने सेना के लिए राशनिंग व्यवस्था लागू की थी । (सत्य/असत्य)

(iv) 1765 ई० शुजाउद्दौला कोरा के युद्ध में विजयी हुआ । (सत्य/असत्य)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(v) पानीपत के तृतीय युद्ध में मराठे अब्दाली के विरुद्ध विजयी हुए। (सत्य/असत्य)

(vi) 1802 ई० में पेशवा ने अंग्रेजों के साथ बेसिन की सन्धि की। (सत्य/असत्य)

(vii) अकबर ने दीन-इलाही धर्म को चलाया। (सत्य/असत्य)

(viii) औरंगजेब ने शिवाजी को अपने दरबार में आदर के साथ राजकुमारों की श्रेणी में बिठलाया। (सत्य/असत्य)

(ix) भारत में 1919 के एक्ट के अनुसार केन्द्रीय व्यवस्थापिका में दो सदनों की व्यवस्था की गई। (सत्य/असत्य)

(x) समुद्रगुप्त को वीणा बजाने का बड़ा शौक था। (सत्य/असत्य)

इस प्रकार के पदों या प्रश्नों की रचना करते समय अग्रांकित सिद्धान्तों को ध्यान में रखना चाहिए—

1. प्रश्न पूर्णतया स्पष्ट होना चाहिए। इसमें किसी प्रकार की भी अनिश्चितता नहीं होनी चाहिए।

2. दोहरे कथनों से बचिए।

3. प्रश्नों में ऐसे शब्दों का प्रयोग करो जिनके अर्थ निश्चित एवं संक्षिप्त हों।

4. प्रश्नों में जटिल तथा लम्बे कथनों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

5. प्रश्नों में इस प्रकार के निर्धारक शब्दों—'सब', 'केवल', 'कोई नहीं', 'सदैव' का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसे प्रश्न छात्रों को मोटे तौर पर साधारणीकरण के लिए तत्पर बनाते हैं। उदाहरणार्थ—इस प्रकार के शब्दों से युक्त कथन असत्य होते हैं और 'नियमित रूप से', 'अधिकतर', 'कुछ', 'अवसर' वाले शब्दों से युक्त कथन सत्य होते हैं।

6. निर्देश बहुत स्पष्ट तथा सरल शब्दों में दिये जायँ। सत्य/असत्य उत्तर के समक्ष 'T' तथा 'F' अक्षर मत लिखवाइये। इन अक्षरों के प्रयोग से छात्र धोखा दे सकते हैं। वे 'T' को सरलता से 'F' में और 'F' को 'T' में परिवर्तित कर सकते हैं।

7. सम्पूर्ण प्रश्न संख्या का $\frac{1}{3}$ भाग कम से कम सत्य या असत्य होना चाहिए।

8. सत्य कथनों को 'नहीं' शब्द का प्रयोग करके असत्य मत बनाइये।

गुण

1. ऐसे पदों की रचना सरल है।

2. सभी विषयों की परीक्षा में इनका प्रयोग व्यापक रूप में किया जा सकता है।

3. कम समय में अधिक प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है।

4. कम समय में अधिक प्रश्नों को जाँचा जा सकता है। साथ ही अंकन वस्तुनिष्ठ होता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5. ये पद निर्णय एवं तर्क शक्ति के प्रयोग पर आधारित हैं। ऐसे पद मात्र स्मरण शक्ति पर आधारित नहीं होते।

6. इनमें विश्वसनीयता अधिक है।

(ख) बहुनिर्वचन रूप—ऐसे पदों में एक कथन के उत्तर के रूप में कई विकल्प दिये रहते हैं। छात्र को इन विकल्पों में से सबसे उपयुक्त अथवा सही को छाँटना पड़ता है। इस प्रकार के पद जटिल विचारों तथा व्याख्याओं की जाँच के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। बहुनिर्वचन रूप के पद सत्य/असत्य प्रश्नों की अपेक्षा अच्छे होते हैं क्योंकि सत्य/असत्य पदों में उत्तर दो विकल्पों तक सीमित रहता है जिससे उनमें अनुमान से उत्तर छाँटने की अधिक सम्भावना रहती है।

मॉयजरस् व मेयरस् ने लिखा है कि "इस प्रकार के प्रश्नों से परिभाषा, कारण-प्रभाव, सम्बन्ध, अशुद्धियों के भेदों की पहचान, दो तथ्यों या धारणाओं की समानता एवं असमानता, क्रम या व्यवस्था, विश्लेषण तथा संश्लेषण की जाँच की जा सकती है।" इस प्रकार के पदों के कई उपभेद हैं; यथा—

(अ) जिनमें केवल सही उत्तर को चुनना पड़ता है।
(ब) जिनमें सबसे उपयुक्त उत्तर चुनना पड़ता है।
(स) जिनमें गलत उत्तर चुनना पड़ता है।

(अ) जिनमें सही उत्तर को चुनना पड़ता है—यह बहुनिर्वचन पदों का सबसे अधिक प्रचलित रूप है। इसके अन्तर्गत एक कथन के अनेक सम्भाव्य उत्तर होते हैं। परन्तु इनमें केवल एक ही सही होता है। छात्र को उस उत्तर को चुनने के लिए निर्देश दिया जाता है।

उदाहरण

निर्देश—अधोलिखित कथनों के पाँच सम्भावित उत्तर दिये हुए हैं जिनमें से एक सही है। उस सही उत्तर के समक्ष (√) का निशान लगाइए—

(i) शाहजहाँ ने मोती मस्जिद का निर्माण
(अ) लाहौर,
(ब) हैदराबाद,
(स) दिल्ली,
(द) जोधपुर,
(य) आगरा के लाल किले में करवाया था।

(ii) शिवाजी का जन्म
(अ) 1552 ई०,
(ब) 1707 ई०,
(स) 1605 ई०,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(द) 1682 ई०,

(य) 1630 ई० में हुआ था।

(iii) मुमताजमहल का पति

(अ) अकबर,

(ब) जहाँगीर,

(स) दाराशिकोह,

(द) औरंगजेब,

(य) शाहजहाँ था।

(ब) जिसमें सबसे उपयुक्त उत्तर को चुनना पड़ता है—इस प्रकार के प्रश्नों में एक कथन के अनेक सही उत्तर होते हैं जिनमें सर्वोत्तम उत्तर को चुनने के लिए आदेश दिया जाता है।

उदाहरण

निर्देश—निम्नलिखित कथन के चार उत्तर दिये हुए हैं। इनमें सभी उत्तर सही हैं परन्तु उनमें एक उत्तर सबसे अधिक उपयुक्त है। उस सर्वोत्तम उत्तर के समक्ष (✓) का निशान लगाइये—

मराठे पानीपत के मैदान में हार गये थे, क्योंकि

(क) उनके पास रसद की कमी थी।

(ख) उनकी सेना कम थी।

(ग) उनकी सेना के साथ स्त्रियाँ भी रहती थीं।

(घ) उन्होंने छापामार रणनीति छोड़ दी थी।

(स) जिनमें गलत उत्तर को चुनना पड़ता है—इस प्रकार के प्रश्नों में एक प्रश्न के कई उत्तर दिये रहते हैं, परन्तु उनमें एक उत्तर गलत होता है जिसे छात्रों को छाँटने का आदेश दिया जाता है।

उदहरण

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्न के कई उत्तर दिये गये हैं। उनमें से एक उत्तर गलत है। गलत उत्तर के समक्ष (×) का निशान लगाइये—

अकबर ने राणाप्रताप पर आक्रमण किया था, क्योंकि

(i) वह राणाप्रताप के अभिमान को चूर करना चाहता था;

(ii) वह उसके राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाना चाहता था;

(iii) वह उनके परिवार से वैवाहिक सम्बन्ध कायम करना चाहता था,

(iv) वह राणा को बलपूर्वक ईसाई धर्म का अनुयायी बनाना चाहता था।

जेम्स एम० ली के अनुसार बहुनिर्वचन रूप पदों की रचना करते समय अग्रांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. पद या एकांश को प्रश्न के रूप में न बनाकर अपूर्ण कथन के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरणार्थ—

बाबर और राणासांगा के बीच
- (i) हल्दी घाटी,
- (ii) पानीपत,
- (iii) प्लासी,
- (iv) चौसा,
- (v) कनवाह या खानवाह के मैदान में हुआ था।

2. पद की बनावट ऐसी होनी चाहिए कि उपयुक्त उत्तर मध्य में न आकर अन्त में आवे।

उदाहरणार्थ

बाबर पानीपत के मैदान में विजयी हुआ था, क्योंकि
- (i) इब्राहीम की सेना कम थी;
- (ii) इब्राहीम की सेना के पास रसद की कमी थी;
- (iii) इब्राहीम ने छापामार रणनीति का प्रयोग किया था;
- (iv) बाबर ने तुलगमा नीति का अनुसरण करके युद्ध किया था।

3. प्रत्येक पद में चार या पाँच विकल्प दिये जाने चाहिए।
4. विकल्पों को लिखने से पूर्व यह निश्चित कर लेना चाहिए कि उनमें में एक विकल्प सही या अन्य की अपेक्षा उत्तम है या नहीं।

गुण

1. अभिज्ञान के मापन में ये पद अद्वितीय हैं।
2. ली के शब्दों में, "निर्णयों के परीक्षण हेतु बहुनिर्वचन पद एकमात्र साधन है।
3. लिण्डक्विस्ट के शब्दों में, "इस प्रकार के पद या प्रश्न अन्य रूपों की अपेक्षा निश्चित रूप से उच्चकोटि के होते हैं, क्योंकि इनके द्वारा तर्कपूर्ण चिन्तन तथा सूझबूझ की भी जाँच होती है।"
4. कई विकल्प होने के नाते अनुमान लगाने की आशंका कम हो जाती है।
5. इनमें वस्तुनिष्ठता अधिक होती है। इस कारण इनका अंकन सरलता से हो जाता है।

(ग) तुल्य या क्रमबद्धकरण रूप

तुल्य पदों या प्रश्नों में सम्बन्धित पदों (शब्दों, घटनाओं, तिथियों, तथ्यों या वाक्यांशों) को दो समानान्तर स्तम्भों में रखा जाता है। छात्र से एक स्तम्भ के पदों की दूसरे स्तम्भ के तदनुसारी पदों के साथ तुलना करने के लिए कहा जाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रत्येक तुलित (Paired) जोड़े पर पृथक्-पृथक् नम्बर दिये जाते हैं। तुल्य पद इस कारण महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि छात्र इनके द्वारा सम्बन्धों की पहचान करना सीख जाते हैं। उदाहरणार्थ—नीचे स्तम्भ (अ) में कुछ घटनाएँ दी हुई हैं। उनके सामने स्तम्भ (ब) में अव्यवस्थित रूप में तिथियाँ दी गई हैं। प्रत्येक तिथि को उससे सम्बन्धित घटना के बायीं ओर दिये गये कोष्ठकों में लिखिए—

	स्तम्भ 'अ'	स्तम्भ 'ब'
( )	1. पानीपत का प्रथम युद्ध	(i) 1857 ई०
( )	2. प्लासी का युद्ध	(ii) 1527 ई०
( )	3. औरंगजेब की मृत्यु	(iii) 1757 ई०
( )	4. फतेहपुरसीकरी का युद्ध	(iv) 1526 ई०
( )	5. गौतमबुद्ध का देहावसान	(v) 1192 ई०
( )	6. अकबर की मृत्यु	(vi) 1800 ई०
( )	7. पृथ्वीराज की मृत्यु	(vii) 1605 ई०
( )	8. बाबर की मृत्यु	(viii) 1707 ई०
( )	9. अशोक की मृत्यु	(ix) 1576 ई०
( )	10. नाना फड़नवीस की मृत्यु	(x) 433 ई० पू०
( )	11. सिपाही विद्रोह	(xi) 1530 ई०
( )	12. हल्दी घाटी का युद्ध	(xii) 232 ई०
		(xiii) 1680 ई०
		(xiv) 1552 ई०

तुल्य पदों की रचना करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए—

1. प्रत्येक तुल्य पद के सभी तथ्य एक ही पृष्ठ पर लिखे जाने चाहिए।
2. दोनों स्तम्भों में बराबर पद नहीं दिये जायँ।
3. तुल्य पदों के स्तम्भों को शीर्षात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
4. अनुमान लगाने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए दूसरे स्तम्भ में अधिक पूरक कथन दिये जायँ।
5. निर्देश सुस्पष्ट एवं निश्चित होने चाहिए।

लिण्डक्विस्ट (Lindquist) के मतानुसार, "तुल्य पद विशेषतः 'कब', 'क्या', 'कौन' बोधक परिस्थितियों अथवा योग्यताओं की पहचान एवं उनके निर्धारण हेतु अधिक सफल हैं।"

(घ) वर्गीकरण रूप

वर्गीकरण रूप तुल्य पद के प्रश्नों का एक अन्य रूप माना जा सकता है। इस प्रकार के प्रश्नों के अन्तर्गत कुछ ऐसे शब्दों का समूह छात्रों के समक्ष रखा जाता है

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जिनमें से एक शब्द 'असंगत' या 'बेमेल' होता है। छात्र से उस बेमेल शब्द को छाँटने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों की रचना करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक प्रश्न में पाँच या छः शब्द हों। साथ ही उनमें एक सम्बन्ध हो अर्थात् वे सम्बन्ध की दृष्टि से बिखरे हुए नहीं हों।

उदाहरणार्थ

निर्देश—प्रत्येक प्रश्न में पाँच शब्द दिए हुए हैं। प्रत्येक प्रश्न के इन पाँच शब्दों में एक ऐसा शब्द है जो अन्य चार शब्दों की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। प्रत्येक प्रश्न में ऐसे शब्द को रेखांकित करो।

1. पानीपत का तृतीय युद्ध, चौसा का युद्ध, कनवाह का युद्ध, सहायक संधि, धरमत का युद्ध।

2. सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त मौर्य, समुद्रगुप्त, सम्राट हर्षवर्धन, लॉर्ड वेलेजली।

3. ग्वालियर, दिल्ली, फतेहपुरसीकरी, आगरा, कानपुर।

4. आइने-अकबरी, बाबरनामा, तुजुके-जहाँगीर, कठोपनिषद, फतुहाते फीरोजशाही।

5. मुद्राराक्षस, हर्षचरितम्, विक्रमांकदेव चरित, रघुवंशम्, मालविकाग्निमित्रम्।

सोपान 3—निर्मित पदों या प्रश्नों को लागू करना

प्रश्नों या पदों का निर्माण करने के बाद परीक्षणकर्त्ता को प्रतिनिधि-समूह (Representative Sample) का चयन करना चाहिए। यह समूह ऐसे छात्रों का होता है जिनके लिए परीक्षण तैयार किया गया है। समूह का चयन करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए—

(i) समूह उस बड़े समुदाय का प्रतिनिधि हो जिसके लिए परीक्षण तैयार किया जा रहा है।

(ii) समूह का चयन परीक्षणकर्त्ता के वैयक्तिक पक्षपातों (Bias) से पृथक् रहकर किया जाना चाहिए।

समूह के चयन के बाद समूह के छात्रों को निर्मित पदों को दिया जाना चाहिए। जब समूह के 90 प्रतिशत छात्र उनका उत्तर दे दें तब अन्य शेष सभी छात्रों से उत्तर-पुस्तिकाएँ ले लेनी चाहिए। इसके उपरान्त उनका अंकन किया जाय। अंकन पूर्व निर्धारित उत्तर कुंजी (Answer key) के अनुसार किया जाना चाहिए। बहु-निर्वचन अथवा एकान्तर प्रत्युत्तर रूप के प्रश्नों में अंकन में शुद्धि-सूत्र (Correction Formula) का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे अनुमान के तत्त्वों को दूर किया जा सके। सामान्यतः इसके लिए अग्रांकित सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

$$S = R - \frac{W}{N-1}$$

जिसमें S=शुद्ध किया हुआ अंक (Score corrected for guessing factor)

R=सही उत्तरों की संख्या

W=अशुद्ध उत्तरों की संख्या

N=प्रत्येक प्रश्न में विकल्पों की संख्या

इस सूत्र को निम्नांकित उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है मान परीक्षण में 60 बहुनिर्वचन वाले पद हैं और प्रत्येक पद में चार विकल्प हैं। यदि एक छात्र की स्थिति इन पदों में इस प्रकार है—

सही उत्तरों की संख्या=44

अशुद्ध उत्तरों की संख्या=16

यदि प्रत्येक प्रश्न एक अंक का है तो इस छात्र का फलांक 44 होना चाहिए पर सम्भव है कि उसने कुछ पदों के अनुमान से उत्तर दिए हों। अतः इस अंक को शुद्ध करने के लिए शुद्धि-सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है। शुद्धि-सूत्र में आवश्यक आँकड़ों को रखने पर,

$$S = 44 - \frac{16}{4-1}$$

$$= \frac{132-16}{3} \qquad = \frac{116}{3} = \text{लगभग } 39$$

अर्थात् उस छात्र का फलांक 39 होगा, 44 नहीं।

सोपान 4—पद या प्रश्न विश्लेषण

फ्रेडरिक बी० डेविस (Fredrick B. Davis) का कथन है—"विश्वसनीय तथा उचित परीक्षणों के निर्माण के लिए प्रस्तावित परीक्षण के प्रत्येक पद या प्रश्न की विभेदकारी शक्ति तथा कठिनाई के विषय में संख्यात्मक सूचना प्राप्त करना आवश्यक है। इस प्रकार की सूचना पद-विश्लेषण सामग्री द्वारा प्रदान की जाती है।"

पद-विश्लेषण इस बात की व्याख्या करता है कि कौन-से प्रश्न अधिक सरल या कठिन हैं और कौन-से प्रश्न उत्तम या निम्न श्रेणी के परीक्षार्थियों में अन्तर नहीं कर रहे हैं। कभी-कभी पद-विश्लेषण इस बात का भी संकेत देता है कि अमुक प्रश्न ने प्रभावशाली ढंग से अपने निर्धारित कार्य या अभिप्राय की पूर्ति क्यों नहीं की। अतः पद-विश्लेषण प्रश्न या पद की उपयोगिता, कुशलता तथा तर्कयुक्तता की व्याख्या करता है। इसके द्वारा परीक्षणकर्त्ता अपने परीक्षण को उन्नत रूप में परिवर्तित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

करने में समर्थ होता है। साथ ही वह अपनी परीक्षण-रचना की कुशलता को उन्नत बना लेता है।

'पद-विश्लेषण' क्रिया मुख्यतः दो तथ्यों पर आधारित होती है—

(अ) प्रश्नों का कठिनाई स्तर (Difficulty-level of items)

(ब) प्रश्नों का विभेदीकरण मान (Discriminatory value of items)

(अ) प्रश्नों का कठिनाई स्तर—परीक्षार्थियों के समूह का वह अनुपात, जो किसी प्रश्न को शुद्ध रूप में हल करता है या वास्तविक रूप में जानता है, उस प्रश्न का कठिनाई स्तर माना जाता है। कठिनाई स्तर को ज्ञात करने के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है—

$$\text{कठिनाई का स्तर} = \frac{\text{सही उत्तर वाले परीक्षार्थियों की संख्या}}{\text{कुल परीक्षार्थियों की संख्या}}$$

उदाहरणार्थ

यदि 200 परीक्षार्थियों के समूह में एक प्रश्न को 140 परीक्षार्थी शुद्ध रूप में हल कर देते हैं तो इस प्रश्न का कठिनाई स्तर क्या होगा ?

कठिनाई स्तर $= \frac{140}{200} = \cdot 7$

सुविधा के लिए इसे प्रतिशत में बदला जा सकता अर्थात् $\cdot 7 \times 100 =$ 70% कठिनाई स्तर। इस प्रकार परीक्षण के अन्य प्रश्नों का कठिनाई स्तर ज्ञात किया जा सकता है।

(ब) प्रश्नों का विभेदीकरण मान—योग्य तथा अयोग्य छात्रों में शुद्ध रूप से उत्तर कर सकने की क्षमता को 'विभेदकारी मान' से सूचित किया जाता है। इस मान को सांख्यिकीय (Statistical) विधियों द्वारा मालूम किया जा सकता है। परन्तु गणना की सुविधा हेतु आजकल प्रश्न-विश्लेषण तालिकाओं (Item-analysis tables) का प्रयोग किया जाने लगा है। इन तालिकाओं में कुछ प्रमुख तालिकाएँ इस प्रकार हैं—

(i) आइटम-एनेलेसिस डेटा एण्ड टेबिल (Item-analysis data and table) फ्रेडरिक बी० डेविस द्वारा निर्मित।

(ii) आइटम-एनेलेसिस टेबिल (Item-analyis table)—सी० टी० फेन द्वारा निर्मित।

सांख्यिकी ने कुछ सरल विधियों का प्रतिपादन किया है। पद-विश्लेषण की सुविधा के लिए निश्चित समूह को (जिन पर प्रश्नों को लागू किया गया है) योग्यता के अनुसार 'उच्च' तथा निम्न' वर्गों में बाँट लिया जाता है। योग्यता का मापदण्ड समूह के प्रत्येक छात्र को पूर्ण प्राप्तांक को मान लिया जाता है। 'उच्च' तथा 'निम्न' वर्गों में विभाजित करने की अग्रांकित प्रमुख विधियाँ प्रचलित हैं—

(क) 'उच्च' तथा 'निम्न' 50%

(ख) 'उच्च' तथा 'निम्न' 33%

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ग) 'उच्च' तथा 'निम्न' 27%

(घ) 'उच्च' तथा 'निम्न' 25%

उच्च' तथा 'निम्न' 27% की विधि का समर्थन अधिकांश विद्वानों द्वारा किया गया है। परन्तु 100 से छोटे समूह के लिए 'उच्च' तथा 'निम्न' 50% वाली विधि अधिक उपयुक्त है।

'उच्च' तथा 'निम्न' की विधि के चयन के बाद यह मालूम किया जाता है कि प्रत्येक पद को ऊपर के वर्ग के कितने प्रतिशत छात्रों ने शुद्ध रूप से हल किया है। इसी प्रकार निम्न वर्ग के छात्रों का प्रतिशत मालूम किया जाता है। इसके बाद निम्नांकित सूत्र से विभेदकारी मान निकाला जाता है—

$$D=\frac{P_1-P_2}{\sqrt{\frac{P_1Q_1}{N_1}+\frac{P_2Q_2}{N_2}}}$$

इस सूत्र में D=विभेदकारी मान

P_1=उच्च वर्ग में पद का सही उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत

P_2=निम्न वर्ग में पद का शुद्ध उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत

Q_1=उच्च वर्ग में पद का शुद्ध उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत

Q_2=निम्न वर्ग में पद का अशुद्ध उत्तर देने वाले छात्रों का प्रतिशत

N_1=ऊपर के वर्ग में छात्रों की संख्या

N_2=निम्न वर्ग में छात्रों की संख्या

यदि विभेदकारी मान 1·96 से कम आवे तो यह कहा जा सकता है कि पद विभेदकारी कम है यदि मान इससे अधिक आता है तो पद अधिक हितकारी होगा।

उदाहरणार्थ

यदि किसी पद को उच्च वर्ग के 75% छात्रों ने शुद्ध किया है और 25% छात्रों ने अशुद्ध तथा निम्न वर्ग के 55% छात्रों ने शुद्ध तथा 45% ने अशुद्ध किया है जबकि उच्च वर्ग में 40 छात्र तथा निम्न वर्ग में 30 छात्र हैं तो उस पद का विभेदकारी मान क्या होगा?

प्रस्तुत सूत्र में

$$D=\frac{75-55}{\sqrt{\frac{75\times25}{40}+\frac{55\times45}{30}}}$$

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

$$=\frac{20}{\sqrt{\frac{1875\times3+7425\times4}{120}}}$$

$$=\frac{20}{\sqrt{\frac{35325}{120}}}$$

$$=\frac{20}{17{\cdot}2}$$

$$=1{\cdot}16$$

इस पद का विभेदकारी मान 1·16 है। अतः यह पद योग्य एवं कमजोर ों में अन्तर करने में असमर्थ है।

किसी पद के कठिनाई स्तर को 'उच्च' तथा 'निम्न' वर्ग विभाजन पद्धति से करने के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है—

$$\text{कठिनाई स्तर}=\frac{\text{उच्च वर्ग का कठिनाई स्तर}+\text{निम्न वर्ग का कठिनाई स्तर}}{2}$$

पद-विश्लेषण में कठिनाई स्तर तथा विभेदीकरण मान की सहायता से क प्रश्न की कुशलता का विश्लेषण किया जाता है। इन मानों का उपर्युक्त सूत्रों निर्धारण हो जाने के बाद परीक्षण का अन्तिम रूप प्रस्तुत करने के लिए उचित नाई स्तर तथा संतोषप्रद विभेदीकरण मान रखने वाले पदों का चयन कर लिया ा है। शेष प्रश्नों को निकाल दिया जाता है।

न 5—परीक्षण का अन्तिम प्रारूप

परीक्षण का अन्तिम प्रारूप निर्धारण करने के लिए पदों के विभेदकारी मान कठिनाई स्तर को साथ-साथ तालिका में लेखबद्ध करना चाहिए। इसके पश्चात् ों की तुलनात्मक समीक्षा द्वारा बुरे प्रश्नों या पदों का निष्कासन तथा अच्छे प्रश्नों चयन कर लेना चाहिए—

प्रश्न संख्या	कठिनाई स्तर	विभेदकारी मान	परिणाम
1.	·80	+2	स्वीकृत
2.	·80	+2	स्वीकृत
3.	·70	+2	स्वीकृत
4.	·60	+1·8	बहिष्कार
5.	·80	+2	स्वीकृत
6.	·80	+2	स्वीकृत
7.	·50	+1	बहिष्कार
8.	·40	−2	बहिष्कार
18			

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

9.	·30	+1·45	बहिष्कार
10.	·80	+2	स्वीकृत

प्रश्नों का चयन करते समय कठिनाई स्तर तथा विभेदीकरण मान को ध्यान में रखने के अतिरिक्त प्रत्येक प्रश्न की रचना तथा वैयक्तिक क्षमता पर भी ध्यान रखना चाहिए। प्रश्नों का चयन विषय-वस्तु के अनुकूल किया जाना चाहिए। यदि ऐसा नहीं किया गया तो परीक्षण में विषय-वस्तु सम्बन्धी वैधता (Content validity) का अभाव रहेगा।

सोपान 6—सामान्य-मान निर्धारण

सामान्य-मान वह मानदण्ड है जिसके द्वारा अन्य परीक्षार्थियों के अंकों को सरलता से समझा जा सकता है। ये सामान्य-मान कई प्रकार के होते हैं। यथा—

1. श्रेणी सम्बन्धी सामान्य-मान (Grade norm)
2. आयु सम्बन्धी सामान्य-मान (Age norm)
3. प्रतिशतीय सामान्य-मान (Percentile norm)
4. नगर तथा ग्राम सम्बन्धी सामान्य-मान (Urban and rural norm)
5. लिंग सम्बन्धी सामान्य-मान (Sex norm)

आजकल प्रतिशतीय सामान्य मान को ज्ञात करना अधिक उपयुक्त समझा जाता है। इस सामान्य-मान से यह सरलता से मालूम किया जा सकता है कि किसी छात्र की समूह में स्थिति क्या है? इसके ऊपर और नीचे कितने छात्र हैं? उदाहरणार्थ यदि एक परीक्षार्थी का प्रतिशतीय अंक 40 है तो यह कहा जा सकता है कि इसके नीचे 40 प्रतिशत छात्र और इसके ऊपर 60 प्रतिशत छात्र हैं।

रेमर्स, गेज व रूमेल ने लिखा है—"सामान्य-मान कार्य के वे स्तर हैं जो छात्र के परिभाषित समूह द्वारा किसी परीक्षण में प्राप्त किये जाते हैं। ये प्रमापों से इस बात में अन्तर है कि ये "क्या होना चाहिये?" की अपेक्षा "क्या है" का वर्णन करते हैं।"

सोपान 7—विश्वसनीयता-निर्धारण

कोई भी मापन-विधि उस सीमा तक विश्वसनीय होती है, जिस सीमा तक वह बराबर प्रयोग करने पर भी एक-से परिणाम प्रदान करे। एक-से परिणाम का अभिप्राय यह है कि किसी व्यक्ति को उस परीक्षण पर लगभग वही अंक प्राप्त हों जो प्रथम बार हुए थे या समूह में उसका वही स्थान बना रहे जो प्रथम प्रयोग परीक्षण द्वारा बताया गया था। अतः विश्वसनीयता किसी परीक्षण पर व्यक्ति के प्राप्तांकों की संगति है। विश्वसनीयता के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं—

1. एनेस्टेसी—"विश्वसनीयता प्राप्तांकों की उस संगति की ओर संकेत करती है जो उन ही व्यक्तियों के विभिन्न अवसरों पर उसी परीक्षण से बार-बार प्राप्त होते हैं।"

"Reliability refers to the consistency of scores obtained

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

the same individuals. When re-examined with the same test on different occasions or with different sets of equivalent items, or under other variable examining conditions."—Anne Anastasi.

2. गैरट—"एक परीक्षण या मापन-यन्त्र की विश्वसनीयता उस संगति पर निर्भर करती है जो उन व्यक्तियों की योग्यता का अनुमान लगाती है जिनके लिए उसका प्रयोग होता है।"

"The reliability of a test or any measuring instrument depends upon the consistency with which it guages the ability to whom it is applied. —Garrett.

विश्वसनीयता निर्धारण की अधोलिखित विधियाँ प्रचलित हैं—

(i) परीक्षा-पुनर्परीक्षा विधि (Test-Retest method)

(ii) एकान्तर या समान्तर प्रतिरूप विधि (Alternate or Parallel form method)

(iii) अर्द्ध-विभाजन विधि (Split-half method)

(iv) तर्कयुक्त समानता विधि (Method of rational equivalence)

(i) परीक्षा पुनर्परीक्षा विधि—यह फलांकों की दो सूचियों में पारस्परिक साम्य ज्ञात करने की सरलतम विधि है। इसमें परीक्षण को छात्रों पर प्रशासित करके उनके फलांक मालूम कर लिये जाते हैं। कुछ समय बाद ही उन्हीं छात्रों पर पुनः परीक्षण किया जाता है और उनके फलांक ज्ञात कर लिए जाते हैं। इसके उपरान्त परीक्षण और पुनः परीक्षण में प्राप्त फलांकों की इन दो श्रेणियों में सह-सम्बन्ध ज्ञात किया जाता है। यदि सह-सम्बन्ध पर्याप्त अधिक है तो परीक्षण विश्वसनीय है, अन्यथा नहीं।

(ii) समानान्तर प्रतिरूप विधि—यह उन्हीं परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है, जब परीक्षण के दो प्रतिरूपों की संरचना समान हो। दो प्रतिरूप विकल्प या समानान्तर तभी हो सकते हैं जब दोनों में विषय-वस्तु की समानता हो। साथ ही दोनों के प्रश्नों में कठिनाई स्तर समान हो और उनका रूप भी एक-सा हो। दो प्रतिरूप बनाने के बाद एक ही समूह पर कुछ समय के अन्तर से इनको प्रशासित किया जाय। तदुपरान्त इन दोनों के प्राप्त फलांकों में सह-सम्बन्ध गुणांक पर्याप्त होता है तो परीक्षण विश्वसनीय माना जाता है।

(iii) अर्द्ध-विभाजन विधि—इस विधि के अनुसार प्रथमतः परीक्षण को दो समानान्तर भागों में बाँटा जाता है। तदनन्तर इन दोनों भागों को परीक्षार्थियों के एक ही समूह पर अलग-अलग प्रशासित करते हैं। इन दोनों अर्द्ध-परीक्षणों में प्राप्त अलग-अलग फलांकों के बीच सह-सम्बन्ध मालूम किया जाता है। यह सह-सम्बन्ध अर्द्ध परीक्षणों का सह-सम्बन्ध होता है। स्पीयरमैन ब्राउन प्रोफेसी (Spearman-Brown prophecy) सूत्र के अनुसार इस अर्द्ध-परीक्षण के सह-सम्बन्ध गुणांक से पूर्ण परीक्षण का गुणांक प्राप्त कर लेते हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सूत्र है—

$$r_{11} = \frac{2r^1}{1+r^1}$$

जिसमें r_{11}=पूरे परीक्षणों का विश्वसनीयता गुणांक
r=अर्द्ध-परीक्षणों के मध्य सह-सम्बन्ध गुणांक

उदाहरणार्थ

यदि $r^1 = \cdot 8$ है तो $r_{11} = \frac{2 \times \cdot 8}{1 + \cdot 8} = \frac{1 \cdot 6}{1 \cdot 8} = \cdot 88$

(iv) **तर्कयुक्त समानता विधि**—तर्कयुक्त समानता विधि को कूडर-रिचर्डसन (Kuder-Richardson) विश्वसनीयता या अन्तःपद संगति (Inter-item consistency) के नाम से भी जाना जाता है। यह विधि परीक्षार्थियों के उत्तरों की संगति पर आधारित है। यह अन्तःपद संगति, त्रुटि प्रसारण के दो स्रोतों से प्रभावित होती है—(1) परीक्षण में विषय-वस्तु के न्यादर्श (Sample) से; तथा (2) व्यवहार के जिस क्षेत्र का न्यादर्श लिया गया है उसकी विषय-जातीयता से। न्यादर्श जितना अधिक समजातीय होगा, यह संगति भी उतनी ही अधिक होगी। अन्तःपद संगति को ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त सबसे सामान्य सूत्र कूडर-रिचर्डसन का निम्नांकित सूत्र है—

$$r = \left(\frac{n}{n_{-1}}\right) \frac{\sigma^2 t - \Sigma pq}{\sigma^2 t}$$

r=सम्पूर्ण परीक्षण का विश्वसनीयता गुणांक
n=परीक्षण में पदों की संख्या
σt=परीक्षण के कुल प्राप्तांकों का मानक विचलन
p=हर पद पर सफल परीक्षार्थियों का अनुपात
q=हर पद पर असफल परीक्षार्थियों का अनुपात
Σpq=p और q के गुणनफल का योग

जे० पी० गिलफोर्ड (J. P. Guilford) ने कूडर-रिचर्डसन विधि की प्रशंसा की है। उसने इस विधि का सरलतम सूत्र इस प्रकार बताया है—

$$\text{विश्वसनीयता} = \frac{\text{प्रश्नों की संख्या (प्रामाणिक विचलन)}^2}{\text{(प्रश्नों की संख्या} - 1)}$$

$$\frac{-\text{मध्यमान (प्रश्नों की संख्या} - \text{मध्यमान)}}{\text{(प्रामाणिक विचलन)}^2}$$

यदि एक परीक्षण में पदों की संख्या 120 है। यदि उसका मध्यमान तथा प्रामाणिक मानक विचलन 15 है तो परीक्षा की विश्वसनीयता क्या होगी?

$$\text{विश्वसनीयता} = \frac{120(15)^2 - 65(120-65)}{(120-1)\ (15)^2}$$

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

$$= \frac{27000 - 3575}{119 \times 225}$$

$$= \frac{23425}{26775}$$

$$= \cdot 87$$

अर्थात् परीक्षण की विश्वसनीयता ·87 है जो अधिक सन्तोषप्रद नहीं है क्योंकि ·90 से ऊपर की विश्वसनीयता निष्पत्ति परीक्षणों के लिए पर्याप्त सन्तोषप्रद कही जाती है।

सोपान 8—वैधता-निर्धारण

परीक्षण का निर्माण किसी न किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। कोई परीक्षण निर्धारित उद्देश्य को जिस सीमा तक सफलतापूर्वक मापता है, उसी सीमा तक वैध होता है। परीक्षण की वैधता परीक्षण-उद्देश्य से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित रहती है। अतः जितनी शुद्धता तथा सार्थकता से कोई परीक्षण किसी उद्देश्य का मापन करता है, उतना ही वैध वह परीक्षण होता है। अतः वैधता का तात्पर्य है—"वह कार्य-कुशलता जिससे कोई परीक्षण उस तथ्य का मापन करता है जिसके लिए वह बनाया गया है।" "वैधता" के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं"—

1. थार्नडाइक—"कोई भी मापन विधि उस सीमा तक वैध है, जिस सीमा तक वह उस कार्य के लिए किसी सफल मापन से सह-सम्बन्धित है, जिसके सम्बन्ध में पूर्वकथन करने के लिए उसका निर्माण किया गया है।"

"A measurement procedure is valid in so far as it correlates with some measurement of success in the job for which it is being used as a predictor.
—Thorndike, R. L.

2. क्रॉनबैक—"किसी परीक्षण की वैधता उनकी वह सीमा है जिस सीमा तक वह, वही मापता है, जिसके लिए उसका निर्माण किया गया है।"

"Validity is the extent to which a test measures what it purports to measure."
—Cronbach.

वैधता के प्रकार के विषय में मनोवैज्ञानिक एकमत नहीं हैं। विभिन्न विद्वानों ने इसका विभिन्न प्रकार से वर्गीकरण किया है। कुछ विद्वानों के वर्गीकरण इस प्रकार हैं। यथा—

1. एनेस्टेसी के अनुसार—(i) अनीक वैधता (Face validity), (ii) विषय-अनुगत (Content) वैधता, (iii) अवयवात्मक (Factorial) वैधता, तथा (iv) अनुभव-जन्य (Empirical) वैधता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. ग्रीन जोरगेन्सन व जरबेरिच के अनुसार, (i) पाठ्य-विषयात्मक (Curricular) वैधता, (ii) सांख्यिकीय (Statistical) वैधता; तथा (iii) तर्कसंगत (Lcgioal) वैधता।

3. क्रॉनबेक के अनुसार- (i) पूर्व-कथनात्मक (Predictive) वैधता, (ii) समवर्ती (Concurrent) वैधता, (iii) विषय-वस्तुगत (Content) वैधता तथा (iv) अन्यव (Construct) वैधता।

4. फ्रीमैन के अनुसार—(i) संकार्य (Operational) वैधता, (ii) कार्यात्मक (Functional) वैधता, (iii) अवयवात्मक (Factorial) वैधता; तथा (iv) अनीक (Face) वैधता।

5. गुड व ह्राट के अनुसार—(i) अनीक (Face) वैधता, (ii) विशेषज्ञ (Jury Opinion) वैधता, (iii) विरोधी समूह (Opposed group) वैधता, तथा (iv) स्वतन्त्र कसौटी (Independent Criterion)।

6. जोर्डन के अनुसार—(i) आन्तरिक (Internal) वैधता; तथा (ii) बाह्य (external) वैधता।

उपर्युक्त में से प्रमुख का संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है। यथा—

(क) विषय-वस्तुगत या पाठ्य-विषयात्मक वैधता—परीक्षण के समस्त प्रश्न पाठ्यक्रम से संगति रखें अर्थात् सभी प्रश्न पाठ्यक्रम पर आधारित होने चाहिए। निष्पत्ति परीक्षणों में इसी प्रकार की वैधता को महत्त्व दिया जाता है। किसी परीक्षण की विषय-वस्तुगत वैधता के निर्धारण के लिए विषय-वस्तु विश्लेषण करना आवश्यक है।

(ख) अनीक या रूप वैधता—जब कोई परीक्षण उसी तथ्य का मापन करता हुआ प्रतीत होता है जिसके लिए बनाया गया है, तो कहा जाता है कि उसमें अनीक वैधता है। अनीक वैधता का सम्बन्ध इस बात से नहीं है कि परीक्षण किस तथ्य के लिए बनाया गया है वरन् इस बात से है कि वह किस तथ्य का मापन करता हुआ दिखाई पड़ता है। मोजियर (Mosier) ने चार प्रकार की अनीक वैधता का उल्लेख किया है—

(अ) मान्यता द्वारा (By assumption)
(ब) परिभाषा द्वारा (By definition)
(स) आकृति द्वारा (By appearance)
(द) परिकल्पना द्वारा (By hypothesis)

(ग) तर्कसंगत वैधता—जब पद या प्रश्न उन्हीं अवधारणाओं (Concepts) या इकाइयों (Units) से सम्बन्धित हों जिन्हें मापने का परीक्षण का उद्देश्य है, उसमें तर्कसंगत वैधता होती है। दूसरे शब्दों में, तर्कसंगत वैधता का तात्पर्य है कि परीक्षण द्वारा उन उद्देश्यों का यथार्थ रूप से मापन किया जाय जिस हेतु उसका निर्माण किया गया है।

(घ) अन्यव वैधता—यह किसी परीक्षण की वह सीमा है जिस सीमा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

यह किसी सैद्धान्तिक अन्यव (Theoretical Construct) या शीलगुण का मापन करता है। इस प्रकार के अन्यव के उदाहरण हैं—बुद्धि, शाब्दिक प्रवाह, चलने की गति आदि।

(ङ) अवयव वैधता—एनेस्टेसी के अनुसार, "किसी परीक्षण की अवयव वैधता का अर्थ है उस परीक्षण तथा अनेक परीक्षण के समूह या व्यवहार के अन्य समान अवयवों में सह-सम्बन्ध।" ("The factorial validity of a test is the correlation between that test and the factor common to a group of tests or other measures of behaviour.") यह विधि अवयव-विशेषण पर आधारित है। अवयव-विशेषण में अनेक परीक्षणों के परस्पर सह-सम्बन्ध (Inter-correlation) ज्ञात किये जाते हैं और इस प्रकार परीक्षण के मुख्य गुणों, तत्त्वों या घटकों को ज्ञात कर लिया जाता है। इसके बाद प्रत्येक अवयव से परीक्षण का सह-सम्बन्ध ज्ञात करते हैं। यह सह-सम्बन्ध ही परीक्षण की वैधता है।

(च) पूर्व कथनात्मक वैधता—किसी परीक्षण में पूर्व कथनात्मक वैधता तब होती है जब इसके फलांक किसी भावी सामर्थ्य या योग्यता के बारे में भविष्यवाणी करें। इसके ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम परीक्षण को प्रशासित किया जाता है। कुछ समय बाद किसी कसौटी के आधार पर हम उसी पूर्व-परीक्षित समूह का मूल्यांकन करते हैं और फलांक लिख लेते हैं। इन दोनों फलांकों की श्रेणियों में सह-सम्बन्ध ज्ञात कर लेते हैं। यदि सह-सम्बन्ध उच्च है तो परीक्षण में पूर्व-कथनात्मक वैधता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण का निर्माण करते समय उपरिवर्णित आठ सोपानों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। प्रत्येक सोपान के अन्तर्गत शिक्षण या परीक्षणकर्त्ता को अत्यन्त सतर्कता बरतनी चाहिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. "Discuss briefly construction procedure of a good objective test.

   एक अच्छे वस्तुनिष्ठ परीक्षण की निर्माण-प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
2. What methods will you adopt to ascertain the reliability of an objective test ?

   वस्तुनिष्ठ परीक्षण की विश्वसनीयता के निर्धारण के लिए आप किन विधियों का प्रयोग करेंगे ?

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

1. वैधता के विभिन्न प्रकार बताइए।
2. विभेदकारी मान निकालने के सूत्र को उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. कठिनाई स्तर मालूम करने के सूत्र को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
4. शुद्ध किया हुआ अंक किस सूत्र से ज्ञात करते हैं ?
5. पद-विश्लेषण की प्रक्रिया को 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

निर्देश—निम्नलिखित कथनों में जो सही हों तो 'सत्य' को और गलत हों 'असत्य' को रेखांकित कीजिए—

(i) यदि विभेदकारी मान 2·8 है तो यह कहा जा सकता है कि पद विभेदकारी है। (सत्य/असत्य)

(ii) प्रश्नों में विशिष्ट निर्धारकों का प्रयोग अनिवार्य है। (सत्य/असत्य)

(iii) एकान्तर प्रत्युत्तर रूप के प्रश्नों के निर्माण में दोहरे कथनों स्थान दिया जाय। (सत्य/असत्य)

(iv) एकान्तर प्रत्युत्तर रूप के प्रश्नों की संख्या का 1/3 भाग कम से सत्य या असत्य होना चाहिए। (सत्य/असत्य)

(v) सत्य-असत्य उत्तरों के समक्ष 'T' तथा 'F' नामक अक्षर लिखने निर्देश देना अनिवार्य है। (सत्य/असत्य)

(vi) बहुनिर्वचन पद की बनावट ऐसी हो कि उत्तर मध्य में न आकर में आये। (सत्य/असत्य)

(vii) कूडर व रिचर्डसन ने वैधता-निर्धारण की विधि का प्रतिपादन किया। (सत्य/असत्य)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

24

शिक्षण में नवाचार

INNOVATION IN TEACHING

"Micro teaching is a new design for teacher-training which provides trainees with information about their performance immediately after completion of their lesson."

—L. C. Singh

विषय-प्रवेश

वर्तमान शताब्दी में शिक्षा का प्रसार बड़ी तीव्र गति से हुआ है। अन्य विकासशील राष्ट्रों की तुलना में भारत ने योग्य नागरिकों के निर्माण के उद्देश्य से शिक्षा के महत्त्व को समझकर स्वातन्त्र्योत्तर काल में शिक्षा का संख्यात्मक प्रसार किया। इस संख्यात्मक विकास को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त शिक्षक भी नियुक्त किये गये। परन्तु शिक्षण की गुणवत्ता में ह्रास ही देखने को मिला। फलतः इस स्थिति के प्रति शिक्षाविद चिन्तित हुए और उन्होंने शिक्षण-प्रक्रिया में सुधार की सतत् माँग की। इसमें सुधार लाने के लिए भारत में शोधकार्य किये गये। शोध कार्यों के आधार पर अध्यापक-प्रशिक्षण की अनेक त्रुटियाँ सामने आयीं; उदाहरणार्थ—शिक्षक-प्रशिक्षण में अपनाई गई भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में मतैक्य न होना, अध्यापक-शिक्षण के स्पष्ट एवं व्यवहारनिष्ठ उद्देश्यों का अनिश्चित होना, परिनिरीक्षण (Supervision) की दोषपूर्ण तथा अव्यावहारिक पद्धति, प्रगतिशील एवं प्रभावी अध्यापन रीतियों का पाठ्यक्रम में सम्मिलित न करना आदि। इन त्रुटियों को दूर करने तथा शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए अनेक प्रयोगों के फलस्वरूप सूक्ष्म अध्यापन (Micro-teaching), सामर्थ्यनिष्ठ अध्यापन (Competency based teaching) जैसे अन्यान्य नवाचार शिक्षा-क्षेत्र में सामने आये। नवाचारों के माध्यम से हम प्रशिक्षार्थी में कुछ आवश्यक गुणों के विकास की

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आशा करते हैं; उदाहरणार्थ—'साधन जुटाना', 'गत्यात्मकता' 'कार्य प्रारम्भ करने की पहल' आदि।

सूक्ष्म-शिक्षण
(Micro-Teaching)

सूक्ष्म-शिक्षण की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—सूक्ष्म-शिक्षण का प्रारम्भ अमेरिका के स्टैन्फोर्ड विश्वविद्यालय (Stanford University) में 1961 में हुआ। यहाँ कीथ एचीसन (Keath Acheson) ने विडियो टेप का प्रयोग शिक्षक-प्रशिक्षण कार्य में किया। उसने इसको शिक्षक-प्रशिक्षण में हो रहे नवीन प्रयोगों के लिए प्रयुक्त किया। इसके द्वारा शिक्षकों के शिक्षण को रिकॉर्ड करके उन्हें स्थिति तथा विशिष्ट बिन्दुओं पर निश्चित निर्देश दिये। साथ ही इसके प्रयोग से दूरस्थ विद्यालयों के शिक्षक भी लाभ उठाने लगे। 1963 में ए० डब्ल्यू० वाइट एलेन (A. W. Dwight Allen) ने इस उपागम की विशद व्याख्या करके उसे सूक्ष्म-शिक्षण (Micro-teaching) का नाम दिया। इसके बाद में सूक्ष्म-शिक्षण का विचार धीरे-धीरे अमेरिका, इंग्लैण्ड, नीदरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड तथा अन्य पश्चिमी देशों के विद्यालयों में फैल गया।

सूक्ष्म-शिक्षण के नवाचार को भारत में ग्रहण किया गया। डॉ० डी० डी० तिवारी ने 'सूक्ष्म-शिक्षण' शब्द का प्रयोग शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में 1967 में किया। उन्होंने इस पर केन्द्रीय पेडागॉजीकल संस्थान, इलाहाबाद में कार्य किया। उन्होंने यहाँ बन्द सरकिट टेलीविजन के अभाव में कार्य किया। भारत में सूक्ष्म-शिक्षण से सम्बन्धित शोध कार्य के प्रारम्भ के लिए 1970 का समय महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। देश की विभिन्न शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थाओं में सूक्ष्म-शिक्षण के विभिन्न आयामों पर कार्य किया गया। जी० बी० शाह (मद्रास) भट्टाचार्य (कलकत्ता), दोसाज (चण्डीगढ़), सेन्टर ऑफ एडवान्स्ड स्टडी इन एजूकेशन, बड़ौदा के डॉ० डी० के० पासी (वर्तमान में विभागाध्यक्ष, शिक्षा-संकाय, इन्दौर विश्वविद्यालय) एवं उनके साथी शोधकर्त्ताओं ने इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। 1979 में एस० पी० कुलश्रेष्ठ, मिश्रा तथा गोस्वामी ने सूक्ष्म-शिक्षण के क्षेत्र में कार्य करके परिलघु शिक्षण (Mini-teaching) पर प्रथम भारतीय मोनोग्राफ 'Mini teaching: A New Experiment in Teacher Education' राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद के सहयोग से प्रकाशित किया।

सूक्ष्म-शिक्षण क्या है ?

मूल रूप में सूक्ष्म-शिक्षण एक छोटे पैमाने पर शिक्षण अनुभव है, क्योंकि इसमें कक्षा-शिक्षण के माप का न्यूनीकरण कर दिया जाता है। इसमें सिखाने की सामग्री, पढ़ाने की अवधि तथा छात्रों की संख्या को कम कर दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, इसमें शिक्षक 5-10 छात्रों को 5-10 मिनट तक शिक्षण देता है। शिक्षक के अध्यापन को वीडियो-टेप में रिकार्ड कर लिया जाता है। इसके द्वारा शिक्षक को

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

उसके निष्पादन (Performance) का ज्ञान करा दिया जाता है। इस उपागम से शिक्षक को नवीन कौशल सीखने तथा पुराने कौशल को सुधारने में सहायता मिलती है।

एलेन व रियन के अनुसार, सूक्ष्म शिक्षण इस प्रकार है :—

1. सूक्ष्म-शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।
2. सूक्ष्म-शिक्षण से प्रचलित कक्षा-शिक्षण की जटिलताओं को कम कर दिया गया है।
3. सूक्ष्म-शिक्षण में एक विशिष्ट कार्य को पूर्ण करने पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
4. सूक्ष्म-शिक्षण में अभ्यास को अधिक नियन्त्रित बनाने की सुविधा रहती है।
5. सूक्ष्म-शिक्षण में परिणामों के सामान्य ज्ञान या परिशोधन, परिष्करण या प्रतिपुष्टि (Feedback) को विस्तृत बनाया गया है।

सूक्ष्म-शिक्षण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए इसके तथा अभ्यास शिक्षण (Practice Teaching) के अन्तर को नीचे स्पष्ट किया जा रहा है—

सूक्ष्म-शिक्षण तथा अभ्यास-शिक्षण में अन्तर

सूक्ष्म-शिक्षण	अभ्यास-शिक्षण
1. प्रशिक्षार्थी (Trainee) केन्द्रित है।	1. यह बालक या कक्षा-केन्द्रित है।
2. कौशल (Skill) की प्रधानता होती है। इसमें विषय-वस्तु सहायक मात्र होती है।	2. इसमें शिक्षक विषय-वस्तु को प्रधानता देता है।
3. एक समय में एक ही कौशल का अभ्यास किया जाता है।	3. एक कालखण्ड या समयावधि में अनेक कौशलों का प्रयोग होता है।
4. समय-चक्र 5 से 10 मिनट का होता है।	4. समय-चक्र की अवधि 30-40 मिनट की होती है।
5. छात्र-समूह में 5 से 6 छात्र तक होते हैं। इस प्रकार के छात्र-समूह में अनुशासन की समस्या नहीं होती।	5. छात्र-समूह में 35 से 45 तक छात्र होते हैं। इस बड़े समूह में शिक्षक पूरे समय अनुशासन स्थापित करने के लिए चिन्तित रहता है।
6. प्रतिपुष्टि अधिक महत्त्वपूर्ण होती है साथ ही पांच या दस मिनट वाले पाठ में कौशल के घटकों का अवलोकन करने में अधिक सतर्कता बनी रहने के कारण प्रतिपुष्टि उचित रूप से सम्भव है।	6. प्रतिपुष्टि के नाम पर परिनिरीक्षक (Supervisor) द्वारा सम्पूर्ण पाठ के लिए सीमित टिप्पणी के रूप में निर्देशन दिया जाता है।
7. व्यवहार-वैचित्र्य (Mannerism) से छुटकारा सरलता से पाया जा सकता है।	7. पाठ बड़ा होने से प्रशिक्षणार्थी इस दोष से मुक्त नहीं हो पाता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

8. सूक्ष्म-शिक्षण से वास्तविक शिक्षण के लिए पृष्ठभूमि तैयार की जाती है।	8. अभ्यास-शिक्षण परिमाणात्मक (Quantitative) होने के कारण शिक्षण को प्रभावहीन बनाता है।
9. यह प्रविधि परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तनशील एवं लचीली है।	9. इसमें एक साथ अनेक कौशलों का प्रयोग होने से अध्यापन-प्रक्रिया में परिस्थिति के अनुकूल परिवर्तन किया जाना सम्भव नहीं है।

सूक्ष्म-शिक्षण को परिभाषा—सूक्ष्म-शिक्षण के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं—

1. ऐलन—"सूक्ष्म-शिक्षण किसी कक्षा में आकार तथा समय में सूक्ष्म पदीय शिक्षण परिस्थिति है।"

2. ऐलन व ईव—"सूक्ष्म-शिक्षण नियन्त्रित कार्यों का समूह है जो कि किसी विशिष्ट शिक्षण व्यवहार पर बल देता है तथा शिक्षण-अभ्यास को नियन्त्रित परिस्थितियों में सम्भव बनाता है।"

3. विलफ—"सूक्ष्म-शिक्षण शिक्षक-प्रशिक्षण की वह प्रक्रिया है जो कि अभ्यास-शिक्षण को किसी विशेष कौशल तक सीमित करके तथा शिक्षण-समय एवं कक्षा-आकार को कम करके शिक्षण-परिस्थिति को अधिक सरल एवं नियन्त्रित प्रक्रिया में बदल देती है।"

4. बी० के० पासी—"सूक्ष्म-शिक्षण एक प्रशिक्षण विधा है जो छात्राध्यापकों से अपेक्षा करती है कि वे एक संप्रत्यय या अवधारणा, एक विशेष अध्यापन कौशल के द्वारा थोड़े से छात्रों को अल्पावधि में पढ़ायें।"

5. बी० एम० शोर—"सूक्ष्म-शिक्षण कम समय, कम छात्रों तथा कम शिक्षण क्रियाओं वाली प्रविधि है।"

सूक्ष्म-शिक्षण के सोपान
(Steps of Micro-teaching)

'सूक्ष्म-शिक्षण' नामक पद में सामान्यतः निम्नलिखित प्रकार का कार्यक्रम निहित है :—

1. **शिक्षण कौशल का सैद्धान्तिक विवेचन (Theoretical Discussion of Teaching Skill)**—सर्वप्रथम, प्रशिक्षार्थियों को किसी शिक्षण कौशल (Teaching Skill) की परिभाषा, कार्यात्मक (Operational) उद्देश्यों की परिभाषा, कौशल का महत्त्व तथा कौशल पर अधिकार प्राप्त करने में सहायक घटकों आदि के सन्दर्भ में सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जाता है। इस सोपान में कौशल के मनोवैज्ञानिक पक्ष को भी स्पष्ट किया जाता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. विशिष्ट शिक्षण-कौशल की विवेचना (Discussion of a Particular Teaching Skill)—इस सोपान में एक विशिष्ट शिक्षण कौशल का चयन कर लिया जाता है और उसे शिक्षण व्यवहारों (Teaching Behaviours) के रूप में परिभाषित किया जाता है और उन उद्देश्यों को भी स्पष्ट किया जाता है, जिनको प्राप्त करना न व्यवहारों का लक्ष्य है।

3. आदर्श पाठ का प्रस्तुतीकरण (Presentation of Ideal Lesson)—इस पद में पाठ से सम्बन्धित वीडियो-टेप या फिल्म या विशिष्ट कौशल प्रदर्शित किये जाते हैं। इनके न होने पर छात्राध्यापक को पाठ से सम्बन्धित लिखित सामग्री दी जाती है। यह सब उसे यह प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है कि वह विशिष्ट कौशल को किस प्रकार सीख सकता है।

4. पाठ का आयोजन (Planning of Lesson)—इसमें छात्राध्यापक एक छोटे पाठ की योजना बनाता है जिसमें वह कौशल का प्रयोग कर सके।

5. पढ़ाना (Teach)—इसमें छात्राध्यापक एक छोटे-समूह को पाठ-योजना से पढ़ाता है जिसको वीडियो टेप या ओडियो टेप (Audio Tape) कर लिया जाता है या वह पर्यवेक्षक या साथियों के द्वारा निरीक्षित किया जाता है।

6. प्रतिपुष्टि (Feedback)—इस सोपान में छात्राध्यापक की उपस्थिति में वीडियो टेप या ओडियो टेप चलाकर या पर्यवेक्षक की टीकाओं को प्रस्तुत करके यह बताया जाता है कि उसका निष्पादन कैसा रहा। दूसरे शब्दों में, छात्राध्यापक इस सोपान में यह जानने में समर्थ हो जाता है कि उसने क्या त्रुटियाँ कीं।

7. पाठ का पुनः आयोजन (Replanning of Lesson)—छात्राध्यापक प्रतिपुष्टि तथा पर्यवेक्षक द्वारा की गई समीक्षा के आधार पर पाठ का पुनः आयोजन करता है जिससे वह कौशल को अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रयुक्त कर सके।

8. पुनः पढ़ाना (Reteach)—इस सोपान में पुनः आयोजित पाठ को दूसरे छात्र-समूह को पढ़ाया जाता है। परन्तु यह छात्र-समूह प्रथम छात्र-समूह की तुलना में समानता रखता है।

9. पुनः प्रतिपुष्टि (Refeedback)—इस सोपान में पहले पाठ की भाँति पर्यवेक्षण किया जाता है और उसकी समीक्षा की जाती है जिससे छात्राध्यापक को यह मालूम हो सके कि उसने आदर्श पाठ को किस सीमा तक प्राप्त कर लिया है। इससे द्वारा पुनर्बलन होता है। इसे पुनः प्रतिपुष्टि कहते हैं।

सूक्ष्म शिक्षण के कार्यक्रम में सोपान 5 से 9 तक का उस समय तक बार-बार अभ्यास कराया जाता है जब तक छात्राध्यापक कौशल के प्रयोग में उच्च स्तर की दक्षता नहीं प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण के अग्रांकित प्रमुख सोपान माने जाते हैं :—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. पाठ का आयोजन।
2. पढ़ाना या शिक्षण।
3. प्रतिपुष्टि।
4. पुनः आयोजन।
5. पुनः पढ़ाना या पुनः शिक्षण।
6. पुनः प्रतिपुष्टि।

शिक्षण के कौशल
(Skills of Teaching)

पासी व शाह (B. K. Passi & M. M. Shah) ने कक्षा-शिक्षण के अग्रांकित कौशल बतलाये हैं :—

(i) उद्दीपक में परिवर्तन (Stimulus Variation)
(ii) सैट इण्डक्शन (Set Induction)
(iii) समापन (Closure)
(iv) मूल भाव तथा अशाब्दिक संकेत (Silence and Non-verbal Cues)
(v) छात्र-सहयोग का पुनर्वलन (Reinforcement of Student Participation)
(vi) प्रश्न पूछने में धाराप्रवाहिता (Fluency in asking Questions)
(vii) खोजपूर्ण प्रश्न (Probing Questions)
(viii) उच्च स्तरीय प्रश्न (High Order Questions)
(ix) बहकाने वाले प्रश्न (Divergent Questions)
(x) उदाहरणों का प्रयोग (Use of Examples)
(xi) व्याख्यान (Lecturing)
(xii) आयोजित आवृत्ति (Planned Repetition)
(xiii) सम्प्रेषण की पूर्णता (Completeness of Communication)
(xiv) श्रव्य-दृश्य-सामग्री का प्रयोग (Using of Audio-Visual Aids)
(xv) कक्षा-कक्ष में शिक्षक की सजीवता (Teacher Liveliness in the Classroom)
(xvi) सामूहिक वाद-विवाद को उन्नत बनाना (Promoting Group Discussion)
(xvii) शिक्षक व्याख्या (Teacher Explanation)

एन० एल० दोसाज (N. L. Dosaj) ने शिक्षण के अग्रांकित कौशल बतलाये हैं :—

1. प्रकरण या विषय को प्रस्तावित करना (Introducing the Topic)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2. प्रश्न पूछना (Questioning)
3. उत्तर निकलवाना (Dealing with Answers)
4. उद्दीपक में परिवर्तन (Stimulus Variation)
5. शिक्षण सामग्री तथा अन्य साज-सज्जा का प्रयोग (Handling of Teaching Aids and Other Equipment)
6. अशाब्दिक संकेत (Non-Verbal Cues)
7. पुनर्बलन (Reinforcement)
8. निदर्शनों तथा उदाहरणों का प्रयोग (Use of Illustrations and Examples)
9. प्रतिपादन या व्याख्यान (Exposition or Lecturing)
10. श्यामपट या चॉक बोर्ड का प्रयोग (Use of Black-board or Chalk board)
11. व्याख्या या स्पष्टीकरण (Explanation)
12. सामूहिक विचार-विमर्श को प्रोत्साहन देना (Encouraging Group Discussion)
13. नियोजित आवृत्ति (Planned Repetition)।
14. शिक्षक की सजीवता (Teacher Liveliness)
15. समापन (Closure)।

सूक्ष्म-शिक्षण की प्रयोगशाला
(Micro-teaching Studio)

सूक्ष्म-शिक्षण की प्रयोगशाला में निम्नलिखित यन्त्रों का होना आवश्यक है :—

1. विडिकॉन कैमरा (Vidicon Camera)—यह कैमरा दो से अधिक कैमरों का काम कर सकता है। इसमें जूम लेन्स (Zoom lens) लगे होते हैं। इस कैमरा को किसी भी दिशा में घुमाया तथा केन्द्रित किया जा सकता है। इस कैमरे का मूल्य ट्राइपॉड (Tripod) के साथ 200 पौण्ड है।

2. वीडियो टेप रिकार्डर—सूक्ष्म-शिक्षण की प्रयोगशाला में दो वीडियो टेप रिकार्डर होने चाहिए। एक वीडियो टेप रिकार्डर शिक्षक के कक्ष में होना चाहिए और दूसरा छात्राध्यापक के पाठ को रिकार्ड करने के लिए होना चाहिए। ऐसे दोनों रिकार्डरों का मूल्य 800 पौण्ड के लगभग है।

3. मॉनीटर—प्रयोगशाला में मॉनीटर नामक दो यन्त्र होने चाहिए। इनमें से एक तकनीकी कमरे में रखा जाता है और दूसरा उस कक्ष में रखा जाता है जहाँ बैठकर पाठ को देखा जाता है। इन दोनों का मूल्य लगभग 200 पौण्ड है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

4. रिकार्डिंग टेप—वर्ष में लगभग 500 घण्टे तक सूक्ष्म शिक्षण को करने के लिए लगभग 20 रिकार्डिंग टेप चाहिए जिनका मूल्य लगभग 350 पौण्ड है।

5. अन्य सामग्री—प्रयोगशाला में दो घड़ियाँ, एक दर्जन लैम्प, 100 गज तार, स्विच गीयर आदि भी चाहिए। इन समस्त वस्तुओं पर लगभग 100 से अधिक पौण्ड व्यय हो सकते हैं।

सूक्ष्म-शिक्षण के लाभ
(Advantages of Micro-teaching)

सूक्ष्म-शिक्षण के निम्नलिखित लाभ हैं :—

1. यह शिक्षण व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करता है।
2. यदि सूक्ष्म-शिक्षण को उपयुक्त ढंग से निर्देशित कर दिया गया तो यह एक सफल उपागम है।
3. यह वास्तविक शिक्षण है जो सामान्य कला-शिक्षण की जटिलताओं को कम करता है।
4. यह शिक्षक-प्रशिक्षण को वैयक्तिक बनाने में सहायक है।
5. यह मितव्ययी है। यह पर्यवेक्षण के समय की बचत करता है। साथ ही शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि करता है। यह छात्रों तथा विद्यालयों पर किसी भी प्रकार का भार नहीं डालता है।
6. यह पर्यवेक्षण को अधिक शक्तिशाली बनाता है। इसमें पर्यवेक्षक अपने छात्राध्यापकों की शक्तियों एवं निर्बलताओं को समुचित ढंग से जानने में समर्थ हो जाता है।
7. इसमें छात्राध्यापक विभिन्न कौशलों का पूर्व अभ्यास करके उनके उपयोग की विधि से परिचित हो जाता है। इससे उसमें आत्मविश्वास की भी वृद्धि होती है।
8. सूक्ष्म-शिक्षण का प्रयोग प्रशिक्षण काल में उपचारात्मक विधि के रूप में किया जा सकता है जिससे छात्राध्यापक अपनी त्रुटियों को सुधार कर उत्तम शिक्षण अभ्यास कर सकते हैं।

सूक्ष्म-शिक्षण की सीमाएँ
(Limitations of Micro-teaching)

शिक्षक-शिक्षा की भारतीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि सूक्ष्म-शिक्षण का विचार अग्रलिखित कठिनाइयों का सामना कर सकता है :—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. सूक्ष्म कक्षाओं के निर्माण तथा समय-तालिका की व्यवस्था करना कठिन है।
2. सूक्ष्म-शिक्षण की प्रयोगशाला की सामग्री एवं साज-सज्जा को सभी प्रशिक्षण विद्यालयों में उपलब्ध नहीं कराया जा सकता है।
3. प्रशिक्षित पर्यवेक्षकों का अभाव भी इसके लिए एक चुनौती है।

उपसंहार

अन्त में हम बी० के० पासी व एम० एम० शाह के शब्दों में कह सकते हैं :—
"सूक्ष्म-शिक्षण को शिक्षण-कौशलों के प्रशिक्षण के लिए निदानात्मक तथा उपचारात्मक साधन के रूप में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इसे व्यापक शिक्षण का एवज् या प्रतिस्थायी नहीं माना जाना चाहिए। यह एक पूरक उपागम के रूप में है। यह मितव्ययी तथा दक्षतापूर्ण होते हुए भी सब कुछ नहीं है।"

"Micro teaching to be used as a diagnostic and remedial measure or the training of teaching skills. It should never claim as a substitute of macro teaching. It is to exist as a supplementary approach. It is economical and efficient but it is not everything."

—B. K. Passi & M. M. Shah

अभिक्रमित अनुदेशन या शिक्षण
(Programmed Instruction)

बीसवीं शताब्दी में सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग सिडनी एल० प्रेसी (Sidney L. Pressy) ने किया और उन्होंने 1920 ई० में कमजोर छात्रों की कमजोरियों को दूर करने के लिए ऐसी मशीनों का विकास किया जिनका प्रयोग शिक्षण तथा परीक्षण दोनों के लिए किया जाता था। इसके बाद अमेरिका के हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बी० एफ० स्किनर (B. F. Skinner) ने 1954 में अधिगम के इस विज्ञान की खोज की। उसने अभिक्रमित अधिगम या अध्ययन में थॉर्नडाइक के नियमों एवं सिद्धान्तों का प्रयोग किया। नार्मन ए० क्राउडर (Norman A. Crowder) ने 1955 में, रॉबर्ट मेगर (Robert Mager) ने 1960-62 में, लॉरेंस स्टैलरो (Laurence Stalurow) ने 1965 में तथा गिलबर्ट तथा रथकार्फ (Ruth-Korf) ने इस क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

भारत में अभिक्रमित शिक्षण का प्रारम्भ 1963 में हुआ। इसका प्रारम्भ सेन्ट्रल पैडागॉजीकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद में हुआ। इसके बाद राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली तथा एडवान्स स्टडीज सेण्टर बड़ौदा के शैक्षिक प्रकोष्ठ अनवरत रूप से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। देश के के कुछ विश्वविद्यालयों के शिक्षा-संकाय भी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं।

19

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिक्रमित शिक्षण तथा अभिक्रमित अधिगम में अन्तर—अभिक्रमित शिक्षण में निर्देश पर बल दिया जाता है जबकि अधिगम में सीखने पर अधिक बल दिया जाता है। वस्तुत: अधिगम की सफलता शिक्षण पर आधारित है। इस दृष्टि से दोनों एक हो सकते हैं। शिक्षण की दृष्टि से जब तक निर्देशों पर ध्यान दिया जाता है, तब तक यह अभिक्रमित अनुदेशन या शिक्षण है और जब इन निर्देशों के आधार पर पाठक अध्ययन कर कुछ सीखने का प्रयास करता है तब इसे अभिक्रमित अधिगम की संज्ञा दी जाती है। इनके अर्थ एवं अन्तर को और स्पष्ट करने के लिए आगे कुछ परिभाषाएँ दी जा रही हैं—

1. डी० एल० कुक—"अभिक्रमित अधिगम आत्म-अनुदेशन विधियों की विस्तृत अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त एक पर्याय है।"

"Programmed learning is a term sometimes used synonymously to refer to the broader concept of auto-instructional methods."

—D. L. Cook

2. सुसन मार्किल—"अभिक्रमित अधिगम वैयक्तिक अनुदेशन की एक विधि है जिसमें छात्र स्वयं को सक्रिय रखते हुए अपनी गति से आगे बढ़ता है और परिणामों की जानकारी भी तत्काल प्राप्त करता जाता है।"

"Programmed learning as popularly understood is a method of giving individualised instruction in which the student is active and proceeds at his own pace and is provided with immediate knowledge of result."

—Susan Markle

3. डनहिल—"अभिक्रमित शिक्षण—शिक्षा का माध्यम न होकर, शिक्षा की विधि है। यह विधि हमको यह निश्चित करने में सहायता देती है कि प्रत्येक छात्र अपना अध्ययन बिल्कुल उसी बात से प्रारम्भ करता है, जो उसे ज्ञात होती है और अपनी सर्वोत्तम गति से निर्धारित लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है।"

"Programmed instruction is a method—not a medium of education which will assist us to ensure that each pupil starts from precisely what he knows and proceeds at his own best pace to a clear-cut objective."

—J. Dunhill

4. जेम्स एम० ली—"अभिक्रमित-शिक्षण सीखी जाने वाली विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण के एक ऐसे ढंग का उल्लेख करता है, जिसमें छात्र विषय-वस्तु को सीखने की पूर्व-नियोजित प्रक्रियाओं का अनुसरण करता है, जिस विषय-वस्तु का उसने ज्ञान प्राप्त किया है, उसकी शुद्धता की स्वयं जाँच करता है और अन्त में सीखी हुई विशिष्ट बातों के ज्ञान को उसी समय या कुछ समय के बाद पुन: सुदृढ़ बनाता है।"

"Programmed instruction refers to presenting material to be learned in such a manner that the student is required to go through

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

refully preplanned specific processes of learning the material, of sting himself on the accuracy with which he has learned the aterial, and finally of reinforcing these specific learnings more or s immediately."

—James M. Lee

5. ड्यूमॉस व बेकनर—"अभिक्रमित या योजनाबद्ध शिक्षण का आधारभूत त-कार्यक्रम है। कार्यक्रम किसी विशेष विषय-वस्तु से सम्बन्धित शिक्षण-सामग्री सुनियोजित कुलक होता है। विषय-वस्तु छोटे एवं सतर्कतापूर्वक क्रमबद्ध रूप में योजित किये गये पृथक सोपानों में प्रस्तुत की जाती है।"

"The basic ingredient of programmed instruction is the programme. A programme is the well-designed set of instructional aterials related to particular subject-matter. The subject-matter presented in small, discrete steps carefully arranged in a logical quence."

—Dumas & Beckner

उपर्युक्त परिभाषाओं से अभिक्रमित अधिगम एवं शिक्षण की निम्नलिखित तें स्पष्ट होती हैं :—

1. यह आत्म-शिक्षण तथा स्वयं सीखने की प्रक्रिया है।
2. इसमें शिक्षक के अभाव में सीखा जा सकता है।
3. इसमें बालक स्वयं का मूल्यांकन भी साथ-साथ करता चलता है।
4. इसमें प्रत्येक छात्र अपनी योग्यता एवं गति के अनुसार ज्ञानार्जन करता है।

अभिक्रमित अधिगम तथा परम्परागत शिक्षण में अन्तर

अभिक्रमित अधिगम या अध्ययन	परम्परागत शिक्षण
यह शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित है।	1. इसमें शिक्षक शिक्षण के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की जानकारी रखते हुए भी उनका सही ढंग से उपयोग नहीं कर पाता है।
शिक्षार्थी या बालक प्रधान है।	2. शिक्षक प्रधान है।
यह विधि वैयक्तिक शिक्षण के लिए उपयोगी है।	3. यह सामूहिक शिक्षण के लिए उपयोगी है।
इसमें विषय-वस्तु सुसंगठित होती है।	4. विषय-वस्तु सुसंगठित नहीं होती।
इसमें सम्पूर्ण कार्यक्रम परीक्षण करने के बाद तैयार किया जाता है।	5. इसमें शिक्षण कार्यक्रम पूर्व परीक्षित नहीं होता।

अभिक्रमित शिक्षण के भेद
(Types of Programmed Instruction)

अभिक्रमित शिक्षण मुख्यतः निम्नलिखित दो प्रकार का है :—

1. शिक्षण यन्त्र : Teaching Machine
2. योजनाबद्ध पाठ्य-पुस्तक : Programmed Text-Book

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1. **शिक्षण यन्त्र (Teaching Machine)**—'ब्रिटेनिका विश्वकोश' (Encyclopaedia Britannica) के अनुसार—"शिक्षण यन्त्र स्वनिर्देशात्मक कार्यक्रम को प्रस्तुत करने के लिए कोई भी युक्ति हो सकती है। इसमें पंच-बोर्ड (Punch-board) को भी स्थान दिया जा सकता है और उस इलैक्ट्रॉनिक युक्ति (Electronic Device) को भी, जो श्रव्यात्मक तथा दृश्यात्मक—दोनों प्रकार की सामग्री प्रस्तुत कर सकते हैं।"

इस प्रकार, शिक्षण यन्त्र वह यांत्रिक युक्ति है, जो छात्रों के समक्ष विषय-वस्तु को व्यवस्थित एवं छोटे-छोटे सोपानों में प्रस्तुत करती है। जेम्स एम० ली ने शिक्षण यंत्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुए लिखा है—"शिक्षण-यन्त्र एक यांत्रिक युक्ति है, जो छात्र के समक्ष निर्धारित विषय-वस्तु को प्रस्तुत करती है, उस विषय-वस्तु पर उसके अधिकार की जाँच करती है और उसे अपने अशुद्ध उत्तरों को तत्काल ठीक करने का अवसर प्रदान करती है।"

"The teaching machine is a mechanical device which presents specified content material to the pupil, tests him on his mastery of this material and provides for the immediate rectification of his incorrect responses.
—James M. Lee : *op. cit.*, p. 38

शिक्षण यन्त्र मानव-शिक्षक के लिए सहायक सामग्री से अधिक है। यन्त्र-अध्यापक-प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान ग्रहण कर लेता है। इसलिए वह श्रव्य-दृश्य सामग्री का अनूठा रूप है। इस यन्त्र का प्रमुख उद्देश्य—प्रत्येक छात्र को अपनी सर्वोत्तम गति के अनुसार कार्य करने का अवसर प्रदान करना है। यन्त्र की यान्त्रिक प्रक्रिया में ऐसी व्यवस्था होती है कि बालक आगे की ओर तब तक नहीं बढ़ सकता है, जब तक सीखी जाने वाली विषय-वस्तु पर अपना अधिकार नहीं कर लेता।

शिक्षण यन्त्र के लाभ (Advantages of Teaching Machine)—शिक्षण यन्त्र के शिक्षण प्रविधि (Teaching Technique) के रूप में अग्रांकित लाभ हैं—

1. यह छात्र को मानसिक स्वक्रिया करने के लिए प्रेरित करता है।
—James M. Le
2. यह अध्ययन की जाने वाली पाठ्य-वस्तु को क्रमबद्ध एवं तार्किक रूप में प्रस्तुत करता है।
—Hollan
3. यह प्रत्येक बालक को अपनी गति के अनुसार सीखने के लिए अवसर प्रदान करता है।
—James M. Le
4. यह अर्जित ज्ञान का तत्काल दृढ़ीकरण करता है।
—Clar
5. यह शिक्षक को बालकों की कमजोरियों को जानने के लिए अवसर प्रदान करता है, ताकि उनका उपचार किया जा सके। —James M. Le

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षण यन्त्र के दोष (Disadvantages of Teaching Machine)—शिक्षण यन्त्र पर आधारित अभिक्रमित शिक्षण में निम्नलिखित दोष हैं—

1. यह पूर्णतः यांत्रिक होने के कारण छात्रों को शिक्षक-छात्र के बीच होने वाली सजीव प्रतिक्रियाओं से दूर रखता है। —**James M. Lee**
2. यह पुरानी (Outdated) तथा भौतिकवादी उद्दीपक-प्रतिक्रिया मनोविज्ञान (Stimulus-Response Psychology) पर आधारित होने के कारण संज्ञात्मक सिद्धान्त (Cognitive Theory) की अवहेलना करता है। —**Nordberg**
3. जब इसके द्वारा विषय-वस्तु को तार्किक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, तब यह मनोवैज्ञानिक ढंग से छात्र को शिक्षा प्रदान नहीं कर सकता है। —**James M. Lee**
4. यह बालक की सृजनात्मकता (Creativity) को उन्नत बनाने के बजाय अवरुद्ध करता है। —**Silberman**
5. यह बालक के उत्साह को शिक्षक की भाँति प्रोत्साहित नहीं करता है। —**James M. Lee**

2. अभिक्रमित पाठ्य-पुस्तक (Programmed Text Book)—अभिक्रमित पाठ्य-वस्तु पर आधारित शिक्षण में निम्नलिखित तीन सोपान निहित हैं :—

(i) प्रस्तुतीकरण (Presentation)
(ii) प्रत्युत्तर (Response)
(iii) दृढ़ीकरण (Reinforcement)

सामान्यतः पाठ्य-पुस्तक केवल पहले सोपान की पूर्ति करती है, क्योंकि वह छात्रों के समक्ष पाठ्य-वस्तु को ही प्रस्तुत करती है। अभ्यास-पुस्तिका (Work-book) छात्रों को पहले और दूसरे सोपानों को पूर्ण करने के लिए बाध्य करती है। किन्तु, अभिक्रमित पाठ्य-पुस्तक छात्रों से तीन सोपानों को पूर्ण करने की माँग करती है। इसी बात में अभिक्रमित पाठ्य-पुस्तक का अनोखापन है।

सामान्यतः शिक्षाशास्त्री इस बात से सहमत हैं कि अभिक्रमित शिक्षण, आधुनिक शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन एवं अपूर्व परीक्षण है। इसमें इस सम्बन्ध में किंचित भी मत-विभिन्नता नहीं है कि शिक्षण की यह नवीन योजना परीक्षित शैक्षिक सिद्धान्तों (Tested Educational Doctrines) पर आधारित होने के कारण अपने ढंग की निराली और अत्यधिक उपयोगी है। किन्तु, कुछ शिक्षाशास्त्रियों को इस विषय में सन्देह है कि यह योजना व्यापक एवं सामान्य रूप से क्रियान्वित नहीं की जा सकती है। उनके इस सन्देह के दो मुख्य कारण हैं। पहला, शिक्षण यन्त्र इतने महँगे हैं कि सब प्रकार के विद्यालयों में उनका प्रयोग किया जाना सम्भव नहीं है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूसरा, शिक्षण यन्त्र—शिक्षण की प्रक्रिया में मानव-शिक्षक का स्थान कदापि नहीं ले सकते।

शिक्षाशास्त्रियों के उक्त सन्देह का निवारण करने के लिए, कुछ अनुभवी शिक्षकों ने दो ठोस सुझाव दिये हैं। पहला, जिन विद्यालयों में धन का अभाव है उनमें शिक्षण यन्त्रों के बजाय ध्वनिपूर्ण फीतों (Tapes) और फिल्मों (Films) के समान सस्ते शैक्षिक उपकरणों का प्रयोग इस प्रकार किया जाय कि वे एक स्थान के विभिन्न विद्यालयों को उपलब्ध हो जायें। दूसरा, जिन विद्यालयों में धन का अभाव नहीं है, उसमें शिक्षकों द्वारा शिक्षण यन्त्रों का प्रयोग कुछ विशेष क्षेत्रों में ही किया जाय। इन अनुभवी शिक्षकों में बी० एफ० स्किनर[1] (B. F. Skinner) भी है जिसने लिखा है :—शिक्षण-प्रक्रिया का स्वरूप ऐसा है कि शिक्षण यन्त्र—मानव शिक्षकों का स्थान कभी ग्रहण नहीं करेंगे। फिर भी, शिक्षकों को अग्रलिखित पाँच क्षेत्रों में इनका बुद्धिमानी से प्रयोग करना चाहिए :—(1) शिक्षण की व्यवस्थित विधियाँ, (2) वैयक्तिक अभ्यास (Individual Drill), (3) कुछ विशेप प्रकार की समस्याओं का समाधान, (4) छात्रों द्वारा किए गए कार्य का पुनर्निरीक्षण, और (5) कुछ निश्चित प्रकार के परीक्षण एवं मूल्यांकन। यदि शिक्षक इन क्षेत्रों में शिक्षण यन्त्रों का बुद्धिमानी से प्रयोग करेंगे, तो उनको छात्रों के व्यक्तिगत भेद (Individual Differences) की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने में असाधारण सहायता मिलेगी।

उपरिअंकित विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षण यन्त्रों या उनके स्थान पर ध्वनिपूर्ण फीतों और फिल्मों का प्रयोग किया जा सकता है। जहाँ तक योजनाबद्ध पाठ्य-पुस्तकों की बात है, यद्यपि उनका अभी अभाव है तथापि सरकार एवं विद्याप्रेमी, उदार व्यक्तियों की आर्थिक सहायता से उनको अधिक संख्या में प्रकाशित करके, छात्रों के लिए उपलब्ध बनाया जाना असम्भव नहीं है। इस प्रकार शिक्षण यन्त्रों एवं क्रमबद्ध पाठ्य-पुस्तकों की कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके योजनाबद्ध शिक्षण का अधिकतम प्रसार किया जा सकता है और छात्रों को उससे लाभान्वित किया जा सकता है। इसी आशा से ड्यूमॉस व बेकनर ने लिखा है :—"ऐसा प्रतीत होता है कि अभिक्रमित शिक्षण का विकास एवं प्रयोग, भविष्य के विद्यालयों में सबसे महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी परिवर्तनों में से एक हो सकता है।"

"It appears that the development and use of programmed instruction may be one of the most revolutionary changes in schools of the future."

—Dumas & Beckner : *op. cit.*, p. 203

1. B. F. Skinner : "Teaching Machines" in Lumsdaine & Glaser (eds), *Teaching Machines & Programmed Learning*, pp. 155-158

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अभिक्रमित शिक्षण के सम्बन्ध में एक अन्य प्रकार की आशा प्रकट करते हुए डनहिल ने लिखा है—"मेरा विश्वास है कि अभिक्रमित शिक्षण इस लक्ष्य की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान देकर—हमारे विद्यालय में प्रत्येक बालक की आयु, योग्यता और स्वाभाविक रुझान के अनुकूल शिक्षा, वास्तविकता का रूप धारण कर लेगी।"

"I believe that programmed instruction will make an outstanding contribution to this end—an education suited to age, ability and aptitude of the individual child will become a reality in our school."—**Dunhill :** *op. cit.*, p. 109.

समूह शिक्षण
(Team Teaching)

समूह शिक्षण या दल शिक्षण (Team Teaching) में शिक्षण-संरचना का वह व्यवस्थित स्वरूप है जिसमें दो या दो से अधिक शिक्षक एक-दूसरे को सहयोग करते हुए छात्रों के समूह को किसी विषय-विशेष का शिक्षण करते हैं। समूह शिक्षण में शिक्षण-प्रक्रिया के जिस छोर पर परम्परागत शिक्षण में एक शिक्षक रहता है, उस पर विभिन्न स्थितियों एवं योग्यताओं वाले शिक्षकों तथा शिक्षण-सहायकों का दल रहता है। यह दल विषय-वस्तु व छात्रों की आवश्यकताओं को समझकर नियोजनपूर्वक शिक्षण-प्रक्रिया का संचालन करता है। शिक्षकों में से एक शिक्षक टीम का लीडर होता है। शिक्षक तथा शिक्षण-सहायक मिलकर दो प्रकार के संगठन बना सकते हैं—(अ) मुख्य गौण भावाधारित, तथा (ब) सहयोगिताधारित। (अ) मुख्य गौण भावाधारित संगठन में विषय-विशेषज्ञ टीम का लीडर होगा। अन्य व्यक्ति उसकी अध्यक्षता में कार्य करेंगे। इसमें प्रत्येक व्यक्ति की वरिष्ठता निश्चित होगी। सभी व्यक्ति मिलकर शिक्षण का पूर्व नियोजन तथा क्रियान्वयन करेंगे। (ब) सहयोगिताधारित संगठन में सभी व्यक्तियों का स्तर समान होगा। ये सब मिलकर समायोजक तथा अभिलेखक का चयन कर लेंगे। समायोजक दल के सदस्यों की बैठकों का सभापतित्व करेगा। सब लोग मिलकर शिक्षण-नियोजन तथा शिक्षण-कार्य में अपनी-अपनी भूमिका का निर्वाह करेंगे। अभिलेखक प्रत्येक वस्तु का अभिलेख रखेगा।

समूह-शिक्षण कोई शिक्षण-विधि नहीं। वस्तुतः यह शिक्षण-संगठन का एक रूप है। परम्परागत शिक्षण-प्रक्रिया एक शिक्षक तथा एक कक्षा के बीच चलती है जबकि समूह शिक्षण शिक्षकों एवं उनके सहायकों के दल तथा कक्षा के बीच चलता है। समूह शिक्षण एक ऐसी शैक्षणिक परिस्थिति है जिसमें शिक्षण कौशल से सम्पन्न दो या अधिक शिक्षक छात्रों के एक समूह के लिए परस्पर सहयोग से तथा शिक्षण की विभिन्न परिस्थितियों के लिए उपयोगी, लचीली, समय-विभाजन एवं समूह-युक्तियों का प्रयोग करते हुए नियोजन एवं शिक्षण कार्य करते हैं। इस शिक्षण-तकनीक में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शिक्षक परस्पर सहयोग के आधार पर शिक्षण करते हैं। इस कारण कुछ विद्वान इसे सहकारी शिक्षण (Co-operative Teaching) की संज्ञा देते हैं।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—अन्य शैक्षिक नवाचारों की भाँति समूह शिक्षण भी एक अमेरिकी उपज है। अमेरिका में इस तकनीक का प्रयोग इस सदी के पाँचवें दशक से हो रहा है। परन्तु भारत के लिए यह तकनीक नयी है। इस तकनीक के विकास में हार्वे सेण्ट लुई मिसूरी, फ्रांसिस केपल आदि ने महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। हैरी बकर तथा हैरिस टेलर ने अपने शोध कार्य से समूह शिक्षण के स्वरूप को निखारने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। शिकागो विश्वविद्यालय के फ्रांसिस चेज ने इसका दृढ़तापूर्वक समर्थन करके इस आन्दोलन को आगे बढ़ाया।

समूह शिक्षण के लाभ—शिक्षा-विशेषज्ञों की दृष्टि में दल-शिक्षण में परम्परागत शिक्षण की तुलना में अनेक लाभ हैं जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं :—

(1) समूह शिक्षण में छात्रों को आत्माभिव्यक्ति के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं।

(2) समूह शिक्षण में शिक्षक-छात्र एक-दूसरे के निकट आते हैं जिससे शिक्षक को छात्रों की समस्याओं को समझने का अधिक अवसर मिलता है।

(3) इस तकनीक में शिक्षक को अपनी योग्यता एवं कौशल का उपयोग करने का पूरा-पूरा अवसर मिलता है, इसलिए शिक्षक शिक्षण-कार्य में रुचि लेने लगता है।

(4) समूह शिक्षण में छात्रों को विषय-विशेषज्ञों से सीखने के अपेक्षाकृत अधिक अवसर प्राप्त होते हैं जिसके फलस्वरूप छात्रों की ज्ञान-पिपासा शान्त होती है। साथ ही छात्रों में नवीन अभियोग्यता (Aptitude) का विकास होता है।

(5) समूह-शिक्षण के प्रयोग से शिक्षण के स्तर का उन्नयन किया जा सकता है।

(6) समूह शिक्षण के प्रयोग से अनुशासन में सुधार लाया जा सकता है।

(7) इस तकनीक के प्रयोग से शिक्षकों में परिश्रमशीलता, सहयोग, स्वाध्याय, प्रयोगशीलता एवं कार्यनिष्ठता आदि गुणों का विकास होता है।

दूरदर्शन द्वारा शिक्षा
(Television Teaching)

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। भारतीय इतिहास में एक युग वह था जब प्रकृति की गोद में तपोवन के बीच सघन वृक्ष की छाया के नीचे बालक अध्ययन करते थे। उस समय छात्रों की संख्या भी सीमित थी तथा अध्यापन के विषय धर्म-प्रधान थे। कालान्तर में सभ्यता के विकास के साथ-साथ भारत के मानचित्र पर नगर उभरने लगे, ज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा की आवश्यकता की अनुभूति होने लगी तथा अधिकाधिक छात्र शिक्षा ग्रहण करने आने लगे। अब तपोवन आश्रम अपर्याप्त सिद्ध होने लगे। अतः शालाएँ नगरों के भीड़ भरे चौराहों पर लगने

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लगीं। बीसवीं शताब्दी में विज्ञान के युग ने एक ऐसी करवट बदली है जब छात्रों की बढ़ती हुई अपार संख्या तथा ज्ञान के असीमित दायरे को देखते हुए पृथ्वी की ये शालाएँ भी अनुपयुक्त प्रतीत होने लगीं।

शिक्षा-संस्थाओं की बढ़ती संख्या, बढ़ता हुआ छात्रों का नामांकन, योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव तथा निरन्तर बढ़ते हुए शिक्षा-व्यय ने शिक्षाविदों को दूरदर्शन का प्रयोग शिक्षा-जगत में करने के लिए बाध्य किया। इसका प्रयोग शिक्षा के गुणात्मक विकास के लिए ही नहीं किया गया वरन् अध्यापक को अवसरानुकूल अध्यापन कार्य में भी सहायता देने के लिए भी किया गया। दूरदर्शन का प्रयोग उन सभी स्त्री-पुरुषों को शिक्षित करने के लिए भी किया गया जो कि अपने दायित्वों के निर्वाह के कारण पूर्णकालिक या विद्यालयी शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ रहे थे।

आज हम टेलीविज़न के युग में निवास कर रहे हैं। सर्वप्रथम अमेरिका में हारवार्ड विश्वविद्यालय के हेराल्ड हण्ट नामक व्यक्ति ने इसका प्रारम्भ करते हुए कहा था, "अब हमें परम्परागत दकियानूसी तथा पिछड़ी हुई शिक्षा-प्रणाली को त्याग कर टेलीविजन जैसे आधुनिक उपकरण द्वारा शिक्षा का आरम्भ करना चाहिए।" आज विश्व के अनेक विकासशील देश इसे शिक्षा का एक सशक्त तथा उपयोगी साधन के रूप में काम में ला रहे हैं। भारत ने भी भारतीय शालाओं में टेलीविजन के युग का सूत्रपात किया। नवम्बर 1982 तक हमारे देश में कुल 41 दूरदर्शन केन्द्र कार्य कर रहे थे। इसकी उपयोगिता को देखते हुए यह तय किया गया कि नवम्बर 1984 तक पूरे देश में 180 दूरदर्शन केन्द्र और प्रारम्भ किये जायेंगे।

Satellite-INSAT-IB के प्रारम्भ से भारत के छः राज्यों—राजस्थान, बिहार, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, आन्ध्र प्रदेश व कर्नाटक में दूरदर्शन का प्रयोग व्यापक रूप से होने लगा। सेटेलाइट की शृंखला को और आगे बढ़ाने के लिए व्यापक राष्ट्रीय कार्यक्रम तैयार किये जा रहे हैं। यह आशा की जा रही है कि पूरे देश की जनसंख्या का 70 प्रतिशत इसके द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों को देख व सुन सकेगा। साथ ही 1990 ई० तक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी और 15-35 आयु के करीब 10 करोड़ निरक्षरों की निरक्षरता को दूर करने में इसका पर्याप्त सहयोग प्राप्त किया जा सकेगा।

दूरदर्शन उच्चकोटि के विद्वानों तथा शिक्षकों को सीखने वालों के घरों तक पहुँचाता है। इस कारण यह शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाने में सहयोग दे सकता है। साथ ही यह सीखने वालों को चिन्तन करने, विश्लेषण एवं संश्लेषण करने, जागरूक बनाने तथा मूल्यांकन करने के लिए अवसर प्रदान करता है। दूरदर्शन सीखने-सिखाने की सम्प्रेषण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। इसके द्वारा कक्षा-शिक्षण को सरल

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तथा समृद्ध बनाया जा सकता है। इसके माध्यम से खुले विश्वविद्यालयों तथा दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों को सफल बनाया जा सकता है।

प्रश्न

1. What is meant by micro teaching ? Discuss its merits and demerits.

   सूक्ष्म शिक्षण से क्या अभिप्राय है ? इसके गुण-दोषों का विवेचन कीजिए।

2. Explain what is meant by programmed learning ? Differentiate programmed Instruction and programmed Learning.

   स्पष्ट कीजिए कि अभिक्रमित अधिगम का क्या अभिप्राय है ? अभिक्रमित अधिगम तथा अभिक्रमित शिक्षण के अन्तर को बताइए।

3. Write short notes on the following—

   (a) Team teaching.

   (b) Teaching Machine.

   (c) Television teaching.

   निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए—

   (अ) समूह शिक्षण

   (ब) शिक्षण यन्त्र

   (स) दूरदर्शन द्वारा शिक्षा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिशिष्ट

- इतिहास में हरबार्ट की पंचपद प्रणाली के आधार पर पाठ-योजना बनाने के लिए कुछ संकेत तथा पाठ-योजनाएँ
- इकाई-योजना तथा उस पर आधारित दैनिक पाठ-योजना
- मूल्यांकन-प्रक्रिया तथा पाठ-योजना
- समय-रेखाएँ एवं समय-ग्राफ
- युद्ध-योजना
- विभिन्न स्तरों के लिए प्रश्न-पत्र।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

I

इतिहास में हरबार्ट की पंचपद प्रणाली के आधार पर पाठ-योजना बनाने के लिए कुछ संकेत तथा पाठ-योजनाएँ

"Herbart's method consist in a given series of steps, determined not by the character of the material, but by the way in which the human mind acts." —*Paul Manroe.*

विषय-प्रवेश

रूसो ने शिक्षण की परम्परागत विधियों की निन्दा करके शिक्षण को बाल-प्रकृति के अनुरूप बनाने पर बल दिया। पेस्टॉलॉजी ने रूसो से प्रेरणा प्राप्त करके इन्द्रियों द्वारा ज्ञान-प्राप्ति को शिक्षण का आधार घोषित किया। इसी आधार पर उसने स्टैंज (Stanz) के अपने विद्यालय में सभी विषयों का क्रमबद्ध पदों में शिक्षण किया। जर्मन शिक्षक हरबार्ट (Johann Friedrich Herbart) ने पेस्टॉलॉजी के कार्य को आगे बढ़ाया। उसने रुचि के सिद्धान्त पर बल देकर शिक्षण को मनोवैज्ञानिक रूप प्रदान किया और शिक्षण की एक नई प्रणाली का प्रतिपादन किया, जो 'हरबार्ट की पंचपद प्रणाली' के नाम से विख्यात है। इसी को लेखकों ने 'हरबार्ट की शिक्षण-विधि के औपचारिक पद' (Herbart's formal steps of method) कहा है।

हरबार्ट के पद : Herbart's Steps—हरबार्ट ने कक्षा-शिक्षण के लिए निम्नलिखित चार पदों का प्रतिपादन किया—

1. **स्पष्टता : Clearness**—बालक के समक्ष तथ्यों या विषय-वस्तु को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना।

2. **सम्बन्ध : Association**—प्रस्तुत किए जाने वाले तथ्यों या नवीन ज्ञान का बालक के पूर्व ज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करना।

3. **व्यवस्था : System**—बालक के समक्ष प्रस्तुत किये जाने वाले तथ्यों को क्रमबद्ध करके व्यवस्थित रूप देना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

4. विधि : Method—बालक द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान का व्यावहारिक जीवन में विधिपूर्वक प्रयोग करना।

हरबार्ट के पदों का अन्तिम रूप : Final Form of Herbart's Steps—हरबार्ट द्वारा प्रतिपादित चार पदों को उसके शिष्यों और अनुयायियों ने अधिक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण बनाने का प्रयास किया। अतः उसके शिष्य ज़िलर (Ziller) ने स्पष्टता नामक पद को दो भागों में विभाजित किया—(1) प्रस्तावना (Preparation), और (2) प्रस्तुतीकरण (Presentation)। हरबार्ट के एक अन्य शिष्य रीन (Rein) ने दोनों पदों के बीच में एक उपपद जोड़ दिया—उद्देश्य-कथन (Statement of Aim)। कुछ समय बाद हरबार्ट के अनुयायियों ने शिक्षण के इन पदों को निम्नलिखित रूप प्रदान किया :

1. (अ) प्रस्तावना	1. (a) Preparation
(ब) उद्देश्य-कथन	(b) Statement of Aim
2. प्रस्तुतीकरण	2. Presentation
3. तुलना	3. Comparison
4. सामान्यीकरण	4. Generalization
5. प्रयोग	5. Application

पाठ-योजना का स्वरूप
Form of Lesson Plan

हरबार्ट के पंचपदों पर आधारित पाठ-योजना का निम्नलिखित स्वरूप हो सकता है—

पाठ-योजना क्रम-संख्या

तिथि········	कक्षा········
विषय········	घण्टा········
संस्था········	समय········
प्रकरण········	छात्रों की औसत आयु

छात्राध्यापक का नाम········

सामान्य उद्देश्य (General Aims)········
विशिष्ट उद्देश्य (Specific Aim)········
सहायक सामग्री (Material Aid)········
पूर्व ज्ञान (Previous Knowledge)········
प्रस्तावना (Preparation or Introduction)········
उद्देश्य-कथन (Statement of Aim)········
प्रस्तुतीकरण (Presentation)········
पुनरावृत्ति (Recapitulation)········
श्यामपट सारांश (Black-board summary)········
गृह-कार्य (Home work)········

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाठ-योजना के स्वरूप में दिए गए शीर्षकों का संक्षिप्त वर्णन निम्नांकित है—

1. **पाठ-योजना की क्रम संख्या**—इस शीर्षक पाठ-योजना की क्रम-संख्या लिखी जाती है जिससे यह ज्ञात हो जाता है कि अब तक कितने पाठ पढ़ाये जा चुके हैं।

2. **तिथि**—यहाँ वह तिथि लिखी जाती है, जिस तारीख को पाठ पढ़ाया जाना है।

3. **कक्षा**—यहाँ वह कक्षा और उसका खण्ड (Section) लिखा जाता है, जिसको पाठ पढ़ाया जाना है।

4. **विषय**—यहाँ वह विषय लिखा जाता है, जिसके अन्तर्गत पढ़ाया जाने वाला पाठ आता है, उदाहरणार्थ—'भारतीय इतिहास'।

5. **घण्टा**—यहाँ समय-तालिका (Time-table) के हिसाब से वह घण्टा लिखा जाता है, जिसमें पाठ पढ़ाया जाना है।

6. **संस्था**—यहाँ उस विद्यालय का नाम लिखा जाता है, जहाँ पाठ पढ़ाया जाना है।

7. **समय**—यहाँ घण्टे की अवधि लिखी जाती है।

8. **प्रकरण**—यहाँ पाठ का शीर्षक लिखा जाता है; जैसे—'पानीपत का प्रथम युद्ध', 'महाकाव्य कालीन सभ्यता', 'चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन-प्रबन्ध'। शीर्षक सरल, बोध तथा संक्षिप्त होना चाहिए। साथ ही यह पाठ के केन्द्रीय भाव को व्यक्त करे। यह श्यामपट पर पहले से न लिखा जाना चाहिए, वरन् उस समय लिखा जाय जब शिक्षक प्रस्तावना के बाद उद्देश्य-कथन को पूरा कर ले।

9. **छात्रों की औसत आयु**—यहाँ उस कक्षा के छात्रों की औसत आयु लिखी जाती है, जिसको पाठ पढ़ाया जाना है।

10. **छात्राध्यापक का नाम**—यहाँ उस शिक्षक का नाम लिखा जाता है जो पाठ को पढ़ा रहा है।

11. **सामान्य उद्देश्य**—प्रत्येक विषय के सभी पाठों के शिक्षण के कुछ सामान्य उद्देश्य होते हैं। ये उद्देश्य विषय से सम्बन्धित होते हैं। यहाँ इन उद्देश्यों लिखा जाता है। इतिहास के कुछ सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं—

(i) छात्रों को इतनी मानसिक क्षमता प्राप्त कराना जिससे वे ऐतिहासिक तथ्यों की जाँच कर सकें।

(ii) छात्रों की मानसिक शक्तियों को विकसित कराना।

(iii) छात्रों के दृष्टिकोण को उदार बनाना और उनको अच्छे नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करना।

(iv) छात्रों को मानव-समाज के विकास से अवगत कराना।

(v) छात्रों में वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण विकसित करना।

(vi) छात्रों में इतिहास के लिए रुचि विकसित करना।

(vii) मानचित्र पर घटनाओं सम्बन्धी स्थलों तथा राज्य सीमा का ज्ञान कराकर भौगोलिक स्थिति से अवगत कराना।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

12. विशिष्ट उद्देश्य—विशिष्ट उद्देश्य प्रकरण से सम्बन्धित होता है। विशिष्ट उद्देश्य एक भी हो सकता है और एक से अधिक भी; जैसे—'आर्यों का सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन' नामक पाठ के निम्नलिखित विशिष्ट उद्देश्य हो सकते हैं—

(i) छात्र आर्यों के धार्मिक जीवन का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

(ii) छात्र आर्यों के आर्थिक एवं व्यावसायिक जीवन की प्रमुख विशेषताओं को जानेंगे।

(iii) छात्र आर्यों के सांस्कृतिक जीवन की मुख्य विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

(iv) छात्र आर्यों की शासन-व्यवस्था तथा उनके राजनैतिक जीवन की प्रमुख विशिष्टताओं से अवगत होंगे।

13. सहायक सामग्री—पाठ विशेष को पढ़ाने के लिए शिक्षक जिस सामग्री का प्रयोग करना चाहता है, उसे यहाँ लिखा जाता है; जैसे—मानचित्र, चित्र, समय-रेखा, मॉडल, एपिडायस्कोप तथा उसके द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले चित्र आदि। सहायक सामग्री के अन्तर्गत चॉक, डस्टर, संकेतक आदि नहीं आते हैं। सहायक सामग्री को जिस क्रम में तथा जिस स्थान पर प्रयुक्त करना है, उसे उसी क्रम में लिखना चाहिए।

14. पूर्व ज्ञान—प्रत्येक पाठ-योजना में छात्रों के पूर्व-ज्ञान का उल्लेख करना आवश्यक होता है, क्योंकि प्रस्तावना का आधार यही है। पूर्व-ज्ञान के अन्तर्गत केवल छात्रों के द्वारा पहले पढ़ी बातों का वरन् उनके उन सब अनुभवों का समावेश होता है, जो उनको पाठ-विशेष के सम्बन्ध में प्राप्त हैं।

15. प्रस्तावना—हरबार्ट के अनुसार नया ज्ञान या अनुभव प्रदान करने के लिए हमें सबसे पहले छात्र के उस पूर्व-ज्ञान या अनुभव को चेतना के केन्द्र में लाना चाहिए, जो उसे नवीन ज्ञान की ओर आकर्षित कर सके। इसी को हरबार्ट ने 'पूर्वानुवर्ती पिण्ड' (Apperceptive Mass) की संज्ञा दी है। पाठ की प्रस्तावना का यही मुख्य उद्देश्य है। प्रस्तावना के प्रमुख प्रयोजन निम्नलिखित हैं—

(i) पूर्व-ज्ञान की जाँच करना।

(ii) पूर्व-कार्य का सम्बन्ध वर्तमान कार्य से स्थापित करना।

(iii) नवीन पाठ के लिए प्रभावोत्पादक वातावरण उत्पन्न करना।

(iv) मस्तिष्क को नवीन विषय-वस्तु को ग्रहण करने के लिए तैयार करना।

16. उद्देश्य-कथन—यहाँ पाठ का उद्देश्य लिखा जाता है। छात्रों के समक्ष पाठ के उद्देश्य को ऐसे ढंग से प्रस्तुत किया जाय कि उसका महत्त्व छात्रों के सामने स्पष्ट हो जाय। यदि छात्रों के समक्ष उद्देश्य स्पष्ट हो जायेगा तो व्यवस्थित रूप

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चिन्तन तथा कार्य कर सकेंगे और उद्देश्य की पूर्ति के लिए यथाशक्ति प्रयास करेंगे।

17. **प्रस्तुतीकरण**—सम्पूर्ण समस्या का केन्द्र-बिन्दु पाठ के प्रस्तुतीकरण में निहित है। इसमें लिखा जाता है कि पाठ विशेष को छात्रों के समक्ष किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है।

18. **पुनरावृत्ति**—यहाँ वे प्रश्न लिखे जाते हैं, जिनकी सहायता से पाठ की पुनरावृत्ति की जाती है। इनको पूछने से शिक्षक को यह ज्ञान हो जाता है कि छात्र पढ़ाये गए पाठ को समझ गये हैं या नहीं।

19. **श्यामपट-सारांश**—श्यामपट-सारांश पुनरावृत्ति के लिए पूछे जाने वाले प्रश्नों से तैयार किया जाता है। अतः ये प्रश्न क्रमवद्ध होने चाहिए। जो छात्र उनके ठीक उत्तर दें, उनको संक्षिप्त और स्पष्ट शब्दों में श्यामपट पर लिख देना चाहिए। श्यामपट-सार को तैयार करने की दूसरी विधि यह है कि पाठ के विकास के साथ-साथ प्रमुख बातों को श्यामपट पर संक्षेप में लिखते चलना चाहिए। परन्तु छात्रों को इन मुख्य बातों को साथ-साथ लिखने की अनुमति नहीं दी जाती है वरन् बाद में उनको उतारने के लिए समय दे दिया जाता है और उस समय शिक्षक कक्षा का निरीक्षण करता रहता है।

20. **गृह-कार्य**—गृह-कार्य के माध्यम से शिक्षक छात्रों के अर्जित ज्ञान को प्रयोग में लाता है। गृह-कार्य निर्धारित करते समय शिक्षक को छात्रों की रुचि, योग्यता, व्यक्तिगत भेद आदि का ध्यान रखना चाहिए।

उदाहरण पाठ-योजनाएँ

पाठ-योजना 1

दिनांक········	कक्षा—6
विषय—भारतीय इतिहास	समय-चक्र—चतुर्थ
प्रकरण—हर्षवर्द्धन का शासन-प्रबन्ध	अवधि—40 मिनट
विद्यालय—आर० ई० आई० हाईस्कूल, दयालबाग	औसत आयु—11 वर्ष
छात्राध्यापक········	

सामान्य उद्देश्य—(1) इतिहास के क्रमिक विकास से छात्रों में इसके प्रति रुचि उत्पन्न करना।
(2) छात्रों में स्वदेश-प्रेम की भावना जाग्रत करना।
(3) घटनाओं की पारस्परिक तुलना करते हुए भूतकाल का वर्तमान से सम्बन्ध स्थापित करना।
(4) बालकों में नैतिकता का विकास कर उन्हें चरित्रवान् बनाना।

विशिष्ट उद्देश्य—छात्र हर्षवर्द्धन के शासन-प्रबन्ध के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहायक सामग्री—भारतवर्ष का तत्कालीन मानचित्र तथा कक्षा-कक्ष के उपयोगी उपकरण।

पूर्व-ज्ञान—छात्र हर्षवर्धन की विजयों के विषय में ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

प्रस्तावना—(1) हर्षवर्धन गद्दी पर कब बैठा ?
(मानचित्र प्रस्तुत करते हुए)
(2) उसका साम्राज्य कहाँ से कहाँ तक फैला हुआ था ?
(3) अपने साम्राज्य को व्यवस्थित रखने के लिए उसने किस प्रकार की शासन-व्यवस्था कायम की थी ?

उद्देश्य-कथन—आज हम हर्षवर्धन की शासन-व्यवस्था के विषय में ही अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण—(1) आजकल हमारे देश का सबसे वड़ा अधिकारी कौन है ?
(2) हर्ष के समय में देश का सबसे वड़ा अधिकारी कौन होता था ?

अध्यापक कथन—आजकल हमारे देश में प्रजातन्त्रात्मक प्रणाली होने के कारण राष्ट्रपति देश का सबसे बड़ा अधिकारी है। हर्ष के समय में राजतन्त्रात्मक शासन-पद्धति होने के कारण राजा राज्य का सर्वोच्च पदाधिकारी होता था। प्रधान शासक की हैसियत से वह राज्य के अधिकारियों की नियुक्ति करता था। वित्त विभाग, वैदेशिक विभाग, गृह विभाग, गुप्तचर विभाग आदि की देखभाल करना राजा का मुख्य काम था एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों में 'मंत्रि-परिषद्' से भी परामर्श लेता था। उस समय पुरोहित, सेनापति, परराष्ट्र सन्धि विग्रहक आदि अनेक अधिकारी शासन-व्यवस्था के कार्यों में सलाह देते थे।

प्रश्न—(मानचित्र प्रस्तुत करके)—

हर्ष ने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने साम्राज्य को कितने भागों में विभाजित किया था ?

अध्यापक-कथन—हर्ष ने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए अपने साम्राज्य को चार बड़े भागों में विभाजित किया : (1) थानेश्वर, (2) कन्नौज (3) पाटलिपुत्र, (4) उज्जयिनी। इनको प्रान्त कहते थे। प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी की नियुक्ति सम्राट स्वयं करता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

था। प्रान्त के सबसे बड़े अधिकारी को 'भोगपति' कहा जाता था। प्रान्तों को विषयों में विभाजित किया जाता था और विषय के अधिकारी को 'विषयपति' कहा जाता था। इस प्रकार हर्ष की शासन-व्यवस्था सुव्यवस्थित थी।

प्रश्न—(1) आजकल ग्रामों का प्रबन्ध कौन-सी संस्था करती है?

(2) हर्ष के समय में ग्रामों का प्रबन्ध कौन-सी संस्था करती थी?

अध्यापक-कथन—आजकल की भाँति हर्ष के समय में भी शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम ही थी। चीनी यात्री 'ह्वेनसांग' के अनुसार ग्राम में एक ग्राम-सभा होती थी। इसका प्रमुख ग्रामिक होता था। यह ग्राम वालों द्वारा निर्वाचित होता था। यह सभा ग्राम के छोटे-मोटे झगड़ों का निर्णय करती थी।

प्रश्न—(1) आपके नगर में रात को पहरा कौन देता है?

(2) हर्ष के समय में आन्तरिक शान्ति के लिए क्या प्रबन्ध था?

अध्यापक-कथन—इसी प्रकार हर्ष ने भी पुलिस विभाग की स्थापना की थी। उस समय पुलिस दो प्रकार की थी। साधारण पुलिस तथा खुफिया पुलिस। गुप्तचर विभाग के लोग भेष बदल-बदलकर घूमा करते थे। वे गुप्त बातों की सूचना राजा को दिया करते थे। इससे राज्य में कम अपराध होते थे।

प्रश्न—(1) देश की बाह्य सुरक्षा के लिए हमारी सरकार ने क्या व्यवस्था की है?

(2) हर्ष ने अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए क्या प्रबन्ध किया था?

अध्यापक-कथन—हर्ष ने अपने विशाल साम्राज्य की सुरक्षा के लिए एक शक्तिशाली सेना का संगठन किया था। इस सेना में हाथी, अश्व तथा पैदल तीन विभाग थे। आरम्भ में उसकी सेना में 5,000 हाथी, 20,000 घुड़सवार तथा 50,000 पैदल सैनिक थे। परन्तु बाद में 6,000 हाथी तथा 1 लाख घुड़सवार हो गये थे। महासन्धि विग्रहक रक्षा विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। सेना के प्रत्येक

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विभाग के सेनापति अलग-अलग थे। इस प्रकार हर्ष की सेना सुसंगठित थी।

प्रश्न—(1) हमारे आपसी झगड़ों का फैसला कहाँ होता है ?

(2) हर्ष के समय में न्याय की क्या व्यवस्था थी ?

अध्यापक-कथन—हर्ष के समय में न्याय-व्यवस्था अति उत्तम थी। उस समय भी न्याय के लिए विभिन्न स्तर के न्यायालय थे। ग्रामों से प्राथमिक न्यायालय प्रारम्भ होते थे और सर्वोच्च न्यायालय थानेश्वर में था। सर्वोच्च न्याय शक्ति सम्राट में निहित थी। नीचे की अदालतों की अपील सर्वोच्च न्यायालय में होती थी। उस समय दो प्रकार के न्यायालय थे: (1) फौजदारी न्यायालय, (2) दीवानी न्यायालय।

इस युग के दण्ड के नियम अति कठोर थे। राजद्रोह करने वाले अपराधियों को आजीवन कारावास दिया जाता था। समाज के विरुद्ध आचरण करने वाले या व्यभिचारी व्यक्तियों के हाथ, नाक, कान आदि काट दिए जाते थे। साधारण अपराधों में केवल अर्थ दण्ड ही दिया जाता था। दण्ड कठोर होने के कारण अपराध कम होते थे।

प्रश्न—(1) हमारी सरकार की आय के मुख्य साधन कौन से हैं ?

(2) हर्ष के समय में आय के कौन-से साधन थे ?

अध्यापक-कथन—उस समय केन्द्रीय शासन की आय का मुख्य साधन भूमि कर था, जो कृषकों की उपज का 1/6 भाग सरकार को कर के रूप में देना पड़ता था। भूमि कर के अलावा अन्य साधन; जैसे—चुङ्गी, अर्थदण्ड, व्यापार आदि से भी सरकार की आमदनी होती थी।

प्रश्न—(1) हमारी सरकार राज्य की आय को मुख्यतः किन-किन कार्यों पर खर्च करती है ?

(2) हर्ष अपने राज्य की आय को किस प्रकार व्यय करता था ?

अध्यापक-कथन—ठीक इसी प्रकार हर्ष के समय में व्यय की मुख्य मदें राज परिवार, धार्मिक कार्यों, सेना, आन्तरिक शांति, प्रशासन, शिक्षा, दान, भवन निर्माण, सिंचाई, यातायात आदि थीं। उस समय लोगों का जीवन बड़ा सुखमय था।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रश्न—(1) एक राजा को जनता की भलाई के लिए क्या करना चाहिए ?

(2) हर्ष ने प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या कार्य किए ?

अध्यापक-कथन—हर्ष अशोक की भाँति अपनी प्रजा का शुभचिन्तक था। उसने सड़कें बनवाईं तथा उनके किनारे पाठशालाओं की व्यवस्था की। उसके बौद्धविहार तथा स्तूपों का निर्माण करवाया। निर्धनों के लिए दान की भी व्यवस्था की। उसने कुछ हितकारी संस्थाओं को भी जन्म दिया; जैसे—नालन्दा विश्वविद्यालय, जिसमें देश-विदेश के 10,000 विद्यार्थी निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते थे। वह विद्वानों तथा उच्चकोटि के कलाकारों को पुरस्कार देता था।

प्रश्न—(1) अशोक किस धर्म को मानता था ?

(2) उसने बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए क्या-क्या कार्य किए ?

(3) अशोक अन्य धर्मों के साथ कैसा व्यवहार करता था ?

(4) हर्षवर्धन किस धर्म को मानता था ?

अध्यापक-कथन—हर्ष बौद्ध धर्म को मानता था। परन्तु वह अन्य धर्मों का निरादर नहीं करता था। वह प्रति पाँचवें वर्ष प्रयाग में त्रिवेणी के संगम पर लगने वाले मेले में फौजी सामान को छोड़कर अपना सब-कुछ दान कर देता था। अन्त में वह राजश्री तथा अन्य राजाओं द्वारा दिए हुए कपड़ों को पहनकर राजधानी वापस आता था।

श्यामपट सारांश

(1) हर्ष ने अपने साम्राज्य को चार बड़े भागों में विभाजित किया : (1) थानेश्वर, (2) कन्नौज, (3) पाटलिपुत्र, (4) उज्जयिनी।

(2) शासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम ही थे।

(3) हर्ष के समय न्याय का सर्वोच्च अधिकारी स्वयं सम्राट होता था।

(4) हर्ष की सेना तीन भागों में विभाजित थी—
(1) पैदल, (2) घुड़सवार, (3) हाथी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(5) हर्ष के समय में आय का मुख्य साधन भूमि-कर था ।

पुनरावृत्ति प्रश्न—(1) हर्ष ने अपने साम्राज्य को कितने भागों में विभाजित किया ?

(2) हर्ष के समय में शासन की सबसे छोटी इकाई क्या थी ?

(3) हर्ष के शासन-काल में न्याय का सर्वोच्च अधिकारी कौन होता था ?

(4) हर्ष की सेना कितने भागों में विभाजित थी ?

(5) हर्ष के राज्य की आय के मुख्य साधन क्या था ?

गृह-कार्य—हर्षवर्धन के शासन-प्रबन्ध के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

2
इकाई-योजना तथा उस पर आधारित दैनिक पाठ-योजना

इकाई-योजना

विषय—भारतीय इतिहास　　कक्षा—9　　समयावधि—7
इकाई—फीरोज तुगलक　　कालांश—(प्रत्येक कालांश 40 मिनट)
उप-इकाइयाँ : Sub-units—

(अ) फिरोज तुगलक का प्रारम्भिक जीवन एवं राज्यारोहण।
(ब) फिरोज की आर्थिक नीति।
(स) फिरोज के न्याय सम्बन्धी सुधार एवं शिक्षा।
(द) फिरोज की सैनिक व्यवस्था एवं दास-प्रथा।
(य) फिरोज की धार्मिक नीति।
(र) फिरोज की विजयें।
(ल) फिरोज का चरित्र एवं व्यक्तित्व।

1. ज्ञान : Knowledge—छात्र निम्नलिखित तथ्यों, धारणाओं, घटनाओं आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे—

फिरोज के प्रारम्भिक जीवन एवं उसकी शिक्षा, राज्यारोहण व कठिनाइयों पर विजय, फीरोज की आर्थिक व्यवस्था, कृषि की उन्नति के लिए किये गये कार्य, सिक्के, न्यायिक सुधार, शिक्षा की उन्नति के लिए कार्य, धार्मिक विचार, बंगाल, जामनगर, नगरकोट तथा सिन्ध-विजय तथा फिरोज का चरित्र एवं व्यक्तित्व का मूल्यांकन।

2. अवबोध : Understanding—छात्र उपर्युक्त तथ्यों का वर्गीकरण तथा तुलना एवं विभेद कर उनका महत्त्व प्रकट कर सकेंगे।

3. कुशलता : Skill—(i) छात्रों में मानचित्र, समय-रेखा तथा स्रोत-सन्दर्भों के अध्ययन की कुशलता का विकास होगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(ii) छात्रों की स्मरण, कल्पना, तर्क एवं निर्णय शक्तियों का विकास होगा।

(iii) छात्रों में शुद्ध एवं प्रभावी भाषा में अपने विचारों को व्यक्त करने की कुशलता का विकास होगा।

4. अभिरुचि : Attitude—छात्रों में सम्बद्ध तथ्यों से विस्तृत अध्ययन की अभिरुचि विकसित होगी।

अध्यापन बिन्दु : Teaching Points

1. फिरोज के प्रारम्भिक जीवन से सम्बन्धित तथ्य।

2. फिरोज का राज्यारोहण तथा मुसलमानों में उत्तराधिकार के नियम का अभाव। राज्यारोहण से सम्बन्धित विरोधी विचार।

3. करों की नवीन व्यवस्था, कृषि की उन्नति, सिंचाई व्यवस्था, नवीन सिक्कों—आधा तथा बिख—का चलाना।

4. मानवीय दृष्टिकोण से नवीन दण्ड-व्यवस्था, यात्रियों की मृत्यु से सम्बन्धित रिपोर्ट कराना, विवाह विभाग आदि। विद्यालयों तथा मदरसों की स्थापना, फारसी भाषा में 300 संस्कृत पुस्तकों का अनुवाद, तारीखे-फिरोजशाही की रचना आदि।

5. सामन्ती आधार पर सेना का संगठन तथा दास-प्रथा।

6. हिन्दुओं के प्रति कठोर व्यवहार, हिन्दू-मन्दिरों को नष्ट करना, हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिए प्रलोभन देना।

7. बंगाल, जामनगर, नगरकोट तथा सिन्ध की विजयें।

8. पूर्व-घटनाओं एवं तथ्यों के आधार पर उसके चरित्र एवं व्यक्तित्व का मूल्यांकन।

शिक्षण-सामग्री : Teaching Aids

समय रेखा, मानचित्र, स्रोत-सन्दर्भ, मानचित्र तथा फिरोज का चित्र।

अध्यापन-अध्ययन स्थितियाँ : Teaching Learning Situations

(अ) अध्यापक क्रियाएँ : Teacher Activities—

1. शिक्षक छात्रों के पूर्व-ज्ञान के आधार पर उत्प्रेरणात्मक ढंग से उपइकाई या पाठ की प्रस्तावना प्रस्तुत करेगा और उस उप-इकाई के उद्देश्य को स्पष्ट करेगा।

2. शिक्षक छात्रों के सहयोग से पाठ का विकास करेगा। इसके अतिरिक्त वह उनके अशुद्ध उत्तरों को ठीक करायेगा।

3. शिक्षक समय-रेखा प्रस्तुत करके समय-ज्ञान विकसित करेगा।

4. शिक्षक मानचित्र द्वारा घटनाओं तथा तथ्यों का स्थानीयकरण करके भौगोलिक परिस्थितियों से अवगत करायेगा।

5. स्रोत-संदर्भों का-प्रस्तुतीकरण।

6. शिक्षक श्यामपट पर सेनाओं की स्थिति को स्पष्ट करेगा।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

7. फिरोज के चित्र का प्रस्तुतीकरण।
8. श्यामपट-कार्य का निरीक्षण।
9. शिक्षक कमजोर छात्रों को अलग से समय देकर उन्हें सामान्य स्तर पर लाने का प्रयास करेगा।

(ब) छात्र-क्रियाएँ : Student Activities—

1 शिक्षक के कथनों को सुनेंगे।
2. शिक्षक के प्रश्नों का उत्तर देंगे।
3. स्रोत-सन्दर्भों का अध्ययन करेंगे।
4. श्यामपट कार्य को अपनी पुस्तिकाओं में लिखेंगे।
5. समय-रेखा तथा चित्र एवं मानचित्र का अध्ययन करेंगे। साथ ही उनका निर्माण करेंगे।

मूल्यांकन विधि : **Evaluation Technique**

(i) वस्तुनिष्ठ प्रश्न।
(ii) लघुउत्तरात्मक प्रश्न।
(iii) समय-रेखा तथा मानचित्र से सम्बन्धित प्रश्न।
(iv) निबन्धात्मक प्रश्न।

गृह-कार्य : **Home-work**

1. फिरोज के साम्राज्य के मानचित्र का निर्माण।
2. निबन्धात्मक प्रश्न।
3. तुलनात्मक प्रश्न—फिरोज तथा अलाउद्दीन खिलजी की शासन-व्यवस्था की तुलना।
4. नगरकोट विजय पर लघुउत्तरात्मक प्रश्न।

पाठ-योजना

विषय—भारतीय इतिहास कक्षा—7 अवधि—40 मिनट

प्रकरण—फिरोज की विजयें

विशिष्ट उद्देश्य—(1) छात्र फिरोज तुगलक की विजयों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।
(2) छात्र फिरोज की विजयों की तुलना अलाउद्दीन खिलजी की विजयों से कर सकेंगे।
(3) छात्र भारत के मानचित्र में विजयी प्रदेश खोजने में समर्थ हो सकेंगे।

सहायक सामग्री—(1) समय-रेखा, (2) भारत का मानचित्र।

पूर्व-ज्ञान—छात्र मुहम्मद-बिन-तुगलक का अध्ययन कर चुके हैं तथा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

तुगलक वंश के संस्थापक से अवगत हो गए हैं।

प्रस्तावना—(1) तुगलक वंश की नींव किसने डाली ?
(2) गयासुद्दीन तुगलक के बाद दिल्ली की गद्दी पर कौन बैठा ?
(3) मुहम्मद-बिन-तुगलक का उत्तराधिकारी कौन हुआ ?

उद्देश्य-कथन—आज हम फिरोज तुगलक की विजयों के विषय में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण—

अध्यापन बिन्दु	शिक्षक द्वारा प्रस्तुत शिक्षण-स्थितियाँ	छात्र-क्रिया	श्यामपट कार्य
1. फिरोज तुगलक का राज्या-रोहण	समय-रेखा प्रस्तुत करके प्रश्न—फिरोज तुगलक गद्दी पर कब बैठा ? प्रश्न—गद्दी पर बैठने के बाद साम्राज्य विस्तार के लिए एक शासक क्या करता है ?	समय-रेखा का अध्ययन करके उत्तर देंगे (1) 23 मार्च 1351 को गद्दी पर बैठा। (2) अन्य राज्यों को जीतता है।	1351 ई० में फिरोज का राज्या-रोहण
2. बंगाल विजय	मानचित्र प्रस्तुत करके प्रश्न—बंगाल प्रान्त प्रदर्शित कीजिए। अध्यापक-कथन हाजी इलियास बंगाल का स्वतंत्र शासक था। उसने तिरहुत को अपने प्रदेश में मिलाने के उद्देश्य से उस पर आक्रमण किया। इस पर फिरोज 1353 ई० में बंगाल पर आक्रमण करने के लिए दिल्ली से चला। उसके आने की सूचना पाकर इलियास इकदला के किले में चला गया। फिरोज ने उसका पीछा किया और उसे पराजित किया। परन्तु उसने बंगाल को अपने राज्य में नहीं मिलाया।	बंगाल की सीमाओं को मानचित्र में प्रदर्शित करेंगे। तिरहुत की स्थिति का अध्ययन करेंगे। इकदला की स्थिति का अध्ययन करेंगे।	1353 ई० में बंगाल अभियान

क्रमशः

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3. जाजनगर की विजय	मानचित्र प्रस्तुत करके प्रश्न—मानचित्र में जाजनगर को प्रदर्शित कीजिए।	जाजनगर की स्थिति का अध्ययन करेंगे।	जाजनगर पर आक्रमण
	प्रश्न—जाजनगर की स्थिति आज के किस राज्य में है?	वर्तमान उड़ीसा में।	
	अध्यापक-कथन बंगाल से दिल्ली वापस आते समय फिरोज ने जाजनगर को जीतने का निश्चय किया। सर वुल्जले हेग के अनुसार पुरी को जीतने के उद्देश्य से जाजनगर पर आक्रमण किया। फिरोज के आते ही जाजनगर का शासक भाग निकला और तैलिंगाना में शरण ली। फिरोज ने पुरी के मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया।	पुरी की स्थिति का अध्ययन	पुरी के मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट करना।
	प्रश्न—आज भी पुरी क्यों प्रसिद्ध है?	हिन्दूओं का तीर्थ-स्थान	
	अध्यापक-कथन फिरोज ने जाजनगर के शासक को तैलिंगाना से वापस बुलाया और उससे प्रतिवर्ष भेंट स्वीकार करके उसका प्रदेश वापस कर दिया।		
4. नगरकोट की विजय	मानचित्र प्रस्तुत करके प्रश्न—मानचित्र में नगरकोट कहाँ है?	नगरकोट की स्थिति का अध्ययन करेंगे।	
	प्रश्न—नगरकोट क्यों प्रसिद्ध है?	देवी के मन्दिरों के लिए।	
	प्रश्न—मुहम्मद तुगलक ने नगरकोट को कब जीता था?	1357 ई० में जीता।	
	अध्यापक-कथन नगरकोट मुहम्मद तुगलक के शासन-काल के अन्तिम दिनों में स्वतन्त्र हो गया था। इस कारण फिरोज ने उसे पुनः जीतने के लिए आक्रमण किया और वहाँ के शासक को अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। उसने वहाँ के मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया।		नगरकोट की विजय तथा मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट करना।
5. सिन्ध की विजय	मानचित्र प्रस्तुत करके प्रश्न—मानचित्र में सिन्ध कहाँ है?	सिन्ध की स्थिति बताना।	

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रश्न—फिरोज ने सिन्ध पर कब आक्रमण किया ? अध्यापक-कथन 1361-62 में फिरोज ने सिन्ध पर आक्रमण किया। वहाँ के शासक जाम बवानिया ने उसका विरोध किया। परन्तु इसी समय अकाल और महामारी के कारण सुल्तान को अपनी 1/3 सेना से हाथ धोना पड़ा। इस कारण उसने युद्ध नहीं किया और गुजरात की ओर चला गया। परन्तु गुजरात की ओर जाते समय वह पथ-भ्रष्ट हो गया। इसके पश्चात् उसने 1363 ई० में सिन्ध पर पुनः आक्रमण किया और वहाँ के शासक को सन्धि करने के लिए बाध्य किया।	1361-62 ई० में आक्रमण किया (समय रेखा के अध्ययन द्वारा) गुजरात की स्थिति स्पष्ट करना।	1363 ई० में सिन्ध विजय।

पुनरावृत्ति प्रश्न	श्यामपट-सारांश
1. फिरोज तुगलक ने बंगाल पर कब आक्रमण किया ?	1. फिरोज ने नवम्बर 1353 ई० में बंगाल पर आक्रमण किया ?
2. फिरोज ने जाजनगर के आक्रमण के समय किस स्थान के मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया ?	2. फिरोज ने पुरी के हिन्दू मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया।
3. नगरकोट क्यों प्रसिद्ध है ?	3. नगरकोट देवी के मन्दिर के लिए प्रसिद्ध है।
4. फिरोज सिन्ध के शासक को सन्धि करने के लिए कब बाध्य कर सका ?	4. फिरोज 1363 ई० में सिन्ध के शासक को सन्धि करने के लिए बाध्य कर सका।

मूल्यांकन

नोट—सही तथ्य पर ✓ का चिह्न लगाइये—

1. फिरोज ने मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार तथा पुरी के मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया।
2. फिरोज ने बंगाल, जाजनगर, सिन्ध तथा आगरा के शासक को तेलंगाना में वापस बुलाया।

गृह-कार्य—फिरोज की विजयों को 200 शब्दों में लिखिये।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

3

मूल्यांकन-प्रक्रिया तथा पाठ योजना

EVALUATION APPROACH AND LESSON-PLANNING

मूल्यांकन मात्र छात्र की निष्पत्ति (Achievemant) की जाँच से सम्बन्धित नहीं है, वरन् यह अध्यापन के सुधार से भी सम्बन्धित आधुनिक युग में शिक्षण में सुधार लाने के लिए भी मूल्यांकन-प्रक्रिया का प्रयोग किया जा रहा है। इससे शिक्षण एवं परीक्षण दोनों को एक दिशा मिली है। शिक्षण में सुधार लाने के लिए शिक्षण विषयों के प्राप्य उद्देश्यों (Objectives) का निर्माण किया जा रहा है और उनकी प्राप्ति के लिए मूल्यांकन-प्रक्रिया पर आधारित पाठ-योजनाओं का प्रयोग किया जा रहा है। हम यहाँ मूल्यांकन-प्रक्रिया पर आधारित पाठ-योजना के सोपानों पर उदाहरण सहित प्रकाश डाल रहे हैं।

मूल्यांकन-प्रक्रिया पर आधारित पाठ-योजना की रूपरेखा—शिक्षण में मूल्यांकन की धारणा ने शिक्षकों को हरबार्ट की पंचपद प्रणाली को त्यागने तथा मूल्यांकन प्रक्रिया या उपागम को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस प्रक्रिया के आधार पर पाठ-योजना निर्मित करने के लिए सुझाव दिये गये हैं। इसके अनुसार पाठ-योजना के संकेत निम्नांकित हैं—

1. प्रमुख विचार (Main Thought)
2. पाठ्य-वस्तु (Content Items to be taught)
3. विशिष्टताओं सहित प्राप्य उद्देश्य (Objectives with their specifications)
4. शिक्षक के कार्य (Teacher's Activities)
5. छात्र-क्रियाएँ (Pupil's Activities)
6. शिक्षण-सामग्री (Teaching Aids)
7. मूल्यांकन (Evaluation)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाठ-योजना का स्वरूप
Form of Lesson-Plan

पाठ संख्या.............

दिनाङ्क............ कक्षा.........
विषय—............ घण्टा........
विद्यालय—........ अवधि—........
प्रमुख विचार—............
पूर्व ज्ञान—............
शिक्षण उद्देश्य तथा विशिष्टताएँ— ....

पाठ्य-वस्तु	शिक्षक-कार्य	छात्र-क्रियाएँ	शिक्षण-सामग्री	मूल्यांकन

पाठ-योजना के स्वरूप में दिए गए प्रमुख शीर्षकों का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है—

1. पाठ-संख्या—इस शीर्षक में पाठ-योजना की क्रम संख्या लिखी जाती है जिससे यह ज्ञात हो जाता है कि अब तक कितने पाठ पढ़ाये जा चुके हैं।

2. दिनाङ्क—यहाँ वह तिथि लिखी जाती है, जिस तिथि को पाठ पढ़ाया जाता है।

3. कक्षा—यहाँ वह कक्षा और सेक्शन लिखा जाता है, जिसका पाठ पढ़ाया जाना है।

4. विषय—यहाँ वह विषय लिखा जाता है, जिसके अन्तर्गत पढ़ाया जाने वाला पाठ आता है।

5. घण्टा—यहाँ टाइम टेबिल के हिसाब से वह घण्टा लिखा जाता है जिसमें पाठ पढ़ाया जाना है।

6. विद्यालय—यहाँ उस विद्यालय का नाम लिखा जाता है, जहाँ पाठ पढ़ाया जाना है।

7. अवधि—यहाँ घण्टे की अवधि लिखी जाती है अर्थात् घण्टा कितने मिनट का है, उस अवधि को लिखा जाता है।

8. प्रमुख विचार—यहाँ पाठ का शीर्षक या मुख्य विचार लिखा जाता है।

9. पूर्व ज्ञान—इसके अन्तर्गत पाठ-विशेष से सम्बन्धित सभी ज्ञात अनुभवों का उल्लेख किया जाता है।

10. शिक्षण-उद्देश्य तथा विशिष्टताएँ—इसके अन्तर्गत शिक्षण उद्देश्यों (Instructional Objectives) एवं विशिष्टताओं को लिखा जाता है जिनकी उस पाठ-विशेष से प्राप्ति की जानी है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

11. **पाठ्य-वस्तु** इसके अन्तर्गत पाठ्य-वस्तु के प्रमुख विचार से सम्बन्धित समस्त बिन्दुओं को लिखा जाता है।

12. **शिक्षक-क्रियाएँ**—इसके अन्तर्गत शिक्षक के उन कार्यों का उल्लेख किया जाता है जिनको वह पाठ के शिक्षण के सम्बन्ध में करता है।

13. **छात्र-क्रियाएँ**—इसके अन्तर्गत छात्रों की क्रियाओं का उल्लेख किया जाता है; जैसे—सुनना, प्रश्नों का उत्तर देना, श्यामपट कार्य को अपनी पुस्तिकाओं में लिखना, किसी प्रदर्शन को देखना, शिक्षक से अपनी शंकाओं को पूछना आदि।

14. **शिक्षण-सामग्री**—पाठ्य-वस्तु को सरल, सजीव एवं स्पष्ट बनाने के लिए जिन उपकरणों का पाठ में प्रयोग किया जाता है, उनका इसके अन्तर्गत उल्लेख किया जाता है।

15. **मूल्यांकन**—इसके अन्तर्गत उन मूल्यांकन प्रविधियों का उल्लेख किया जाता है जिनके द्वारा शिक्षण-उद्देश्य, पठित-वस्तु, सीखने के अनुभवों, वांछित व्यवहारों आदि का मूल्यांकन किया जाता है।

उक्त संकेतों को पाठ-योजना पुस्तिका में लिखते समय आवश्यकतानुसार एवं निर्देशानुसार परिवर्तित किया जा सकता है।

उदाहरण पाठ-योजना

पाठ-योजना 1

कक्षा 9 — **दिनांक—**

विषय—भारतीय इतिहास — **समय चक्र—प्रथम**

प्रमुख विचार—"शेरशाह का शासन-प्रबन्ध" — **अवधि—40 मिनट**

नाम संस्था—एम० पी० इण्टर कॉलेज, आगरा — **औसत आयु—15 वर्ष**

नाम छात्राध्यापक

सामान्य उद्देश्य—(1) छात्रों को इतिहास का वास्तविक ज्ञान कराकर उनकी बुद्धि का विकास करना।

(2) घटनाओं एवं परिस्थितियों की सहायता से भूतकाल का वर्तमान से सम्बन्ध जोड़ना।

(3) छात्रों में स्वदेश प्रेम की भावना जाग्रत करना।

(4) इतिहास के क्रमिक विकास से छात्रों की ज्ञान-वृद्धि करना एवं उसके प्रति रुचि उत्पन्न करना।

विशिष्टताएँ—(1) छात्र यह जानने में समर्थ होंगे कि शेरशाह ने एक सुदृढ़ केन्द्रीय शासन की स्थापना की थी।

(2) छात्र यह भी जान सकेंगे कि शासन की सुविधा के लिए उसने अपने साम्राज्य को प्रान्तों में विभाजित किया था।

(3) छात्र यह भी जानने में समर्थ होंगे कि प्रान्तों में जिलों या सरकारों की व्यवस्था थी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(4) छात्र यह भी जान सकेंगे कि शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थे।

(5) छात्र यह जानने में समर्थ होंगे कि शेरशाह ने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए कई विभागों की स्थापना कर उसमें विभिन्न अधिकारी नियुक्त किए थे।

(6) छात्र यह भी जान सकेंगे कि उसने जनता के हित के लिए भी अनेक कार्य किए थे।

(7) छात्र मानचित्र का अध्ययन करना सीख सकेंगे। साथ ही वे शेरशाह के साम्राज्य की सीमाओं से अवगत हो सकेंगे।

शिक्षण सामग्री—भारत का तत्कालीन मानचित्र एवं अन्य कक्षोपयोगी उपकरण।

पूर्व ज्ञान—छात्र शेरशाह की विजयों के विषय में पढ़ चुके हैं।

प्रस्तावना—प्रश्न—(1) शेरशाह दिल्ली का शासक कब बना ?

भारत का मानचित्र प्रस्तुत करके

(2) दिल्ली का शासक बनने के बाद उसने किन-किन राज्यों को जीता ?

(3) इस विशाल साम्राज्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए उसने क्या व्यवस्था की ?

उद्देश्य-कथन—आज हम "शेरशाह के शासन प्रबन्ध" का ही अध्ययन करेंगे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पाठ्य-वस्तु	शिक्षक-क्रियायें	छात्र-क्रियायें	श्यामपट-कार्य	मूल्यांकन
केन्द्रीय शासन व्यवस्था	प्रश्न—आजकल हमारे देश का सबसे बड़ा अधिकारी कौन है ? प्रश्न—राष्ट्रपति किस संस्था की सहायता से शासन चलाता है ? प्रश्न—मंत्रि परिषद् का गठन कौन करता है ? प्रश्न—मंत्रि परिषद् से वह क्यों सहायता लेता है ? प्रश्न—शेरशाह के समय में शासन का सर्वोच्च अधिकारी कौन था ? प्रश्न—वह किसकी सहायता से शासन चलाता था ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		
	अध्यापक-कथन—आजकल हमारे देश में प्रजातांत्रिक शासन-प्रणाली प्रचलित है। इस कारण जनता द्वारा निर्वाचित राष्ट्रपति देश का सबसे बड़ा अधिकारी है। वह मंत्रि परिषद् की सहायता से देश का शासन चलाता है। क्योंकि मंत्रि परिषद् जनता की प्रतिनिधि सभा की कार्य कारिणी समिति है जिसे कार्यपालिका की वास्तविक सत्ता प्राप्त है। राष्ट्रपति केवल नाममात्र का	छात्र अध्यापक कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	सुदृढ़ केन्द्रीय शासन की स्थापना। निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजतंत्र। सर्वोच्च अधिकारी सुल्तान किन्तु प्रजा के साथ पुत्रवत् व्यवहार।	प्रश्न—रिक्त स्थानों की पूर्ति करिये ? (अ) शेरशाह के समय में शासन की समस्त शक्तियाँ....के हाथ में थीं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

वैधानिक प्रधान है। शेरशाह के समय में निरंकुश एवं स्वेच्छाचारी राजतंत्र (एक तंत्र) शासन-प्रणाली प्रचलित थी। सुल्तान शासन का सर्वेसर्वा था। शासन की समस्त विधायनी, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका शक्तियाँ उसके हाथ में थीं किन्तु उसने प्रजा को पुत्रवत् समझा और हमेशा उसका हित-चिन्तन किया।			
प्रश्न—आजकल हमारी सरकार की नीतियाँ कौन निर्धारित करता है ? प्रश्न—मंत्रि परिषद् अपने कार्यों के लिए किस संस्था के प्रति उत्तरदायी रहती है ? प्रश्न—शेरशाह के समय में शासन की नीतियाँ कौन निश्चित करता था ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		
अध्यापक-कथन—शेरशाह का शासन निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन का प्रतीक था। वह स्वयं शासन की नीतियाँ निर्धारित करता था। कर्मचारियों की नियुक्ति एवं उनके कार्यों का निरीक्षण वह खुद ही करता था। सभी कर्मचारी अपने कार्यों के लिए सुल्तान के ही प्रति उत्तरदायी थे।	छात्र अध्यापक कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	कर्मचारी की नियुक्ति एवं नीति निर्धारण सुल्तान द्वारा। सभी उसी के प्रति उत्तरदायी।	(ब) सभी कर्मचारी.... के प्रति उत्तरदायी थे।
प्रश्न—हमारे केन्द्रीय शासन के कौन- [illegible] की स्थापना की थी ?	छात्र अध्यापक के		

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	प्रश्न—[illegible] विभागों की स्थापना की थी ? अध्यापक-कथन—शेरशाह ने शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए कई विभागों की स्थापना की थी। प्रत्येक विभाग एक वजीर के अधीन था। वजीर उसके आज्ञाकारी सेवक थे, परामर्शदाता नहीं। उसके दीवान-ए-विजारत (आय-व्यय), दीवान-ए-अर्ज (सेना), दीवान-ए-रसालत (विदेश), दीवान-ए-इन्शा (आज्ञायें भिजवाने वाला), दीवान-ए-वरीद (घटनाओं एवं डाक चौकी), काजी-उल-कुजात (न्याय) आदि प्रमुख विभाग एवं वजीर थे। इनके अलावा छोटे-छोटे अनेक विभाग और थे। इनकी नियुक्ति शेरशाह खुद करता था। उसकी राजधानी दिल्ली थी।	छात्र अध्यापक कथन को ध्यान-पूर्वक सुनेंगे।	प्रमुख विभाग—आय-व्यय, सेना, विदेश, न्याय, सूचना, गुप्तचर तथा डाक। प्रत्येक विभाग एक वजीर के अधीन। सुल्तान उनकी सलाह मानने को बाध्य नहीं था।	(स) प्रत्येक विभाग का एक प्रधान था जो …………कहलाता था। सुल्तान उनकी सलाह मानने के लिए…नहीं था।
प्रान्तीय शासन	प्रश्न—इस समय हमारे देश में कितने राज्य हैं ? प्रश्न—राज्यों का प्रमुख अधिकारी कौन होता है ? प्रश्न—राज्यपालों की नियुक्ति किसके द्वारा की जाती है ? प्रश्न—वह कब तक अपने पद पर रह सकता है ? प्रश्न—उसका प्रमुख कार्य क्या है ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	प्रश्न—शेरशाह ने अपने साम्राज्य को किन इकाइयों में विभक्त किया था ? अध्यापक-कथन—शेरशाह ने अपने साम्राज्य को शासन की सुविधा के लिए कई भागों या प्रान्तों में विभाजित कर दिया था। इन्हें इक्ता कहते थे। यह क्षेत्र एवं जनसंख्या की दृष्टि से समान नहीं थे। इनमें सूबेदार नियुक्त थे। सूबेदार सुल्तान के आदेशानुसार शासन चलाते थे। अपने कार्यों के लिए उसी के प्रति उत्तरदायी थे।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यान से सुनेंगे।	साम्राज्य प्रान्तों या इक्ताओं में विभाजित था। इक्ता सूबेदारों के अधीन होते थे।	प्रश्न—शेरशाह के समय में प्रान्तों को क्या कहते थे ?
जिला शासन	प्रश्न—आजकल जिले का प्रमुख अधिकारी कौन होता है ? प्रश्न—जिलाधीश जिले में क्या-क्या कार्य करता है ? प्रश्न—अपने कार्यों को वह किन-किन अधिकारियों द्वारा पूरा कराता है ? प्रश्न—शेरशाह ने सरकारों में क्या व्यवस्था की थी ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		
	अध्यापक-कथन—आजकल की तरह शेरशाह ने भी प्रान्तों को जिलों या सरकारों में विभाजित किया था। प्रत्येक सरकार में दो प्रमुख पदाधिकारी होते थे। एक प्रधान शिकदार (शिकदार-ए-(शिकदारान) तथा दूसरा प्रधान मुंसिफ	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यान से सुनेंगे।	प्रान्त-सरकारों में तथा प्रधान शिकदार और प्रधान मुंसिफ प्रमुख अधिकारी।	प्रश्न—निम्नलिखित प्रश्नों के कई विकल्प दिये हुए हैं, उनमें से सबसे उपयुक्त या सही के समक्ष ✓ का निशान लगाइये। (अ) सरकार का प्रमुख

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

	(शिकदारान) तथा दूसरा प्रधान मुंसिफ मुंसिफ-ए-मुंसिफान) था। प्रधान शिकदार जिले में शांति एवं सुव्यवस्था रखता था तथा प्रधान मुंसिफ न्याय करता था। ये सरकारों की समुचित शासन-व्यवस्था के लिए उत्तरदायी थे।			(अ) सरकार का प्रमुख अधिकारी। (i) मुंसिफ (ii) जिलाधीश (iii) शिकदार-ए-शिकदारान (iv) आयुक्त होता था।
परगना व्यवस्था	प्रश्न—आगरा जिला कितनी तहसीलों में बँटा हुआ है ? प्रश्न—तहसील का प्रमुख अधिकारी कौन होता है ? प्रश्न—तहसीलदार के प्रमुख क्या-क्या कार्य होते हैं ? प्रश्न—उसके अलावा तहसील में और कौन-कौन-से पदाधिकारी होते हैं ? प्रश्न—शेरशाह के समय में परगनों की क्या व्यवस्था थी ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		
	अध्यापक-कथन—शेरशाह ने सरकारों को परगनों में विभाजित किया था। परगना का प्रधान अधिकारी शिकदार था। शांति एवं सुव्यवस्था रखना उसका प्रमुख काम था। उनके अलावा परगने में अमीन (लगान वसूल करने वाला,) फौजदार (सेना अधिकारी, खजांची, लेखक व मुंसिफ) आदि थे।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यान से सुनेंगे।	सरकारें—शिकों या परगनों में, प्रमुख अधिकारी शिकदार, मुंसिफ या काजी, अमीन, फौजदार तथा लेखक आदि अन्य अधिकारी।	(ब) परगने का प्रमुख अधिकारी (i) काजी (ii) कानूनगो (iii) शिकदार (iv) तहसीलदार होता था।
गाँव शासन-व्यवस्था	प्रश्न—आजकल गाँवों में कौन-कौन-सी संस्थायें कार्य कर रही हैं ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

	प्रश्न—गाँवों म न्याय का कार्य कौन-सी संस्था करती है ? प्रश्न—ग्राम पंचायत गाँवों में क्या-क्या कार्य करती है ? प्रश्न—इसके प्रमुख पदाधिकारी कौन-कौन हैं ? प्रश्न—शेरशाह के समय में गाँवों का क्या प्रबन्ध था ? अध्यापक-कथन—शेरशाह के समय में शासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थे । गाँवों में ग्राम पंचायतें थीं जो गाँवों में न्याय एवं शान्त व्यवस्था का कार्य करती थीं । पटवारी, मुकद्दम और चौधरी इसके प्रमुख पदाधिकारी होते थे । पटवारी भूमि एवं लगान का विवरण रखता था । मुकद्दम गाँव में शान्ति एवं व्यवस्था बनाये रखने के लिए उत्तरदायी था ।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यान-पूर्वक सुनेंगे ।	सबसे छोटी इकाई गाँव । ग्राम पंचायत के प्रमुख पदाधिकारी—पटवारी, मुकद्दम व चौधरी ।	(स) ग्राम में भूमि और लगान का विवरण (i) काजी (ii) मुकद्दम (iii) चौधरी (iv) पटवारी रखता था ।
पुलिस एवं गुप्तचर व्यवस्था	प्रश्न—रात को आपके नगर में पहरा कौन देता है ? प्रश्न—चोर-लुटेरों का पता कौन लगाता है ? प्रश्न—गुप्त रूप से अपराधों एवं षड्यन्त्रों का पता कौन-सी पुलिस लगाती है ? प्रश्न—शेरशाह ने पुलिस की क्या व्यवस्था की थी ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे ।		
	अध्यापक-कथन—आजकल की तरह	छात्र अध्यापक-कथन	पुलिस विभाग—शान्ति व	प्रश्न—शेरशाह के समय

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	प्रश्न—[illegible] क्या की थी ?			
	अध्यापक-कथन—आजकल की तरह शेरशाह ने भी साम्राज्य में शान्ति एवं सुव्यवस्था बनाये रखने के लिए, अपराधों को रोकने के लिए पुलिस का प्रबन्ध किया था। प्रधान शिकदार, शिकदार तथा मुकद्दम इसके प्रमुख पदाधिकारी थे। नगरों में कोतवाल नियुक्त थे। मुकद्दम यदि अपराधियों का पता लगाने में असमर्थ रहता था तो उसे दण्डित किया जाता था। गम्भीर अपराधों का पता लगाने एवं कर्मचारियों की गतिविधियों की सूचना सुल्तान तक पहुँचाने के लिए एक सुसंगठित गुप्तचर विभाग भी था। उसके इन सुधारों के फलस्वरूप उसके राज्य में चोर और डाकुओं का अंत हो गया था। एक बुढ़िया भी सोने को टोकरी में भरकर खुले आम सड़क पर ले जा सकती थी। उसे डाकुओं का भय नहीं था।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	पुलिस विभाग—शांति व सुव्यवस्था रखना, अपराधों का पता लगाना एवं सूचनायें सुल्तान को देना। प्रधान शिकदार, शिकदार, मुकद्दम व कोतवाल (नगरों में)।	प्रश्न—शेरशाह के समय में पुलिस के क्या-क्या कार्य थे ?
सैनिक व्यवस्था	प्रश्न—सन् 1971 ई० में हमारे देश पर किसने आक्रमण किया था ? प्रश्न—पाक आक्रमण से देश की रक्षा किसने की थी ? प्रश्न—सेना की व्यवस्था किसने की है ? प्रश्न—यदि सरकार ने सेना की व्यवस्था न की होती तो क्या परिणाम होता ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे।		

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

	प्रश्न—शेरशाह ने अपने साम्राज्य की सुरक्षा के लिए क्या प्रबन्ध किया था ? अध्यापक-कथन—शेरशाह का साम्राज्य सैनिक बल पर अर्जित एवं आधारित था। साम्राज्य की सुरक्षा हेतु उसने एक सुसंगठित सेना रखी थी। उसकी सेना में 1,50,000 अश्वारोही, 25,000 पैदल तथा 300 हाथी थे। उसके पास एक अच्छा तोपखाना भी था। प्रत्येक विभाग एक फौजदार के अधीन था। उसने कई सैनिक छावनियाँ (दिल्ली, रोहतास) कायम की थीं जिनमें फौजदार की अधीनता में सेना रहती थी। उसने राष्ट्रीय सैनिक व्यवस्था कायम की थी। सेना से उसका सीधा सम्बन्ध था। वह स्वयं सैनिकों की भर्ती व निरीक्षण करता था। सैनिकों को नकद वेतन दिया और सैनिकों व घोड़ों की हुलिया दर्ज कराई। उसका सैनिक अनुशासन कठोर था। किसानों की फसल नष्ट न करने की सेना को सख्त मनाही थी। यदि कोई सैनिक ऐसा करता था तो उसे दण्डित किया जाता था। इस प्रकार उसकी सैनिक व्यवस्था अलाउद्दीन के आदर्श पर निर्मित थी।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	सुसंगठित सेना—$1\frac{1}{2}$ लाख घुड़सवार, 25,000 पैदल, 300 हाथी व तोपखाना। रक्षा कार्य—दुर्ग बनवाये, सेना रखी, प्रधान सेनापति सुल्तान।	प्रश्न—शेरशाह ने किन-किन स्थानों पर छावनियाँ स्थापित की थीं ? प्रश्न—उसकी सेना के कितने विभाग थे ? प्रश्न—उसकी घुड़सवार सेना की संख्या कितनी थी ?
न्याय-व्यवस्था	प्रश्न—हुमायूँ आपसी झगड़ों का निर्णय	छात्र अध्यापक के		प्रश्न—शेरशाह ने सेना

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

	वस्था अलाउद्दीन के आदर्श पर निर्मित थी ।			
न्याय-व्यवस्था	प्रश्न—हमारे आपसी झगड़ों का निर्णय कहाँ होता है ? प्रश्न—न्यायालयों की स्थापना किसके द्वारा की जाती है ? प्रश्न—शेरशाह के समय में न्याय की क्या व्यवस्था थी ? अध्यापक-कथन—शेरशाह ने निष्पक्ष एवं धर्म निरपेक्ष न्याय की व्यवस्था की । वह बड़ा न्यायप्रिय शासक था । अपराध करने पर अपने पुत्रों को भी दंड देने में संकोच नहीं करता था । उसने सुल्तान-ए-आदिल की उपाधि धारण की थी । वह न्याय का स्वयं सर्वोच्च अधिकारी था । न्याय करने के लिए मुंसिफों व काजियों की नियुक्ति की थी । गाँवों में ग्राम पंचायतें इस कार्य को सम्पादित करती थीं । दण्ड विधान कठोर था । अपराध करने पर कोई भी दण्ड से नहीं बच सकता था ।	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे । छात्र अध्यापक कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे ।	धर्म-निरपेक्षता पर आधारित । सुल्तान प्रधान न्यायाधीश, नीचे मुंसिफ काजी व ग्राम पंचायतें । दण्ड विधान कठोर ।	प्रश्न—शेरशाह ने सेना में क्या सुधार किये ?
भूमि-प्रबन्ध	प्रश्न—आजकल हमारी कृषि की कौन-कौन-सी समस्यायें हैं ? प्रश्न—हमारी सरकार ने उन्हें दूर करने के लिए क्या-क्या किया है ? प्रश्न—सरकार भूमि के बदले किसानों से क्या लेती है ? प्रश्न—लगान किसके द्वारा निर्धारित किया जाता है ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे ।		

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

	प्रश्न—शेरशाह ने भूमि सुधार के लिए क्या प्रबन्ध किया ? अध्यापक-कथन—अलाउद्दीन के बाद शेरशाह पहला शासक था जिसने भूमि सुधार की ओर ध्यान दिया । उसका आदर्श था कि सुल्तान एवं प्रजा का हित एक है । उसने भूमि की नाप करायी और उसे बीघों में विभाजित किया । भूमि को अच्छी, मध्यम व खराब में वर्गीकृत किया । लगान की दर उदारता से निश्चित की किन्तु लगान कठोरता से वसूल कराया । किसान को भूमि का पट्टा लिख दिया जाता था जिसमें लगान का विवरण होता था । लगान उपज का 1/3 या 1/4 भाग था । लगान नकद एवं अनाज दोनों रूपों में लिया जाता था । फसल नष्ट होने पर किसानों को सहायता दी जाती थी। इस कार्य में राजा टोडरमल का उसे काफी सहयोग प्राप्त हुआ ।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे ।	भूमि सुधार में सुल्तान एवं प्रजा हित समान । भूमि की नाप एवं कर निर्धारण । 1/3 या 1/4 भाग लगान नियत किया । वह नकद या अनाज दोनों रूपों में लिया जाता था ।	प्रश्न—निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति करिये— (अ) शेरशाह ने········ दण्ड विधान लागू किया । (ब) गाँवों में··········· अपराधों का पता लगाता था । (स) लगान उपज का 1/5 भाग था । (द) शेरशाह ने भूमि को उत्तम, मध्यम तथा···········में बाँटा था । (य) किसानों से लगान नकद तथा········ दोनों रूपों में लिया जाता था । (र) भूमि की नाप तथा लगान निर्धारण में····ने सुल्तान को सहायता दी थी ।
सड़क सराय एवं डाक चौकी व्यवस्था	प्रश्न—आजकल यातायात के कौन-कौन से साधन हैं ? भारत का मानचित्र प्रस्तुत करके— प्रश्न – शेरशाह ने कौन-कौन-सी सड़कों का निर्माण कराया था ?	छात्र अध्यापक से प्रश्नों के उत्तर देंगे । छात्र भारत के मानचित्र में शेरशाह की सड़कों की स्थिति स्पष्ट करेंगे ।		
	प्रश्न—यात्री एवं घूमने वाले लोग कहाँ	छात्र प्रश्नों के उत्तर		

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	प्रश्न—यात्री एवं घूमने वाले लोग कहाँ ठहरते हैं ? प्रश्न—शेरशाह के समय में यात्रियों के ठहरने के लिए क्या व्यवस्था थी ? प्रश्न—हमारे पत्रादि एक स्थान से दूसरे स्थान को लाने-ले जाने का काम कौन करता है ? प्रश्न—डाक की व्यवस्था कौन करता है ? प्रश्न—शेरशाह ने डाक की क्या व्यवस्था की थी ?	छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे ।		
	अध्यापक-कथन—शेरशाह ने अपने साम्राज्य में चार सड़कों का निर्माण कराया । पहली ग्रांड ट्रक रोड, कलकत्ता से पेशावर तक, दूसरी आगरा से बुरहानपुर तक, तीसरी मुल्तान से लाहौर तक और चौथी आगरा से चित्तौड़ तक जाती थी । इसके किनारे छायादार वृक्ष लगवाये तथा यात्रियों के ठहरने के लिए 1700 सरायें बनवाईं । सरायों में डाक चौकियाँ स्थापित कीं । प्रत्येक सराय में दो घोड़े व कुछ हरकारे रखे जो डाक ले जाने का काम करते थे ।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यान पूर्वक सुनेंगे ।	चार सड़कें बनवाईं (कलकत्ता से पेशावर, मुल्तान से लाहौर, आगरा से बुरहानपुर, आगरा से चित्तौड़), वृक्ष लगवाये तथा 1700 सरायें बनवाईं और डाक चौकी स्थापित कीं ।	प्रश्न—निम्नलिखित के उत्तर दीजिए— (अ) शेरशाह ने किन-किन सड़कों का निर्माण कराया ? (ब) शेरशाह ने कौन-कौन सी इमारतें बनवाईं ? (स) शेरशाह ने कितनी सरायों का निर्माण कराया ?
प्रजा-हित के कार्य	प्रश्न—हमारे देश में सिंचाई के क्या-क्या साधन हैं ? प्रश्न—नहरों को किसने खुदवाया ?	छात्र अध्यापक के प्रश्नों के उत्तर देंगे ।		

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

	प्रश्न—सरकार ने इन्हें क्यों खुदवाया है ? प्रश्न—हमारी सरकार ने प्रजा के हित के लिए और क्या-क्या कार्य किये हैं ? प्रश्न—शेरशाह ने प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या काम किया ? अध्यापक-कथन—शेरशाह ने सिंचाई के लिए नहरें खुदवाईं, कुएँ बनवाये तथा किसानों को तकावी दी । उसने प्रजा के हित के लिए पाठशालायें, मकतब व मदरसे खोले व छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दीं । अनाथालय, अस्पताल आदि अनेक भवन एवं दुर्ग बनवाये । सहसराम का मकबरा, दिल्ली व रोहतास दुर्ग तथा दिल्ली के निकट एक नगर उसी की कृति हैं ।	छात्र अध्यापक-कथन को ध्यानपूर्वक सुनेंगे	नहरें व कुँए खुदवाये, पाठशालायें, अस्पताल, अनाथालय आदि स्थापित किए । छात्रवृत्तियाँ दीं ।	(द) शेरशाह ने सिंचाई के लिए क्या व्यवस्था की ? (य) शेरशाह ने शिक्षा के लिए क्या व्यवस्था की ?
गृह-कार्य	मानचित्र में शेरशाह के साम्राज्य तथा उसके द्वारा बनवाई गईं सड़कों को प्रदर्शित करो ।			

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

4

समय-रेखाएँ एवं समय-ग्राफ

छत्रपति शिवाजी के कार्यकाल से सम्बन्धित समय-रेखा

1630 —जन्म

1635 —

—मुगलों के द्वारा शाहजी पर विजय।

—शिवाजी तथा उसकी माता को भेजना।

1640 —

1645 —शिवाजी ने स्वराज के लिए रोहितेश्वर मन्दिर में प्रतिज्ञा की।

—तोरण किले पर शिवाजी का अधिकार।

—दादा कोणदेव की मृत्यु।

1650 —

1655 —जवाली के किले पर अधिकार—अफजल खाँ की सेना का विनाश।

—अफजल खाँ की प्रतापगढ़ में मृत्यु।

1660 —

—शाइस्ता खाँ पर अचानक आक्रमण।

—सूरत की लूट—शाहजी की मृत्यु।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1665—पुरन्दर की सन्धि ।
—शिवाजी का आक्रमण ।
—
—
—
1670—तानाजी ने सिंहगढ़ पर अधिकार किया ।
—
—रामदास जी से मिलन ।
—
—रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक—दक्षिणी चढ़ाई ।
1675—
—
—
—
—
1680—रायगढ़ में शिवाजी की मृत्यु ।

क्रमबद्ध पाठों में प्रयोग की जा सकने वाली समय-रेखा

1700—
2
4
7—औरंगजेब की मृत्यु—बहादुरशाह का राज्याभिषेक ।
8—शाहू का मुक्तिकरण ।
1710—सिक्खों की हार ।
12—जहाँदारशाह का राज्याभिषेक—बालाजी विश्वनाथ पेशवा बना ।
14—सैयद भाइयों के द्वारा फरुखसियर को गद्दी पर बैठाना ।
16—ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ग्राण्ट प्रदान की गई ।
18—फरुखसियर को गद्दी से हटाना और सैयद भाइयों द्वारा मुहम्मदशाह को गद्दी पर बैठाना ।
1720—सैयद भाइयों का पतन ।
22—हैदराबाद तथा अवध का स्वतन्त्र राज्य के रूप में उत्थान ।
24
26—सआदतखाँ तथा चीन का किलचखाँ का नेतृत्व ।
28
1730
32
34—मराठों का मालवा पर अधिकार ।
36—नादिरशाह का आक्रमण ।
38—बेसिन पर मराठों का अधिकार ।
1740—बालाजी बाजीराव पेशवा ।
42—ग्वालियर, इन्दौर, नागपुर, बड़ोदा में मराठों की राजधानियाँ स्थापित हुईं ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

44
46
48—शाहू की मृत्यु, पूना में सत्ता की स्थापना, निजाम की मृत्यु।
1750

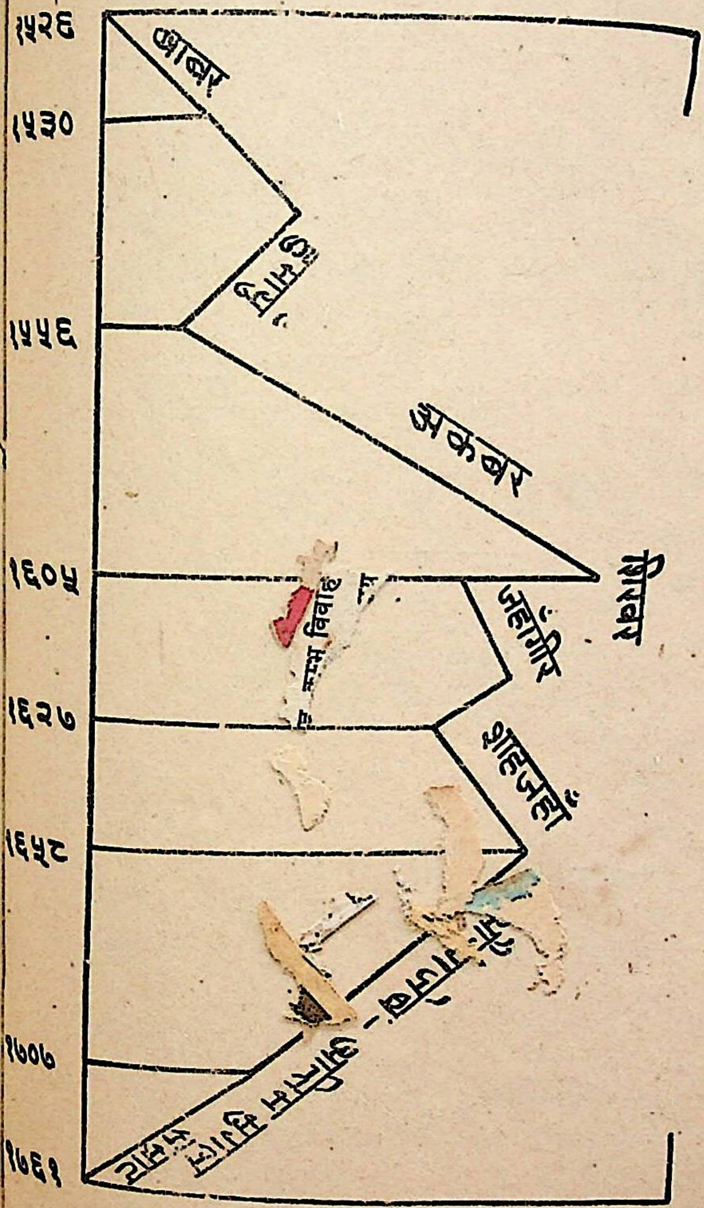

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

1665—पुरन्दर की सन्धि।
—शिवाजी का आक्रमण।
—
—
—
1670—तानाजी ने सिंहगढ़ पर अधिकार किया।
—
—रामदास जी से मिलन।
—
—रायगढ़ में शिवाजी का राज्याभिषेक—दक्षिणी चढ़ाई।
1675—
—
—
—
—
1680—रायगढ़ में शिवाजी की मृत्यु।

क्रमबद्ध पाठों में प्रयोग की जा सकने वाली समय-रेखा

1700—
2
4
7—औरंगजेब की मृत्यु—वहादुरशाह का राज्याभिषेक।
8—शाहू का मुक्तिकरण।
1710—सिक्खों की हार।
12—जहाँदारशाह का राज्याभिषेक—वालाजी विश्वनाथ पेशवा वना।
14—सैयद भाइयों के द्वारा फरुखसियर को गद्दी पर बैठाना।
16—ईस्ट इण्डिया कम्पनी को ग्राण्ट प्रदान की गई।
18—फरुखसियर को गद्दी से हटाना और सैयद भाइयों द्वारा मुहम्मदशाह को गद्दी पर बैठाना।
1720—सैयद भाइयों का पतन।
22—हैदरावाद तथा अवध का स्वतन्त्र राज्य के रूप में उत्थान।
24
26—सआदतखाँ तथा चीन का किलचखाँ का नेतृत्व।
28
1730
32
34—मराठों का मालवा पर अधिकार।
36—नादिरशाह का आक्रमण।
38—वेसिन पर मराठों का अधिकार।
1740—वालाजी वाजीराव पेशवा।
42—ग्वालियर, इन्दौर, नागपुर, बड़ोदा में मराठों की राजधानियाँ स्थापित हुईं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

44
46
48—शाहू की मृत्यु, पूना में सत्ता की स्थापना, निजाम की मृत्यु ।
1750

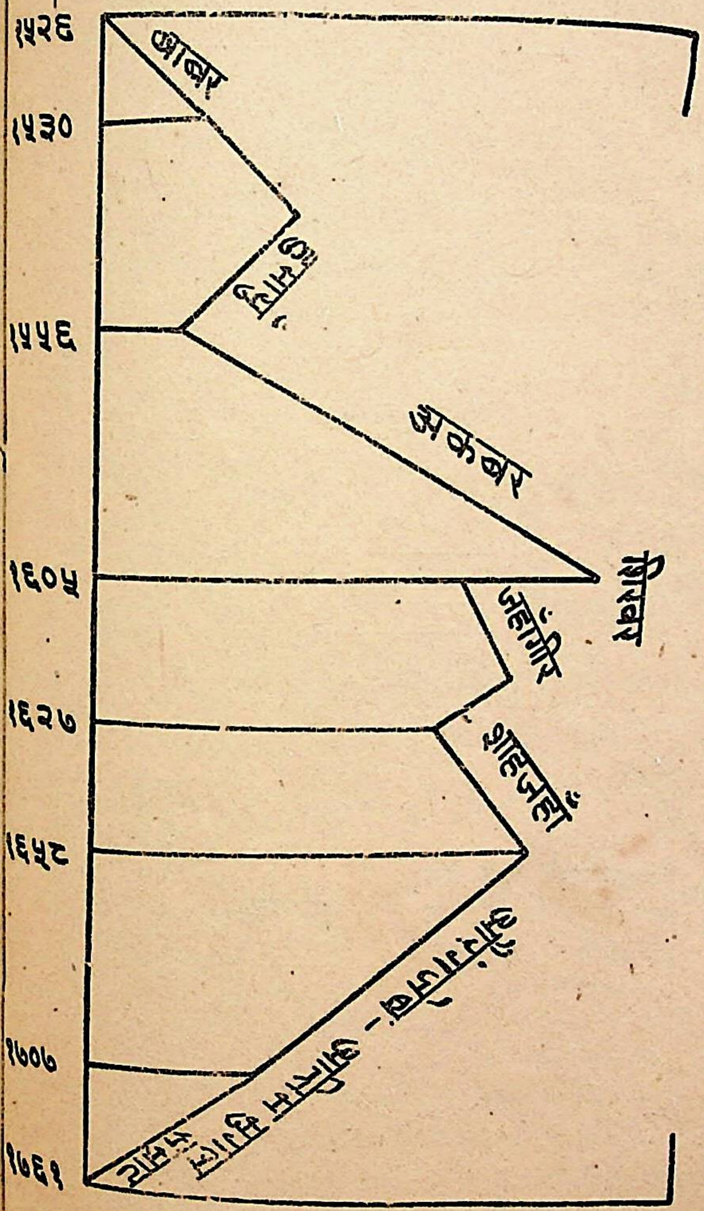

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

5

पानीपत के प्रथम युद्ध की योजना (अ)

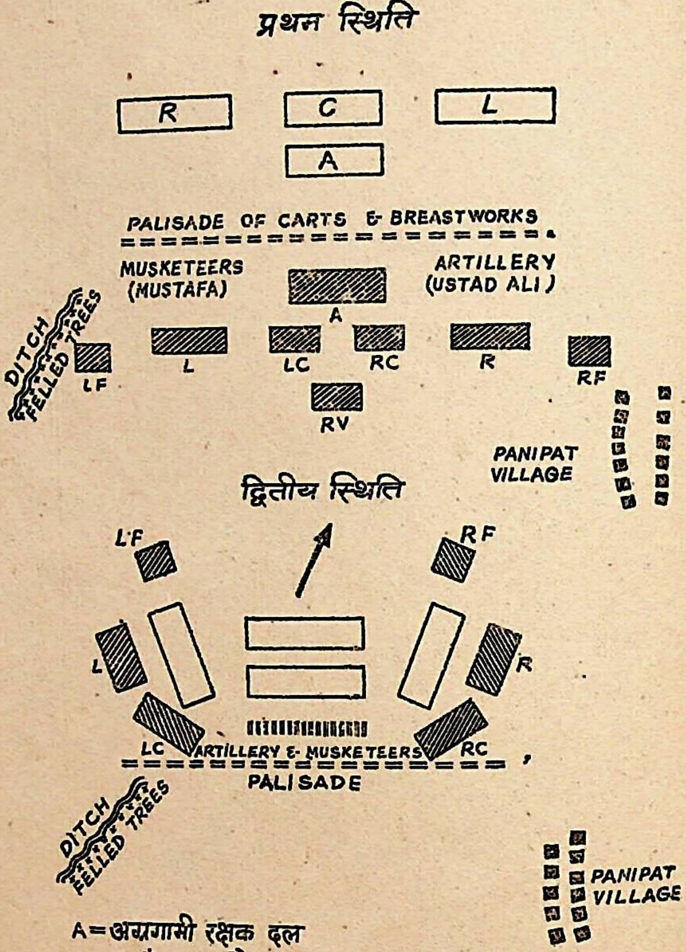

A=अग्रगामी रक्षक दल
R=दायाँ पक्ष (फौज का)
L=बायाँ पक्ष (फौज का)
C=मध्य
LC=बायाँ मध्य
RC=दायाँ मध्य
LF=बायीं ओर आक्रमण करने वाला दल
RF=दायीं ओर आक्रमण करने वाला दल
RV=रक्षित

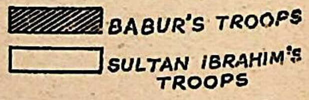

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पानीपत के तृतीय युद्ध की योजना (ब)

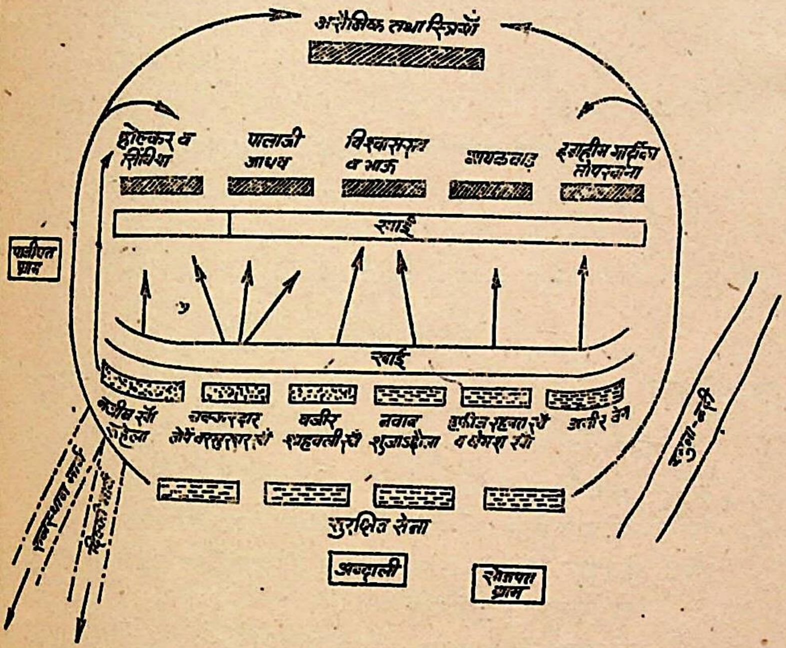

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

6

विभिन्न स्तरों के लिए प्रश्न-पत्र

जूनियर स्तर के लिए प्रश्न-पत्र

भारतीय इतिहास

समय—2 घण्टा पूर्णाङ्क—100

1. एक शब्द में निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखो— 20

(i) जैन धर्म को किसने चलाया था ?

(ii) अशोक ने किस धर्म का अधिक प्रचार किया था ?

(iii) गुप्तकाल में साहित्य, कला आदि की सर्वाधिक उन्नति किस सम्राट के शासन-काल में हुई थी ?

(iv) ह्वेनसांग किसके समय में आया था ?

(v) दिल्ली का प्रथम सुल्तान कौन था ?

(vi) बाबर ने पानीपत में किसके विरुद्ध युद्ध किया था ?

(vii) 1576 में राणा प्रताप तथा मानसिंह में किस स्थान पर युद्ध हुआ ?

(viii) ताजमहल किस स्थान पर स्थित है ?

(ix) महात्मा गाँधी की मृत्यु कब हुई थी ?

(x) भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम कब लड़ा गया ?

2. निम्नलिखित कथनों को पढ़ो और सत्य के सम्मुख √ और असत्य के सामने × चिह्न लगाओ—

(i) अशोक का जन्म गौतम बुद्ध से पूर्व हुआ था ।

(ii) चन्द्रगुप्त मौर्यवंश का प्रथम सम्राट था ।

(iii) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य गुप्त वंश का अन्तिम सम्राट था ।

(iv) अकबर इस्लाम धर्म का कट्टर अनुयायी था ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

(v) राणा प्रताप ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी ।
(vi) गुरु नानक ने सिक्ख धर्म चलाया था ।
(vii) औरंगजेब ने दाराशिकोह का बध कराया था ।
(viii) गांधीजी ने असत्य और हिंसा का पाठ पढ़ाया था ।

3. निम्नलिखित में प्रत्येक वाक्य के सम्मुख कोष्ठक में लिखे शब्दों में से वह शब्द चुनो जो कि कथन को सत्य तथा उपयुक्त बनाता है— 12

(i) पृथ्वीराज चौहान ने (सीता, द्रौपदी, रजिया, संयोगिता) का अपहरण किया था ।
(ii) नूरजहाँ का पति (शाहजहाँ, अकबर, जहाँगीर, दाराशिकोह) था ।
(iii) जजिया एक (खिताब, टैक्स, पद) था ।
(iv) शिवाजी ने अफजलखाँ का वध (पूना, आगरा, दिल्ली, प्रतापगढ़ बीजापुर, रायगढ़) में किया था ।
(v) बाबर तथा राणा सांगा का युद्ध (हल्दीघाटी, पानीपत, खानवा, घाघरा, चौसा) के मैदान में हुआ था ।
(vi) शाहजहाँ ने मोती मस्जिद (लाहौर, दिल्ली, आगरा, कश्मीर) में बनवाई थी ।

4. सबसे उपयुक्त उत्तर के सम्मुख ✓ का चिन्ह लगाओ— 2

(i) शिवाजी औरंगजेब के दरबार में मूर्च्छित हो गये, क्योंकि—
उनको यह बीमारी थी ।
वह अत्यन्त दुर्बल थे ।
दरबार में वायु आने का कोई प्रबन्ध नहीं था ।
वह अपमान नहीं सह सके थे ।

(ii) इब्राहीम लोदी पानीपत के प्रथम युद्ध में हार गया था क्योंकि—
उसके पास सेना कम थी ।
उसकी सेना का संगठन ठीक नहीं था ।
उसके सेनापति अयोग्य थे ।
उसने छापामार रणनीति को नहीं अपनाया था ।
वह एक अच्छा संगठनकर्त्ता तथा योद्धा नहीं था ।

5. निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो— 10

(i) वैदिक काल के समाज में····को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था ।
(ii) सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोग—ईंटों का प्रयोग करते थे ।
(iii) मुहम्मद तुगलक ने····का सिक्का चलाया ।
(iv) अकबर ने····धर्म चलाया ।
(v) सुभाषचन्द्र बोस ने····फौज बनाई थी ।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

6. निम्नलिखित नामों को काल-क्रम के अनुसार लिखो— 10

(i) महात्मा गांधी
(ii) राजा राममोहन राय
(iii) अशोक
(iv) हर्ष
(v) अकबर
(vi) रजिया बेगम
(vii) गौतम बुद्ध
(viii) जयचन्द्र
(ix) बलबन
(x) हुमायूँ

7. मानचित्र में निम्नलिखित स्थानों को दिखाओ— 10
बीजापुर, पाटलिपुत्र, दिल्ली, पानीपत, चित्तौड़, आगरा, खानवा, दौलताबाद, सिंहगढ़, ग्वालियर।

8. औरंगजेब या अकबर के चरित्र के विषय में अपने विचार संक्षेप में प्रकट करो। 10

9. मुहम्मद तुगलक के नवीन प्रयोगों के विषय में अपने विचार प्रकट कीजिए। 10

उच्च स्तर के लिए प्रश्न-पत्र

भारतीय इतिहास

समय—3 घण्टा पूर्णाङ्क—100

टिप्पणी—केवल पाँच प्रश्न करने हैं। प्रत्येक खण्ड से एक प्रश्न करना अनिवार्य है। तीन खण्डों में से कम से कम एक प्रश्न * चिन्ह वाला करना है। सब प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड 1

1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षित टिप्पणी लिखो—
   (i) चन्द्रगुप्त मौर्य का शासन-प्रबन्ध;
   (ii) नालन्दा विश्वविद्यालय;
   (iii) कालिदास;
   (iv) मुस्लिम सभ्यता का भारतीय सभ्यता पर प्रभाव,
   (v) शेरशाह का शासन-प्रबन्ध;
   (vi) अकबर की राजपूत-नीति;
   (vii) दीनइलाही;
   (viii) स्थायी प्रबन्ध;
   (ix) दोहरा शासन-प्रबन्ध;
   (x) 1942 का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन।

2. सिन्धु घाटी की सभ्यता भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास पर क्या प्रकाश डालती है ?

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

या

भारत की भौगोलिक परिस्थितियों ने भारतीयों को कहाँ तक प्रभावित किया है ?

*3. सिकन्दर की रणनीति के गुणों का वर्णन करते हुए झेलम नदी के युद्ध की योजना बनाओ।

4. गुप्तकाल को स्वर्ण युग क्यों कहा जाता है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

खण्ड 2

5. "मुहम्मद तुगलक एक पागल बादशाह था।" विवेचना कीजिए।

*6. अकबर के राज्य की समय-तालिका निम्नलिखित तिथियों से बनाओ और घटनाओं को उनके सम्मुख लिखो—
1556, 1562, 1564, 1576, 1582, 1595, 1572, 1579, 1600 1605.

या

निम्नलिखित तिथियों को समय-रेखा पर घटनाओं सहित रखो—
1615, 1627, 1630, 1636, 1658, 1666, 1680, 1690, 1707.

*7. मानचित्र में मुगल साम्राज्य की सीमा निम्नलिखित तिथियों के अनुसार दिखाओ—
1556, 1605, 1707.

8. मुगल-काल के लोगों के जीवन की वर्तमान काल के लोगों के जीवन से तुलना कीजिए।

खण्ड 3

9. "वारेन हेस्टिंग्स महाभियोग का अधिकारी था"—इस कथन की पुष्टि कीजिये।

*10. ब्रिटिश सत्ता के विस्तार को निम्नलिखित तिथियों में मानचित्र के द्वारा प्रदर्शित कीजिए—
1765, 1800, 1823, 1833, 1858, 1910।

या

निम्नलिखित तिथियों से समय-तालिका घटनाओं सहित तैयार करो—
1757, 1761, 1773, 1793, 1802, 1818, 1853, 1854, 1857, 1858, 1885.

11. "राजा राममोहन राय भारतीय पुनरुत्थान के पिता थे।" इस कथन की विवेचना कीजिए।

12. लार्ड कर्ज़न दूरदर्शी तथा उच्च दृष्टिकोण का मनुष्य था लेकिन उसके विषय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में गलत निर्णय दिया गया है।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए और बतलाइए कि लार्ड कर्ज़न के चरित्र के विषय में यह कथन कहाँ तक सत्य है ?

13. (i) निम्नलिखित नामों को कालानुक्रम के अनुसार रखो—

शाहजहाँ
महात्मा गांधी
हर्षवर्द्धन
समुद्रगुप्त
लार्ड क्लाइव
अशोक
अकबर
शिवाजी
कालिदास
पृथ्वीराज चौहन

(ii) निम्नलिखित को एक-दूसरे से उपयुक्त सम्बन्ध स्थापित करके कालानुक्रम में लिखिये—

अकबर की मृत्यु	230 ई० पूर्व
शिवाजी की मृत्यु	1707 ई०
औरंगजेब की मृत्यु	1605 ई०
गांधीजी की मृत्यु	1680 ई०
अशोक की मृत्यु	1948 ई०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

विशेष अध्ययन योग्य पुस्तकें

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
1. Bining and Bining	: Teaching the Social Studies in Secondary Schools.	McGraw-Hill Book Co., New York, Toronto.
2. Beales, A. H.	: A Guide to the Teaching of History in Schools.	University of London Press, 1937.
3. Chakravarti, Sujeet	: Audio-Visual Education in India.	Ministry of Education, Delhi.
4. Chaudhary, K. P.	: Audio-Visual Aids in Teaching Indian History.	Atma Ram & Sons, Delhi.
5. Dale Edger	: Audio-Visual Methods in Teaching.	The Dryden Press Inc., Ilionois.
6. Findlay, Johnson	: The Dramatic Methods in Teaching.	London Nisbet, 1911.
7. Ghate, V. D.	: The Teaching of History.	Oxford University Press, 1940.
8. Ghosh, K. D.	: Creative Teaching of History.	Oxford University Press, 1951.
9. Govt. of India.	: The Secondary Education Commission Report.	Ministry of Education, Publication Division, 1953.
10. Govt. of India.	: Education Commission Report. (1964-66)	Ministry of Education, Publication Division, 1966.
11. Govt. of India.	: The Contents of History of Indian Schools.	Ministry of Education. Pamphlet No. 9.
12. Happold, F. C.	: The Approach to History.	London, Christophers, 1928.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
13. Hasluck, E. L.	: The Teaching of History.	Cambridge University Press, 1926.
14. Highet, G.	: The Art of Teaching.	Methuen & Co. Ltd., London, 1951.
15. Hill, C. P.	: Suggestions For the Teaching of History.	UNESCO, Printed in France.
16. Jarvis, C. H.	: The Teaching of History.	Oxford University Press, 1917.
17. Johnson, H.	: Teaching of History.	MacMillan Co., New York, 1959.
18. Klapper, P.	: The Teaching of History.	Black, 1910.
19. Keatinge, M. W.	: Studies in Teaching of History.	A & C Black.
20. MacNee, E. A.	: Instructions in Indian Secondary Schools.	Oxford University Press, 1950.
21. Michaelis, John. U.	: Social Studies for Children in a Democracy.	Prentice Hall Inc., New York.
22. Moffatt, M. P.	: Social Studies Instruction.	Prentice Hall Inc., New York.
23. N. C. E. R. T.	: Teaching History in Secondary Schools.	N. C. E. R. T., Delhi.
24. Paterson, A. D. C.	: Techniques of Teaching.	Pergamon Press, Oxford, 1971.
25. Wesley, E. B.	: Teaching Social Studies in Elementary Schools.	D. C. Heath & Company, Boston. 1952.
26. Wesley, E. B.	: Teaching Social Studies in High Schools.	D. C. Heath & Company, Boston,
27. Worts	: The Teaching of History in Schools.	A New Approach, London Heinman, 1953.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi